परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

धम्मपरिक्खा

ग्रन्थकर्त्ता

परम पूज्य आचार्यश्री हरिषेण जी महाराज

सम्पादक

डॉक्टर भागचन्द्र जैन-भास्कर

प्रकाशक

सन्मति रिचर्स इन्स्टीट्युट आफ इन्डोलॉजी

नागपुर (महाराष्ट्र)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

आचार्य हरिषेण प्रणीत

धम्मपरिक्खा

(विस्तृत प्रस्तावना, व्याकरणात्मक विवेचन तथा भावानुवाद सहित)

संपादक

डॉ. भागचन्द्र जैन "भास्कर"

पी-एच. डी., डी. लिट्.

अध्यक्ष, पालि-प्राकृत विभाग,

नागपुर विश्वविद्यालय

सह-संपादक

प्रो. माधव रणदिवे

भूतपूर्व पालि-प्राकृत विभाग प्रमुख,

शिवाजी आर्टस कालेज, सातारा

सन्मति रिसर्च इन्स्टीटयुट आफ इन्डोलॉजी

नागपुर

1990

मानव संसाधन विभाग, शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रदत्त
आर्थिक सहायता के अन्तर्गत प्रकाशित

© संपादक : डॉ. भागचन्द्र जैन "भास्कर"

सहसंपादक : प्रो. माधव रणदिवे

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 1990
प्रतियां : 1000

प्रकाशक : सन्मति रिसर्च इन्स्टीटयूट आफ इन्डोलॉजी
(आलोक प्रकाशन)
न्यू एक्सटेंशन एरिया,
सदर, नागपुर-440 001

मुद्रक : राधाकृष्ण प्रिंटिंग प्रेस,
साईनगर 1, प्रेमनगर नागपुर-440 002

मूल्य :

जैनदर्शन और साहित्य के

मर्मज्ञ मनीषी

चरित्र-चूडामणि

दिग्वासी विश्वसंत

आचार्य विद्यासागरजी महाराज

को

सादर समर्पित

विषय-सूची

	अंग्रेजी प्रस्तावना	i–xi
	उपस्थापना	१-११०
१.	ग्रन्थ परिचय	१-७
	धर्मपरीक्षा नामक अनेक ग्रन्थ, धर्मपरीक्षा की पृष्ठभूमि, धर्मपरीक्षा का उद्देश्य	
२.	संपादन परिचय	८-११
	प्रति परिचय, पाठ संपादन पद्धति	
३.	ग्रन्थकार परिचय	११-३३
	हरिषेण नाम के अनेक कवि, धम्मपरिक्खा के रचयिता हरिषेण, समय, हरिषेण के पूर्ववर्ती कवि, हरिषेण के समकालीन कवि, हरिषेण की धम्मपरिक्खा और अमितगति की धर्मपरीक्षा की तुलना	
४.	विषय परिचय	३३-७९
	प्रथम संधि-मनोवेग और पवनवेग कथा, मधुबिन्दु दृष्टान्त; द्वितीय संधि : पटना की ओर प्रस्थान, षोडश मुष्टि न्याय, दस मूर्खों की कथा-रक्तमूढ, द्विष्टमूढ, मनोमूढ व्युद्ग्राही मूढ; तृतीय संधि : पित्तदूषित मूढ, चार मूर्ख; चतुर्थ संधि : बलिबन्धन (अकम्पनाचार्य मुनि) कथा, मार्जार कथा, मण्डपकौशिक और छाया कथा, तिलोत्तमा कथा; पंचम संधि : शिश्नश्छेदन कथा, खर-शिरश्छेदन कथा, जलशिला और वानरनृत्य कथा, कमण्डलु और गज कथा, पौराणिक कथाओं पर प्रश्न-चिन्ह, छठी संधि : लोक-स्वरूप वर्णन; सप्तम संधि : बृहत्कुमारिका कथा, भागीरथी और गांधारी कथा, मय ऋषि कोपीन कथा और मंदोदरि, पाराशर ऋषि और योजनगन्धा कथा, उद्दालक और चन्द्रमती कथा, अष्टम संधि : कर्णोत्पत्ति कथा, पाण्डव कथा, महाभारत कथा समीक्षा, शृगाल कथा, विद्याधर वंशोत्पत्ति कथा,	

राक्षस वंशोत्पत्ति कथा, वानर वंशोत्पत्ति कथा; **नवम संधि** : कपित्थखादन कथा, रावण दस शिर कथा, दधिमुख और जरासंध कथा, पौराणिक कथाओं की समीक्षा, धर्म का महत्व, **दसम संधि** : कुलकर व्यवस्था, तीर्थंकर ऋषभदेव और संस्कृति संचालन, पवनवेग का हृदय परिवर्तन, श्रावकव्रत; **ग्यारहवीं संधि** : श्रावकव्रतों का फल, रात्रिभोजन कथा, अतिथिदानव्रत कथा; लेखक प्रशस्ति.

५. **कथावस्तु का महाकाव्यत्व, भाषा और शैली** ७९–८०

६. **मिथकीय कथातत्व तथा कथानक रूढ़ियां–** ८०–८१

७. **वैदिक आख्यानों का प्रारूप** ८१–८५

मण्डप कौशिक कथा, तिलोत्तमा कथा, शिश्नश्छेदन कथा, खरशिरश्छेदन कथा, भागीरथी और गांधारी कथा, पराशर ऋषि और योजनगंधा कथा, उद्दालक और चन्द्रमती कथा, रावण की दशानन कथा.

८. **जैन पौराणिक विशेषतायें** ८५–८४

दधिमुख और जरासंध कथा, निजन्धारी कथायें, जैन साहित्य में रामकथा, दोनों जैन परम्पराओं मे भेदक तत्त्व, वैदिक और जैन परम्परा में कुछ मूलभेद, जैन परम्परा की कुछ मूलभूत विशेषतायें - यथार्थवाद, मानव चरित्र, भ्रातृत्व भक्ति, जैनत्व

९. **समसामायिक व्यवस्था** ९४–९५

१०. **जैनधर्म और दर्शन** ९५–९६

आप्तस्वरूप, श्रावकव्रत

११. **धम्मपरिक्खा का व्याकरणात्मक विवेचन** ९७–११०

१. खण्डात्मक स्वनिम विचार– स्वर विवेचन, स्वर विकार, व्यञ्जन परिवर्तन और विकार तथा उनके उदाहरण, समीकरण, संयुक्त व्यंजन परिवर्तन, २. अधिखण्डात्मक स्वनिम विचार। **शब्द साधक प्रणाली**, पूर्वप्रत्यय, परप्रत्यय, समास, **रूप साधक प्रणाली**, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, संख्या वाचक शब्द, संख्यावाचक विशेषण, तद्धित प्रत्यय, क्रिया रूप

मूल धम्मपरिक्खा	१-१६०
१. पढमो संधि	१-१२
२. बीओ संधि	१३-२०
३. तइअ संधि	२२-४२
४. चउत्थ संधि	४३-५९
५. पंचम संधि	७०-७३
६. छट्ठ संधि	७४-७६
७. सत्तमो संधि	८७-१००
८. अट्ठमो संधि	१००-११४
९. नवमो संधि	११५-१३१
१०. दहमो संधि	१३२-१४२
११. एयारहमो संधि	१४३-१६०
विशिष्ट शब्द-सूची	१-१६

Introduction

Logical discussions and debates had paramount importance in ancient India for the purpose of spreading and propagation of one's own religious and philosophical speculations amongst the societies. Therefore the rules and regulations in this context were formed by various sects and sagraments according to their views and convenience. The *Vadashila Brahmanas* were the leaders of the debaters who used the forms of *Vada, Jalpa, Vitanda, Chhala, Jati* and *Nigrahasthana* to gain trumph over the opponents by right or wrong means.[1] All these debaters are named *Takki* or *Takkika* in Pali and Prakrit literature.

The Buddhist tradition also could not escape being influenced by this practice The old logical compend like the *Upayahrdaya, Tarkashastra,* etc. appear to have allowed the use of qubbles (chhala), analogues (jati) etc. for the specific purpose of protecting the Buddhist order[2]. The Jainas, on the other hand, lay more stress on truth and non-violence. They think of the Vitanda (वितण्डा) as Vitandabhasa (वितण्डाभास)[3]. Akalanka rejects even the Asadhananga (असाधनांग) and Adosodbhavana (अदोषोद्भावन) in view of the facts that they were themselves the subjects of discussion. He then says : a defendent should himself indicate the real defects in the established theory of disputant and then set up his own theory[4]. Thus he should consider each item from the point of view of truth and non-violence. All the Jaina philosophers followed this tradion to the best of their efforts.

Note :- The Diacritical marks could not be used by the Press due to certain reasons. The readers are, therefore, requested to kindly bear the inconvenience caused. However, some important words have been given in Devanagari Script.

1. Nyayasutra, 4-2-50-9.
2. Vadanyaya, p. 1
3. Nyayavinishcaya, Vol. 2. p. 384
4. Ashtashati-Ashtasahasri, p. 87

Harishena is a prominent philosopher and poet who not only followed the said tradition but also criticised the Vedic mythological stories in somewhat different manner. He adopted the satirical style to defend his own view through submitting correct stories found in Jain tradition in parallel ways. The epic is written in such an interesting way that strived to prove them irreliable through truth and non-violent approach. The author investigates the real defects in opponent's theories, in his memorial work Dhammaparikkha.

Various Dharmapariksha

The subject of Dharmapariksha (धर्मपरीक्षा) has been so much popular that inspired the Acharyas to compose the texts in different languages by glimmering their literary radiance. Hence various Dharmaparikshas are available in the Shastra-bhandaras throughout the parts of India. We may enumerate here some of them that can be distinguished with some specific details;—

1. DP., in Prakrit, by Jairam (जयराम) which is mentioned by Harishena in his Dhamma-parikkha (A. D. 988), but not found so far.
2, Dp. in Apabhramsha, by Harishena (Sam. 1044, A. D. 988), the proposed text which will be dealt with in detail afterwards.
3. DP., in Sanskrit, by Amitagati, the pupil of Madhavasena; it was completed within two months in 1945 verses with 21 Paricchedas (Sam. 1070, A D. 1014) based on either Jairama's or Harishena's Dhammaparikkha.
4. DP., in Kannada, by Vrattavilasa (वृत्तविलास) (A. D. 1160) based on Amitagati's DP. It was transformed in Kannada prose by Chandrasagar in Shaka S. 1770.
5. DP., in Sanskrit, by Saubhagyasagar (सौभाग्यसागर) (Sam. 1571, A. D 1515), the pupil of Labdhisagar (A. D. 1515) in 16 chapters.
6. DP., in Sanskrit, by Padmasagaragani, the pupil of Tapagacchiya Dharmasagar (Sam. 1584, A. D. 1515) in 1474 verses very closed to Amitagati's DP.
7. DP. in Sanskrit, by Jinamandanagani (15th c. A. D.), the pupil of Samasundaragani.
8 DP., in Apabhramsha, by Shrutakirti (16th c. A. D.), the

pupil of Tribhuvanakirti of Balatkaragana (बलात्कारगण).

9. DP., in Sanskrit, by Ramachandra (17th c. A. D.), in 900 verses.
10. DP., in Sanskrit, by Manavijayagani (18th c. A. D.), the pupil of Tapagacchiya Jayavijayagani.
11. DP., in Sanskrit, by Parshvakirti (17th c A. D.)
12. DP. in Sanskrit, by Vishalakirti (Shak. Sam 1729).
13. DP., in Sanskrit-Kannada, by Nayasena (A. D. 1125), the pupil of Narendrasena
14. DP., in Hindi, by Manohar (Sam. 1775) in 3000 verses.
15. DP., in Sanskrit, by Vadisingh (16th c. A D.).
16. DP., in Sanskrit, by Yashovijaya (Sam. 1720).
17. DP., in Sanskrit, by Devavijaya.
18. DP., in Marathi, by Devendrakirti (17th c. A. D.).

Of these, the DP. of Amitagati has been more studied by the scholars. Mironow N. wrote a book entitled *'Die Dharma Pariksha des Amitagatis'* with critical approach published from Leipzig in 1903. It was also translated in Hindi by Shri Pannalal Bakaliwal in 1901 and in Marathi by Pt. Bahubali Sharma in 1931 (Sangali). But no work has been done so far on the Harishena's Dhammaparikkha except an article of Dr. A. N. Upadhye published in Annals, B. O. R. I. 75, pp. 592-608.

Background of the Dhammaparikkha

The mediaeval period may be acknowledged as the period of logical discussion which entered even into spirictual and religious field. As a result, Acharyas composed their examination-based literature. Alambanapariksha (आलम्बनपरीक्षा) and Trikalapariksha (त्रिकालपरिक्षा) of Dignaga, Sambandhapariksha (सम्बन्धपरीक्षा) of Dharmakirti, Pramanapariksha (प्रमाणपरीक्षा) and Laghupramanapariksha (लघु प्रमाणपरीक्षा) of Dharmottara, Shrutipariksha (श्रुतिपरिक्षा) of Kalyanarakshita, Pramanapariksha, (प्रमाणपरीक्षा) Aptapariksha (आप्तपरीक्षा, Patrapariksha, Satyasashanapariksha (सत्यशासनपरीक्षा) of Vidyananda may be mentioned in this respect. Dharmapariksha (धर्मपरीक्षा) also follows the tradition and examines the views of other traditions but with somewhat different style. Vadakatha (वादकथा) the soul of Dharmapariksha was adopted by practically all the Acharyas like Samantabhadra, Siddnasena, Akalanka, Hari-

bhadra etc. As a matter of fact, this style is not much found in the early Jain literature But in later period, as Jainism had to face the conflicts with Virashaivas, Lingayatas, Buddhists and Vedic sects, the Jaina authors too started the refutation of others' views.

Around tenth century, the vedic mythology and rituals became main target for Jaina thinkers. Haribhadra was the leader of this style who composed the Dhurtakhyana (धूर्ताख्यान) and refuted the hypothetical stories and superstitions of the Vedic culture. Dharmapariksha followed the Dhurtakhyana (धूर्ताख्यान) *in toto*. There are so many other texts also like Samayparikshe (समयपरीक्षे), Shastrasara (शास्त्रसार) etc. which refutes such fabricated elements occurred in non-Jain sects.

The main object of the Dharmapariksha is to vaninish the wrong views Micchattabhava avagannahi (मिच्छत्तभाव अवगण्णाहि, 11.26) from mind. Such hypothetical notions creat the obsticals in spiritual development The Jainacharyas refute them with progressive attitude and self realization and establish the right path without dishonouring the others' views. Amitagati clearly writes :

न बुद्धिगर्वेण न पक्षपाततो मयान्यशास्त्रार्थं विवेचनं कृतं ।
ममैव धर्मं शिवसौख्यदायिके परीक्षितुं केवलमुत्थितः श्रमः ॥ 10 ॥
अहारि किं केशवशंकरादिभिः व्यतारि किं वस्तु जिनेन चार्थिनः ।
स्तुवे जिनं येन निषिध्य तानहं बुधा न कुर्वन्ति निरर्थका क्रियाम् ॥ 11 ॥
विमुच्य मार्गं कुगतिप्रवर्तकं श्रयन्तु सन्तः सुगतिप्रवर्तकं ।
चिराय माभूदखिलाघतापकः परोपतापो नरकादिगामिनाम् ॥ 12 ॥

The irreliable Pauranika stories are found in the commentaries on the Prakrit scriptural narrative literature. As a matter of fact, they are found in Scriptural explainatory literature. The *Niryukti* and *Bhashya* literature refers more to such stories with ironical remarks. Acharya Haribhadrasuri utilized the Pauranic and folk tales in the Samaraiccakaha (समराइच्चकहा) Dhurtakhyana (धूर्ताख्यान) and the commentaries on the *Avashyaka* and *Dasavaikalika* Sutra to remove the wrong views and establish the morality thereupon.

Editotial Work

The present edition of the Dhammaparikkha of Harishena has been prepared on the basis of two MSS. preserved in the

Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. Their description is as follows :—

MS. A

It bears the No. 617/36 of 1875-76, written in good hand-writing and appears as if printed. It contains 75 pages. Only first three pages have in the middle the space for the thread and not in any other page. The edges are brittle, the paper also shows signs of earlier age, and now and then Padimatras are used in its writing. The Ms. begins with 'ॐ नमो वीतरागाय" in red ink. Number of Kadavakas and Dandas (11) are also written in neat hand-writing in black ink, somewhere a half line also is bru hed by white ink. The explanation of any word is not written in the margin on any page. Every page has 11 lines and last 75th one has only 6 lines. Every line contains 38 to 44 letters except Dandas (11) and no. of Kadavakas.

MS. B

It bears the No. 1009 of 1887-91. It is written in black ink and not red ink is used anywhere. One, two letters or 1/4, 1/2 or a line is brushed by white or black ink It is written not in very good hand-writing Every page contains 8 lines, but some have 9 lines also. Every line has 28 to 32 letters excepting Dandas and No of Kadavakas. The Ms. has 138 folios. Page No. 137 is partly broken and folio No. 4 is missing. We find the explanation of words etc.. with the sign in the margin on the top, bottom, right or left side in Sanskrit. It has unwritten space on folios 56a, 57, 69 and 69a, with gaps in the text. This is comparatively modern Ms. as indicated by the paper and hand-writing. It bears a date Samvat 1595 written by different person in different hand-writing on the last page which indicates that the Ms. is older than this date.

Both the Mss. together supply the complete text. They are quite independent and not the copies of each other. We find that the first Ms. is more correct and hence it is treated as an ideal one for our editing work. However, the second Ms. has been utilized for deciding the recentons. While editing we have followed the following method :—

1. न is made ण, as णयर, पणवाहुणु etc.
2. व for ब, as वित्थारें वोल्लिएण etc.

3. णाइ for णाइं
4. इकार and ओकार are made for half एकार and ओकार respectively.
5. Utilization of यश्रुति and वश्रुति
6. इ and ए in the कारकप्रत्ययs of तृतिया as सप्तमी विभक्तिs and पूर्वकालिक कृदन्त words.

There are so many Harishenas who composed the work in Jainism. Some of them are as follows :-

1. Harishena, the author of the Samudragupta Prayaga Prashasti समुद्रगुप्त प्रयाग प्रशस्ति (A. D. 345)
2. Harishena, the author of the Dhammaparikkha in Apabhramsha (Sam 1044).
3. Harishena, the author of the Suktavali (सूक्तावली) (12th c. A. D)
4. Harishena, the author of the Jagatasundariyogamaladhikara. (जगतसुन्दरी योग मालाधिकार)
5. Harishena as mentioned in the Vasavasena's Yashodhara-charitam alongwith Prabhanjana (8th c. A. D.)
6. Harishena, the author of the Ashtanhikatha (अष्टाह्निकथा)
7. Harishena, the author of the Vrhatkatha (10th c. A. D.)

Of these, Harishena or Buddha Harishena is the author of the proposed Dhammaparikkha in Apabhramsha as the colophon says itself. He was from Mevada. His parents were Govardhana-Gunavati. He left Cittoda and came to Acalapur on some business where he composed the Dhamma parikkha in Sam. 1044 (A D. 988). This is said in the opening and the concluding Kadavakas, Sandhi XI, Kada. 26-27. Harishena was the pupil of Siddhasena (XI, Kada. 25). He must have written some more Granthas as he said for himself the "Vibudha Vishrutakavi" in the same Kadavaka.

Amongst his predecessors, Harishena mentions Caturmukha, Pushpadanta, Svayambhu, Budha Siddhasena, and Jayarama (1.1.). He belongs to ths 10 c. A. D. when Tomar dynesty was ruling over the country.

He refers to Dinara (दीणार which has been in current upto the 12th c. A. D. (3.10) He also appears to have supported Devasena (10th c A. D.) that the Buddha had eaten meat and

fish and as a result he was resticated from the Parsvanatha Sangha Hence the Buddha established his own religion called Buddhism (10.10). The author also refers to Kapalavratas (4.17) which became more popular in around tenth century. On the basis of these references, Harishena can be assigned to the 10th c, A D. His contemporary Acharyas may be Amrtachandra, Ramasen, Somadeva, Amitagati, Dhavalakavi, Virakavi, Nayanandı, Camundaraya, Viranandi, Padmanandi, Haricandra, Mallishena, Vadiraja, Aryanandi, Dhanapala, Vagbhatta etc.

Harishena composed his **Dhammaparikkha** in Sam. 1044, After 26 years, Amitagati (Second) wrote his **Dharmaparikha** in Sam 1070. One belongs to Mewada and the other one to Malawa Both the texts show remarkable agreement. It is most possible that Amitagati had Harishena's Dhammaparikkha before him while composing his Dharmapariksha. Harishena's division is mora natural into Sandhis than Amitagati's division into Sargas One is descriptive and the other one is rather figurative. Harishena gives in details the Lokasthiti (Sandhi VII), Ramakatha (Sandhi VIII) and Ratribhojanakatha (Sandhi Xi), while Amitagati does not devote many verses to these subjects.

We have submitted a detailed account of the subject matter with compa ative approach in Hındı introduction. Looking to it, it appeais that Amıtagatı must have composed his Dharmapariksha on tha basis of some Prakrit work and that Prakrit work may be either of Jayarama or of Harishena. Even language and style are sometimes similar to that of Harishena's DP. Amitagati has through mastery over his expression. However he could not avoid the use of Prakrit words like Hatta, (3.6) Jemati, (5), Grahıla (13.23), Kacara (15.23) etc.

As regards the division of Sandhis of Dhammaparikkha and Paricchedas of Dharmapariksha, they can be comparatively studied in the light of corresponding topics as follows[1] :—

First Sandhi :- H.1.1 = A.1.1-16; 2 = 1.17-20; 3 = 1.21-27;

1. H. Refers to Kadavakas of Harishena's Dhammaparikkha and the A. refers to in correspondence with the Paricchedas of the Amitagati's Dharmapariksha, alongwith its verses.

4 = 1.28–31; 5 = 1.32–36; 6–7 = 1.37–47; 8 = 148–55; 9 = 1.56–57; 10=1.58–65; 11=1 66; 12 = 1.67–70; 13 = 2.1–7; 14 = 2 8–21; 15 = 2.22–79–89; 16 = 2.90–95; 17 = 3.1–26; 18–20 = 3 27–43.

Second Sandhi :– 1 = 3.44–58; 2-3 = 3 58–68; 4-6 = 3.69–95; 7-8=4.1–39; 9=4.40–46; 10–16=4.47–76–95, 5.1–76; 16–17 = 5.75–97; 18–23 = 6.1–95; 24 = 7.1–19.

Third Sandhi :– 1 = 7.20–28; 2-3 = 7 29–62; 4–6 = 7.63–96; 7=8.1-9; 8=8.10-21; 9=8.22-34; 10=8 35-49; 11=8.50–73; 12–13 =8 92–95; 14 =9 4–20, 15 =9.21-43; 16 =9.44-49; 17–19 =9 50–95; 20 =10.1–20; 21 =10.21–40; 22 =10–41–51.

Fourth Sandhi :– 1–2 =10.52–59; 3–4 =10 66–74; 5–6 =10.75–100; 7 =11.1–8; 8–9 =11.9-25; 10–12 =11. 26–28; 13–16 =11.29–47; 17 =11.48–58; 18 =11.59–65; 19 =11.66–82; 20 =11 73–93; 21 =11.94–95; 22 =12 10-15; 23 =12–16–26.

Fifth Sandhi :– 1 =12.27–29; 2–6 =12.30–33; 7 =12.34–52; 8-9=12–53–76; 10–11=12.77–92; 12=12 93–97; 13=13.1–7–17; 14–15=13.18–36; 16–17=13. 37–53; 18–20=13.54–102.

Sixth Sandhi :– 1–18 = Lokasvarupa is not found in A'S Dharmaparıksha.

Seventh Sandhi :– 1 =14.1–10; 2 =14 11–23; 3–4 =14.24–32; 5 =14–33-38; 6 =14.39–45; 7–8 =14–46–54; 9 =14.55–61; 10=14–62–67; 11–13=15.68–80; 14–15 =14–81–91; 16–17=14–92–101; 18=15.1–15

Eighth Sandhi :– 1 =15.17–21; 2 =13.22–31; 3 =15.32–41; 4–5 = 15.42–55; 6 =15.56–66 in detailed; 7 =15.67–74; 8–9 =15.75–94; 10 =15.95–98; 11 =16.1–21; 12 =Not in A; 13–22 =not in A.

Ninth Sandhi :– 1 =16.22–27; 2–3 =10–28–43; 4–5 =16.44–57; 6-10 =16.58–84; 11–12 =16.85–93; 13 =not found in A ; 14 =16 99–100; 15-17=16.99–100; 18–25 =16.102–104 not in detailed in A.

Tenth Sandhi :- The subject matter of the 17th Pariccheda is not found in Dhammaparikkha :
1 = 18.1-21; 2 = 18.22-29; 3-10 = 18.27-84; 11-12 = 18.85-100; 13 = 19.1-11; 14 = 19.12; 15-16 = 19.13-101 in detailed in A.

Eleventh Sandhi- 1-2 = not found in A.; 3-10 = 20.1-12; 11-21 = 20.13-52; 22 = 20.53-64; 23-27 = 20 65-90.

The camparision leads the impression that Amitagati borrowed the subject matter from Harishena and composed his Dharmaparikaha within two months (A. 20. 90.) Manovega submits fabricated tales before the Brahmanas and when they do not believe on them, he puts forth the parallel stories from the vedas and Puranas and satisfies them. Harishena adopts the descriptive method and therefore does not stand much on traditional approach towards the women, friend, world, wealth, etc. as done by Amitagati. He never leaves the story incompleted in moving from one Sandhi to another as offenly does Amitagati.

From imagination and language point of view also, both the works can be compared. For instance :— H 1.19 = A. 3.36-37: H. 2.3 = A. 3.61; H. 2 5 = A. 3.85; H 11 = A 4 84-85; H. 2 15 = A 5.59; H. 2 16 = A. 5.82-85; H 3 9 = A. 8.22-34 Harishena may have followed Jayarama's Dhammaparikkha as he himself said in beginning of his work. But unless the Jairama's Dhammaparikkha is found, the nature of borrowing elements cannot be decided. Another remarkable point is that Amitagati included the **Purvapaksha** (the arguments of the opponent) into his work as his own verses with slightly changes, but Harishena did it under the heading "Tathoktam". For instance :— H. 4.1 = A 10.58-59; H. 5.7 = A. 11.8; H. 4.7 = 11.12; H. 5.9 = A. 12.72-73; H. 5.17 = Not fonud in A.; H. 7.5 = A. 14.38; H. 7.6 = A 14 49; H. 7.8 = A. 14.50; H. 8.6 = A. 15.94; H. 9.25 = A. Not found in the same form.

Subject Matter

The Dhammaparikkha is a satiric text which critically examines the Pauranic tales and Vedic superstitions prevelent at that time. It is divided into eleven Sandhis which contain 238 Kadavakas in 2070 Shlokapramana The whole text is interconnected with one object and so many fabricated stories.

There may not be one hero but the individuality of all the heroes of the Pauranic stories have been identified properly on their own accord. Considering the characteristics of the text one may, of course, call it an epic composed in different metres like भुजंगप्रयात, रड्डा, घत्ता, ध्रुवक But the पज्झटिका is mainly used throughout the text.

The story says that there were two intimate friends, one Manovega, the son of king Jitashatru, and the other one Pavanavega, the son of Vijayapuri king. Manovega was religious minded following Jainism while the other one Pavanavega was just opposit to him following Vedic religion. Both the friends go to Pataliputra where Manovega narrates in Vadashala the Paurnnic stories before the Brahmanas and strive to prove them irreliable, false and unbelievable. In this context, several Pauranic stories have been narrated. For instance, मण्डपकौशिक कथा (4.7.12), तिलोत्तम कथा (4.13), शिरश्छेदन कथा (5.1), खरशिरश्छेदन कथा (5.6–7), भागीरथी and गान्धारी कथा (7.9), पाराशर ऋषि and योजनगन्धा कथा (7.14), उद्दालक and चन्द्रमती कथा (7.16.7), रावण दशानन कथा (8.13.1) etc. Hearing the right form of these stories, Pavanavega becomes the follower of Jainism.

During criticising the Pauranic tales, Harishena submits their own forms according to Jain tradition and questions obout Vishnu (3.21), Vishnu's sensuality (4.9–12), relation between Brahma and Tilottama (4.13–16), stories related to Brahma and Vishnu (5.16–20), etc. Harishena also explained the Ramakatha (8.11) and other Pauranic tales (6.4–5; 9.11–12–14, 18–25, 17th Sandhi) दधिमुख-जरासन्ध कथा (9.6.10) and some fabricated tales like मार्जार कथा (4.3.7), जलशिला-वानर नृत्य कथा (5.8 9), कमण्डलु गजकथा (5.10–12), वृहत्कुमारी कथा (7.2–6), कपिष्ठ कथा (9.1–3) etc. Exaggeration element has been removed from these stories and made their humanatarian exposition. Thus the धम्मपरिक्खा may be treated as an epic (महाकाव्य) are though it is not formed under the purview of the traditional characteristics. It is composed with शान्तरस.

In course of discussion, Harishena also explained the nature of आप्त and वीतराग परमात्मन् (4.23, 5.18–20, 9.13, 18.25), श्रावकव्रत, अष्टमूलगुण, षट्कर्म, शिक्षाव्रत, रात्रिभोजनत्याग, सल्लेखना, जिनमंदिरदर्शन etc. in Ninth Sandhi.

This is the abridged form of Hindi introduction. The grammatical pecuiarities of Apabhramsha of the text can be seen there in the last part of the introduction. Its language is very simple and sometimes does not even follow the rules of Apabhransha grammar. The parallel stories are also traced out from the Vedas and Puranas and they are mentioned in the Hindi introduction. The readers may go through it for detailed study.

The Dhammaparikkha of Harishena is edited for the first time on the basis of two manuscripts. I am indebted for the warm cooperation of **Prof. M. S. Randive**, former Head of the Department of Pali and Prakrit, Shivaji Arts College, Satara in the form of coping the Text while editing.

We are grateful to the Government of India, Ministry of Human Resource Development, Department of Education who extended its financial assistace for the publication of the **Dhammaparikkha**.

Bhagchandra Jain Bhaskar
Head of the Department of
Pali and Parkrit,
Nagpur University.

New Extention Area,
Sadar NAGPUR-440001.
Dated : Dipavali, 18-10-1990

उपस्थापना

१. ग्रन्थ-परिचय

प्राचीन काल में वाद, विवाद, शास्त्रार्थ आदि के माध्यम से अपने धर्म की प्रतिष्ठा और प्रचार-प्रसार की योजना बनाना और उसे कार्यान्वित करना एक साधारण और सर्वमान्य बात थी। इसलिए शास्त्रार्थ के नियम, प्रतिनियम भी बनते-बिगड़ते रहे। उसका भी दार्शनिक क्षेत्र में एक अपना महत्त्व और इतिहास है। सुत्तनिपात में ब्राह्मणों को 'वादशीला' कहा गया है। इससे पता चलता है कि वादपरम्परा का प्रारम्भ ब्राह्मण वर्ग से हुआ है और चूँकि वे अध्येता थे, वाद करना उनका स्वभाव हो गया था। वाद, जल्प और वितण्डा तथा छल, जाति और निग्रहस्थान जैसे साधनों का प्रयोग न्यायपरम्परा में होता रहा है। वहाँ कहा गया है कि जिस प्रकार खेत की रक्षा के लिए काँटेदार बाड़ी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार तत्वसंरक्षण के लिए जल्प और वितण्डा से छल, जाति आदि का प्रयोग अनुचित नहीं है।[1]

धर्मपरीक्षा (धम्म परिक्खा) इसी प्रकार का एक ऐसा व्यंग्य प्रधान ग्रन्थ है जिसमें शास्त्रार्थ के माध्यम से परपक्ष-खण्डन और स्वपक्ष-मण्डन किया गया है। पौराणिक कथाओं की समीक्षा का आधार लेकर कवि ने इस काव्य में मनोरंजकता ला दी है और पौराणिक कथाओं को अविश्वसनीय सिद्ध कर दिया है। इसके अध्ययन से यह तथ्य प्रमाणित होता है कि जैन परम्परा ने छल, जाति आदि के प्रयोग का कभी भी समर्थन नहीं किया। सिद्धसेन ने 'वाद-द्वात्रिंशिका' और अकलंक ने 'अष्टशती-अष्टसहस्री' में यह स्पष्ट किया है कि वादी का कर्तव्य है कि वह प्रतिवादी के सिद्धान्तों में वास्तविक कमियों की ओर संकेत करे और फिर अपने मत की स्थापना करे। सत्य और अहिंसा के आधार पर ही हर दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

१. धर्मपरीक्षा नामक अनेक ग्रन्थ

धर्मपरीक्षा का विषय बहुत लोकप्रिय रहा है। आचार्यों ने उस विषय को अपनी-अपनी काव्य-प्रतिभा से आकलित किया है। उस नाम से जिन ग्रन्थों की जानकारी मिल सकी है, वह इस प्रकार है—

1. न्यायसूत्र, 4-2-50

1. जयरामकृत धर्मपरीक्षा

प्रस्तुत विषय का कदाचित यह प्राचीनतम ग्रन्थ है जिसका उल्लेख हरिषेण ने अपने अपभ्रंश ग्रन्थ धम्मपरिक्खा में किया है।[1] यह ग्रन्थ प्राकृत गाथा-प्रबन्ध में लिखा गया होगा। हरिषेण की धर्म-परीक्षा सं. 1044 (A. D. 988) में लिखी गई थी। जयरामकृत धर्मपरीक्षा इसके कितने पहले लिखी गई होगी, कह सकना कठिन है। वह अभी तक अप्राप्य है।[2] उनके जीवनकाल आदि के विषय में भी कोई जानकारी नहीं मिलती।

2. अमितगति कृत धर्मपरीक्षा

यह उपलब्ध धर्मपरीक्षा ग्रन्थों में प्राचीनतम है। इसकी भाषा संस्कृत है और 1945 श्लोकों में निबद्ध तथा इक्कीस परिच्छेदों में विभक्त है। इसमें ऊटपटांग पौराणिक कथाओं को सयुक्तिक व समानान्तर कृत्रिम कथाओं के माध्यम से खण्डित किया गया है। इसके रचयिता अमितगति द्वितीय हैं जो काष्ठासंघ-माथुरसंघ के आचार्य थे। इनकी गुरु-परम्परा इस प्रकार है- वीरसेन-देवसेन-अमितगति प्रथम-नेमिषेण-माधवसेन-अमितगति (द्वितीय)। अमरकीर्ति के 'छक्कमोवएस' के अनुसार अमितगति की शिष्य परम्परा इस प्रकार है- शान्तिषेण-अमरसेन-श्रीसेन-चन्द्रकीर्ति-अमरकीर्ति।

अमितगति धारानरेश भोज के सभारत्न थे। धर्मपरीक्षा की रचना उन्होंने मात्र दो माह में की थी।[3] इसका रचनाकाल है वि सं. 1070 (ई. 1014)। अमितगति ने अपनी धर्मपरीक्षा जयराम अथवा हरिषेण की धर्मपरीक्षा (ई. 988) के आधार पर की होगी। इनके अन्य ग्रन्थ हैं- सुभाषितरत्नसंदोह, उपासकाचार, पंचसंग्रह, आराधना, भावना द्वात्रिंशतिका, चन्द्रप्रज्ञप्ति, सार्द्धद्वयद्वीप-प्रज्ञप्ति एवं व्याख्याप्रज्ञप्ति।[4]

---

1. जा जयरामें आसि विरइय गाह-पबंधि।
   साहमि धम्मपरिक्ख सा पद्धडियाबंधि ॥ 1. 1
2. जिनरत्नकोश, पृ. 189. ग्यारहवीं All India Oriental Conference, 1941 (हैदराबाद) में पठित डॉ. आ. नै. उपाध्ये का लेख "हरिषेण's धर्मपरीक्षा in अपभ्रंश' Annals B. O. R. 1-75, PP. 592.
3. अमितगतिरिवेदं स्वस्य मासद्वयेन।
   प्रथित विशदकीर्तिः काव्यमुद्भूतदोषम् ॥
4. जिनरत्नकोश, P. 190, हिन्दी अनुवाद, जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, 1908; जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी, कलकत्ता, 1908; विण्टर-नित्स, हिस्ट्री आफ इन्डियन लिटरेचर, भाग 2, P. 563; एन, मिरोनेव, दि धर्मपरीक्षा डेस अमितगति, लाइप्जिग, 1908.

3. वृत्तविलासकृत धर्मपरीक्षा

इसके रचयिता कन्नड कवि वृत्तविलास हैं जिनका समय ई. 1160 निर्धारित किया गया है। आर. नरसिंहाचार्य ने उनकी गुरुपरम्परा का उल्लेख इस प्रकार किया है- व्रती शुभकीर्ति-सिद्धांती माघनन्दि- यति भानुकीर्ति-धर्मभूषण-अमरकीर्ति-वागीश्वर-अभयसूरि। यह धर्मपरीक्षा कन्नड भाषा में चम्पू शैली में रचित ललित काव्य है जो दश आश्वासों में विभक्त है। इस पर श. सं. 1770 में चन्द्र सागर ने कन्नड गद्य में टीका लिखी है। वृत्तविलास की यह धर्मपरीक्षा अमितगति की धर्मपरीक्षा पर आधारित है।

'नरसिंहाचार्य ने 1904 (मैंगलोर) में प्राक्काव्यमाला कर्नाटक कविचरिते' में इस ग्रन्थ का कुछ भाग प्रकाशित किया था।

4. सौभाग्यसागर कृत धर्मपरीक्षा

इसकी रचना श्रीपाल चरित्र के रचयिता लब्धिसागरसूरि (सं. 1557) के शिष्य सौभाग्यसागर ने सं. 1571 (ई. 1515) में की जिसका संशोधन अनन्तहंस ने किया।[1] यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है और सोलह परिच्छेदों में विभक्त है।

5. पद्मसागरगणिकृत धर्मपरीक्षा[2]

यह तपागच्छीय धर्मसागर के शिष्य पद्मसागरगणि की रचना है जिसे उन्होंने सं. 1645 (ई. 1589) में लिखी। इसमें कुल 1474 श्लोक हैं जिनमें लगभग 1250 तो अमितगति की धर्मपरीक्षा से आकलित किये गये है।[3] कथा तो वही है पर श्वेताम्बर मतानुसार जहां कहीं परिवर्तन कर दिया गया है फिर भी दिगम्बर सिद्धांत उसमें बचे रह गये है।

6. जिनमण्डनगणिकृत धर्मपरीक्षा[4]

तपागच्छीय सोमसुन्दर के शिष्य जिनमण्डनगणि (15 वीं शताब्दी का

---

1. जिनरत्नकोश, P. 190; मुक्तिविमल जैन ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक 13, अहमदाबाद.
2. जिनरत्नकोश, P. 190; देवचंद्र लाल भाई पुस्तक (सं. 15), बंबई, 1913; हेमचन्द्र सभा, पाटन, सं. 1978
3. तुलनार्थ दृष्टव्य- जैन हितैषी भाग 13, p. 314. आदि में प्रकाशित प. जुगल किशोर मुख्तार का लेख "धर्मपरीक्षा की परीक्षा," जैन सहित्यनो संक्षिप्त इतिहास, P. 586, टिप्पण 513.
4. जिनरत्नकोश, P. 190; जैन आत्मानन्द सभा (सं. 97), भावनगर, सं. 1974

अन्तिम दशक) ने 1800 ग्रन्थाग्र प्रमाण धर्मपरीक्षा की रचना की। उनके कुमारपाल प्रबन्ध (सं. 1412) तथा श्राद्धगुणसंग्रहविवरण (सं. 1498) ग्रन्थ भी उपलब्ध होते हैं।

7. श्रुतकीर्ति कृत धर्मपरीक्षा

भट्टारक श्रुतकीर्ति नन्दिसंघ बलात्कारगण और सरस्वतीगच्छ के विद्वान, देवेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य और त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य थे। उनका समय वि. की सोलहवीं शती सिद्ध होती है। वे मालवा के निवासी थे। उन्होंने धर्मपरीक्षा की रचना वि. सं. 15 2 (ई. 1496) में अपभ्रंश में की। इसके अतिरिक्त उनके हरिवंशपुराण, परमेष्ठी प्रकाशसार और योगसार ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं।

8. पार्श्वकीर्ति कृत धर्मपरीक्षा (17 वीं शताब्दी)।[1]

9. रामचंद्र कृत धर्मपरीक्षा

पूज्यपादान्वयी पद्मनन्दी के शिष्य रामचंद्र (17 वीं शताब्दी) ने देवचन्द्र के अनुरोध पर संस्कृत में धर्मपरीक्षा की रचना 900 श्लोक प्रमाण में की।

10. मानविजयगणि कृत धर्मपरीक्षा

तपागच्छीय जयविजयगणि के शिष्य मानविजयगणि (वि. की 18 वीं शताब्दी) ने अपने शिष्य देवविजय के लिए संस्कृत में रचना की।[2]

11. विशालकीर्ति कृत धर्मपरीक्षा (शक सं. 1729)

12. नयसेन कृत धर्मपरीक्षा

नरेन्द्रसेन के शिष्य नयसेन ने ई. सन् 1125 में संस्कृत-कन्नड मिश्रित धर्मपरीक्षा ग्रन्थ लिखा। वे धारवाड़ जिले के मलगुन्दा नामक गांव के निवासी थे और 'त्रैविद्यचक्रवर्ती' कहलाते थे। धर्मपरीक्षा के अतिरिक्त उनके दो और ग्रन्थ मिलते हैं— धर्मामृत और कन्नड व्याकरण।

13. मनोहर कृत धर्मपरीक्षा

कवि मनोहर धामपुर के निवासी और सासू साहु के स्नेह भाजन थे। उन्होंने हीरामणि के उपदेश तथा सालिवाहण आदि के अनुरोध से धर्मपरीक्षा की रचना सं. 1775 में की। इसमें हिन्दी के 3000 पद्य हैं।

14. सुमतिसिंह रचित धर्मपरीक्षा (लगभग 16 वीं शताब्दी)[3]

1. जिनरत्नकोश, P. 190.
2. जिनरत्नकोश पृ. 190.
3. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग 6, डॉ. गुलाबचंद्र चौधरी, वाराणसी 1973, P. 275

15. यशोविजय कृत धर्मपरीक्षा

अपने शिष्य देवविजय के लिए धर्मविजय ने लगभग वि. सं. 1720 में धर्मपरीक्षा की रचना संस्कृत में की। ये तपागच्छीय नयविजय के शिष्य थे।

16. वेवसेन कृत धर्मपरीक्षा

17. हरिषेण कृत धर्मपरीक्षा

हरिषेण ने सं. 1044 (ई. 988) में अपभ्रंश में धर्मपरीक्षा की रचना की ग्यारह संधियों में। इसके विषय में हम आगे विस्तार से लिखेंगे।

इनके अतिरिक्त भी धर्मपरीक्षा नामक कृतियां भण्डारों में और भी सुरक्षित हूंगी। देवेन्द्रकीर्ति (17 वी शताब्दी की धर्मपरीक्षा मराठी में उपलब्ध है। गुजराती में भी धर्मपरीक्षा ग्रन्थों की रचना हुई होगी। इससे ऐसा लगता है कि धर्मपरीक्षा काफी लोकप्रिय ग्रन्थ रहा होगा। इन समूची धर्मपरीक्षाओं में। अमितगति की धर्मपरीक्षा का सर्वाधिक अध्ययन हुआ है। Mironow N. ने 1903 में "Die Dharma Pariksha des Amitagati" ग्रन्थ Leipzig से प्रकाशित किया था जिसमें उन्होंने भाषा, विषय, छन्द आदि का समीक्षात्मक अध्ययन किया है। Mironow के पूर्व डॉ. विन्टरनित्स ने भी सन् 1701 में A Hisiory of Indian Literature, Vol. No. 2 में इस ग्रन्थ के विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। धर्मपरीक्षा का हिन्दी अनुवाद भी 1901 में श्री पन्नालाल बाकलीवाल ने किया जिसे उन्होंने जैन हितैषी पुस्तकालय बम्बई से प्रकाशित कराया। इसी का मराठी अनुवाद पं. बाहुबली शर्मा ने सन् 1931 में सांगली से प्रकाशित किया। डॉ. उपाध्ये ने भी ग्यारहवें प्राच्य विद्या सम्मेलन हैदराबाद में "हरिषेण की धर्मपरीक्षा" निबन्ध में इस पर कुछ प्रकाश डाला था।

२. धर्मपरीक्षा की पृष्ठभूमि

इतिहास का मध्यकाल ज्ञान प्रधान रहा है। यहां हर क्षेत्र तार्किकता से सम्बद्ध दिखाई देता है। आचरण और अध्यात्म का क्षेत्र भी तर्कणा शक्ति से उभर नहीं सका। इसलिए इस युग का साहित्य परीक्षा प्रधान साहित्य दिखाई देता है। उदाहरण तौर पर दिग्नाग की आलम्बनपरीक्षा, त्रिकालपरीक्षा, धर्मकीर्ति की सम्बन्ध परीक्षा, धर्मोत्तर की प्रमाणपरीक्षा व लघुप्रमाणपरीक्षा, कल्याणरक्षित की श्रुतिपरीक्षा, और विद्यानन्द की प्रमाणपरीक्षा, आप्तपरीक्षा, पत्रपरीक्षा, सत्यशासनपरीक्षा जैसे परीक्षान्त ग्रन्थों का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। इन ग्रन्थों में एक संप्रदाय का आचार्य दूसरे सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की तार्किक ढंग से परीक्षा करता है। इस संदर्भ में परीक्षा के स्थान पर मीमांसा शब्द का भी प्रयोग हुआ है और मीमांसा श्लोकवार्तिक, आप्तमीमांसा

आदि जैसे दार्शनिक ग्रन्थों की रचना की गई है। धर्मपरीक्षा भी इसी प्रकार का ग्रन्थ है जिसमें जैनेतर, विशेषत: वैदिक दर्शन, का तार्किक ढंग से परीक्षण किया गया है।

धर्मपरीक्षा की पृष्ठभूमि में वाद कथा का भाव रहा है जैसे समन्तभद्र, सिद्धसेन, अकलंक, हरिभद्र आदि आचार्यों ने बड़ी विद्वत्ता के साथ अपने ग्रन्थों में अपनाया है। कुन्दकुन्द, पम्प, रन्न आदि ने जैनेतर दर्शनों का वर्णन किया है पर किसी के विरोध में कुछ भी नहीं कहा है। परंतु उत्तरकाल में उन्हें इस परम्परा को तोड़ देना पड़ा। जैनधर्म के राजाओं को आश्रय मिलना बन्द हो गया। वीरशैवों और लिंगायतों ने भी जैनधर्म को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फलत: धीरे-धीरे वाद साहित्य की रचना होने लगी। उदाहरण: नयसेन के धर्मामृत (सन् 1112) में सम्यग्दर्शन के अंगों पर प्रस्तुत कथाओं में जैनाचार का पालन करनेवाले जैनेतरों को भ्रष्ट होते हुए बताया है।

ब्रह्मशिव ने त्रैलोक्यचूडामणि स्तोत्र में वृक्ष, समुद्र, नदी, सूर्य आदि की पूजा का खण्डन किया है और समयपरीक्षे में अन्धविश्वासों का खण्डन करते हुए दशावतार, स्वयम्भू आदि की आलोचना की है। इसी तरह वृत्तविलास (सन् 1360) ने चम्पूशैली में लिखी धर्मपरीक्षा में वैदिक आख्यानों की तीव्र भर्त्सना की है। यह संस्कृत धर्मपरीक्षा का अनुवाद-सा है। शास्त्रसार में मिथ्यावाद का खण्डन कर सम्यकत्व की स्थापना की गई है। संस्कृत और प्राकृत में इस प्रकार के अनेक ग्रन्थ मिलते हैं। धर्मरीक्षा भी इसी पृष्ठभूमि पर लिखी कथा है जिसमें जैनेतर दार्शनिक सिद्धान्तों और उपासना पद्धतियों पर तीव्र प्रहार किया गया है। धूर्ताख्यान की पृष्ठभूमि पर रची गई धर्मपरीक्षा नि:सन्देह एक प्रभावक रचना सिद्ध हुई है।

३. धर्मपरीक्षा का उद्देश्य

हरिषेण की धर्मपरीक्षा का उद्देश्य है मिथ्यात्व भाव को स्पष्ट करना (मिच्छत्तभाव अवगण्णहि, 11.26)। मिथ्यात्व से यहां तात्पर्य है, ऐसे सिद्धान्त जिनसे व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। ऐसे सिद्धान्तों का सयुक्तिक और स्वानुभूतिक खण्डन कर सम्यकत्व की स्थापना की जाती है। व्यक्ति मिथ्या मार्ग को छोड़ दे और सम्यक् मार्ग को ग्रहण कर ले यही आचार्यों का मुख्य उद्देश्य रहा है। वहां किसी धर्म के अपमान करने का कोई भाव नहीं है।

अमितगति ने अपने मन्तव्य को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा है- मैंने इस ग्रन्थ में जैनेतर मतों का जो भी खण्डन किया है

वह बौद्धिक अभिमान अथवा पक्षपातपूर्वक नहीं किया है। उस खण्डन के पीछे यही उद्देश्य रहा है कि जो धर्म शिवसुखप्रदाता है उस धर्म का ग्रहण उसकी पूरी परीक्षा करके ही होना चाहिए। विष्णु और महादेव ने न मेरा कुछ बिगाड़ा है और न जिनेन्द्र भगवान ने मुझे कुछ दिया है। मेरा तो केवल यही निवेदन है कि जो सत्पुरुष है वे कुगति की प्रवृत्ति कराने वाले मार्ग (धर्म) को छोड़कर सुगति में ले जाने वाले मार्ग का आश्रय करें जिससे वे नरकादि दुःखों से मुक्त हो सकें।

न बुद्धिगर्वेण न पक्षपाततो मयान्यशास्त्रार्थ विवेचनं कृतं।
ममैव धर्मं शिवसौख्यदायिके परीक्षितुं केवलमुत्थितः श्रमः ॥ 10 ॥

अहारि किं केशवशंकरादिभिः व्यतारि किं वस्तु जिनेन चार्थिनः।
स्तुवे जिनं येन निषिध्य तानहं बुधा न कुर्वन्ति निरर्थकां क्रियाम् ॥ 11 ॥

विमुच्य मार्गं कुगतिप्रवर्तकं श्रयन्तु सन्तः सुगतिप्रवर्तकं।
चिराय माभूदखिलांगतापकः परोपतापो नरकादिगामिनाम् ॥ 12 ॥

अतः धर्मपरीक्षा में प्रस्तुत विषय को मीमांसापूर्वक ग्रहण किया जाना चाहिए। उसके लेखन के पीछे किसी धर्म विशेष का अपमान करने का भाव आचार्यों के मन में कभी नहीं रहा है। प्राणी का कल्याण मात्र करना उनका उद्देश्य रहा है। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर धर्मपरीक्षा की रचना हुई है। धर्म जैसे सर्वसाधारण और प्रमुखतम तत्व की परीक्षा करके ही उसे धारण किया जाना चाहिए।

धर्मपरीक्षा की इसी परम्परा में प्रस्तुत ग्रन्थ में पौराणिक कथाओं की बेतुकी बातों को उद्घाटित कर उन्हें निरर्थक किंवा अविश्वसनीय सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। ऐसी कथायें आगमिक व्याख्या साहित्य में अधिक मिलती हैं। निर्युक्ति और भाष्य साहित्य में ब्राह्मणों की अतिरंजित पौराणिक आख्यानों पर तीव्र व्यंग्य, धूर्तों के मनोरंजक आख्यान तथा साधुओं को धर्म में स्थिर रखने के लिए लोक प्रचलित कथाओं के विविध रूप मिलते हैं। प्राकृत कथा साहित्य का उद्गम वस्तुतः आगम साहित्य से ही हुआ है। टीका साहित्य में यह प्रवृत्ति और अधिक दृष्टिगोचर होती है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने आवश्यक और दशवैकालिक सूत्रों पर टीका लिखते समय तथा समराइच्च कहा और धूर्ताख्यान जैसे जैन कथा ग्रन्थों की रचना करते समय इस बात का अधिक ध्यान रखा है कि लौकिक आख्यानों का अधिकतम उपयोग मिथ्यात्व को दूर करने तथा नैतिकता को प्रतिष्ठापित करने में किया जाये।

प्राकृत कथा साहित्य का समय लगभग चतुर्थ शताब्दी से प्रारम्भ होता है और सत्रहवीं शताब्दी में समाप्त होता है। इस बीच के साहित्य में कथा,

अन्तर्कथा, आख्यान, दृष्टान्त, संवाद, चरित, प्रश्नोत्तर, प्रहेलिका, सूक्ति, कहावत, गीत आदि समाहित किये गये हैं। इन कथाओं को हरिभद्र सूरि ने चार भागों (अर्थ, काम, धर्म और संकीर्ण) में तथा उद्योतन सूरि ने तीन भागों (धर्म, अर्थ और काम) में विभाजित किया है। पुनः धर्मकथा चार भागों में विभक्त है– आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेदनी और निर्वेदिनी। उत्तरकाल में इन कथा भागों को और भी विभाजित किया गया है।

इस समय तक वैदिक आख्यानों का विकास भी प्रारंभ हो गया था। 'इतिहास पुराणाभ्यां वेद समुपबृंहयेत्' के रूप में पौराणिक शैली प्रचलित हुई जिसमें अतीत कथाओं के साथ ही यथोचित प्रवृत्तियों और परिस्थितियों के अनुरूप उनमें परिवर्तन और परिवर्धन किया गया। अतिशयोक्ति शैली का भरपूर उपयोग किया गया। उदाहरणार्थ पुरूरवा और उर्वशी का सहवास काल ऋग्वेद में चार वर्ष माना गया है पर पौराणिक वर्णन में उसे इकसठ हजार वर्ष कर दिया गया है। जनवर्ग को आकर्षित कर उसे धर्म में स्थिर करने के लिए इस साधन का प्रयोग किया गया। इन आख्यानों का सम्बन्ध अनुभूति से भले ही रहा हो पर उनमें अतिरंजना का तत्व बहुत अधिक जुड़ गया। वह तत्त्व पुराणों का अंग बन गया और कालान्तर में उसने स्वतन्त्र और पृथक् रूप में अपना विकास कर लिया। पुराण और इतिहास संवलित हो गया और अतिरंजना के तत्व में इतिहास तत्व पीछे रह गया। आख्यान, उपाख्यान, गाथा और कल्पों द्वारा दोनों तत्त्वों को विकसित किया गया और इन शब्दों का भी स्वतन्त्र विश्लेषण प्रारंभ हुआ। कौटिल्य अर्थशास्त्र और महाभारत ने पुराणों को श्रद्धेय और अतर्क्य घोषित कर दिया। वैदिक आख्यानों की पृष्ठभूमि में ही विष्णु-पुराण, वायुपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, मत्स्यपुराण, रामायण और महाभारत जैसे ग्रन्थों की रचना हुई है। इनके प्रतिसंस्करण भी प्राप्त होने लगे। समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाये तो लगभग सातवीं शताब्दी तक अष्टादश पुराण और महाकाव्य की परिसीमा निश्चित हो चुकी थी।

हरिभद्र सूरि को ये पौराणिक आख्यान सरलतापूर्वक उपलब्ध हो गये। वे स्वयं वैदिक पण्डित थे। जैनधर्म में दीक्षित होने पर उसके प्रगतिशील और व्यावहारिक तत्त्वों ने हरिभद्र के मन को आन्दोलित कर दिया और पौराणिक आख्यानों की अतिरंजित शैली ने अविश्वसनीयता को और गहरा बना दिया। उन्होंने आगमिक टीकाओं में इन आख्यानों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर दिया। धूर्ताख्यान[1] में तो उन्होंने रामायण, महाभारत और पौराणिक आख्यानों पर जो

1. संपादक डॉ. ए. एन. उपाध्ये, सिन्धी जैन ग्रन्थमाला, बम्बई, 1944 संघतिलकाचार्य का संस्कृत धूर्ताख्यान जैनग्रन्थ प्रकाशक सभा, राजनगर द्वारा 1945 में प्रकाशित हुआ।

कराया व्यंग्य विनोदात्मक ढंग से कहा है उससे उसकी असत्यता और अविश्वसनीयता और अधिक बढ़ जाती है। निशीथविशेष चूर्णी में धूर्ताख्यानक (पीठिका, पृ. 105) के उल्लेख से यह माना जा सकता है कि हरिभद्र के पूर्व भी इन आख्यानों का उपहास का कारण बनाया गया था। पर इसका सबल प्रयोग हरिभद्र ने ही किया है। उन्होंने धूर्ताख्यान में पांच धूर्तशिरोमणि-मूलश्री, कंडरीक, एलाषाढ, शश और खण्डपाणा के माध्यम से इन अविश्वसनीय पौराणिक आख्यानों को प्रस्तुत किया अपनी कल्पित अनुकूल कथाओं के सहारे।

हरिषेण की धर्मपरीक्षा (धम्मपरिक्खा) इसी धूर्ताख्यान के पदचिन्हों पर चलनेवाली अनूठी कृति है। इसमें भी मनोवेग अपने अभिन्न मित्र पवनवेग से इसी प्रकार की कल्पित कथाओं का सहारा लेकर महाभारत और पौराणिक आख्यानों का उपहास करता है। इस युग के अन्य जैनाचार्यों ने भी यत्र-तत्र अपने ग्रन्थों में इन कथाओं का पुरजोर खण्डन किया है। वसुदेवहिण्डी आदि कथा ग्रन्थों में यह प्रवृत्ति दृष्टव्य है। नन्दीसूत्र में रामायण, महाभारत आदि जैसे ग्रन्थों को मिथ्याशास्त्रों में परिगणित किया गया है। दार्शनिक क्षेत्र में यही प्रवृत्ति मिथ्यात्वखण्डन के रूप में विकसित हुई है। हरिषेण की प्रस्तुत 'धम्मपरिक्खा' भी उसी परम्परा में अनुस्यूत एक अपभ्रंश महाभारत कृति है जिसका संपादन प्रथम बार हो रहा है।

२. संपादन परिचय

१. प्रति परिचय

अमितगति की धर्मपरीक्षा से भी पूर्व हरिषेण ने अपभ्रंश में धम्मपरिक्खा की रचना की थी। इसकी दो हस्तलिखित प्रतियां भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना में सुरक्षित हैं। इन प्रतियों का परिचय इस प्रकार है-

i) प्रति A

इस पाण्डुलिपि का पुराना नं. है 617/1875-76 और नया नम्बर है 36। लेखन स्वच्छ और शुद्ध है। इसके कुल पत्र 75 हैं। प्रथम तीन पत्रों में आगे के लिए कुछ स्थान छोड़ दिया गया है। प्रति का प्रारम्भ "ॐ नमो वीतरागाय" से होता है। वह लाल स्याही में है शेष पूरी पाण्डुलिपि काली स्याही में लिखी गई है। हाशिये में कोई टिप्पण नहीं है। प्रत्येक पृष्ठ में ग्यारह पंक्तियां हैं। हर पंक्ति में 38 से लेकर 44 अक्षर हैं। इसमें आदि-अन्त में कोई समय प्रशस्ति नहीं है। यह पाण्डुलिपि किसी पुरानी पाण्डुलिपि के आधारपर तैयार की गई है। लिपि अधिक पुरानी दिखाई नहीं देती। इसके पत्र 56 a, 57, 69 अलिखित-से हैं। कागज कत्थे रंग का है।

ii) प्रति B

यह पूरी पाण्डुलिपि काली स्याही में लिखी गई है। इसका नं. है 1009/1887-91. यह पाण्डुलिपि प्रथम पाण्डुलिपि से अपेक्षाकृत पुरानी दिखती है। इसके पत्रों के किनारे कुछ टूट से गये हैं और कागज भी कुछ पुराना अधिक दिखाई देने लगा है। इसमें कुल पत्रे 138 हैं। अंतिम पन्ना कुछ टूट गया है और चौथा पत्रा गुम गया है। स्याही ठीक है, अक्षर सुन्दर और सुवाच्य हैं। प्रत्येक पन्ने में आठ या नौ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में लगभग 28 से 32 अक्षर हैं। हांशियों में जहां कहीं कुछ टिप्पण भी मिल जाते हैं संस्कृत में।

इस पाण्डुलिपि के पन्ना 138 A पर निम्नलिखित प्रशस्ति मिलती है–

'संवत् 1595 वर्षे पोषग्रमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ व मंगलवारे मघानक्षत्रे वि. (१) कुलनामजोगो ॥ अथ कसय। मोजाबाद वास्तव्ये राजाधिराज क व था ह क व र कूर्मवंदराज्यप्रवर्तमाने।

इसके बाद अंतिम पृष्ठ पर किसी दूसरी की हस्तलिपि में लिखा है– श्री. मूलसंघे भट्टारक श्री पद्मनंदि, तत्पट्टे भ. शुभचंद्र, तत्पट्टे भ. जिनचंद्र, तत्पट्टे भ. प्रभाचंद्र, मण्डलाचार्य भ. रत्नकीर्ति, तच्छिष्य मण्डलाचार्य त्रिभुवनकीर्ति तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सं. सूजू तत्पुत्र टेहक, भार्या लाजी तयोः पुत्र छीतर भार्या सुना इ. रक्षायां ज्ञानावर्णी कर्मक्षयं निमित्तं लिखाप्य ॥ मुनि देवनंदि योग्य दातव्यं ॥ शुभं भूयात् ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

लगता है, यह प्रति सं. 1595 के पूर्व की होगी। बाद में प्रशस्तिभाग किसी और ने जोड़ दिया है। इसकी अपेक्षा प्रथम पाण्डुलिपि अधिक शुद्ध है। इसलिए हमने उसी को आदर्श प्रति माना है।

२. पाठ-संपादन पद्धति

1- इन दोनों प्रतियों के माध्यम से प्रस्तुत संपादन को पूरा किया गया है। दोनों का अध्ययन करने से यह भी तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि वे एक दूसरी पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि नहीं है, बल्कि स्वतन्त्र पाण्डुलिपियों से उनकी प्रतिलिपियां की गई हैं। हमने प्रति A को आदर्श प्रति माना है और उसे पूरा और स्पष्ट करने के लिए प्रति B का सहारा लिया है। इनकी विशेषताएं इस प्रकार हैं –

2. आदि और मध्य न को ण। जैसे णयर, धणवाहणु आदि.

3. व को व। जैसे वित्थारें, बोल्लिएण आदि। प्रति A में जहां कहीं ब अवश्य मिलता है पर उसे भी ब कर दिया गया है।

4. भाई को भाइ।

5. ण दोनों पाण्डुलिपियों में मिलता है।

6. न कहीं कहीं मिलता है पर उसे भी ण कर दिया है।

7. मुद्रण की सुविधा की दृष्टि से अर्ध एकार ओकार को क्रमशः इकार और ओकार कर दिया है। जैसे मिइ, कुंतिहि, ससुरहो, महीयलि, भारहो, भासिविणु आदि.

8. यश्रुति और वश्रुति का यथास्थान प्रयोग

9. तृतिया एवं सप्तमी विभक्तियों के कारण प्रत्ययों तथा पूर्वकालिक कृदन्त शब्दों में इ तथा ए को स्वीकार किया गया है।

३. ग्रन्थकार परिचय

१. हरिषेण नाम के अनेक कवि

हरिषेण नाम के अनेक आचार्य हैं जिन्होंने जैन साहित्य की विविध विधाओं पर ग्रन्थ-रचना की है। उदाहरणार्थ–[1]

1) समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के लेखक हरिषेण (ई.सन्. 345)

2) अपभ्रंशग्रन्थ धम्मपरिक्खा के रचयिता (वि. सं. 1044)। इसके विषय में हम विस्तार से बाद में लिखेंगे।

3) कर्पूर प्रकार या सूक्तावली के रचयिता हरिषेण त्रिषष्टिशलाका पुरुष-चरित्र के रचयिता वज्रसेन के शिष्य थे (12 वीं शताब्दी)।

4) जगत्सुन्दरीयोगमलाधिकार के रचयिता हरिषेण

5) प्रभंजन के साथ वासवसेन के यशोधरचरित में उल्लिखित हरिषेण। उद्योतनसूरि की कुवलयमाला (ई. सन् 778) में प्रभंजन का उल्लेख किया गया है।

6) अष्टाह्निकाकथा का रचयिता हरिषेण जिसकी गुरु परम्परा है– रत्नकीर्ति, देवकीर्ति; शीलभूषण, गुणचन्द्र, हरिषेण।

7) बृहत्कथाकोश का रचयिता हरिषेण जो पुन्नाटसंघीय जिनसेन प्रथम की परंपरा में हुए हैं। अतः उनका समय ई. सन् की दशमी शताब्दी का मध्य भाग है।

---

1. डॉ. ए. एन. उपाध्ये, बृहत् कथाकोश, प्रस्तावना, P. 117–119.; भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 1943

२. धम्मपरिक्खा के रचयिता हरिषेण

धम्मपरिक्खा के रचयिता हरिषेण मेवाड़ में स्थित चित्रकूट (चित्तौड़) के निवासी थे। वे श्री उजौर (ओजपुर) से उद्भूत धक्कड़ वंश के थे। भविसयत्तकहा के रचयिता यशस्वी कवि धनपाल ने भी इसी वंश को सुशोभित किया था। इसी कुल में हरि नामक कोई प्रतिष्ठित कलाकार भी थे। उनके पुत्र और हरिषेण के पिता का नाम गोवर्धन और माता का नाम गुणवती था। पुत्र हरिषेण गुणगणनिधि और कुल गगन दिवाकर था। उन्होंने किसी कारणवश, कदाचित् व्यापारनिमित्त (णियकज्जें) चित्तौड़ छोड़कर अचलपुर पहुंच गये। वहीं उन्होंने छन्द, अलंकार का अध्ययन किया और धम्मपरिक्खा की रचना की। कवि ने स्वयं को, 'विबुह-कइ-विस्सुह' कहा है। धम्मपरिक्खा की प्रशस्ति में उन्होंने लिखा है–

इह मेवाड़–देसिजण संकुलि सिरिउजउर-णिग्गय-धक्कडकुलि।
पाव–करिंद–कुंभदारण–हरि जाउ कलाहिं कुसलु णामें हरि।
तासु पुत्त पर-णारि-सहोयरु गुण गण-णिहि कुल-गयण-दिवायरु।
गोवड्ढणु णामें उप्पण्णउ जो सम्मत्तरयण-संपुण्णउ।
तहो गोवड्ढणासु पिय गुणवइ जा जिणवर-पय णिच्च वि पणवइ।
ताए जणिउ हरिषेण–णाम सुउ जो संजाउ विवुह–कइ–विस्सुउ।
सिरि चित्तउडु चइवि अचलउरहो गउ णिय–कज्जें जिणहर पउरहो।
तहिं छन्दालंकार पसाहिय धम्मपरिक्ख एह तें साहिय।
जे मज्झत्थ मणुय आयण्णहिं ते मिच्छत्त–भाउ अवगण्णहिं।
तें सम्मत्त जेण मलु खिज्जइ केवलणाणु ताण उप्पज्जइ।

घत्ता– तहो पुणु केवलणाणहो णेयपमाणहो जीव–पएसहिं सुहडिउ।
बाहा-रहिउ अणंतउ अइसयवंतउ मोक्ख–सुक्ख–फलु पयडियउ ॥26॥

धम्मपरिक्खा की रचना वि. सं. 1044 में हुई जैसा कि निम्न कडवक (क्र 11.27) की पंक्तियों से सिद्ध होता है।

विक्कम–णिव–परिवत्तिए कालए ववगयए–वरिस–सहस–चउतालए।
इउ उप्पण्णु भविय-जण–सुहयरु डंभरहिय–धम्मासय–सायरु।

बुध हरिषेण के गुरु का नाम सिद्धसेन रहा होगा जैसा कि उन्होंने धम्मपरिक्खा की ग्यारहवीं सन्धि के कडवक 25 के अन्त में लिखा है–

सिद्धसेण–पय वंदहिं दुक्किउ णिंदहिं जिण हरिषेण णवंता।
तहिं थिय ते खग–सहयर कय धम्मायर विविह–सुहइं पावंता ॥ 11.25 ॥

इसके अतिरिक्त हरिषेण के विषय में और कुछ भी नहीं मिलता। उन्होंने अपने आपको "विबुध विबुलकवि" कहा है। इससे यह अनुमान तो किया ही जा सकता है कि उन्होंने कुछ और भी ग्रन्थ लिखे होंगे जो किन्हीं भण्डारों में छिपे पड़े हों।

समय

जहां तक कवि के समय का प्रश्न है, वह उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि हरिषेण ने अपना ग्रन्थ वि. सं. 1044 (ई. सन् 988) में लिखा था। क्षीरमूढकथा के प्रसंग में उन्होंने सागरदत्त नामक वणिक् का उल्लेख किया है जो समुद्र पारकर चोल (?) द्वीप गया और वहां तोमर राजा से मिला। उसने तोमर को दुग्ध-दधि मिश्रित व्यंजन खिलाये जिससे आकृष्ट होकर तोमर ने उस गाय की कामना की (3.4)। यहां हरिषेण ने 'णालिएर पुव्व हो गउ दीपहो' तो लिखा है पर चोल द्वीप का स्पष्टतः उल्लेख नहीं किया है। अमितगति ने अपनी धर्मपरीक्षा (7.64) में अवश्य यह जोड़ दिया है। तोमरवंशीय क्षत्रिय दिल्ली को ही अपना मूल स्थान मानते हैं। चंबल को तोमरों ने सन् 736 ई. में अपना राज्य हरियाणा क्षेत्र में स्थापित किया था। वे ई. सन् 1192 तक ढिल्लिका को राजधानी बनाकर राज्य करते रहे। मार्च 1192 ई. में तराईन के निर्णायक युद्ध में चाहड़पालदेव तोमर की मृत्यु के साथ तोमरों का दिल्ली साम्राज्य समाप्त हो गया और फिर ग्वालियर तोमर इतिहास प्रारम्भ हुआ। हरिषेण और अमितगति ने तोमर का उल्लेख तो किया है पर उस वंश के किसी सम्राट् का नामोल्लेख नहीं किया। साथ ही दक्षिणवर्ती चोल राज्य में तोमर का प्रवेश हुआ हो ऐसा कोई उल्लेख भी मुझे देखने नहीं मिला। हो सकता है, किसी युद्ध में कोई तोमर सम्राट हार गया हो, वह यों ही चोल द्वीप में पहुंच गया हो और बिना किसी प्रयत्न किये ही वह अपना राज्य वापिस लेना चाहता हो। इसी घटना को हरिषेण ने क्षीरमूढ कथा में कहकर उसकी इच्छा को मूर्खता किंवा उपहासास्पद कह दिया हो। जो भी हो, हरिषेण काल तोमरकाल रहा है इसमें कोई संदेह नहीं है।

इसी प्रकार हरिषेण ने तृतीय संधि के दसवें कडवक में दीणार और पल का उल्लेख किया है। दीणार का उल्लेख लगभग बारहवीं शताब्दी तक मिलता है। राजशेखर की राजतरंगणी में भी दीणार का सुन्दर वर्णन उपलब्ध है। पर यह उल्लेख हरिषेण के समय को निश्चित करने में अधिक सहायक नहीं हो पाता। कुल मिलाकर हम यही कह सकते हैं कि हरिषेण दसवीं शताब्दी के महाकवि थे।

दर्शनसार में देवसेन ने कहा कि है कि तीर्थंकर पार्श्वनाथ के तीर्थ में शुद्धोदन और उसके पुत्र महात्मा बुद्ध थे। बुद्ध ने संघ में रहकर मत्स्य, मांस

आदि का भक्षण करना प्रारंभ कर दिया। फलतः उन्हें संघ से निष्कासित कर दिया गया। बाद में उन्होंने संघ से पृथक् होकर अपने अलग धर्म की स्थापना कर ली जिसे बौद्धधर्म कहा जाने लगा। यह प्रसंग धम्मपरिक्खा की दशवीं संधि के दशवें कडवक में हरिषेण ने उद्धृत किया है। देवसेन का भी समय लगभग दशवीं शताब्दी माना जाता है। हरिषेण और देवसेन इस दृष्टि से समकालीन कवि सिद्ध होते है।

३. हरिषेण के पूर्ववर्ती कवि

हरिषेण ने अपने पूर्ववर्ती कवियों में चतुर्मुख, पुष्पदन्त, स्वयंभू, बुध सिद्धसेन और जयराम का उल्लेख किया है। धर्मपरीक्षा के प्रारंभ में ही—

सिद्धि पुरंधिहि कंतु सुद्धें तणु-मण-वयणें।
भत्तिए जिणु पणवेवि चिंतिउ बुहु-हरिषेणें॥

मणुयजम्मि बुद्धिए किंकिज्जइ मणहरु जाइ कव्वु ण रइज्जइ।
तं करंत अवियाणिय आरिस हासु लहहिं भड रणि गय-पोरिस।
चउमुहुं कव्वविरयणि सयंभु वि पुप्फयंतु अण्णाणु णिसंभिवि।
तिण्णि वि जोग्ग जेण त सीसइ चउमुह मुहे थिय ताव सरासइ।
जो सयंभु सो देउ पहाणउ अह कह लोयालोय-वियाणउ।
पुप्फयंतु णवि माणुसु वुच्चइ जो सरसइए कयावि ण मुच्चइ।
ते एवंविह हउं जडु माणउ तह छंदालंकार-विहूणउ।
कव्वु करंतु केम णवि लज्जमि तह विसेस पिय-जणु किह रंजमि।
तो वि जिणिंद-धम्म-अणुराएं बुधसिरि-सिद्धसेण-सुपसाएं।
करमि सयं जि णलिणि-दल-थिउजलु अणुहरेइ णिरुवमि मुत्ताहलु।

घत्ता— जा जयरामें आसि विरइय गाह-पबंधि।
साहमि धम्मपरिक्ख सा पद्धडिया-बंधि।

चतुर्मुख

हरिषेण ने जिन महाकवियों का उल्लेख किया है उनमें चतुर्मुख का नाम शीर्षस्थ है। लगता है, वे अपभ्रंश के कदाचित् प्राचीनतम कवि रहे हैं। यही कारण है कि स्वयंभू ने अपने पउमचरिउ, रिट्ठणेमिचरिउ और स्वयंभूछन्द में तथा पुष्पदन्त ने अपने महापुराण में उनका बड़े सम्मान के साथ उल्लेख किया है। पुष्पदन्त ने तो यहां तक लिखा है कि चतुर्मुख के तो चार मुख हैं, उनके आगे सुकवित्व क्या कहा जाये—चउमुहहु चयारि मुहाहिं जहिं, सुकइ तणु सीसउ काइं तहिं (महापुराण, 69 वीं संधि)। स्वयंभू ने कहा कि चतुर्मुख ने छर्दनिका, द्विपदी और ध्रुवकों से जटित पद्धड़ियां दी हैं (रिट्ठणेमिचरिउ)। उनके पउमचरिउ का वह उल्लेख भी स्मरणीय है जहां कहा गया है कि चतुर्मुख के

शब्दों को आज भी कोई नहीं पा सकता है। गोग्रहकथा वर्णन में-चउमुह एव च गोग्गहु कहाए। इन सभी उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि चतुर्मुख महाकवि स्वयंभू से भी पूर्ववर्ती होना चाहिए। कहा जाता है कि उनकी तीन प्रमुख कृतियां अपभ्रंश भाषा में लिखी गई हैं- पउमचरिउ, रिट्ठणेमिचरिउ तथा पंचमीचरिउ। धवल कवि ने हरिवंशपुराण में उनके एक और ग्रन्थ का उल्लेख किया है-'हरि पाण्डवानां कथा'। दुर्भाग्यवश महाकवि का अभी तक कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है। कवि का समय विक्रम की आठवीं शताब्दी है। हरिषेण ने उनके मुख में सरस्वती का निवास बताकर उनका सम्मान किया है।

स्वयंभूदेव

स्वयंभूदेव के पिता का नाम मारुतदेव और माता का नाम पद्मिनी था। उनकी तीन पत्नियां थीं- आदित्यदेवी, अमृताम्बा और सुअब्बा। इन तीनों ने कवि के ग्रन्थों को लिखने में काफी सहायता की थी। कवि के पिता भी कवि थे। उनके लड़के त्रिभुवन स्वयंभू भी अपने पिता के समान ही प्रतिभा संपन्न महाकवि थे। उन्होंने भी अपने पिता के ग्रन्थों को पूर्ण करने में अपनी प्रतिभा का उपयोग किया था। कवि मूलत: कोशल प्रदेश के थे। बाद में उन्हें राष्ट्रकूट राजा ध्रुव का मन्त्री मान्यखेट ले गया था। हरिषेण ने उन्हें लोकालोक मे विश्रुत माना है।

महाकवि ने पउमचरिउ और रिट्ठणेमिचरिउ में जिन पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख किया है उनमें रविषेणाचार्य सबसे बाद के हैं। रविषेण ने पदमचरित की रचना वि. सं. 734 में की अत: स्वयंभू की पूर्व कालावधि वि. की लगभग 8 वीं शती होगी। इसी तरह महाकवि पुष्पदन्त ने स्वयंभू का उल्लेख अपने महापुराण में किया है। महापुराण की रचना वि. सं. 1016 में हुई थी। अतएव स्वयंभू की उत्तरकालावधि वि. सं. 1016 है। जयकीर्ति और असग ने स्वयंभू का उल्लेख किया है। अत: कवि का समय नवमी शताब्दी होना चाहिए। महाकवि की तीन विशाल रचनायें उपलब्ध है- पउमचरिउ, रिट्ठणेमिचरिउ, और स्वयंभू छन्द। इनके अतिरिक्त तीन और ग्रन्थ उनके नाम पर उल्लिखित है-सोद्धयचरिउ, पंचमिचरिउ और स्वयंभूव्याकरण। कवि के सभी ग्रन्थ भाषा, विषय और शैली की दृष्टि से अनुपम हैं। रामकथा को नदी मानकर उसे उन्होंने बहुत सरस बना दिया है।

पुष्पदन्त

महाकवि पुष्पदन्त भी स्वयंभू के समान मूलतः ब्राह्मण थे पर जैनधर्म की विशेषता देखकर वे जैनधर्मपरायण हो गये थे। उनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम मुग्धादेवी था। वे बड़े स्वाभिमानी और स्पष्टवक्ता थे। महापुराण के अन्त में दी गई प्रशस्ति से उनके व्यक्तित्व की एक झलक मिल

जाती है। अभिमानमेरु, कविकुलतिलक, सरस्वतीनिलय और काव्यपिसल्ल जैसे उपाधिनामों से भी कवि के व्यक्तित्व का पता चलता है। वे राष्ट्रकूट के अंतिम सम्राट् कृष्ण तृतीय के महामात्य भरत द्वारा सम्मानित थे। भरत ही उन्हें विदर्भ से मान्यखेट ले गये और उन्ही की प्रेरणा से मान्यखेट में महापुराण की रचना हुई थी। हरिषेण ने उनकी माननीयता तथा विद्वत्ता का ससम्मान उल्लेख किया है।

महाकवि पुष्पदन्त के समकालीन राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीय रहे हैं। धवला और जयधवला ग्रन्थों का भी उन्होंने उल्लेख किया है। जयधवलाटीका वीरसेन ने अमोघवर्ष प्रथम वि. सं. 894 (A. D. 837) के आसपास की थी। हरिषेण के शिष्य जयसेन ने वि. सं. 1044 में उनका उल्लेख किया है। अतः महाकवि का समय वि. सं. 894 और 1044 के बीच तो होना ही चाहिए। धनपाल में पाइयलच्छी नाममाला में वि सं. 1029 में मालव नरेन्द्र द्वारा की गई मान्यखेट की लूट का उल्लेख है। पुष्पदन्त ने भी इस घटना का उल्लेख किया है। लगता है इस लूट को उन्होंने स्वयं देखा है और वे उसके बाद भी मान्यखेट में रहे हैं। अतः महाकवि का समय ई. सन् की दसवी शताब्दी होना चाहिए।

पुष्पदन्त की तीन रचनायें उपलब्ध हैं– महापुराण, णायकुमारचरिउ और जसहरचरिउ। ये तीनों ग्रन्थ रस, अलंकार और प्रकृतिचित्रण की दृष्टि से बेजोड़ हैं। उपमा और रूपक की शैली से कवि की विदग्धता का पता चलता है। देशी भाषा के शब्दों का बड़ा सुन्दर प्रयोग उन्होंने अपने ग्रन्थों में किया है।

बुध सिद्धसेन

हरिषेण ने बुध सिद्धसेन का उल्लेख (II·25) इस प्रकार से किया है जैसे वे उनके गुरु रहे हों–

घत्ता– सिद्धसेण–पय वंदहिं दुक्किउ णिंदहिं जिण हरिषेण णवंता।
तहिं थिय ते खग–सहयर कय धम्मायर विविह–सुहई पावंता॥

धम्मपरिक्खा के प्रारम्भ में भी उन्होंने बुध सिद्धसेन के 'प्रसाद' का उल्लेख किया है। हरिषेण के अतिरिक्त अन्यत्र बुध सिद्धसेन का उल्लेख देखने में नहीं आया।

जयराम

हरिषेण ने लिखा है कि जिस धम्मपरिक्खा को कवि जयराम ने गाथा प्रबंध में लिखा था उसी को उन्होंने पद्धड़िया छन्द में लिखा दिया है। इससे ऐसा लगता है कि 'धम्मपरिक्खा' का प्रारम्भ जयराम ने किया था। परन्तु यह ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ। अतः इसके विषय में कुछ भी कहना संभव

नहीं है। कवि जयराम का उल्लेख भी अन्यत्र नहीं मिलता। इतना अवश्य है कि हरिषेण ने जयराम की धर्मपरीक्षा के आधार पर ही अपनी धर्मपरीक्षा की रचना की होगी।

४. हरिषेण के समकालीन कवि

आचार्य हरिषेण का समय दशवीं शताब्दी के मध्यभाग से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक तक होना चाहिए। इस बीच अनेक महान् कवि और दार्शनिक हुए हैं। पुरुषार्थ सिद्धयुपाय आदि ग्रन्थों के रचयिता अमृतचन्द्र, तत्त्वानुशासन के रचयिता रामसेन, यशस्तिलकचम्पू के रचयिता सोमदेव, धर्मपरीक्षा के रचयिता अमितगति, हरिवंशपुराण के रचयिता धवलकवि, जम्बूस्वामि के रचयिता वीरकवि, सुदंसणचरिउ के रचयिता नयनंदि आदि महाकवि हरिषेण के समकालीन थे। दशवी-ग्यारहवी शताब्दी के और भी धुरंधर कवि हुए हैं जिन्होंने संस्कृत और अपभ्रंश में ग्रन्थ-रचना की है। उन ग्रन्थों की शैली भी लगभग एक जैसी ही है।

देवसेन, रविकीर्ति, आर्यनन्दी, मुनि रामसिंह, पद्मकीर्ति, इन्द्रनन्दि, वादिराज, वीरनन्दि, चामुण्डराय, पद्मनन्दि, धवल, नरेन्द्रसेन, मल्लिषेण, धनपाल, वाग्भट्ट, हरिचन्द्र आदि महाकवियों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय हरिषेण के काल में ही दिया है।

५. हरिषेण की धम्मपरिक्खा और अमितगति की धर्मपरीक्षा की तुलना

हरिषेण की धम्मपरिक्खा ई. सन् 1044 में समाप्त हुई और इसके 26 वर्ष बाद अमितगति (द्वितीय) की धर्मपरीक्षा वि. स. 1070 में पूर्ण हुई।[1] अमितगति मालवा के निवासी रहे हैं। उनका पंचसंग्रह धार के समीपवर्ती गांव 'मसीद-किलोदा' में लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा वीरसेन-देवसेन-अमितगति प्रथम (योगसार प्राभृतकार)-नेमिषेण-माधवसेन-अमितगति द्वितीय। पण्डित विश्वेश्वरनाथ ने अमितगति द्वितीय को वाक्पतिराज मुञ्ज की सभा के एक रत्न के रूप में प्रतिष्ठित किया है।[2] 'सुभाषित रत्न संदोह' की समाप्ति मुंज के ही राजकाल में वि. सं. 1050 में हुई। कवि के निम्नलिखित ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं— धर्मपरीक्षा, सुभाषितरत्नसंदोह, उपासकाचार, पंचसंग्रह, आराधना, भावना द्वात्रिंशतिका, चन्द्रप्रज्ञप्ति, सार्द्धद्वयद्वीपप्रज्ञप्ति और व्याख्याप्रज्ञप्ति।

हरिषेण की धम्मपरिक्खा अपभ्रंशशैली में ग्यारह सन्धियों में पूर्ण हुई।

---

1. संवत्सराणां विगते सहस्रे ससप्तती विक्रमपार्थिवस्य।
   इदं निषिध्यान्यमतं समाप्तं जिनेन्द्रधर्मामृतयुक्तिशास्त्रम् ॥
   धर्मपरीक्षा, प्रशस्ति भाग, श्लोक 20
2. भारत के प्राचीन राजवंश, प्रथम भाग, बम्बई सन् 1920, P. 101

इसमें कुल कडवक 238 हैं जो भिन्न भिन्न अपभ्रंश छन्दों में लिखे गये हैं। कुल ग्रन्थ 2 70 हैं। ये मेवाड़ निवासी हैं। मेवाड़ और मालवा में कोई विशेष दूरी नहीं है। दोनों समकालीन भी है। अमितगति की ध. प. से हरिषेण की ध.प. पहले लिखी गई। अतः अधिक सम्भावना यह है कि अमितगति के सामने हरिषेण की ध. प. रही होगी। हरिषेण की ध. प. विवरणात्मक अधिक है जबकि अमितगति एक कुशल कवि के रूप में आलंकारिक शैली में प्रत्येक तत्व का वर्णन करते हैं। हरिषेण ने सप्तम संधि में लोक स्वरूप को तथा अष्टम संधि में जैन परम्परागत रामकथा को कुछ विस्तार से लिखा है जबकि अमितगति ने कुछेक श्लोकों में ही उसे निपटा दिया है। हरिषेण ने अन्तिम संधि में रात्रि भोजन-कथा का विस्तार किया है पर अमितगति उसको सिद्धान्त रूप उल्लिखित करके आगे बढ़ गये। इसी तरह अमितगति ने जैन सिद्धान्त, नीतितत्व, प्रकृतिचित्रण, आदि को जिस आकर्षक और काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है वह हरिषेण नहीं कर सके। हरिषेण का सन्धि विभाजन अमितगति के अध्याय विभाजन से अधिक युक्ति-संगत है। इन विशेषताओं और विभिन्नताओं के बावजूद लगता है, हरिषेण की धम्मपरिक्खा अमितगति की धर्मपरीक्षा का आधारभूत ग्रन्थ रहा होगा। इन दोनों ग्रन्थों की विषयगत तुलना हम नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं-

हरिषेण की धम्मपरिक्खा   प्रथम सन्धि   अमितगति की धर्मपरीक्षा

कडवक	श्लोक
1. पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख	प्रथम परिच्छेद - 1. 16
2. जम्बूद्वीप वर्णन	1.17–20
3. विजयार्ध पर्वत वर्णन	1.21–27
4. वैजयन्ती नगरी वर्णन	1.28–31
5. राजा जितशत्रु वर्णन	1.32–36
6-7. जितशत्रु की पत्नी वायुवेगा और पुत्र मनोवेग	1.37–47
8. मनोवेग का मित्र पवनवेग, विजयापुरी नगरी के राजा का पुत्र। उसका जैन मंदिर के दर्शनार्थ गमन	1.48–55. प्रियापुरी नगरी का राजपुत्र
9. जंगल में मुनिदर्शन। अवन्ति देश का वर्णन	1.56–57
10. उज्जैयिनी नगरी का वर्णन	1.58–65
11. उज्जैयिनी के वन का वर्णन	1.66
12. वन में विराजित जैन मुनि का वर्णन और उनसे प्रश्न	1.67–70 प्रथम परिच्छेद समाप्त और
13. संसार वर्णन—मधुबिन्दु दृष्टान्त	2.1–7 द्वितीय परि. प्रारंभ

14. मधुबिन्दु कथा समाप्त	2.8–21 यहां इस कथा में कुछ अन्तर है पर विस्तार समान है।
15. धर्म का प्रभाव	2.22–79 यहां इसका विस्तार अधिक है। यहीं योगिराज द्वारा कुशल प्रश्न भी हैं 2.80–89.
16. मुनि से प्रश्न और उनका उत्तर। पवनवेग के मिथ्यात्व को दूर करने का मार्ग बताना।	2.90-95 द्वितीय परिच्छेद समाप्त।
17. मनोवेग और पवनवेग के बीच संवाद। मनोवेग द्वारा जिनदर्शन की बात कहकर पाटलिपुत्र का उल्लेख करना।	तृतीय परिच्छेद। मित्रता की विशेषता पूर्वक दोनों के बीच संवाद 3.1–26
18. पाटलिपुत्र की विशेषतायें। बाद में	3.27–43
19–20. पवनवेग ने मनोवेग से कौतुक प्रदर्शन करने का आग्रह किया।	

द्वितीय संधि

1. दोनों मित्रों का पटना–गमन	3.44–58
2–3. दोनों कुमारों का रूप वर्णन और उनका वादशाला में प्रवेश	3.58–68 काव्यात्मक तत्व अधिक है
4–6 शास्त्रार्थ विप्रगण का एकत्रित होना और उनसे कुमारों का संवाद	3.69–95 तृतीय परिच्छेद समाप्त
7–8. षोडश–मुष्टिक न्याय की प्रसिद्धि	4.1–39
9. दस मूढों की कथा	4.40–46
10–16. रक्त मूढ कथा (1) बहुधान्यक और उसकी पत्नी सुन्दरी और कुरंगी के बीच	4.47–76–95 चतुर्थ परिच्छेद समाप्त। यहां स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन विस्तार है जो हरिषेण की ध.प. में नहीं है। 15.1–76
16-17. द्विष्ट मूढ कथा (2) स्कन्ध और वक्र। वक्र ने मरने के बाद स्कन्ध पर आक्रमण किया।	5.77–97 संसार का विस्तृत विवरण जो हरिषेण की ध. प. में नहीं है।

18–23.	मूढो मूढ कथा(3)-कंठोष्ठनगर में भूतमति ब्राह्मण, उसकी पत्नी यज्ञा और शिष्य यक्ष। ब्राह्मण के जाने पर दोनों में संबन्ध। ब्राह्मण का आगमन। वह दोनों को खोजने निकला पर यज्ञा पत्नी और यक्ष शिष्य को उस ब्राह्मण ने नहीं पहचान पाया	यहां भी संसार का चित्रण है, नारी और कामुकता का भी 6.1–95
24.	व्युद्ग्राही मूढ कथा (4)– दुर्धर राजा उसका काणी जात्यन्ध पुत्र । लोहदण्ड से उसपर प्रहार करना	7.1–19

तृतीय सन्धि

1.	पित्तदूषित मूढ कथा (5)	7.20–28
2–3.	आम्र मूढ कथा (6)	7.29–62
4–6.	क्षीर मूढ कथा (7)	7.63–96
7.	अगुरु मूढ कथा (8) गजरथ और मंत्री का संवाद	8.1–9
8.	धन की महिमा	8.10–21 हरिषेण ने विस्तार नहीं किया
9.	खेत की चंदन लकड़ी काटना और फिर कोदों बोना	8.22–34
10.	चंदन का बेचना और दुःखी होना	8.35–49
11.	चंदनत्यागी मूर्ख की कथा (9) मथुरा नरेश उपशान्तमन को पित्तज्वर और उसकी शान्ति कथा	8.50–73
12–13	चार मूर्खों की कथा (10) सर्वाधिक मूर्ख कौन है, इसका निश्चय करना	8.92–95
14.	प्रथम मूर्ख कथा–मूषक द्वारा आंख का जलाया जाना और विषमेक्षण नाम रखना	9.4–20
15.	द्वितीय मूर्ख कथा-दोनों पत्नियों ने दोनों पैर तोड़ दिये और उसका कूटहंसगति नाम रख दिया।	9.21–43

16.	तृतीय मूर्ख कथा–दस पुत्रों की शर्त में अपनी संपत्ति चोरों को लुटा देना	9.44–49
17–19.	चतुर्थ मूर्ख कथा–वल्लस्फोट कथा	9.50–95
20.	मनोवेग का प्रश्न–विष्णु के संदर्भ में	10.1–20
21.	विष्णु पर प्रश्न चिन्ह	10.21–40
22.	ब्राह्मणों को निरुत्तर कर मनोवेग वादशाला से बाहर आया	10.41–51

चतुर्थ संधि

1–2.	विष्णु कथा–अकंपनाचार्य कथा	10.52–65
3.	मार्जार बेचने के लिए मनोवेग वादशाला पहुंचा	10.66–74
5–6.	मार्जार के दोष और गुण। कूपमण्डूक, कृतक बधिर और क्लिष्टभृत्य जैसे के सामने तत्व की बात न कहना	10.75–100
7.	मण्डप कौशिक कथा	11.1–8
8.	मण्डप कौशिक की पुत्री छाया और महादेव का संबन्ध। महादेव का गंगा से भी संबन्ध	11.9–25 यहां गंगा का प्रसंग मात्र एक श्लोक में है। पर हरिषेण ने इसका विस्तार किया है।
10–12.	हरि (विष्णु) की कामुकता और कृष्ण का सुन्दर रूप	11.26–28
13–16.	ब्रह्मा और तिलोत्तमा का प्रेम सम्बन्ध	11.29–47
17.	ब्रह्मा ने महादेव को शाप दिया	11.48–48
18.	ब्रह्मा की रीछनी से जांबव नामक पुत्र। इन्द्र ने भी गौतम ऋषि की पत्नी का उपभोग किया। यमराज के पास छाया पुत्री के रखने का संकल्प	11.59–65
19.	यमराज ने छाया को पत्नी बनाया। अग्नि ने भी छाया का उपभोग करना चाहा।	11.66–82
20.	प्रच्छन्न रूप से छाया के साथ अग्निदेव का रमण। छाया द्वारा उसका उदरस्थ किया जाना। यमराज ने दोनों को उदरस्थ कर लिया	11.73–93

21.	पवनदेव का देवों को निमन्त्रण। अग्निदेव का प्रगट होना और भय से वृक्षों-शिलाओं में छिप जाना	11.94–95 12.1–9
22	यमराज और अग्निदेव के देवत्व पर प्रश्न चिन्ह। मार्जार के दोष की स्वीकृति क्यों नहीं ?	12.10–15
23.	आप्त का स्वरूप-वीतरागता व निष्कामता	12.16–26

पंचम संधि

1.	देवों में ऋद्धियों का होना	12.27–29
2–6.	शिश्नच्छेदन कथा	12.30–33
7.	स्वर शिरश्छेदन कथा	12.34–52
8–9.	जल पर तैरती शिला तथा वानरनृत्य कथा	12.53–76
10–11.	कमण्डलु में हाथी का प्रवेश और उसमें से उसका निर्गमन	12.77–92
12.	विप्रगण द्वारा आश्चर्य–व्यक्त किया जाना	12.93–97 13.1–6
13.	युधिष्ठिर द्वारा रसातल से दस करोड़ सेना और शेषनाग सहित सप्तर्षियों को ले आना	13.7–17
14–15	अगस्त्य और ब्रह्मा की सृष्टि कथा	13.18–36
16–17	ब्रह्मा, विष्णु आदि की कथाओं पर प्रश्नचिन्ह	13.37–53
18–20	जिनेन्द्र गुणों की विशेषता	13.54–102 यहां और भी पौराणिक कथाओं का उल्लेख है।

षष्ठ सन्धि

1–18	इस संधि में लोकस्वरूप का विस्तृत वर्णन है।	अमितगति ने इसे बिलकुल छोड़ दिया है

सप्तम संधि

1.	मनोवेग ने पटना की अन्य वादशाला में पहुंचकर अपनी कथा कही	14.1-10
2.	मैं साकेत नगरी की वृहत्कुमारिका का पुत्र हूं। पिता के मात्र स्पर्श से मेरा जन्म हुआ। बारह वर्ष तक दुष्काल के भय से गर्भ में ही रहा।	14.11-23
3-4	बाद में चूल्हे के पास जन्म होते ही मैंने भोजन मांगा। फलत: मां ने मुझे घर से निष्कासित कर दिया।	14.24-32
5.	घर से निकलकर मैंने एक वर्ष तक तपस्या की। साकेत में मैंने मां को पुनर्विवाहित देखा	14.33-38
6.	पुराणानुसार पत्नी किन्हीं विशेष परिस्थितियों में विवाह कर सकती है।	12.39-45
7-8	पुराण का अर्थ कहने पर भय व्यक्त किया	14.46-54
9.	भागीरथी से भगीरथ और गांधारी से सौ पुत्रों की उत्पत्ति कथा	14.55-61
10.	गर्भस्थ अभिमन्यु के समान उसने भी तपस्वियों के वचन सुने	14.62-67
11-13	बारह वर्ष तक गर्भस्थ रहना भी प्रामाणिक है। यम की कन्या ने अपना गर्भ सात हजार वर्ष तक रखा। बाद में उसी गर्भ से रावण का पुत्र इन्द्रजीत हुआ।	15.68-80
14-15	पाराशर और योजनगन्ध कथा	14.81-91
16-17	उद्दालक और चन्द्रमुखी कथा	14.92-101
18.	समापन	15.1-15

अष्टम सन्धि

1.	जैन पुराणानुसार कर्ण कथा। विचित्र वीर्य के तीन पुत्र—धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर	15.17-21

2.	पाण्डु और चित्रांगद के बीच संवाद	15.22–31
3.	कर्ण कथा-कुन्ती के साथ पाण्डु का विवाह	15.32–41
4–5.	युधिष्ठिर आदि पाण्डवों का मोक्ष गमन	15.42–55
6.	व्यास का गंगास्नान और फिर ताम्रभाजन का न मिलना	15.56–66 यहां पुराणों की समीक्षा जैन दृष्टिकोण से की गई है जो हरिषेण ने नहीं की।
7.	मनोवेग पटना की एक और अन्य वादशाला में पहुंचे	15.67–74
8–9.	बौद्ध भिक्षुओं को श्रृगाल द्वारा आकाश में उठा ले जाना	15. 75–94
10.	रामचंद्रजी का वनवास से लेकर श्रीलंका में प्रवेश	15.95–98
11.	समीक्षात्मक समापन	16.1–21 यहां यह समीक्षा अधिक विस्तृत है।
12.	विद्याधरवंशोत्पत्ति कथा	अमितगति ने इसका वर्णन नहीं किया
13–15.	राक्षस वंशोत्पत्ति कथा	"
16–21.	वानर वंशोत्पत्ति कथा	"
22.	समीक्षात्मक समापन	"

नवम सन्धि

1.	मनोवेग ने पुनः पौराणिक कथाओं की व्याख्या की	16.22–27
2-3.	कपित्थखादन कथा	19.22–37–43
4–5.	इस कथा की समीक्षा	16.44-57 यहां अधिक विस्तृत समीक्षा है।
6–10.	दधिमुख और जरासंध कथा। बिना धड़ के व्यक्ति का सिर एक दूसरे धड़ पर गिरने पर जुड़ जाना	16.58–84

11-12.	समीक्षा-जब जरासंघ का धड़ जुड़ सकता है तो हमारा धड़ क्यों नहीं जुड़ सकता? श्राद्ध में परलोक में पिता को भोजन मिल सकता है तो हमारा पेट क्यों नहीं भर सकता ?	16.85-93
13.	कुदेव, कुशास्त्र, कुगुरु की जगह सुदेव, सुशास्त्र और सुगुरु का महत्व	यहां यह वर्णन नहीं मिलता।
14.	वैदिक पुराणों की समीक्षा	16.99-100
15-17.	बलि और रावण का प्रसंग अस्पष्ट	•
1--25.	पौराणिक समीक्षा के साथ जैनेन्द्रदेव की विशेषता, धर्म का महत्व आदि वर्णित है	16.102-104 यहां यह विस्तार से नहीं है।

दशम संधि

		17 वें परिच्छेद में वेदों की अपौरुषेयता, जातिवाद, स्नानवाद, भूतत्ववाद, अकर्मवाद, सृष्टिकर्तृत्व आदि का खण्डन है और आत्मा का अस्तित्व, कर्म-वाद आदि की सिद्धि की गई है। हरिषेण की ध. प. में यह सब नहीं है।
1.	उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल, चौदह कुलकर	18.1-21
2.	अंतिम कुलकर के पुत्र ऋषभदेव, उनका विवाह, पुत्र, पुत्रियां	18.22-29
3-10.	ऋषभदेव का तप वर्णन। उनके साथ दीक्षित राजाओं का पथ-भ्रष्ट होना तथा मिथ्यात्व का उदय	18 27-84
11-12.	पवनवेग का जैन धर्म की ओर झुकाव और उनका उज्जैयिनी में जैन मुनि के पास पहुंचना	18.85-100
13.	मुनिचंद्र के पास पहुंचकर मनोवेग ने पवनवेग को व्रत देने का निवेदन किया।	19.1-11

14.	श्रावक व्रतों का वर्णन । अष्टमूल गुण व बारह व्रत	19.12
15.	चार शिक्षाव्रत-सामायिक, प्रोषधोपवास, अतिथिसंविभाग, भोगोपभोगपरिमाण । सल्लेखना, रात्रिभोजनत्याग, जिनमंदिर-दर्शन, जिनपूजन पर भी जोर दिया है ।	19.13-101 इसमें अधिक विस्तृत विवेचन है ।
16.	पवनवेग द्वारा श्रावक व्रतों का ग्रहण । इसमें रात्रिभोजन त्याग भी है ।	

ग्यारहवीं सन्धि

1.	मेवाड़ का वर्णन	यह वर्णन यहां नहीं है ।
2.	मेवाड़ की उज्जैयिनी का वर्णन	
3-10.	निशि भोजन कथा	20.1-12 रात्रिभोजन कथा नहीं है । उसके दुष्परिणाम अवश्य दिये है ।
11-21.	आहार दान कथा	20.23-52 प्रोषधोपवास, आहारदान आदि का वर्णन स्पष्ट व्यसन त्याग ।
22.	पंचणमोकार मंत्र जप, फल, अतिथि संविभाग, अभयदान आदि कथायें	53-63 ग्यारह प्रतिमाओं का वर्णन । 64-80 सम्यग्दर्शन आदि का वर्णन ।
23-27.	अंत में हरिषेण प्रशस्ति और धर्मपरीक्षा लिखने का उद्देश्य ।	81-90 पवनवेग का जैन-धर्म में दीक्षित होना, धर्मपरीक्षा का उद्देश्य प्रशस्तिभाग में दिया गया है ।

इन दोनों धर्मपरीक्षाओं की तुलना करने पर यह सहजता पूर्वक समझ में आ जाता है कि अमितगति ने विषय सामग्री हरिषेण से ली और उसे अपनी प्रतिभा से विस्तार देकर दो माह में ही अपनी धर्मपरीक्षा को समाप्त कर दिया (अमितगतिरिवेदं स्वस्य मासद्वयेन, प्रथित विशदकीर्तिः काव्यमुद्भूतदोषम्, 20-90) । शैली भी दोनों की समान है । मनोवेग कल्पित कथायें बनाकर विप्रगण के समक्ष प्रस्तुत करता है और जब वे उन कथाओं पर विश्वास नहीं

करते तो तुरन्त लगभग वैसी ही कथायें पुराणों से निकालकर उपस्थित कर देता है।

हरिषेण काव्यात्मक वर्णन के चक्कर में न पड़कर विवरणात्मक शैली को अपनाते हैं। इसलिए वे अमितगति के समान न परम्परागत स्त्रियों की अधिक निन्दा करते हैं, न मित्रता के अधिक गुण गाते हैं, न संसार के दोष बताते हुए अधिक समय तक रुकते हैं और न धन की महिमा का गुणगान करते हैं। वे तो द्रुतगति से पौराणिक कथाओं को कहते हुए आगे बढ़ते जाते हैं उन्होंने सप्तम सन्धि में लोक स्वरूप का, आठवीं संधि में रामकथा का तथा ग्यारहवीं सन्धि में रात्रिभोजन–विरमण आदि कथाओं का विशेष विवेचन किया है जिसे अमितगति ने संक्षेप में ही उल्लेख मात्र कर निपटा दिया है। संधिगत विषय के अध्ययन से हरिषेण की एक यह विशेषता दृष्टव्य है कि उन्होंने सन्धि–विभाजन का जो वैज्ञानिक तरीका अपनाया है वह अमितगति के परिच्छेद विभाजन में दिखाई नहीं देता। अमितगति तो कथा को बीच में ही छोड़कर परिच्छेद परिवर्तन कर देते हैं पर हरिषेण ने ऐसा नहीं किया।

दोनों धर्मपरीक्षाओं की भाव और भाषा की दृष्टि से भी तुलना की जा सकती है। जहां उन्होंने पारम्परिक शैली को अपनाया है।

हरिषेण की धम्मपरिक्खा	अमितगति की धर्मपरीक्षा
1) तं अवराहं खमसु वराहं तो हसिऊणं मरुवेयेणं। भणिओ मित्तो तं परभुत्तो माया णेहिय अप्पाणे हिय (11.19)	यत्त्वां धर्ममिव त्यक्त्वा तत्र भद्र चिरं स्थित। अमितव्यं ममाशेषं दुर्विनीतस्य तत्त्वया॥ उक्तं पवनवेगेन हसित्वा शुद्धचेतसा। को धूर्तो भुवने धूर्तै र्वञ्च्यते न वशंवदैः॥
2) हा हा कुमार पच्चक्ख मार (2.3)	जातः तामो द्विधा नूनमित्थं भावन्त काश्चन (3.61)
3) इय दुण्णि वि कुणय-तणय-तणं गिण्हेविणु लक्कड-भारमिणं। आइय गुरुपूर णिएवि मए वायउ ण उ जायए वायमए॥ 2.5	तं जगाद खचराङ्गजस्ततो भद्र निर्धनशरीरभूरहं। आगतोऽस्मि तृणकाष्ठविक्रयं कर्तुमत्र नगरे गरीयसि॥ 3.85
4) णिद्धण जाणेविणु आरएहिं तप्पिय आगमणासंकिएहिं।	पत्युरागमनमवेत्य विटौघैः सा विलुण्ट्य सकलानि धनानि।

मुक्की झड त्ति झाडे वि केम
परिपक्क पंथि थिय चोरि जेम ।
थिय-पिय-आगमणु मुणंतियाए
किउ पवसिय-पिय-तिय-वेसु ताए ।।2।।

मुच्यते स्म बदरी द्युवर्ग-
स्तस्करैरिव फलानि पथिस्था ।।
सा विबुध्य दयितागमकाल
कल्पितोत्तमसतीजनवेषा ।
तिष्ठतिस्म भवने त्रपमाणा
वञ्चना हि सहजा वनितानाम् ।।
8.44-85

5) भणिउ तेण भो णिसुणहि गहवइ
छाया इव दुग्गेज्झ महिला-मइ । 2.15

चोरीव स्वार्थतनिष्ठा
वह्नि ज्वालेव तापिका ।
छायेव दुर्ग्रहा योषा
सन्ध्येव क्षणरागिणी ।। 5.59

6) भणिउ ताय संसारे असारए
को वि ण कासु वि दुह गरुयारए ।
सुय-मणुएं सहु अत्थु ण गच्छइ
सयणु मसाणु जाम अणुगच्छइ ।
धम्माहम्मु णवर अणुलग्गउ
गच्छइ जीवहु सुह-दुह-संगउ ।
इय जाणेवि ताय दाणुल्लउ
चिंतिज्जइ सुपत्ते अइभल्लउ ।
इट्ठ-देउ णिय-मणि झाइज्जइ
सुह-गइ-गमणु जेण पाविज्जइ ।
-2.16

तं निजगाद तदीयतनूज-
स्तात विधेहि विशुद्धमनास्त्वम् ।
कंचन धर्ममपाकृतदोषं
यो विदधाति परत्र सुखानि ।
पुत्रकलत्रधनादिषु मध्ये
कोऽपि न याति समं परलोके ।
कर्म विहाय कृतं स्वयमेकं
कर्तुमलं सुखदुःखशतानि ।।
कोऽपि परो न निजोऽस्ति दुरन्ते
जन्मवने भ्रमतां बहुमार्गे ।
इत्थमवेत्य विमुञ्च कुबुद्धिं
तात हितं कुरु किंचन कार्यम् ।।
मोहमपास्य सुहृत्तनुजादौ
देहि धनं द्विजसाधुजनेभ्यः ।
संस्मर कंचन देवमभीष्टं
येन गतिं लभसे सुखदात्रीम् ।।
5. 82-85

7) 3.9 — 8. 22-34

अमितगति की धर्मपरीक्षा का आधारभूत कोई प्राकृत अथवा अपभ्रंश में लिखा ग्रन्थ अवश्य होना चाहिए। अन्यथा दो माह में इतना बड़ा ग्रन्थ कैसे बन सकता था। Mironow ने भी अपने अध्ययन में इस संभावना को पुष्ट किया है। चौहार (7.63), संकराट मठ (8.10) जैसे शब्द किसी प्राकृत ग्रन्थ से ही गृहीत हो सकते हैं। इसी तरह योषा की व्युत्पत्ति जष्, जोष् से खोजने की भी क्या आवश्यकता थी——

यतो जोषयति क्षिप्रं विश्वं योषा ततो मता ।
विदधाति यतः क्रोधं भामिनी भण्यते ततः ॥
यतश्छादयते दोषैस्ततः स्त्री कथ्यते बुधैः ।
विलीयते यतश्चित्तमेतस्यां विलया ततः ॥

अमितगति की धर्मपरीक्षा जिस प्रकार मात्र दो माह में तैयार हो गई थी उसी प्रकार उनकी संस्कृत आराधना और संस्कृत पंचसंग्रह ग्रन्थ भी लगभग चार–चार माह में रच लिये गये थे जो क्रमशः शिवार्य की प्राकृत भगवती आराधना और प्राकृत पंचसंग्रह का संस्कृत संक्षिप्त अनुवाद मात्र है। यह उनके संस्कृत भाषा पर असाधारण अधिकार का फल था और आशुकवि होने का प्रमाण भी। धम्मपरिक्खा के प्रारंभ में भी उन्होंने यह स्पष्ट लिखा है कि उनके पूर्व कवि जयराम ने धर्मपरीक्षा को गाथा छन्द में निबद्ध किया था और उसी को उन्होंने पद्धडिया छन्द में लिखा है। जयराम का ग्रन्थ अभी तक अनुपलब्ध है। इसलिए उसके विषय में कुछ भी कहना उचित नहीं होगा पर इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि अमितगति ने प्राकृत में लिखे जयराम के ग्रन्थ को भी अपना आधार बनाया होगा। इसके समर्थन में एक और प्रमाण रखा जाता है कि अमितगति ने धर्मपरीक्षा में हट्ट (3.6), जेमति (5.39, 7.5), गहिल (13.23), कचार (15.23), जैसे प्राकृत शब्दों को समाहित किया है जबकि हरिषेण ने ऐसे स्थलों में क्रमशः 1.17, 2.24 (णउ भुजइ), 2.18, 5.14, 8.1 कडवकों में इन शब्दों का उपयोग नहीं किया है।

इससे यह लगता है कि अमितगति के समय जयराम की धम्मपरिक्खा और कदाचित् हरिषेण की भी धम्मपरिक्खा रही होनी चाहिए। अमितगति ने जिस नगरी को प्रियापुरी (1.48) और संगालो कहा है, हरिषेण ने उन्हें क्रमशः विजयापुरी (विजयाउरी) (1.8) तथा मंगालो (2.7) शब्द दिये हैं। हरिषेण ने जयराम का उल्लेख बहुत स्पष्ट शब्दों में कर दिया है जबकि अमितगति ने ऐसा कोई उल्लेख नहीं किया। अतः जब तक जयराम की प्राकृत धम्मपरिक्खा उपलब्ध नहीं होती तब तक यह अनुमान मात्र लगाया जा सकता है कि अमितगति और हरिषेण, दोनों ने उसे अपना आधार बनाया है। पर चूंकि हरिषेण की अपभ्रंश धम्मपरिक्खा उपलब्ध है अतः यह अनुमान लगाना अनुचित नहीं होगा कि अमितगति के समक्ष यह ग्रन्थ भी रहा होगा। पूर्वोक्त परिच्छेदगत विभाजित विषय सामग्री से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि अमितगति ने हरिषेण के विषय को विस्तार मात्र दिया है।

साधारणतः यह नियम रहा है कि पूर्वपक्ष प्रस्तुत करते समय मूल उद्धरण उपस्थित किये जाने चाहिए। हरिषेण ने तथोक्तं कहकर इस परम्परा का पालन किया है पर अमितगति ने उन्हें अपनी इच्छानुसार परिवर्तित रूप में ग्रन्थ के मूल रूप में समाहित कर दिया है। उदाहरणार्थ

1) हरिषेण की धर्मपरिक्खा (4.1) में

तथा चोक्तम् —

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः ।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश ।।
अक्षराक्षरनिर्मुक्तं जन्ममृत्युविवर्जितं ।
अव्ययं सत्यसंकल्पं विष्णुध्यायी न सीदति ।।

अमितगति ने इन्हें इस प्रकार दिया है—

व्यापिनं निष्कलं ध्येयं जरामरणसूदनम् ।
अच्छेद्यमव्ययं देवं विष्णुं ध्यायन्न सीदति ।।
मीनः कूर्मः पृथुः पोत्री नारसिंहोऽथ वामनः ।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की दश स्मृताः ।। 10.58–9.

2) हरिषेण की DP. 5.7 में

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च ।
तस्मात् पुत्रमुखं दृष्ट्वा पश्चाद्भवति भिक्षुकः ।।[1]

इसे अमितगति ने इस प्रकार लिखा है-

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो न तपसो यतः ।
ततः पुत्रमुखं दृष्ट्वा श्रेयसे क्रियते तपः ।। 11.8

3) हरिषेण ने D.P 4.7 में-

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पती ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ।।[2]

अमितगति में यह इस प्रकार मिलता है-

पत्यौ प्रव्रजिते क्लीबे प्रनष्टे पतिते मृते ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ।। 11.12

4) हरिषेण D.P 4–9 में-

का त्वं सुन्दरि जान्हवी किमिह ते भर्ता हरो नन्वयं
अम्भस्त्वं किल वेत्सि मन्मथरसं जानात्ययं ते पतिः ।
स्वामिन्सत्यमिदं न हि प्रियतमे सत्यं कुतः कामिनां
इत्येवं हरजान्हवीगिरिसुतासंजल्पनं पातु वः ।।

---

1. Cf. यशस्तिलकचम्पू (बम्बई, 1903), भाग 2, P. 286 पर यह श्लोक उद्धृत हुआ है ।
2. पाराशर स्मृति, 4.28 मनुस्मृति, गुजराथी प्रेस, बम्बई, 1913, P–9, श्लोक 126

अमितगति की DP. में इससे मिलता-जुलता कोई श्लोक दिखाई नहीं दिया।

5) हरिषेण के DP. 5.12 में-

अङ्गुल्या कः कपाटं प्रहरति कुटिले माधवः किं वसन्तो
नो चक्री किं कुलालो न हि धरणिधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः।
नाहं घोराहिमर्दी किमसि खगपतिर्नो हरिः किं कपीशः
इत्येवं गोपवध्वा चतुरमभिहितः मातु वश्चक्रपाणिः ॥[1]

6) हरिषेण की DP. 5.9 में-

तथा चोक्तं तेन-

अश्रद्धेयं न वक्तव्यं प्रत्यक्षमपि यद्भवेत्।
यथा वानरसंगीतं तथा सा प्लवते शिला॥

अमितगति DP. में यह इस प्रकार में मिलता है--

तथा वानरसंगीतं त्वयादर्शि वने विभो।
तरन्ती सलिले दृष्टा सा शिलापि मया तथा।
अश्रद्धेयं न वक्तव्यं प्रत्यक्षमपि वीक्षितं।
जानानैः पण्डितैर्नूनं वृत्तान्तं नृपमन्त्रिणोः॥ 12.72-3.

7) हरिषेण DP. 5.17 में-

भो भो भुजंगतरुपल्लवलोलजिह्वे
बन्धूकपुष्पदलसन्निभलोहिताक्षे।
पृच्छामि ते पवनभोजनकोमलाङ्गी
काचित्त्वया शरदचन्द्रमुखी न दृष्टा॥

अमितगति ने इसे छोड़ दिया है

8) हरिषेण DP. 7.5 में

अद्भिर्वाचापि दत्ता या यदि पूर्ववरो मृतः।
सा चेदक्षतयोनिः स्यात्पुनः संस्कारमर्हति॥[2]

अमितगति DP. 14.38 में कुछ परिवर्तन के साथ यह छन्द इस प्रकार है-

एकदा परिणीतापि विपन्ने दैवयोगतः।
भर्तर्यक्षतयोनिः स्त्री पुनः संस्कारमर्हति॥

---

1. सुभाषितरत्न भाण्डागार (दशावतार, P.38, श्लोक 166), बम्बई, 1891 में यह श्लोक कुछ परिवर्तन के साथ उद्धृत है।
2. वशिष्ठ स्मृति, 17.64

9) हरिषेण DP. 7.6 में–

अष्टौ वर्षाण्युदीक्षेत ब्राह्मणी पतितं पतिं ।
अप्रसूता च चत्वारि परतोऽन्यं समाचरेत् ॥

अमितगति DP. 14.39 में इस प्रकार है–

प्रतीक्षेताष्ट वर्षाणि प्रसूता वनिता सती ।
अप्रसूतात्र चत्वारि प्रोषिते सति भर्तरि ॥

10) हरिषेण DP. 7.8 में–

पुराणं मानवो धर्मः साङ्गो वेदश्चिकित्सकम् ।
आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभि. ॥[1]

अमितगति DP 14.49 में इसे इसी रूप में उद्धृत कर दिया है ।

(11) हरिषेण DP. 7.8 में–

मानवं व्यासवासिष्ठं वचनं वेदसंयुतम् ।
अप्रमाणं तु यो ब्रूयात् स भवेद्ब्रह्मघातकः ॥

अमितगति DP 14.50 में इस प्रकार मिलता है–

मनुव्यासवशिष्ठानां वचनं वेदसंयुतम् ।
अप्रामाण्यतः पुंसो ब्रह्महत्या दुरुत्तरा ॥

(12) हरिषेण DP. 8.6 में–

गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ।
पश्य लोकस्य मूर्खत्वं हारितं ताम्रभाजनम् ॥

अमितगति DP 15 64 में इस प्रकार मिलता है–

दृष्ट्वानुसारिभिर्लोकैः परमार्थविचारिभिः ।
तथा स्वं हार्यते कार्यं तथा मे ताम्रभाजनम् ॥

(13) हरिषेण DP. 9.25 में–

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं
काले शक्त्या प्रदानं युवतिजनकथामूकभावः परेषाम् ।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो गुरुषु च विनतिः सर्वसत्त्वानुकम्पा
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतमतिः श्रेयसामेष पन्थाः ॥[2]

अमितगति ने इसी रूप में इन्हें ग्रहण नहीं किया है ।

---

1. यशस्तिलकचम्पू, भाग 2, P. 119 पर उद्धृत; मनुस्मृति, 12.110-11
2. यशस्तिलकचम्पू, भाग 2, P. 99 तथा सुभाषितरत्न भाण्डागार, P. 282 (श्लोक 1056) पर कुछ परिवर्तन के साथ ये श्लोक उद्धृत हुए हैं । भर्तृहरि नीतिशतक, 54

14) हरिषेण DP. 10.9 में–

a) स्वयमेवागतां नारीं यो न कामयते नरः।
ब्रह्महत्या भवेत्तस्य पूर्वं ब्रह्मावबोधितम् ॥

B) मातरमुपैहि स्वसारमुपैहि पुत्रार्थी न कामार्थी ॥
अमितगति में यह उपलब्ध नहीं है।

४. विषय-परिचय

१. प्रथम संधि

बुध हरिषेण शुद्ध मन, वचन, काय से भक्ति पूर्वक जिनेन्द्र भगवान को प्रणाम कर धर्मपरीक्षा रचने की प्रतिज्ञा करते हैं। उसके बाद वे अपने पूर्ववर्ती कवियों में चतुर्मुख, स्वयंभू और पुष्पदन्त कवियों का उल्लेख करते हैं, तीनों का स्मरणकर वे यह भी कहते हैं कि चतुर्मुख के मुख में सरस्वती निवास करती है। स्वयंभू लोकालोक का ज्ञाता है और पुष्पदन्त को सरस्वती कभी छोड़ती नहीं। इनकी तुलना में, आगे कवि अपनी विनम्रता प्रगट करते हुए कहता है, कि मैं छंद और अलंकार के ज्ञान से विरहित हूँ, काव्य रचने में लज्जा का अनुभव हो रहा है फिर भी जिनधर्म के अनुरागवश काव्य रचना कर रहा हूँ। बुध श्री सिद्धसेन को प्रणाम करके यहां वे यह भी स्पष्टतः कहते हैं कि धर्मपरीक्षा पहले कवि जयराम ने गाथा में रची थी। उसी को वे पद्धडिया छन्द में रच रहे हैं ॥१॥ इसके बाद कथा प्रारंभ होती है।

मनोवेग और पवनवेग कथा

यहां जम्बूवृक्ष से चिन्हित जम्बूद्वीप है जिसमें जिनवर के वचन की तरह भरतक्षेत्र शोभायमान है। उसमें रमणीय विशाल उद्यान, नगर, ग्राम आदि अपनी अनुपम शोभा से स्थित हैं। उसके मध्य विजयार्ध नामक विशाल पर्वत है जिसमें एक सुन्दर जिनालय है जो पक्षिकुलों का घर है। यह पर्वत उत्तर और दक्षिण श्रेणी में विभाजित है। उसपर विद्याधरों के उत्तर श्रेणी में साठ और दक्षिण श्रेणी में पचास नगरियां विद्यमान हैं (2–3)। उन पचास नगरियों में एक नगरी वैजयन्ती है जो कामिनी की तरह जन साधारण की आंखों की प्यारी है, विशाल उपवनों से सुशोभित है, उत्तुंग भवनों, गोपुरों और शिखरों से विराजित है ॥4॥ उस नगरी का राजा जितशत्रु था जिसने नीति पूर्वक अपने शत्रु राजाओं को पराजित किया था। यहां विरोधाभासालंकार में राजा की अनेक विशेषताओं का वर्णन है जिनमें सत्यवान्, सत्यपिपासु, विनयी, इन्द्रिय-विजयी और अतुलबली होना प्रमुख है ॥5॥

उस जितशत्रु की वायुवेगा नामकी पतिव्रता और रूपवती पत्नी थी तथा अनंग की तरह सुन्दर मनोवेग नाम का पुत्र था। वह पुत्र सज्जनों को प्रसन्न करने वाला और दुर्जनों को कुचलने वाला था, परधन का अपहरणकर्ता नहीं था, आत्मवत् दूसरों को देखनेवाला था, बारह व्रतों का पालक था (6-7)। उसका पवनवेग नाम का अभिन्न मित्र था जो विजयापुरी नगरी के विद्याधर राजा का पुत्र था। पवनवेग मिथ्यादृष्टि और कुतर्की था पर मनोवेग सम्यग्दृष्टि और जैनधर्मावलम्बी था। मनोवेग पवनवेग को सन्मार्ग पर लाने के लिए चिन्तित रहता था। एक दिन वह कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्यालयों के दर्शन करने निकल पड़ा (8) चलते चलते एक स्थान पर उसका विमान अटक गया। उसने सोचा कि उसके विमान का किसी शत्रु ने रोका है अथवा किसी ऋद्धिधारी-केवलज्ञानी मुनि का प्रभाव है। कौतुहलवश उसने निर्जन जंगल में एक मुनि को देखा। वह जंगल अवन्ति देश की उज्जैनी नगरी का था। उस नगरी में एक सुन्दर उपवन था जिसमें एक निष्कलंक मुनीश्वर विराजमान थे। तुरन्त वह आकाश से उतरकर पूरे सम्मान के साथ उन्हें प्रणाम कर एक ओर बैठ गया और विनम्रता पूर्वक एक प्रश्न पूछा "हे मुनीन्द्र ! इस असार संसार में भ्रमण करने वाले जीव को कितना सुख है और कितना दुःख है ?" (9-12)

मुनीश्वर ने मधुबिन्दु का दृष्टान्त देते हुए इस प्रश्न का उत्तर दिया। उन्होंने कहा- किसी व्यक्ति ने संसार रूपी अटवी के समान महावन में प्रवेश किया। उसने यमराज के समान सूंड को ऊंची किये क्रोधित हाथी को अपने सम्मुख आते देखा। पथिक हाथी के भय से बेतहाशा आगे भागा और संयोगवशात् कुये में गिर गया। वहां बीच में ही सरस्तंब अथवा बड़की जड़ (कास?) को पकड़कर लटक गया। नीचे जब उसने देखा तो पाया कि एक विशाल अजगर बीच में और चार भुजंग चारों कोनों में मुंह खोले पड़े हुए हैं, ऊपर देखने पर पता चला कि उसी सरस्तंब की डगाल को एक श्वेत और एक काला चूहा काट रहा है। उसी समय उस वृक्ष के मूल भाग को हाथी ने जोर से हिलाया और फलतः उसमें लगी मधुमक्खियां उस व्यक्ति को लपट गईं। दुःख से कराहते हुए जैसे ही उसने ऊपर देखा कि मधुमक्खियों के छत्ते से मधु का एक बिन्दु उसके मुंह में टपक गया (13)। वह अज्ञानी मधुबिन्दु के उस क्षणिक स्वाद से अपने आपको महासुखी मानने लगा और पुनः उसकी अभिलाषा करने लगा। बस संसार में ऐसा ही सुख-दुःख है। उस मधुबिन्दुकथा में अटवी और कूप संसार के प्रतीक हैं, पुरुष जीव का, हाथी मृत्यु का, भीलों का मार्ग अधर्म का प्रतीक है, अजगर नरक है, वृक्ष कर्मबन्ध है, सरस्तम्ब आयु है, श्वेत और अश्वेत मूषक शुक्ल और कृष्णपक्ष हैं, चार भुजंग चार कषायें हैं, मधुमक्षिकायें शरीर के रोग हैं मधुबिन्दु का स्वाद इन्द्रियजनित क्षणिक सुख है। इस तात्त्विक चिन्तन के माध्यम से व्यक्ति को संसार-सागर से पार होना चाहिए। धर्म

से स्वर्ग और मनुज भव मिलता है और धर्म से ही शरीर निरोग होता है ।।14।। धर्म के प्रभाव से अपरिमित उत्तुंग कंचन-विनिर्मित भवनों में निवास करता है, धर्म से स्वच्छ चामर धारण करता है, धर्म से विविध मणिकुण्डल धारण करता है, महापुरुषों से स्नेह पाता है, धर्म से सर्वत्र पूजा होती है, धर्म के बिना उसे कुछ भी नहीं मिलता । और तो क्या, जो कुछ भी सुख है, वह धर्म का ही फल है ।।15।।

अवसर पाकर मनोवेग विद्याधर ने मुनिवर से पूछा-उसका परम मित्र पवनवेग अत्यन्त मिथ्यादृष्टि है। वह कभी सम्यक्त्व प्राप्त कर सकेगा या नहीं ? मुनिवर ने उत्तर दिया- देवों की प्रिय नगरी पटना (पुष्पनगर) में उसे ले जाकर परस्पर प्रमाणों से विरोधित अन्य मतों को प्रत्यक्षत: दिखलाकर जैन सिद्धान्तों को यदि तुम समझाओगे तो वह सम्यग्दृष्टि हो जायेगा और कर्मबन्ध को विनष्ट करने में सक्षम होगा । यह सुनकर मनोवेग मुनिवर की चरणवन्दना-कर शीघ्र ही विमान में बैठकर घर की ओर चल पड़ा (16) । जिस विमान पर बैठकर मनोवेग गया उस विमान को पवनवेग ने देख लिया । देखते ही उसने मनोवेग से कहा-मित्र ! तुम मुझे छोड़कर कहां चले गये थे ? मैंने तुम्हें क्रीड़ास्थल, पर्वत, सरोवर, प्रांगण, जिनमंदिर आदि सभी स्थानों पर देखा, पर तुम दिखाई नहीं दिये । जब मैं इस ओर आया तो तुम आते हुए दिखाई दे गये । तुम्हारे वियोग में मैं इधर-उधर भटकता रहा ।

मनोवेग ने तब कहा-मित्र इस प्रकार कुपित मत होओ। मैं मध्यलोकवर्ती जिन-चैत्यालयों के दर्शन करने गया, उनकी भक्ति-पूर्वक वन्दना की । भरत-क्षेत्र में मैंने भ्रमण करते हुए स्वर्गनगरी के समान सुन्दर पाटलिपुत्र देखा जहां चतुर्वेदों की ध्वनियां सुनकर पक्षी छिप जाते हैं (17) । उस पाटलिपुत्र में गंगा नदी के किनारे कमंडलु और त्रिदण्ड को धारण किए हुए कुछ मुण्डित सन्यासी दिखाई दिये । वे हरि हरि हरि का उच्चारण करते हुए स्नान करने में व्यस्त थे । वे ब्रह्मशाला में बैठकर वाद, जल्प, वितण्डा किया करते हैं, विष्णु-पुराण, भागवतपुराण आदि की व्याख्या करते हैं, वैशेषिक, मीमांसा आदि शास्त्रों का उपदेश करते रहते हैं, कहीं-कहीं ग्रहज्योतिषी और कपिलमतानुयायी भी दिखाई देते हैं, अग्निहोत्रादि कर्म करते हुए श्रोत्रिय ब्राह्मण अनेक प्रकार से दाक्षिणाग्नि में हवन करते हैं, कोई षट्कर्म में लीन हैं अन्य ब्रह्मचारी हैं, और कोई अक्षमाला लिये हुए कमलासन पर आसीन हैं । हे मित्र ! वहां जाकर मैंने जो कुछ भी देखा उसे तुम्हें कह दिया । फिर भी पूरा वर्णन करना संभव नहीं है (18) । इतनी देर तक अनुपस्थित रहा । अत: इस अविनयी का अपराध क्षमा करो । मनोवेग के ये वचन सुनकर पवनवेग ने हंसकर कहा-मित्रवर ! इन कौतुकों को मुझे भी दिखाओ । मुझे उन्हें देखने की बड़ी उत्कंठा है । जो

मित्र होता है, वह कभी भी मित्र की प्रार्थना को निष्फल नहीं जाने देता। अतः मुझे पाटलिपुत्र ले चलो और मेरे वचनों का उलंघन मत करो ॥19॥ मनोवेग ने उसकी इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। उसने कहा कि कल प्रातःकाल भोजन करके चलेंगे। दोनों मित्रों ने मिलकर घर पर स्वादिष्ट भोजन किया और ताम्बूल भक्षण कर प्रसन्नचित्त हुए ॥20॥

२. द्वितीय संधि

पटना की ओर प्रस्थान

दूसरे ही दिन सूर्योदय होने पर मनोवेग और पवनवेग पटना नगर की ओर चल पड़े। उन्होंने नगर के बाहर एक मनोहर उद्यान देखा। वहां हिंताल, ताल, कंकेलि, हरिचंदन, कर्पूर आदि लताओं की मनमोहक सुगन्धि फैल रही थी। उसमें वे दोनों मित्र कामदेव जैसे शोभित हो रहे थे। मनोवेग ने पवनवेग से कहा कि जैसा वह कहे, वैसा ही अनुसरण करे। पवनवेग ने इसे स्वीकार कर लिया। तब दोनों मित्रों ने मणि, कुण्डल आदि आभूषण पहनकर तथा सिर पर तृण और काष्ठ रखकर कौतूहल पूर्वक नगर में प्रवेश किया। उनको देखकर लोग विनम्रतापूर्वक कहने लगे-ये लोग शिर पर तृण-काष्ठ रखकर क्यों घूम रहे हैं ? ये या तो मूढ़ हैं अथवा क्रीडा कर रहे हैं। मणि मुकुट धारण कर तृण-काष्ठ बेचनेवाले नहीं हैं, ये तो विद्याधर से लगते हैं ॥ 1 ॥

यह जानकर कुछ लोग यह भी विचार करने लगे कि दूसरे की चिन्ता करने का प्रयोजन क्या है ? वह तो पापबन्ध का कारण है। इसी बीच जब नगर वधुओं ने उन्हें देखा तो वे काम-पीड़ित हो गईं। वे कहने लगीं- ये तो साक्षात् कामदेव हैं। किसी ने कहा- ऐसे तृण-काष्ठधारी सुन्दर युवकों को मैंने अभी तक नहीं देखा। किसी ने कहा सखि, जाओ, पूछो, तृण-काष्ठ का मूल्य क्या है ? जो भी मूल्य हो, दे दो। यौवन के साथ मूल्य का क्या महत्व है ? इस प्रकार नगर निवासियों के वचन सुनते हुए वे दोनों कुमार ब्रह्मशाला (वादशाला) में पहुंचे और तृण-काष्ठ का भार उतारकर भेरी बजा दी तथा सिंहासन पर बैठ गये। भेरी का शब्द सुनकर विप्रगण एकत्रित हो गये और मैं वाद करूंगा, मैं वाद करूंगा कहते हुए उन विद्याधरों के पास पहुंच गये ॥ 3 ॥

मनोवेग के रूप को देखकर वे आश्चर्यान्वित हो गये। वे कहने लगे कि यह तो साक्षात् नारायण है, विष्णु परमेश्वर है पर विष्णु तो चतुर्भुज होते हैं, ब्रह्मा है, पर ब्रह्मा तो चतुर्मुखी होते हैं, इन्द्र है, पर इन्द्र तो सहस्राक्ष है। इस तरह सोचकर उन्होंने कुमारों से पूछा-क्या तुम वाद करोगे ? कनकासन पर क्यों बैठ गये हो ? इस नगर में चारों वेदों के ज्ञाता हैं और सभी धर्मों के

अध्येता हूं। यहां से कोई भी विद्वान वाद जीतकर वापिस नहीं गया। तुम दिव्य मणियां और आभूषणों से विभूषित हो अवश्य, पर या तो तुम्हें वायुरोग है, या तुम पिशाच पीड़ित हो, या कामदग्ध हो। ये वचन सुनकर मनोवेग ने कहा– आप लोग व्यर्थ ही क्रोध कर रहे हैं। हम लोग तो इस सिंहासन पर कौतुकवश बैठ गये हैं। भेरी वादन भी यों ही कर दिया है। हम लोग तो तृण–काष्ठ बेचने वाले हैं। तुम्हारे पुराण और रामायण ग्रन्थों में हम जैसे बहुत लोग हैं ॥ 4–6 ॥

षोडश मुष्टि न्याय

विप्रों ने कहा– यदि पुराण में तुम्हें ऐसे पुरुष मिले हों तो बताओ, हम अवश्य विश्वास करेंगे। मनोवेग ने कहा– हम बता तो सकते हैं, पर भय लगता है। आप लोगों में कोई विचारवान् नहीं दिखाई देता। विचार रहित मूढ़जन सत्य कथित को भी असत्य बुद्धि से 'सोलह मुक्की न्याय' की रचना करते हैं। विप्रगण ने कहा– यह 'सोलह मुक्की न्याय' क्या है ? मनोवेग ने कहा– सुनो मैं बताता हूं– मलय देश में सुखरूप संगाल नामक एक ग्राम है। उसमें मधुकर नामक एक गृहपति रहता था। पिता के प्रति रोष के कारण वह घर से बाहर निकल गया और आभीर देश में पहुंच गया। वहां उसने आश्चर्यपूर्वक विभाग की हुई चनों की अनेक राशियां देखीं। ग्रामपति के पूछने पर उसने कहा– आश्चर्य इसलिए कि जैसे यहां चनों की राशियां हैं वैसे ही हमारे यहां मिरचों की राशियां हैं। ग्रामपति ने सोचा हमारे यहां मिरचें नहीं मिलतीं है इसका यह उपहास कर रहा है। इसलिए इसे दण्ड दिया जाना चाहिए। यह सोचकर उसने मधुकर को अपने सेवकों से मस्तक पर आठ मुक्के लगवाये। सत्य वादन का यह फल जानकर वह वापिस अपने नगर संगाल पहुंचा। वहां उसने मिर्च की राशियां देखीं और कहा कि जैसे यहां मिरचों के ढेर हैं वैसे ही आभीर देश में मैंने चनों के ढेर देखे हैं। इस कथन को उपहास मानकर यहां भी उसे आठ मुक्के खाने पड़े। तभी से यह "षोडश मुष्टि न्याय" प्रसिद्ध हो गया। इसका तात्पर्य है कि बिना प्रमाण के सत्य नहीं बोलना चाहिए। जो बोलता है वह असत्यभाषी की तरह दण्ड पाता है। इसी प्रकार मूर्खों के बीच सत्यवादी भी नहीं होना चाहिए। आप से सत्य कहा भी जायेगा तो आप लोग विश्वास नहीं करेंगे ॥ 7–8 ॥

दस मूर्खों की कथा

ब्राह्मणों ने कहा– आभीर देश वालों के समान हम लोग मूर्ख नहीं हैं। तुम निश्चिन्त होकर अपनी बात कहो। मनोवेग ने कहा– रक्त, द्विष्ट, मनोमूढ, व्युद्ग्राही, पित्तदूषित, आम्र, क्षीर, अगुरु, चन्दन और बालिश (मूर्ख) ये

दस प्रकार के मूर्ख हैं जो पूर्वापर विचार रहित पशुओं के तुल्य हैं। इनका वर्णन इस प्रकार है-

१. रक्त मूढ़ कथा

रेवा नदी के दक्षिणी किनारे पर सामन्त नगर में एक बहुधान्यक नाम का ग्रामकूट (प्रमुख) रहता था। उसकी दो सुन्दर स्त्रियां थीं- सुन्दरी और कुरंगी। सुन्दरी वृद्धा थी। उसे छोड़कर उसने तरुणी कुरंगी से विवाह किया। कुछ समय बाद बहुधान्यक ने उस साध्वी पत्नी सुन्दरी को अलग कर दिया और कुरंगी के साथ भोगपूर्वक समय बिताने लगा। सुन्दरी ने इसे अपना पापकर्म का फल मानकर शान्ति पूर्वक रहने लगी (9)। इस बीच बहुधान्यक को राजा की सेना का प्रबंधक होकर बाहर जाना पड़ा। कुरंगी इस विरह को नहीं सह पाती और साथ जाने का आग्रह करती है पर बहुधान्यक उसके हरे जाने के भय से साथ नही ले जाना चाहता। अतः वह उसे समझाकर सेना के साथ चला गया और कुरंगी को सारी धन संपत्ति के साथ घर छोड़ गया। बहुधान्यक के जाते ही कुरंगी स्वच्छन्द हो गई। और अपने जारों के साथ काल-यापन करने लगी। उनके साथ रमण करते हुए उसने अपनी सारी संपत्ति भी नष्ट कर डाली नौ-दस दिनों में ही। जब उसने पति के आगमन का समाचार सुना तो वह पतिभक्ता और धर्मनिष्ठा बनकर घर में रहने लगी। बहुधान्यक ने गांव में प्रवेश करने के पूर्व ही एक व्यक्ति के साथ कुरंगी के पास अपने आने का समाचार भेज दिया। उसने कहा उस संदेशवाहक से कि प्रथम दिन का भोजन तो ज्येष्ठा के साथ होना चाहिए। यह सोचकर वे दोनों सुन्दरी के पास गये। और कहा कि तुम्हारा पति विदेश से वापिस आ गया है और आज वह तुम्हारा ही स्वादिष्ट भोजन करेगा (11)। सुन्दरी ने कहा- मैं भोजन (रसोई) बनाऊंगी परन्तु तुम्हारा पति भोजन यहां नहीं करेगा, तुम्हारे घर ही करेगा। फिर भी सरलस्वभावा सुन्दरी ने षट्रस भोजन तैयार किया। वह रक्त पुरुष भोजन करने के लिए सीधे कुरंगी के घर गया। निर्धना कुरंगी ने अपनी स्थिति को छिपाने के लिए कर्कश और अपमानात्मक शब्दों में उसे सुन्दरी के पास जाने के लिए कहा। उसी बीच सुन्दरी ने अपना पुत्र भेजकर बहुधान्यक को निमन्त्रित किया ॥ 12 ॥

कुरंगी की भयानक भ्रकुटि को देखकर बहुधान्यक आश्चर्य में पड़ गया। सुन्दरी ने उसे बड़े स्नेह और सम्मान से षट्रसमयी भोजन कराया। फिर भी उसका मन कुरंगी की ओर लगा रहा (13)। प्रणय कुपित दृष्टि वाली कुरंगी मुझ से क्यों रुष्ट है ? शायद उसने मुझे गलत समझ लिया है। तब श्वास-निश्वास करते हुए उसने कहा- मुझे कुरंगी के घर से कुछ भी ला दो। तभी भोजन अच्छा लगेगा। सुंदरी कुरंगी के पास गई और कहा कि तुम्हारे भोजन

के बिना उसे मेरा स्वादिष्ट भोजन भी व्यर्थ लग रहा है। कुरंगी के पास तो कुछ था ही नहीं। उसने क्रोधित होकर पतले गोबर मे कुछ गेहूं चने के दाने डालकर, व्यजन के रूप में उसे दे दिया (14)। आसक्त बहुधान्यक उसे पाकर कृतकृत्य-सा हो गया और बड़ा स्वादिष्ट मानकर उसे खा गया। रक्त पुरुष क्या नहीं कर सकता? महिलायें सर्पगति जैसी कुटिला होती हैं। रक्त पुरुष उनके कार्यों को नहीं समझ पाता। बहुधान्यक अपने दोष-अपराध की ओर सोचता रहा (15)। पूछने पर ब्राह्मण ने बताया- इस कुरंगीने अपनी सारी संपत्ति अपने जारों में लुटा दी। बहुधान्यक ने यह बात कुरंगी से जाकर कह दी। कुरगो ने भट्ट पर अपने शीलापहरण का दोष लगाकर उसके विषय में भला-बुरा कहा। बहुधान्यक ने उसकी बात सही मानकर उसे निकाल दिया। स्त्री में आसक्त पुरुष स्त्री के दोष नहीं जान पाता और अपने ही हितचिन्तक के विरुद्ध हो जाता है। (15-16)।

२. द्विष्ट मूढ कथा-

मनोवेग ने दूसरी द्विष्ट मूढ कथा कही-सौराष्ट्र देश के कोटि नगर में बड़े सपन्न दो व्यक्ति थे- स्कन्ध और वक्र। इनमें वक्र अत्यन्त कुटिलगामी और दुखदायी था। दोनों मे परस्पर विरोध था। एक बार वक्र को कोई असाध्य रोग हो गया। तब उसके पुत्र ने संसार की असारता समझाते हुए सरल प्रकृति बनकर धर्म-धारण करने का आग्रह किया। वक्र ने उसपर ध्यान नहीं दिया। बल्कि कालानुरूप जानकर उसने अपने पुत्र से कहा (16)-हे वत्स, मैंने स्कन्ध के विनाश का पूरा प्रयत्न किया पर उसमें सफल नही हो पाया। अब तुम इस काम को पूरा करना। ऐसा प्रयत्न करना जिससे इसका समूल विनाश हो जाये। उपाय यह है कि मेरे मर जाने पर तुम मेरे मृत शव को स्कन्ध के खेत में लकड़ियों के सहारे खड़ा कर देना और अपनी गाय-भैंस उसके खेत में छोड़ देना। यह देखकर वह मेरे उपर आक्रमण करेगा। यह सब तुम छिपे हुए देखते रहना। जैसे ही वह आक्रमण करे, तुम जोर से चिल्लाना कि वक्र ने मेरे पिता को मार डाला। राजा यह जानकर स्कन्ध को मृत्यु दण्ड दे देगा। यह कहकर वक्र मर गया। पुत्र ने गलत होते हुए भी अपने पिता को आज्ञा का पालन किया। वक्र ने फलस्वरूप नरक दुःख पाये। द्विष्ट पुरुष अपनी हानि सोचे बिना ही दूसरे को दुख देने में प्रसन्नता का अनुभव करता है (17)।

३. मनो मूढ कथा

मनोवेग ने कहा- कंठोष्ठ नाम का एक नगर था। वहां एक वेदपाठी भूतमति ब्राह्मण रहता था। उसकी बाल्यावस्था शास्त्राभ्यास में ही निकल गई। पचास वर्ष की अवस्था हो जाने पर कुटुम्बियों ने उसका विवाह एक तरुणी

यज्ञा से कर दिया । ब्राह्मण पण्डित के पास एक सुन्दर यज्ञ नामक तरुण शिष्य आया । यज्ञा उसपर मोहित हो गई । एक समय मथुरा में पुण्डरीक नामक यज्ञ कराने के लिए मथुरावासियों ने भूतमति को आमन्त्रित किया । भूतमतिने ब्राह्मणी को समझाया- तुम घर के भीतर सोना और बटुक को बाहर सुलाना । यह सब कहकर वह मथुरा चला गया (18) । अपने पति के चले जाने पर यज्ञा और यज्ञ दोनों निरंकुश हो गये । खुले भाव से वे मदन-क्रीडा में व्यस्त हो गये । चार माह रमण करते हुए बीत गये । एक दिन बटुक ने खिन्न मन से कहा (19)- भट्ट जी के आने का समय हो गया है । मेरा मन यहां से जाने का भी नहीं है और रहना भी कठिन हो गया है । तुम्हें छोडकर कैसे जाऊं । यज्ञा ने कहा- तुम निश्चित रहो । एक उपाय बताती हूं । हम दोनों यहां से बहुत सारी संपत्ति लेकर अन्यत्र चले चलेंगे । तुम दो शव ले आओ । बटुक दो शव ले आया । यज्ञा ने एक शव को भीतर और एक को बाहर रख दिया और संपत्ति लेकर दोनों बाहर निकल गये । साथ ही घर में आग लगा दी । नगर वासियों ने देखा कि दो शव जले पडे हैं । उनकी सूचना पर भूतमति आया और शोक विव्हल हो गया । वह यज्ञा और यज्ञ की प्रशंसा करता हुआ दुःखी होता रहा (20) । लोगों ने उसे संसार की अवस्था तथा स्त्री के स्वरूप का विविध रूप से चित्रण करते हुए समझाया । पर उसकी आसक्ति नही गयी । वह मूढ ब्राह्मण दो तूंबी लेकर उनमें दोनों की अस्थियां भरकर गंगाजी में प्रवाहित करने के लिए चल पडा । मार्ग में उसे यज्ञ बटुक मिल गया । बटुक ने पैरों पर गिरकर अपराध क्षमा करने की प्रार्थना की । ब्राह्मण ने घबराकर कहा- मेरा बटुक तो जल गया और आगे बढ गया । बाद में उसे यज्ञा पत्नी भी दिख गई । उससे भी उसने यही कहा । इन दोनों को देखकर भी भूतमति ब्राह्मण को विश्वास नहीं हुआ । वह उन्हें छोडकर दूसरे नगर में चला गया । दोनों ने सत्य स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया फिर भी ब्राह्मण को विश्वास नहीं हुआ । आसक्त पुरुष ऐसा ही होता है (23) ।

४. व्युद्ग्राही मूढ कथा

एक समय मंडुरद्वारा नामक नगरी में दुर्बंद्ध नाम का एक राजा था । उसका कालयम्ब नामक पुत्र था । वह बडा दानी था । प्रतिदिन वह आभूषण आदि का वितरण किया करता था । यह देखकर मन्त्री को चिन्ता हुई । उसने राजा से मिलकर एक उपाय सोचा मंत्री ने लोहे के आभरण और याचकों को मारने के लिए एक लोहे का दण्ड लाकर राजकुमार को दिया और कहा कि ये गहने कुलक्रमागत हैं । इन्हें किसी को नहीं देना । यदि दोगे तो तुम्हारा राज्य चला जायेगा । यदि कोई इन्हें लोहमयी बताये तो उसके सिर पर इस लोहदण्ड का प्रहार करना । राजकुमार ने उसे स्वीकार किया । जो भी उससे कहता-

ये आभूषण लोहे के हैं उसे वह लौहदण्ड से प्रहार करता। ठीक है– जिसकी व्युद्ग्राही मति हो जाती है वह ऐसा ही कार्य करता है। जो व्यक्ति जात्यंध के समान दूसरों के कहे वचनों पर विचार किये बिना ही काम करता है वह व्युद्ग्राही कहलाता है (24)।

३. तृतीय संधि

५. पित्तदूषित मूढ कथा

विपरीत भाव को जाननेवाला अर्थात् गुण को दोष और दोष को गुण मानने वाला व्यक्ति पित्तदूषित मूढ कहलाता है। इसकी लौक कथा इस प्रकार है– पित्तज्वर से आक्रान्त किसी व्यक्ति को शक्कर मिश्रित दुग्ध दिये जाने पर वह उसे कडुवा कहकर छोड़ देता है। इसी प्रकार पित्तदूषित व्यक्ति दुःख को सुख, सुख को दुःख मानकर उचित-अनुचित का भेद नहीं जान पाता।

६. आम्र मूढ पुरुष कथा

इसी तरह आम्रमूढ पुरुष की कथा है। अंग देश में चंपापुर नगरी के राजा नृपशेखर को उसके बंगदेशीय राजा ने एक आम्रफल भेजा। एक आम्रफल को कितने लोग खा सकेंगे यह सोचकर नृपशेखर ने उसे अपने वनमाली को रोपने के लिए दिया। वह आम कालान्तर में बड़ा होकर सुन्दर और स्वादिष्ट फल देने लगा। एक दिन किसी पक्षी के मुख से सर्प की विषाक्त वसा संयोगवशात उसी वृक्ष के एक फल पर गिर गयी। उसके प्रभाव से वह फल समय के पूर्व ही पककर जमीन पर गिर गया। वनपाल ने उसे राजा को भेंट किया और राजा ने अपने युवराज पुत्र को दिया। युवराज ने उसे खा लिया और विषप्रभाव के कारण वह तुरन्त दिवंगत हो गया। क्रोधांध होकर राजा ने उस वृक्ष को कटवा दिया। वृक्ष के फलों को आम जनता ने मरने की इच्छा से बड़ी प्रसन्नता पूर्वक खाया। पर उनकी मृत्यु न होकर वे खांसी, यक्ष्मा, जरा, वमन, शूल, क्षय, श्वास आदि रोगों से मुक्त हो गये। राजा ने यह जानकर बड़ा पश्चात्ताप किया और कहा कि बिना विचार किये ही उसने आम्रवृक्ष कटवा दिया। कर्मानुसार इसकी अविवेकी बुद्धि ने ऐसा किया। मनुष्य और पशु में यही भेद है कि मनुष्य को हिताहित का विचार होता है पर पशु ऐसा विचार नहीं कर पाता (1,1-3)।

७. क्षीरमूढ की कथा

कोहार नामक देश में सागरदत्त नाम का एक वणिक् रहता था। वह सागर पार व्यापारार्थ चोल (?) द्वीप पहुंचा। भोजन–नन्दी होने के कारण सागरदत्त

ने चलते समय एक सुंदर गाय भी साथ ले ली। चोल द्वीप में पहुंचकर उसने कुछ भेंट के साथ तोमर नरेश से भेंट की। दूसरे दिन वह खीर ले गया और तीसरे दिन शालिधान्य का बना हुआ चावल ले गया। तोमर बादशाह द्वारा इस स्वादिष्ट भोजन के बारे में पूछे जाने पर सागरदत्त ने कहा कि यह भोजन उसकी कुलदेवी देती है। तोमर की प्रार्थना पर उसने फिर उस गाय को उसे दे दिया और बदले में अकूत सम्पत्ति लेकर वापिस चला आया।

दूसरे दिन बादशाह ने गाय के सामने पात्र रखकर दुग्धयाचना की। कोई फल न देखकर उसके दुःखी होने की कल्पना कर ली। तीसरे दिन उसके सामने बर्तन रखकर दिव्य भोजन की याचना की। फिर भी गाय चुपचाप खड़ी रही। यह देखकर क्रोधित होकर तोमर बादशाह ने उस गाय को अपनी द्वीप से बाहर निकाल दिया। उसे यह भी ज्ञान नहीं रहा कि याचना मात्र से कहीं दूध मिलता है। इसी प्रकार जो प्रक्रिया जाने बिना ही वस्तु-प्राप्ति करना चाहता है वह उसे कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता। अभिमान को छोड़ बिना संसार समुद्र से पार कोई भी नहीं हो सकता, शुक्लध्यान प्राप्त नहीं कर सकता। वह तोमर बादशाह के समान प्राप्त वस्तु को भी अज्ञानतावश हाथ से खो बैठता है (1.4-6)।

८. अगुरु मूढ़ कथा

मगध देश में गजरथ नामक एक राजा था। एक दिन वह राजा अपने मंत्री के साथ क्रीड़ा करते हुए जंगल में काफी दूर निकल गया। वहां पहले से ही खड़े हुए तुरंग लिए एक भृत्य को देखकर राजा ने मंत्री से पूछा-यह कौन है, किसका नौकर है और किसका पुत्र है? मंत्री ने उत्तर दिया- यह हरि नामक मेहर (महत्तर-महार) का पुत्र हलि है। यह बारह वर्ष से आपकी क्लेशकारक सेवा कर रहा है। तब राजा ने मंत्री से कहा- तुमने अभी तक इस पयादे के क्लेश का कारण मुझसे क्यों नहीं कहा? सप्तांग वाले राज्य में मंत्री का कर्तव्य है कि वह भृत्य के गुण-दुर्गुण को राजा से कहे (7)। तदनंतर राजा ने प्रसन्न होकर हलि से कहा-500 गांवों के साथ एक मठ तुम्हें दे रहा हूँ उससे तुम अपने बंधु-पुत्रों सहित सुखी रहोगे। हलि ने कहा-मेरा कोई परिवार नहीं है। मैं इन गांवों का क्या करूंगा? ये गांव उन्हीं द्वारा ग्रहणीय हैं जिनके पास हजारों भृत्य और सैनिक हों। राजा ने कहा- गांवों से ही धन की प्राप्ति होती है, भृत्य मिलते हैं, सुपुत्र, सुमित्र, सुबन्धु सभी कुछ उपलब्ध होते हैं। धन ही सत्य का मूल है, सुख का कारण है। धन के कारण ही कायर भी वीर हो जाते हैं, अधीर भी धीर बन जाते हैं, असत्य भी सत्य हो जाता है। धन से ही पुण्य होता है, धर्मरागी होता है। जो व्यक्ति संपत्तिवान् हो और धर्मरागी न हो वह चर्मचक्षुवान् होने पर भी दृष्टा नहीं है, पशु के समान है ॥8॥

ज्ञान की यह महिमा जानकर तुम इन गांवों को स्वीकार करो और सुखी होओ। हुलि ने कहा– महाराज! यदि आप चाहते हैं तो मुझे ऐसा खेत दीजिए जिसमें मैं खेती कर सकूं। उसमें वृक्ष और गड्ढे वगैरह भी न हों। तब राजा ने मंत्री को आज्ञा दी कि हुलि को अगुरु चंदन का वन दे दो जिससे वह चंदन की लकड़ी बेचकर अपना जीवन निर्वाह कर सके। हुलि ने उसे देखकर कहा– मैंने वृक्ष और निरुपद्रव खेत मांगा था. यह खेत तो अंजन के समान श्याम और विस्तीर्ण है। फिर भी जो जैसा भी है, ग्रहण कर लेना चाहिए। राजा यदि यह भी नही देता तो मैं क्या कर सकता था। इसे मैं ठीक कर लूंगा। दूसरे ही दिन हुलि ने तीक्ष्ण कुठार लेकर सारा चन्दनवन काट डाला और उसे जलाकर कोदों बो दिया। यह जानकर मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ ॥9॥

तब मंत्री के पूछने पर हुलि ने कहा-मात्र एक हाथ भर का टुकड़ा जलने से बच गया है। मंत्री ने कहा उसे बाजार में जाकर बेच दो। न चाहते हुए भी हुलि बाजार गया। बेचने पर व्यापारी ने उसे पांच दीनारें दीं। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और सोचने लगा अपनी अज्ञानता पर कि उसने सारा चन्दनवन जला क्यों डाला? पश्चात्तापाग्नि से वह जलने लगा। इस प्रकार हेयोपादेय और गुण–दुर्गुण को जाने बिना जो व्यक्ति प्राप्त वस्तु को छोड़ देता है वह हुलि के समान दुःखी होता है ॥10॥

९ चंदन त्यागी की कथा

मनोवेग ने उन ब्राह्मणों को चंदन त्यागी की कथा सुनाई। सुखाधारभूत मथुरा नगरी में उपशान्तमन नामक एक राजा था। एक दिन उसे भीषण पित्त-ज्वर हो गया। अनेक प्रयत्न करने के बावजूद ज्वर शान्त नहीं हुआ। तब मंत्री ने नगरी में यह घोषणा कराई कि जो भी व्यक्ति राजा का पित्तज्वर शान्त कर देगा उसे पारितोषिक रूप में सौ गांव दिये जायेंगे। साथ ही आभूषण भी भेंट किये जायेंगे। यह घोषणा सुनकर एक वणिक् गोशीर्ष चंदन की लकड़ी लेने के लिए घर से निकल पड़ा। संयोगवश नदी के किनारे एक धोबी को गोशीर्ष चंदन का मूठा लिये उसने देखा। लकड़ी को परखकर उसने उससे मधुर स्वर में कहा कि यह नीम की लकड़ी का मूठा मुझे दे दो और इसके बदले मुझसे नीम की बहुत सारी लकड़ी ले लो। धोबी ने सहर्ष इसे स्वीकार कर लिया। वणिक् ने उस लकड़ी को फाड़कर, घिसकर राजा के सारे शरीर में उसका लेप कर दिया। फलतः राजा का पित्तज्वर तुरन्त शान्त हो गया। राजा ने घोषणानुसार उसे सौ गांव और विविध आभूषण भेंट किये। यह सब जानकर धोबी को अपनी मूर्खता पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ। इसीप्रकार वस्तु की पहचान किये बिना ही जो अविवेकी वस्तु का परित्याग कर देता है वह चंदनत्यागी धोबी के समान दुःखी होता है ॥11॥

१०. चार मूर्खों की कथा

चार मूर्खजन कहीं जा रहे थे। इतने में उन्होंने एक श्रुत संपन्न संयमी मुनिराज को देखा। वे मुनिराज त्रिगुप्तिवान् होने पर भी कर्मबन्ध से निर्मुक्त हैं, समल होकर भी निर्मल हैं, पण्डितगण उनकी स्तुति करते हैं, दिग्वास होने पर भी आशा विरहित हैं, मृगत हरण होने पर भी तिर्यञ्च समूह से शोभित हैं, निर्ग्रन्थ होने पर भी ग्रन्थों के परिग्रह से युक्त हैं, मद का विध्वंसन करने पर भी मद से आहत नहीं है। ऐसे तपस्वी सात्त्विक मुनिराज की वंदना उन चारों मूर्खों ने की। मुनिराज ने उन चारों को आशीर्वाद दिया। एक योजन जाने के बाद वे चारों मूर्ख परस्पर झगड़ने लगे। एक ने कहा मुझे आशीर्वाद दिया था। दूसरे ने कहा मुझे आशीर्वाद दिया था। किसी तीसरे व्यक्ति के समझाने पर इस कलह को निपटाने के लिए वे मुनिराज के पास गये और पूछा कि उन्होंने आशीर्वाद किसे दिया था। मुनिराज ने उत्तर दिया-जो सर्वाधिक मूर्ख हो। उसे मैंने आशीर्वाद दिया था (धम्मुवरह)। यह सुनकर वे चारों मूर्ख नगर की ओर गये और नगरवासियों से यह निश्चय कराने लगे कि उनके बीच सर्वाधिक मूर्ख कौन है। नगरवासियों में से एक ने कहा कि तुम लोग अपनी-अपनी मूर्खता की कथा कहो तभी यह विवाद सुलझ सकता है (11-13)।

उनमें से एक ने कहा-मेरी दो स्त्रियां हैं और दोनों ही प्रिय हैं। एक दिन रात में मैं उत्तान शयन कर रहा था। इन दोनों पत्नियों ने मेरे एक-एक हाथ को मस्तक के नीचे दबाकर मेरे दोनों ओर सो गई। मैंने सोते समय अपने मस्तक पर प्रज्वलित दीपक रख लिया था। एक मूषक उस दीपक में से जलती बत्ती निकालकर ले भागा। वह बत्ती मेरी बायी आंख पर गिर गई। दुःख से व्याकुल होते हुए मैंने सोचा कि यदि दायां अथवा बायां हाथ निकालकर बत्ती बुझाता हूं तो ये दोनों स्त्रियां जाग जायेंगी और वे रुष्ट हो जायेंगी। फलतः उस दुःख को मैं चुपचाप सहता रहा और तभी से मैं काना हो गया हूँ। इसलिए मेरा नाम 'विषमावलोकन' हो गया है। मनोवेग ने कहा कि यदि आपके बीच ऐसा कोई पुरुष हो तो कहते हुए भी भयभीत होता हूँ। जब वह मूर्ख अपनी कथा कहकर थक गया तो दूसरे मूर्ख ने अपनी कथा कहना प्रारंभ किया ॥14॥

उसने कहा-मेरी भी दो स्त्रियां थीं। वे बड़ी कुरूप और भयंकर थी। एक का नाम खरी था जो दायां पैर धोया करती थी और दूसरी का नाम ऋक्षिका था जो बायां पैर धोया करती थी। एक दिन खरी ने मेरा दायां पैर धोकर बायें पैर पर रख दिया। ऋक्षिका ने क्रोधित होकर मेरे पैर को मूसल से तोड़ दिया। तब खरी ने उसको भला-बुरा कहकर बहुत डांटा और उस पर विटों के साथ व्यभिचार का दोषारोपण किया। ऋक्षिका ने भी इसी तरह खरी पर व्यभिचारिणी होने का आरोप किया और कहा कि तेरा सिर मुंड़वा-

कर पांच चोटियां रखाकर शरावों की माला पहनाकर नगर में घुमाया जाये तभी ठीक होगा। इस तरह क्रोधाविष्ट होकर उसने मेरा बायां पैर भी तोड़ दिया। तब से मेरा नाम 'कूटहंसगति' हो गया। दूसरे मूर्ख के चुप हो जाने पर तीसरे ने अपनी कथा कहना प्रारंभ किया ।।15।।

मेरी पत्नी रात्री को सोते समय बोलती नहीं थी। तब हमने कहा कि जो भी हम दोनों में से बोलेगा उसे घी में तले हुए गुड़ के दस पूए देने पड़ेंगे। उसने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। एक दिन चोरों ने घुसकर हमारी सारी संपत्ति लूट ली। वह फिर हमारी पत्नी के अधोवस्त्र खोलने लगा तब मेरी पत्नी ने कहा कि निर्लज्ज ! तू अभी भी देख रहा है। मेरा अधोवस्त्र खोले जाने पर भी चुप खड़ा है। तब मैंने हंसकर कहा कि तू अपनी शर्त हार गई अब दस पूए देना पड़ेंगे। मैंने अपनी सारी संपत्ति चोरों को लूटा दी। तभी से मेरा नाम 'बोद' पड़ गया ।।16।।

चतुर्थ मूर्ख ने अपनी कथा सुनाई। उसने कहा-एक बार मैं अपनी पत्नी को लेने ससुराल गया। वहां मेरी सास ने बड़ा स्वादिष्ट भोजन परोसा। संकोच मे मैंने उसे छोड़ दिया। दूसरे दिन लगातार उस गांव की नारियों के आवागमन के कारण भोजन नही कर सका। तीसरे दिन मैं भूख से तड़पने लगा। संयोग-वशात् पलंग के नीचे झांका तो पाया कि वहां एक वर्तन में जल में चावल पड़े हुए हैं ।।17।। अवसर पाकर भूख से व्याकुल होने के कारण मैंने चावलों से अपना मुंह भर लिया। इतने में मेरी पत्नी वहां आ पहुंची। लज्जावश मैं वैसे ही फूले गाल लिये चुपचाप बैठा रहा। उसने फूले गाल, मुख तथा मिचे हुए नेत्रों को देखकर घबड़ाकर अपनी मां से कहा कि देखो तुम्हारे दामाद को क्या हो गया है ? मां ने मुझे मरणासन्न जानकर मेरे गालों को दबाया पर मैं पूरी ताकत से उन्हें कठोर बनाये रखा। रोती हुई पत्नी की आवाज सुनकर गांव की अनेक महिलाएँ इकट्ठी हो गईं। उनमें से एक ने कहा कि सप्त माताओं की पूजा न करने के कारण यह स्थिति आई है। दूसरी ने कहा कि यह किसी देवता का रोष-दोष है। तीसरी ने कहा कर्णमूल है, चौथी ने कहा-यह तो गंडमाल है, पांचवी ने कहा यह कर्णसूचिका है, छटी ने कहा-यह गला रोग है। और भी महिलाओं ने इसी तरह अपने-अपने नाना-विध विचार व्यक्त किए ।।18।।

इसी बीच वहां पर शस्त्रवैद्य आ गया। महिलाओं ने उसे बुलाकर मुझे दिखाया। उसने मेरे गालों को दबाकर देखा और देखा कि पलंग के नीचे तंदुल-पात्र रखा है। सारी स्थिति को समझकर उसने मेरी सासू से कहा कि इसे तन्दुल व्याधि हो गई जिसके कारण मरण भी संभावित है। तुरंत इलाज करना आवश्यक है। यदि तुम मुझे भरपूर संपत्ति दोगी तो मैं तुम्हारे दामाद के प्राण बचा सकूंगा। सासू सहर्ष तैयार हो गई। तब शस्त्रवैद्य ने शस्त्र द्वारा

मेरे गाल को फाड़कर उसमें से रक्त मिश्रित चांवल निकाले और उन्हें कीड़े कहकर सारी महिलाओं को दिखाया। व्यर्थ ही मैंने यह दुःख सहन किया। सासू ने वैद्यराज को धोती-जोड़ा देकर बहुविध सम्मान किया और वास्तविकता जानने पर लोगों ने मेरा बड़ा उपहास किया। तभी से मेरा नाम 'गलस्फोट' पड़ गया।

इन चारों मूर्खों की कथायें सुनकर नगरवासियों ने कहा कि अब तुम लोग उसी साधु के पास जाकर अपनी मूर्खता को शुद्ध करो ॥19॥

इस प्रकार चार मूर्खों की कथा कही गई। मनोवेग ने कहा— हे ब्राह्मणो! ये दस प्रकार के मूर्ख बताये गये। इनमें से एक भी प्रकार का मूर्ख तुम लोगों में हो तो मुझे बताओ। मुझे अभी भी कहने का साहस नहीं हो रहा है। आप लोग प्रायः कदाग्रही होंगे तथा जिस वक्ता के पास कोई विशेष वेश न हो, पगड़ी, चोटी, पुस्तक अथवा धोती-जोड़ा न हो, जनानुरंजनकारी भेष न हो, पावड़ी (खड़ाऊ) न हो, उस वक्ता का कोई भी अभिवचन आप प्रामाणिक नहीं मानते। तब ब्राह्मणों ने कहा—हे भद्र! भयभीत न होओ। हम लोगों में ऐसा कोई भी मूर्ख नही है। तुम निश्चिन्त होकर अपनी बात युक्ति पूर्वक कहो। तब मनोवेग ने कहा—मैं जो कुछ कहूँ, उस पर निष्पक्ष होकर विचार कीजिएगा। मणि मुकुटांकित हरि (विष्णु) में अपनी आस्था है या नहीं? विप्रों ने कहा— चराचर जगद्व्यापी विष्णु भगवान को कौन नहीं मानता? तब मनोवेग ने कहा— यदि आपका विष्णु ऐसा है तो नन्द गोकुल में ग्वालिया होकर गायों को क्यों चराता था? तथा ग्वालिनियों के साथ रतिक्रीडा क्यों करता था? ॥20॥

मनोवेग ने आगे कहा— पाण्डवों की ओर से दुर्योधन के पास दूत कार्य करने के लिए वे क्यों गये? वामन रूप धारण कर बलि राजा से पृथ्वी की याचना क्यों की? रामावतार में कामी के समान सीता के विरह में संतप्त क्यों हुए? यदि ऐसे कार्य विराग रूप ही करते है तो हम जैसे दरिद्र पुत्रों का काष्ठ बेचने में क्या दोष है? मनोवेग के इन सयुक्तिक वचनों को सुनकर ब्राह्मणों ने कहा— हमारा विष्णु तो ऐसा ही है। पुराणों में उसका ऐसा ही वर्णन मिलता है। तूने हमारे लिए चिन्तन का एक सूत्र दिया है। दर्पण के बिना नेत्र रहते हुए भी रूप नहीं देखा जाता। यदि वह सरागी है तो विरागी कैसे हो सकता है? यदि सर्वव्यापी है तो इष्ट वियोग कैसे हो सकता है? सर्वज्ञ होकर वृक्ष-वृक्ष से खबर पूछना कैसे लग सकता है? अल्प जीवों के समान दुःखित होकर उसने मत्स्य, कच्छप, सूकर, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण वगैरह अवतार किस कारण धारण किये हैं? वे जन्म-मरण के दुःख निरंजन होकर कैसे सहते हैं? ॥21॥

रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा आदि से संकुलित यह शरीर नव द्वारों से अपवित्र वस्तुओं को दूर फेंकता है। उस अपवित्र शरीर को यह परमेश्वर क्यों धारण करता है? सर्वज्ञ होने पर भी वह क्यों पूछता है? दानवों को उत्पन्न कर फिर उसे क्यों मारता है? यदि वह तृप्त है तो भोजन क्यों करता है? यदि अमर है तो अवतार क्यों लेता है? यदि भय और क्रोध से विरहित है तो शस्त्र क्यों धारण करता है? ऐसे अनेक प्रश्न हमारे मन में आने लगे हैं। अतः हे भद्र! तुमने हमको जीत लिया है। अब तू जयलाभ रूप आभूषण को पहनकर भूषित हो जाओ। हम भी विरागी देव की खोज करते हैं?

इस प्रकार मनोवेग विप्रगण को निरुत्तर कर उस वादशाला से बाहर आ गया ॥22॥

४. चतुर्थ संधि

मनोवेग ने पुन: पवनवेग से कहा– हे मित्र, अभी तुमने लौकिक सामान्य देव को सुना अब संशय विनाशक अनुक्रम का स्वरूप बताते हुए हरि सर्वज्ञ के विषय में कहता हूँ। पवनवेग! इस भारतवर्ष में छ: काल यथाक्रम से हुए हैं– सुखमसुखमा, सुखमा, सुखमदु:खमा, दु:खमसुखमा, दु:खमा और दु:खमदु:खमा। चतुर्थकाल दु:खमसुखमा में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 वासुदेव और 9 प्रतिवासुदेव, इस तरह 63 शलाका पुरुष होते हैं। उनमें कोई मोक्ष जाते हैं और कोई नरक दु:ख का अनुभव करते हैं। महापुरुषों में नारायणों में से कंसासुर और चाणूरमल्ल के शत्रु वासुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण हुए। उन्हें पुराणों में जन्म-मृत्यु विवर्जित कहा है और साथ ही उनके दस अवतारों (मत्स्य, कूर्म, शूकर, नरसिंह, वामन, राम, परशुराम, कृष्ण, बुद्ध और कल्की) की भी चर्चा आई है। इस परस्पर-विपरीत चर्चा में यह भी कहा गया है कि जो अक्षराक्षर विनिर्मुक्त, अभयरूप, सत्य संकल्प विष्णु का ध्यान करता है वह सांसारिक दु:खों से मुक्त हो जाता है ॥ 1 ॥

बलिबन्धन (अकम्पनाचार्य मुनि) कथा

मित्र, तुम्हें बलि-बन्धन की कथा सुनाता हूँ। एक समय बलि नामक दुष्ट ब्राह्मण मंत्री ने मुनियों को मारने की इच्छा से सात दिन का राज्य मांगा और भयंकर उपसर्ग किये। उस अकम्पन मुनिसंघ के इस उपसर्ग को दूर करने के लिए ऋद्धिधारी विष्णुकुमार मुनि ने वामन का रूप धारण कर बलि राजा से तीन पांव जमीन मांगकर उसे बांध लिया और मुनि उपसर्ग दूर कर दिया। इस कथा को मूढ़ लोगों ने कुछ और ही रूप दे दिया। उसी को विष्णु मानकर

पूजा करने लगे। पुराणों में यही कथा दूसरे दूसरे रूप से मिलती है। इसे स्पष्ट करने के लिए उसने लकड़हारे का रूप छोड़ दिया ॥ 2 ॥

मार्जार कथा

मनोवेग ने पुन: पवनवेग से कहा— तुम्हें इन विरोधी कथनों से भरपूर पुराणों की बात और कहता हूँ। तत्पश्चात् उसने अपनी विद्या के प्रभाव से ऐसे भील का रूप धारण किया जिसके केश वक्र थे, दाढी चौड़ी थी, नयन लाल थे, नासिका चपटी थी, कटि भाग दृढ़ था, बाहुदण्ड प्रचण्ड बलशाली था। इसी प्रकार पवनवेग ने पीली आंखों वाले रुधिर मिश्रित कटे कान वाले मार्जार का रूप धारण किया। तत्पश्चात् मनोवेग ने उस मार्जार को घड़े में रखकर उत्तर दिशा में स्थित वादशाला में प्रवेश किया और भेरी बजाकर स्वर्ण सिंहासन पर जा बैठा। भेरी की आवाज सुनकर वादशील ब्राह्मण एकत्रित हो गये। मनोवेग ने कहा— वह 'वाद' जानता ही नहीं। उसने तो कौतुकवश भेरी बजा दी थी। आगे उसने कहा— मैं तो मार्जार बेचने आया हूँ, मैं भील हूँ। यह कहकर वह सिंहासन से उतर गया ॥ 3 ॥

ब्राह्मणों ने पूछा— इस मार्जार की क्या विशेषता है और इसका मूल्य क्या है? मनोवेग ने कहा- इसकी गंध मात्र से बारह योजन तक के मूषक विनष्ट हो जाते हैं और इसका मूल्य साठ स्वर्ण पण[1] (एक प्रकार की मुद्रा) है। ब्राह्मण समुदाय यह विचार करने लगा कि यह मार्जार बहुत काम का है। एक दिन में मूषक जितना द्रव्य खा जाते हैं उससे हजारवां भाग भी इसकी कीमत नहीं है। यह सोचकर ब्राह्मणों ने मिलकर उस मार्जार को साठ पण देकर खरीद लिया, मनोवेग के यह कहने पर भी कि कहीं आपको पश्चाताप न हो। ब्राह्मणों के पूछने पर मनोवेग ने कहा कि इसके कान रुधिरसिक्त और छिन्न इसलिए हैं कि एक दिन मैं रात्रि में एक देवालय में रुका। वहां बहुत अधिक मूषक थे। उन्होंने मिलकर इसके कान कुतर-कुतरकर खा लिये। उस समय मार्जार भी भूखा होने के कारण अचेत होकर सो रहा था। ब्राह्मणों ने कहा—यह तुम्हारा कथन परस्पर विरोधी है। जिस मार्जार के गन्ध मात्र से चूहे नष्ट हो जाते हैं उसी मार्जार के कान चूहे कैसे खा सकते हैं? मनोवेग ने कहा— क्या मात्र एक दोष के कारण समस्त गुण नष्ट हो जाते हैं? ब्राह्मणों ने कहा— हाँ, क्या कांजी का एक बिन्दु मात्र पड़ जाने से दूध फट नहीं जाता? मनोवेग ने कहा— एक दोष से गुण कदापि नष्ट नहीं हो जाते। क्या अंधकार से मर्दित सूर्य के

1. यहां मूल प्रति में 'पल' शब्द का प्रयोग हुआ है (कणयहो पलाईं, 44)। पर यह पण होना चाहिए। यह एक मुद्रा थी जो सोने अथवा तांबे की होती थी। पल मापने का साधन है जबकि पण मुद्रा का नाम है। पल 320 रत्ती का होता है।

किरण लुप्त हो जाते है ? और फिर हम तो आपके साथ वाद-विवाद कर भी नहीं सकते । ब्राह्मणों ने कहा-इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है । यह तो भाग्य का दोष है । क्या उस दोष को दूर कर सकते हैं ? मनोवेग ने कहा-वह संभव है । पर आपके साथ बात करने में मुझे भय का अनुभव होता है । जो व्यक्ति कूपमण्डूक के समान अथवा कृतक बधिर के समान अथवा क्लिष्टमृत्य के समान होता है उसके सामने सत्य तत्व को प्रस्तुत करने में भय-सा बना रहता है ।

एक समय समुद्र निवासी राजहंस को देखकर किसी कूप-मण्डूक ने पूछा-तुम कहाँ रहते हो ? राजहंस ने कहा- समुद्र में । तेरा समुद्र कितना बड़ा है ? बहुत बड़ा है । मण्डूक ने तब हाथ पसारकर कहा- इतना बड़ा है । राजहंस ने कहा- बहुत बडा है । मेरे कुए से भी बड़ा है ? इससे बहुत बड़ा है ? परन्तु मेंढक ने तब भी उसे स्वीकार नहीं किया । कृतक बधिर वह है जो आगम अथवा शकुन शास्त्र को न मानकर किसी कार्य का प्रारंभ करता है । इसी तरह क्लिष्टमृत्य वह है जो राजा को दुष्टमति, तृष्णालु, कृपण जानकर भी उसे नहीं छोड़ता और क्लेश भोगता रहता है । ऐसे लोगों से तत्व की बात कहना उचित नहीं है ।। 6 ।।

जो इन तीनों प्रकार के पुरुषों के समान कार्य-अकार्य की उपेक्षा करते हैं उनके लिए सज्जन तत्व का यथार्थ स्वरूप न कहे । बिना साक्षी के सत्य भाषण भी नहीं करना चाहिए । तभी तो 'षोडश मुष्टि न्याय' प्रसिद्ध हुआ । दस प्रकार के मूर्खों की पूर्वोक्त कथा भी इसी प्रकार की है । यह सुनकर ब्राह्मणों ने कहा- हे भद्र ! क्या हम लोग ऐसे मूर्ख है जो प्रमाण सिद्ध तथ्य को भी स्वीकार नहीं करेंगे ? तब मनावेग ने कहा कि वह पुराण और आगम में कथित प्रमाणो के आधार पर ही बात करेगा । उसे कृपया सुनिए ।

मण्डपकौशिक और छाया कथा

कठोर तपस्या करने वाला एक मण्डपकौशिक नामक तपस्वी था । एक दिन अन्य तपस्वियो के साथ किसी ने उसे भी भोजन पर आमन्त्रित कर लिया । तथाकथित पवित्र तपस्वियों ने उसे पंक्ति मे भोजन करते हुए देखकर कोपाविष्ट होकर वे सहसा उठ खड़े हुए । जजमान के पूछने पर तपस्वियों ने कहा कि भोजन पंक्ति में एक पापी बैठा हुआ है । मण्डपकौशिक ने पूछा- बताइये, इसमें मेरा क्या दोष है ? तपस्वियों ने कहा- तुम अपुत्रवान् ब्रह्मचारी हो । पुत्र के बिना न इहलोक न परलोक में कोई गति मिलती है । अतः तुम्हारा संसर्ग भी वर्जित है । मोक्ष की इच्छा हो तो पहले गृहस्थाश्रम स्वीकार कर पुत्रवान् बनो ।।7।।

तब मृकण्डकौशिक ने कहा कि मुझ वृद्ध को कौन अपनी कन्या देगा ? ऋषियों ने कहा— तुम विवाह को भी स्वीकार कर सकते हो। स्मृतियों में स्पष्ट कहा है कि पति के परदेश चले जाने पर, नपुंसक होने पर, रोगी, दरिद्री कुबड़ा, लूला होने पर, जातिच्युत हो जाने पर तथा मर जाने पर, इन पांच कुलक्षणों में स्त्री के लिए दूसरा पति किया जा सकता है। ऋषियों की आज्ञा से मण्डप ने विवाह के लिए गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। फलत: उसकी छाया नाम की एक अत्यन्त सुन्दर कन्या हुई। जब वह आठ वर्ष की हो गई तो मण्डप के मन में तीर्थयात्रा करने का विचार हुआ। पर समस्या थी कि छाया को किसके पास छोड़ा जाय। भय था कि जिसके पास भी छोड़ा जायेगा वह उसे अपना लेगा। इस संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति दिखाई नहीं देता जो स्त्री से पराङ्मुख हो। यह कन्या यदि महादेव को दी जाय तो ठीक नहीं है। वे गौरी पार्वती के साथ कैलाश पर निवास करते हैं। सन्ध्यावन्दन के निमित्त आयी गंगा को स्त्री रूप में क्रीड़ा करते हुए उन्होंने देखा और काम बाण से विद्ध हो गये। वे सोचने लगे कि यह किसकी कन्या है। यह तो उर्वशी से कम नहीं है। अन्तत: उन्होंने गंगा से अपनी इच्छा व्यक्त की। उसने कहा कि वह परपति की अभिलाषा नहीं करती और फिर तुम्हें अपनी पत्नि से भी इस विषय में पूछ लेना चाहिए। अन्तत: महादेव ने, कहा जाता है, गंगा का सेवन कर लिया। विष्णु अपनी लक्ष्मी को छोड़कर सोलह हजार गोपियों का सेवन करते हैं। यहां उनके साथ विविध क्रीड़ाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु पुरुषोत्तम होने पर परदाराओं के साथ रमण करना शोभास्पद नहीं माना जा सकता। जिस ब्रह्मा ने देवांगना के नृत्यमात्र देखने के लिए अपनी तपस्या भंग कर दी वह ब्रह्मा भी सुन्दर कन्या को पाकर क्या नहीं करेगा ? ॥8–12॥

तिलोत्तमा कथा

एक समय अचानक इन्द्र का आसन कंपित हो गया। तब इन्द्र ने बृहस्पति से इसका कारण पूछा। बृहस्पति ने कहा-देव ! ब्रह्मा आपके राज्य लेने की इच्छा से पिछले चार हजार वर्ष से तप कर रहे हैं, उसी तप के प्रभाव से आपका यह आसन कंपित हो गया है। उसे नष्ट करने के लिए किसी सुन्दर स्त्री का उपयोग किया जा सकता है। तब विश्वकर्मा ने समस्त सुन्दर स्त्रियों का तिल-तिल का रूप ले तिलोत्तमा नामक अप्सरा बनाई और उसे ब्रह्मा के पास जाकर उनके तपोभंग करने का आदेश दिया। तिलोत्तमा ने अपने पूरे हाव-भाव, विभ्रम और नखरासमयी नृत्य से ब्रह्मा को आकृष्ट करने का प्रयत्न किया। ब्रह्मा उसके विलासमयी नृत्य और भंगिमाओं को देखकर विचलित हो गये। वे कभी उसके चरण की ओर तो कभी जंघा व उरस्थल पर दृष्टिपात करते, तो कभी कांखाओं में, कभी नाभि पर, कभी पीनस्तनों पर, कभी मुख पर, कभी कुंतल पर दृष्टिपात

करते। जिस ओर उसका अंग घूमता उसी ओर ब्रह्मा का ध्यान चला जाता। तिलोत्तमा ने ब्रह्मा की दृष्टि को आसक्त जानकर क्रमशः दक्षिण, उत्तर और पीठ पीछे नृत्य करके उसके मन को चारों तरफ घुमाया, पर लज्जावश ग्रीवा को चारों ओर नहीं घुमा सके (13-15)। फिर विवश होकर ब्रह्मा ने हजारों वर्ष की तपस्या का फल व्यय करके प्रत्येक दिशा में एक एक नया मुंह बनाकर उसके रूप को निरखने लगे। उनको अत्यधिक आसक्त जानकर आकाश में उड़कर वह नृत्य करने लगी। तब ब्रह्मा ने पांच सौ वर्ष की तपस्या का फल व्यय करके पांचवां गधे का मुंह बनाया और तिलोत्तमा को आकाश में देखने लगे। परन्तु न वे तिलोत्तमा को देख सके और न तप ही पूरा कर सके। राग के वश होकर वे दोनों ओर से वंचित रह गये। तिलोत्तमा अपना कर्तव्य पूरा कर स्वर्ग चली गई ॥16॥

इधर ब्रह्मा तिलोत्तमा को खोजने लगे। मदन से उनका मन और तन जर्जरित हो गया। मार्ग-मार्ग में उन्होंने उसकी खोज की। उनकी यह कामुकावस्था देखकर देव उपहास करने लगे। क्रोधित होकर ब्रह्मा ने गधे के पंचम मुख से उनको खाना प्रारंभ कर दिया। देवगण महादेव के पास दौड़े और महादेव ने आकर ब्रह्मा का वह पांचवां सिर काट लिया। ब्रह्मा ने क्रोधित होकर महादेव को यह अभिशाप दिया कि तुमने जो ब्रह्महत्या की है इसके कारण तुम्हारे हाथ से यह सिर कभी नहीं गिरेगा। महादेव ने संचिन्तित होकर क्रोध शान्त करने का आग्रह किया। ब्रह्मा ने तब कहा— मेरे इस मस्तक को विष्णु भगवान जब रक्त से सिंचन करेंगे तभी यह सिर तुम्हारे हाथ से गिरेगा। इसके लिए तुम्हें कपालव्रत धारण करना पड़ेगा। यह सुनकर महादेव विष्णु के पास गये। इधर ब्रह्मा ने एक मृगवन में प्रवेश किया जहां उन्होंने ऋतुवंती रीछनी के साथ रमण किया ॥17॥

उस रीछनी से गुणसंपन्न जांबव नामक पुत्र हुआ। मण्डपकौशिक ने सोचा कि इस प्रकार के कामातुर ब्रह्मा के पास भी कन्या को कैसे छोड़ा जावे ? इसी प्रकार गौतम ऋषि की स्त्री को कामातुर होकर इन्द्र ने उपभोगा। यह जानकर गौतम ऋषि ने इन्द्र को सहस्रभग होने का अभिशाप दिया। देवों की प्रार्थना पर फिर यह अभिशाप अनुग्रह स्वरूप सहस्राक्ष ही जाने के रूप में बदल दिया। इस प्रकार निष्काम देव इस लोक में दिखाई नहीं देते। हां, यमराज अवश्य धर्म परायण हैं। इसलिए उनके पास कन्या को छोड़ा जा सकता है। ॥18॥

यह सोचकर मण्डपकौशिक ने छाया को यमराज के पास छोड़ दिया और तीर्थयात्रा के लिए चल पड़ा। इधर यमराज भी कामबाण से विद्ध हो गया। उसने छाया को स्त्री बना लिया और हरी जाने के भय से उसे उदरस्थ कर

लिया। एक दिन पवनदेव ने अग्निदेव से कहा कि आजकल यमराज रतिसुख में लीन हैं, एक सुन्दर स्त्री के साथ। अग्निदेव ने कहा- भद्र ! कैसे उसे प्राप्त किया जा सकता है ? पवनदेव ने कहा- तुम विषय वासना से वश हो रहे हो और अंगुलि पकड़कर हाथ पकड़ना चाहते हो। अस्तु, एक मार्ग है। यमराज नित्यकर्म करने के लिए छाया को एक प्रहर मात्र के लिए अपने उदर से बाहर निकालता है। अग्निदेव के लिए इतना समय पर्याप्त था। वह समय देखकर छाया के पास तब गया जब यमराज ने विशुद्ध होने के लिए गंगाजी में प्रवेश किया ॥ 19 ॥

अग्निदेव प्रच्छन्न रूप से सुन्दर शरीर धारण कर वहां पहुंच गये जहां छाया को छोड़कर यमराज स्नान करने गये थे। यमराज के आने के पूर्व तक उसके साथ उसने खूब रमण किया। छाया ने फिर कहा कि मेरे पति यमराज के आने का समय हो गया है। यदि उसने तुम्हें देख लिया तो वह तुम्हे मार डालेगा और मेरी नासिका काट डालेगा। परन्तु कामातुर अग्निदेव वहां से नहीं गया। छाया ने तब उसे अपने उदर में रख लिया। यमराज ने भी आकर छाया को उदरस्थ कर लिया। अब छाया और अग्निदेव दोनों यमराज के पेट में बन्द हो गये। इधर अग्नि के बिना संसार में भोजन बनाना, प्रदीप जलाना आदि सभी कार्य रुक गये। सुरगण विकल हो गये। तब इन्द्र ने पवनदेव से कहा- तुम अग्निदेव को खोजो। उसने कहा- सर्वत्र खोज लिया, पर वे मिले नहीं ॥ 20 ॥

एक स्थान शेष है। वहां उसे यदि पा लिया तो आपको सूचित करूंगा। यह कहकर उसने सभी देवों को भोजन पर आमन्त्रित किया। सभी को तो एक-एक आसन दिया पर यमराज को तीन आसन दिये। सभी को एक भाग परोसा पर यमराज को तीन भाग परोसा। यह देखकर यमराज ने पूछा- ऐसा क्यों ? पवनदेव ने कहा- पहले तुम छाया को उगलो। छाया के बाहर निकलने पर छाया से अग्निदेव को उगलवाया। यह देखकर यमराज क्रोधित होकर अग्निदेव के पीछे दौड़े। अग्निदेव दौड़ते-दौड़ते वृक्षों और शिलाओं में छिप गये। आज भी बुद्धिमानों एवं प्रयोग के बिना वह प्रगट नहीं होता ॥ 21 ॥

मनोवेग ने कहा-हे विप्रो ! क्या आपके पुराणों में यह कथा इसी प्रकार मिलती है ? विप्रों ने इसे स्वीकार किया। मनोवेग ने कहा- जो अपने उदर में स्थित पत्नी के उदर में बैठे अग्निदेव को नहीं जान सका उसका देवत्व और अग्नि का देवत्व कहां गया ? जिस प्रकार इस छोटे-से दोष के कारण इन देवों का देवत्व नहीं जाता उसी प्रकार मूषकों द्वारा मेरे मार्जार की कर्णच्छिन्नता से बड़े गुणों को कैसे उपेक्षित किया जा सकता है ? विप्रों ने इस कथन की प्रशंसा की ॥ 22 ॥

मित्रों ने आगे से कहा— हे भद्र ! पुराणों की कथाओं पर जैसा-जैसा विचार करते हैं, वे वैसी-वैसी तथ्यहीन सिद्ध होती जाती हैं। मनोवेग ने कहा— जिसका चित्त त्रिभुवन को जीतने वाली रमणियों के विभ्रम से पूर्णतः मुक्त है उसके स्वरूप को सम्यक् रूप से पहचानो। सभी देव उसे प्रणाम करते हैं। जिस काम के वशीभूत हो शंकर ने पार्वती को अर्द्धांगिनी बनाया, विष्णु ने गोपियों का उपभोग किया, ब्रह्मा ने तपश्चरण छोड़कर तिलोत्तमा के नृत्य को देखने के लिए चतुर्मुख बनाये इन्द्र को सहस्त्रभग बनना पड़ा, यमराज ने छाया का उपभोग कर उसे अपने पेट में रखा, अग्निदेव को वृक्षों और शिलाओं में प्रवेश करना पड़ा ऐसे कामदेव को जिसने जीत लिया हैं और सुरासुरों द्वारा पूजित है, उस अष्टदेव की वन्दना करो। उसकी वन्दना से ही व्यक्ति मोक्ष पा सकता है। मित्र के निमित्त मनोवेग ने ये कथायें कही ॥ 23 ॥

५. पंचम संधि

शिश्नच्छेदन कथा

मनोवेग ने पुनः पवनवेग से कहा— हे मित्र, तुमने अभी रुद्रादि देवों के गुणों का आख्यान सुना। ये सभी साधारण देव हैं। अणिमा, महिमा, लघिमा आदि अष्ट ऋद्धियां देवों मे होती है। उनमें लघिमा नाम की निम्नकोटि की ऋद्धि ही इन देवों में पाई जाती है। ब्रह्मा महादेव के विवाह में पुरोहित बनकर गये थे। वहां पाणिग्रहण कराते समय पार्वती के करस्पर्श मात्र से वे इतने कामपीड़ित हो गये कि उनका शुक्रपात हो गया और वे उपहास के कारण बन गये। महादेव ने नृत्य करते समय ऋषियों की कन्याओं के साथ आलिंगन आदि कामुक क्रियायें की जिन्हें देखकर ऋषियो ने उनका शिश्नच्छेदन कर दिया और अभिशाप स्वरूप योनि लिंग के रूप में शिवमूर्ति की स्थापना हुई, जिसकी पूजा नहीं की जाती। शिव के ही रुद्र, महादेव, शंभु, शंकर आदि विविध रूप हैं। अहल्या ने इन्द्र को, छाया ने यमराज और अग्नि को, कुन्ती ने सूर्य को कामवासना में प्रवृत्त किया। इस प्रकार लोक में और भी देव हैं जो कामुकता से आपूर है। पवनवेग ने कहा— परदाराओं का उपयोग करने में क्या इन्हें लज्जा नहीं आई ? इनका देवत्व तो यों ही चला गया।

रुद्र शिरच्छेदन कथा

मनोवेग ने रुद्र के शिरच्छेदन की कथा को स्पष्ट करते हुए कहा— ग्यारह रुद्रों में से अंतिम रुद्र सात्यकी मुनि के अंग से उत्पन्न ज्येष्ठा नाम की आर्यिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। मुनि होने पर उग्र तपस्या के प्रभाव से वह अनेक प्रकार की विद्याओं का स्वामी हो गया। उसे 500 बड़ी विद्याएँ और 700

छोटी विद्याएँ प्राप्त हुईं। उन्होंने उससे पूछा— स्वामी, आपकी क्या सेवा की जाये? तब ब्रह्मचारी उस रुद्र ने आठ कन्याओं को देखकर मुनिपद छोड़ दिया और उनसे विवाह कर लिया। परन्तु रतिकर्म में असमर्थ होने के कारण वह काल-कवलित हो गईं। तब रुद्र ने पार्वती से विवाह कर लिया। फलतः उसकी त्रिशूल-विद्या नष्ट हो गई। फिर वह ब्राह्मणी नामक विद्या सिद्ध करने लगा। तब ब्राह्मणी ने उसे डिगाने के लिए गीत-नृत्यादि करना प्रारंभ कर दिया। ऊपर देखने पर उसे एक स्त्री दिखी। बाद में उसके स्थान पर एक प्रतिमा दिखी और बाद में उसपर चतुर्मुखी मनुष्य को देखा। उसके सिर पर बढ़ता हुआ एक गधे का मुख दिखाई दिया जिसे उस रुद्र ने तुरन्त काट दिया, परन्तु वह गधे का मस्तक उसके हाथ से नीचे नहीं गिरा। ब्राह्मणी विद्या उसकी विद्या-साधना को समाप्त कर वापिस चली गई। तत्पश्चात उस रुद्र ने वाराणसी नगर के समीप पद्मासन में आरूढ़ वर्धमान स्वामी को देखकर उन्हें विद्यामनुष्य जानकर उनपर घनघोर उपसर्ग किये। प्रातःकाल होने पर जब उसने उन्हें वर्धमान स्वामी समझा तो बड़ा पश्चाताप किया और चरणवन्दना की। फलस्वरूप वह शिर उसके हाथ से नीचे गिर गया। मनोवेग ने कहा— मित्र, यह गधे के शिरश्छेदन का सही इतिहास है। अब हम तुम्हें कुछ और कौतुक दिखाते हैं ॥ 7 ॥

जलशिला और वानर नृत्य कथा

मनोवेग ने ऋषि का रूप धारण कर पश्चिम की ओर से पटना नगर में प्रवेश किया और तृतीय वादशाला में प्रवेश कर सिंहासन पर जा बैठा और वहां वादसूचिका भेरी बजा दी। वादी विप्रगण एकत्रित हो गये और उन्होंने कहा—तुम वाद करना चाहते हो? मनोवेग ने कहा कि वह तो 'वाद' जानता ही नहीं और फिर स्वर्णासन से उतर गया। साथ ही यह भी कहा कि उसका कोई गुरु नहीं है। उसने तो स्वयं ही तपोग्रहण किया है पर इसका कारण बताने में मुझे भय लग रहा है। फिर भी कह रहा हूं ॥ 8 ॥

चंपापुर के राजा सुवर्ण के मंत्री हरि नामक द्विज ने एक दिन पानी में तैरती हुई एक शिला देखी। राजा ने उसपर विश्वास नहीं किया, प्रत्युत उसे ताड़ित किया और बंधवा दिया। असत्यभाषी मंत्री के साथ ऐसा ही होता है। क्षमा मांगने पर मंत्री को छोड़ दिया गया। मंत्री ने बदला लेने के लिए बंदरों को नृत्य-गाना सिखाया। एक दिन वन में राजा को अकेला देखकर उनका संगीत कराया। राजा ने वह संगीत सुनकर उसे दिखाने के लिए कहा। इतने में ही वे बन्दर इधर-उधर भाग गये। मंत्री ने तब ब्राह्मणों से कहा— राजा को अवश्य ही कोई भूत लग गया है। इसे बांध लो। ब्राह्मणों ने राजा को बांध लिया। फिर राजा के कहने पर उसे छोड़ दिया गया। मंत्री ने कहा— मित्र

प्रकार से आपके मन में वानर-नृत्य देखा उसी प्रकार से मैंने जल पर तैरती शिला देखी थी। अतः विद्वानों को प्रत्यक्ष देखा हुआ भी असम्भव वचन कभी भी नहीं कहना चाहिए। विप्रगणों, आप लोग भी साक्षी बिना मुझ अकेले की कही बात पर विश्वास नहीं करेंगे ॥ 9 ॥

कमण्डलु और गज कथा

विप्रों ने कहा– सयुक्तिक बात पर हम विश्वास करेंगे। तुम अपने विषय में कहो। मनोवेग ने कहा– मैं श्रीपुर के शिवभूति का पुत्र हूँ। पिता ने मुझे ऋषि के पास पढ़ने के लिए भेजा। एक दिन उन्होंने मुझे कमण्डलु में जल लाने के लिए भेजा। मैं बीच में ही समवयस्कों के साथ खेलने लगा। देर हो जाने से गुरुजी के भय के कारण मैं दूसरे नगर में भाग गया। एक नगर के पास उन्मत्त हाथी को अपने सामने आते देखा। भय से मैं कंपित हो उठा। मैंने कमण्डलु को भिण्डी के वृक्ष पर रख दिया और स्वयं उसकी टोंटी से भीतर प्रवेश कर छिप गया। हाथी भी मेरा पीछा करते हुए कमण्डलु में पहुंच गया और कोपाविष्ट होकर सूंड से मेरी धोती खींचकर फाड़ने लगा। यह देख शीघ्र ही मैं कमण्डलु के मुंह से बाहर निकल गया। मुझे निकलता देखकर वह भी उसी मार्ग से बाहर निकला। परन्तु उसकी पूंछ का एक बाल उसमें अटक गया और वह वहीं गिर पड़ा। यह देखकर मैंने उससे कहा– पापी, तू यहीं मर। यह कहकर मैं निर्भय होकर निर्वस्त्र ही नगर में पहुंचा। वहां जिनमंदिर में रुक गया। 'मुझे वस्त्र कौन देगा" यह सोचकर दिगम्बर ही बना रहा। नगर-नगर घूमते हुए आज मैं यहां पहुंचा हूँ (10–11)।

यह सुनकर विप्रगण हंसने लगे और कहने लगे कि तू स्वयंभू सत्यवादी है और इस प्रकार असत्य भाषण कर रहा है। भिण्डी वृक्ष पर कमण्डलु का रखा जाना और उसमें हाथी का प्रवेश होना आदि सब कुछ असंभव है। मनोवेग ने साश्चर्य कहा– दूसरे के दोष देखना सरल होता है। क्या तुम्हारे मत में इस प्रकार का असत्य और असम्भव भाषण नहीं है? विप्रगण ने कहा– यदि ऐसा है तो कहिए। हम उसे स्वीकार करेंगे। तुम निर्भय होकर कहो ॥ 12 ॥

पौराणिक कथाओं पर प्रश्नचिन्ह

एक बार युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ के समय कहा था– क्या कोई ऐसा पुरुष है जो पाताल में से फणीन्द्र को ले आवे? तब अर्जुन ने कहा– यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं सप्तर्षियों के साथ फणीश्वर को ला सकता हूँ। तत्पश्चात् अर्जुन ने गाण्डीव धनुष के द्वारा तीक्ष्ण बाणों से पृथ्वी को भेदकर रसातल में जाकर दस करोड़ सेना सहित शेषनाग और सप्तर्षियों को ले आया। मनोवेग ने कहा– हे विप्रो, आपके पुराणों में यह उपलब्ध है या नहीं? विप्रों

ने कहा– हाँ, ऐसा उपलब्ध है। तब मनोवेग ने कहा– बांबी के सूक्ष्म छिद्र में दस करोड़ सेना सहित शिवनाथ आ सकता है। रसातल में से तो कमण्डलु के छिद्र में से हाथी कैसे नहीं निकल सकता? विप्रों ने कहा– ठीक है, यह मान लिया। परन्तु कमण्डलु में हाथी का समाना, हाथी के भार से पिण्डी वृक्ष का न टूटना, तथा कमण्डलु में हाथी की पूछ का बाल अटक जाना, यह सब कैसे संभव है? ॥ 13 ॥

मनोवेग ने पुनः कहा– क्या यह सब तुम्हारे पुराणों में नहीं है? कहा जाता है, करांगुष्ठ के बराबर अगस्त्य मुनि ने समुद्र जल को तीन चुल्लु में भरकर पी लिया। जब अगस्त्य मुनि के उदर में समुद्र का समस्त जल समा गया तो मेरे कमण्डलु में हाथी क्यों नहीं समा सकता? इसी तरह कहा जाता है, एक समय सारी सृष्टि समुद्र में बह गई। यह समझकर ब्रह्मा व्याकुल होकर इधर-उधर उसे खोजते रहे। तब उन्होंने अलसी के पेड़ पर सरसों बराबर कमण्डलु को रखे अगस्त्य मुनि को देखा। फिर अगस्त्य मुनि के पूछने पर ब्रह्मा ने अपनी सृष्टि खो जाने की चिन्ता व्यक्त की। अगस्त्य मुनि ने चिन्तित देखकर उस सृष्टि को अपने कमण्डलु के भीतर रखा बताया ॥ 14 ॥

ब्रह्मा ने जब देखा तो पाया कि कमण्डलु के भीतर वटवृक्ष के पत्ते पर पेट फुलाये विष्णु भगवान सो रहे हैं। ब्रह्मा के पूछने पर विष्णु ने कहा कि तुम्हारी सृष्टि एक समुद्र में बही जाती थी। उसे मैंने अपने पेट में रख ली है। इसलिए अब निश्चिन्त होकर सो रहा हूँ। सृष्टि रखी होने के कारण पेट फूला है और सृष्टि सुरक्षित है। यह जानकर ब्रह्मा ने प्रसन्नता व्यक्त की। पर उन्होंने उसे देखने की उत्कण्ठा अवश्य प्रकट की। विष्णु के कहने पर उन्होंने उदर में जाकर सृष्टि को देखा और विष्णु की नाभि-कमल के छिद्रभाग से बाहर निकल आये। परन्तु निकलते समय वृषण के बाल का अग्रभाग अटक गया। निकलना संभव न जानकर उसी बालाग्र को कमलासन बनाकर वे बैठ गये। तभी से ब्रह्माजी का नाम 'कमलासन' प्रसिद्ध हो गया ॥ 15 ॥

मनोवेग के पूछने पर विप्रों ने कथानक की सत्यता को स्वीकार किया। तब उसने कहा– जब ब्रह्मा का केश नाभि-छिद्र में अटक गया तो हाथी की पूंछ का भाग कमण्डलु के छिद्र में कैसे नहीं अटक सकता? जब समस्त सृष्टि सहित कमण्डलु के भार से अलसी वृक्ष की शाखा नहीं टूटी तो एक हाथी के भार से पिण्डी वृक्ष कैसे टूट सकता है? जब अगस्त्य के कमण्डलु में सारी सृष्टि समा गई तो मेरे कमण्डलु में मुझ सहित हाथी क्यों नहीं समा सकता? यह भी विचारणीय है कि सारी सृष्टि को पेट में समा लेने पर विष्णु, अगस्त्य, ब्रह्मा, आदि कहां बैठे? अलसी वृक्ष किस पर रुका रहा? यह सब पूर्वापर विरोधी कथनों से भरे आपके पुराण सत्य हो सकते हैं पर हमारा कथन सत्य नहीं हो सकता। यह कहां का न्याय है? ॥ 16 ॥

यदि ब्रह्मा सर्वज्ञ है तो सृष्टि कहां है, इसका ज्ञान क्यों नहीं हुआ ? जो ब्रह्मा नरक से प्राणियों को खींचकर ला सकता है, वह वृषभ-केश को क्यों नहीं निकाल सका ? जो विष्णु प्रलय से पृथ्वी की रक्षा करता है उसने सीता-हरण को क्यों नहीं जाना ? और उसकी रक्षा क्यों नहीं की ? जो लक्ष्मण समस्त जगत को मोहित कर सकता है वह इन्द्रजीत (रावण ?) के द्वारा मोहित होकर नागपाश में कैसे बांधा गया ? जो विष्णु सारे संसार का पालक है उसे सीता का वियोग कैसे सहना पड़ा ? क्षुधा, तृषा, भय, द्वेष, राग, मोह, मद, रोग, चिन्ता, जन्म जरा, मृत्यु विषाद, विस्मय, रति, स्वेद, खेद, निद्रा ये अठरह दोष सभी के दुःख के कारण हैं। सुख चाहने वाले जीव को इन दोषों से मुक्त होना चाहिए ।। 17 ।।

क्षुधा, तृषा आदि इन अठारह दोषों से और कर्मजाल से ब्रह्मा, विष्णु वगैरह देव भी पीड़ित दिखाई देते हैं। जो इनसे मुक्त हो जाते हैं वे संसार द्वारा पूजित होते हैं। कर्मपटल से मुक्त हुआ जीव ही सिद्ध बुद्ध बन जाता है। जिनमें अहिंसा का शासन है वे मुनि वंदनीय हैं। देव उनकी स्तुति करते हैं। वे शोकमुक्त रहते हैं, सकल भाषाओं के ज्ञाता हैं. भामण्डल, दुन्दुभि, चामर अतिशय आदि गुणों से सुसज्जित रहते हैं। उन्होंने दश धर्मों की सुन्दर व्याख्या की है जिनका पालन कर व्यक्ति चतुर्गतियों से छूट जाता है। पंचमहाव्रत, क्षमा, पंचसमिति, अष्टकर्म-विध्वंसन, गुप्ति, रत्नत्रय, अहिंसा आदि तत्व धर्म के अंग हैं। इसी धर्म को आगमज्ञ गुरु ने प्रकाशित किया है। ऐसे सच्चे गुरु जिनेन्द्रदेव के गुणस्मरण मात्र से सारे कर्म और दोष नष्ट हो जाते हैं ।।18-20।।

६. छठी संधि

मनोवेग वहां से निकलकर दूसरे उपवन में चला गया। वहीं पवनवेग को उसने लोकस्वरूप के विषय में समझाया। यह लोक अनादिनिधन है, अविनाशी है, निश्चल है, चौदह राजू प्रमाण है। अधोलोक वेत्रासन (अर्ध मृदंगाकार) सदृश है, मध्यलोक की आकृति खड़े हुए अर्धमृदंग के ऊर्ध्वभाग के सदृश है और ऊर्ध्वलोक की आकृति खड़े हुए मृदंग के सदृश है। जीव यहीं त्रिलोक में भ्रमण करता है। अधोलोक में सात पृथिवियां हैं- रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, और महातमःप्रभा। इन सातों पृथिवियों में चौरासी लाख बिल है- प्रथम में 30 लाख, द्वितीय में 25 लाख, तृतीय में 15 लाख, चतुर्थ में 10 लाख, पंचम में 3 लाख, और छठे में 68 कम एक लाख प्रकीर्णक बिल हैं। सातवीं पृथ्वी में नियम से प्रकीर्णक बिल नहीं है। जीव पृथिवियों में उत्पन्न होते मरते रहते हैं। हिंसक असत्यवादी, परद्रव्य का अपहरण करने वाले, परस्त्री सेवन करने वाले, परवंचन कर परिग्रह करने वाले इन

नरकों में अत्यन्त दुःख पाते हैं। कितने ही नारकी जीव लोहे के कड़ाहों में रखे गरम तेल में फेंके जाते हैं, कितने ही प्रज्वलित अग्नि में पका दिये जाते हैं। असि-पत्र वन से चक्र, बाण, तोमर आदि विविध तीक्ष्ण अस्त्र नारकियों के सिर पर गिरते हैं। परस्त्री में आसक्त रहने वाले जीवों के शरीरों में अतिशय तप्त लोहमयी युवती की मूर्ति को दृढ़ता से लगाते हैं। कितने ही नारकी करोंत से फाड़े जाते हैं और भयंकर भालों से बेधे जाते हैं। इस प्रकार अनेकानेक अस्त्रों से छिन्न नारकियों का शरीर फिर से मिल जाता है। उनका अकाल मरण नहीं होता ।।1–2।।

असुर, नाग आदि के भेद से भवनवासी देव दस प्रकार के होते हैं। ये सभी देव स्वर्णकान्ति से संपन्न सुगन्धित निश्वास से युक्त, चन्द्रसदृश महाकान्ति वाले नित्य ही कुमार रहते हैं। रोग और जरा से मुक्त, अनुपम बल–वीर्य से परिपूर्ण, अणिमा आदि अष्ट ऋद्धियों से युक्त, विविध आभूषण में सज्जित ये देव आहारक और अनाहारक दोनों प्रकार के होते हैं (3)। रत्नप्रभा नरक से च्युत होकर भवनवासी देव हजार योजन ऊपर निवास करते हैं। भवनवासी देवों में असुरकुमार देवों के चौसठ लाख, नागकुमार के चौरासी लाख, सुपर्ण कुमार के बहत्तर लाख, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, स्तनितकुमार, विद्युत्कुमार, दिक्कुमार और अग्निकुमार के 76–76 लाख तथा वायुकुमार देवों के 96 लाख भवन हैं। इन दस कुलों के सभी भवनों का सम्मिलित योग 77200000 है (3–4)।

इसके बाद व्यन्तर देव आठ प्रकार के होते हैं– किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच। इनके असंख्य प्रमाण भवन हैं। तिर्यंच लोक, मध्यलोक, द्वीप, समुद्र, मानुषोत्तर पर्वत, अढाई द्वीप, स्वयंभूरमण आदि स्थानों पर उनका निवास रहता है (5)।

वैमानिक देवों के सोलह भेद हैं– सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत। इन स्वर्गों में दो प्रकार के पटल हैं–कल्प और कल्पातीत। कल्प कोई बारह मानता है और कोई सोलह। हरिषेण सोलह कल्प मानते हैं, ग्रैवेयक, अनुदिश और अनुत्तर ये तीन कल्पातीत पटल हैं। ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र और शतार को छोड़कर शेष बारह कल्प हैं। इनसे ऊपर कल्पातीत विमान हैं जिनमें नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमान हैं। ये सभी विमान क्रमशः ऊपर ऊपर हैं। सौधर्म–ईशान, सानत्कुमार–माहेन्द्र, ब्रह्म–ब्रह्मोत्तर, लांतव–कापिष्ठ, शुक्र–महाशुक्र, शतार–सहस्रार इन छह युगलों के बारह स्वर्गों में, आनत प्राणत, आरण–अच्युत स्वर्गों में, नव अनुदिश विमानों और विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित तथा सर्वार्थसिद्धि इन पांच अनुत्तर

विमानों में वैमानिक देव रहते हैं (6-8)। ये विमान सुवर्ण भित्तियों से युक्त, नाना मणि-मालाओं से सहित, चन्द्रकांत और सूर्यकांत मणियों से भाषित, विविध घटिकाओं से संयुक्त, कुसुममालाओं से युक्त, गोपुर, उपवनों सहित, अकृत्रिम जिनचैत्यालय से परिपूर्ण है (9)।

पृथ्वीतल पर असंख्य जिनभवन हैं। पंचमेरु, उनके चार वन (पाण्डु, सौमनस, नन्दन और भद्रशाल) हैं, शाल्मली जम्बू, वृक्षादि हैं, गजदन्तगिरी हैं, चारों दिशाओं में कुलपर्वत हैं, मानुषोत्तर पर्वतस्थ जिनालय हैं, नंदीश्वद्वीपस्थ जिनालय हैं (10)। नारकियों के पटलों के अनुसार उनकी आयु और ऊँचाई है। नारकियों की उत्कृष्ट आयु क्रम से पहले में एक सागर, दूसरे में तीन सागर, तीसरे में सात सागर, चौथे में दस सागर, पांचवें में सत्रह सागर, छठे मे बावीस सागर और सातवें मे तेतीस सागर है। व्यन्तर देव द्वीप, पर्वत, समुद्र, देश, ग्राम, नगर, गली, बाग, वन आदि स्थानों में रहते हैं (11-18)।

इस संधि में देवों, मनुष्यों और नारकियों की आयु, ऊंचाई, भवन आदि का वर्णन मिलता है। इसे त्रिलोक प्रज्ञप्ति आदि ग्रन्थों में देखा जा सकता है।

७. सप्तम संधि

उपकार निमित्त से त्रिलोक का वर्णन कर मनोवेग ने पवनवेग से कहा- मित्र, अभी तुम्हें पुराणों की कुछ और कथायें बताता हूँ। यह कहकर ऋषिवेष को छोड़कर और तपस्वी वेष को धारणकर उन्होंने पटना नगर में उत्तर दिशा की ओर से प्रवेश किया। वहां ब्रह्मशाला में पहुँचकर भेरी बजा दी और सिंहासन पर बैठ गया। भेरी की आवाज सुनकर वादशील ब्राह्मण एकत्रित हो गये और कहने लगे- तुम कहां से आये हो और किस विषय पर वाद करना चाहते हो? मनोवेग ने कहा- हम लोग भ्रमण करते हुए पिछले गांव से आये हैं। व्याकरणशास्त्र वगैरह कुछ भी नहीं जानते। ब्राह्मण ने कहा- उपहास मत कीजिए। सही बताइये- कहां से आये हो, कहां जा रहे हो, तुम्हारे गुरु का नाम क्या है, माता पिता कौन हैं? मनोवेग ने कहा- यदि आप विचारवन्त हैं तो सुनिये, मैं कह रहा हूं ॥ 1 ॥

बृहत्कुमारिका कथा

साकेत नगर में बृहत्कुमारिका नामक मेरी माता को मेरे नाना ने मेरे पिता को दी। विवाह के समय बजे हुए बाजों की आवाज सुनकर एक हाथी उस स्तंभ को तोड़कर भाग निकला। उससे घबड़ाकर लोग इधर-उधर भागने लगे। वर भी भागा। भागते समय उसके धक्के से वधू नीचे गिर पड़ी और बेहोश हो गई। लोगों के आक्षेप के भय से मेरा पिता कहीं भाग गया और अभी तक नहीं आया। लगभग डेढ माह बाद पिता के स्पर्श मात्र से उत्पन्न

हुआ गर्भ दिखाई देने लगा। मेरी मातामही ने पूछा- मेरे कुल में यह किसका लांछन है ? उसने उत्तर दिया- मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं है ॥ 2 ॥ हाथी के भय से भागते समय वर के अंगस्पर्श के सिवाय आज तक मैंने किसी भी पर-पुरुष का स्पर्श नहीं किया। प्रसवकाल समीप आ गया। इसके बाद मेरे नाना के घर कितने ही तपस्वी आये। आहार ग्रहण के बाद मेरे नाना के पूछने पर उन्होंने कहा कि इस देश में बारह वर्ष का दुष्काल पड़ेगा। इस कारण हम लोग उस स्थान पर जा रहे हैं जहां सुभिक्ष है। उन्होंने यह भी कहा कि तू भी हमारे साथ चल। यहां भूखों क्यों मरता है। मैंने भी सोचा, यहां तो बारह साल का दुर्भिक्ष पड़ेगा। मैं गर्भ से निकलकर भूख से क्यों पीड़ित होऊँ। फलत: दुष्काल तक मैं गर्भस्थ में ही रहा।

दुर्भिक्ष दूर होने पर तपस्वी मेरे घर आये और नानाको बताया कि अब वे अपने देश वापिस जा रहे हैं। उनके वचन सुनकर मैं भी गर्भ से बाहर निकलने लगा। उस समय मेरी माता चूल्हे के समीप बैठी थीं। प्रसव वेदना से वे वहीं अचेत हो गईं। मैं गर्भ से निकलकर वहीं चूल्हे की राख में गिर गया। बारह वर्ष का भूखा होने के कारण मैंने माता से भोजन मांगा। उस समय मेरे नाना ने उनसे कहा- आपने ऐसा बालक कभी देखा है जो उत्पन्न होते ही भोजन मांगे ? उन्होंने कहा-यह अपने घर में अमंगल है। इसे घर से बाहर कीजिए। अन्यथा घर में निरन्तर विघ्न होते रहेंगे। तब मेरी माता ने कहा- यहां तू मुझे बड़ा दु:खदायी है। अत: तुम अब यम के घर जाओ। वे ही तुम्हें भोजन देंगे ॥ 4 ॥

तत्पश्चात् मैं अपने देह में भस्म लगाकर सिर मुड़ाकर घर से निकल गया और तपस्वियों के पास पहुंच गया। उनके साथ रहकर मैंने घनघोर तपस्या की। एक दिन मैं साकेत गया तो वहां देखा कि मेरी मां ने दूसरा विवाह कर लिया है। इस विषय में तपस्वियों से पूछा तो उन्होंने कहा कि यदि पहला पति मर जाता है तो अक्षतयोनि वह स्त्री दूसरा विवाह कर सकती है (5)। यदि पति विदेश गया हो तो प्रसूता स्त्री आठ वर्ष तक और अप्रसूता चार वर्ष तक अपने पति के आने की प्रतीक्षा कर दूसरा विवाह कर सकती है (विशेष परिस्थिति में पांच विवाह करने में भी दोष नहीं है, जैसा द्रोपदी ने किया था)। व्यासादि ऋषियों के ये वचन सुनकर मैंने अपनी माता को निर्दोष मान लिया। फिर मैंने एक वर्ष तक पुन: तपस्या की। बाद में तीर्थयात्रा करते हुए आज आपके नगर में आया हूँ। यही मेरा परिचय है (6)।

मेरी इन बातों को सुनकर ब्राह्मणों ने कहा- तू ये असंभव और आगम विरुद्ध बातें क्यों कर रहा है ? मनोवेग ने कहा- ये विरुद्ध नहीं हैं, ऋषि भाषित हैं। आप यदि सुनना चाहें तो मैं सप्रमाण बता सकता हूँ, पर मैं

भयभीत हूँ। आप निष्पक्ष हो सुनें तो कहूंगा। ब्राह्मणों ने कहा– बताओ, यह सब कहां तक ठीक है (7)। मनोवेग ने कहा– पुराण, मानवधर्म (मनुस्मृति में कथित धर्म), अंग सहित वेद और चिकित्सा ये चार आज्ञासिद्ध हैं। तर्क से इनका खण्डन नहीं करना चाहिए। ये मनु, व्यास ऋषि के वचन हैं। इनका खण्डन करने वाला ब्रह्मघाती होता है। सदोष वचनों में प्रश्न करना निषिद्ध है। ब्राह्मणों ने कहा– मात्र वचन के कहने में पाप नहीं लगता। 'तीक्ष्ण खड्ग' कहने से जिव्हा नहीं जलती और उष्ण अग्नि कहने से मुख नहीं जलता। अतः तुम निर्भय होकर पुराण वचनों का अर्थ करो। हम उसे विचार पूर्वक ग्रहण करेंगे (8)।

भागीरथी और गांधारी कथा

मनोवेग ने कहा– भागीरथी नाम की दो स्त्रियां एक ही स्थान पर सोती थीं। उन दोनों के स्पर्श मात्र से एक गर्भवती हो गई और उसका भगीरथ नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। यदि स्त्री के स्पर्श मात्र से गर्भ रह सकता है तो पुरुष के स्पर्श मात्र से मेरी माता को गर्भ कैसे नहीं रह सकता? इसी प्रकार गांधारी का विवाह धृतराष्ट्र के साथ निश्चित हुआ। उसके दो माह पूर्व ही वह रजस्वला हो गई। चतुर्थ दिन उसने स्नान करके फनस वृक्ष का आलिंगन किया। फलतः वह गर्भवती हो गई। वृद्धिगत उदर देखकर विवाह तुरन्त कर दिया गया। उदरस्थ फनस फल से ही एक सौ पुत्र उत्पन्न हुए (9)।

मनोवेग के कहने पर ब्राह्मणों ने यह स्वीकार कर लिया कि उनके पुराणों में इस प्रकार का वर्णन मिलता है। तब मनोवेग ने कहा– यदि फनस के आलिंगन से पुत्रों की उत्पत्ति हो सकती है तो मेरी माता के पुरुष के स्पर्श मात्र से पुत्र की उत्पत्ति को आप असत्य कैसे मान सकते हैं? जहां तक बारह वर्ष तक माता के गर्भ में रहने का प्रश्न है, वह भी व्यर्थ है। कहा जाता है, अर्जुन ने सुभद्रा को चक्रव्यूह की रचना का वर्णन किया था जिसे अभिमन्यु ने सुना था, तब मैंने तपस्वियों के वचन क्यों नहीं सुने? (10)

मय ऋषि कोपीन कथा और मंदोदरि

इसी तरह बारह वर्ष तक गर्भ में रहने वाली बात भी प्रमाणित हो जाती है। एक समय मय नामक मुनि ने अपनी कोपीन एक तालाब में धोई। उस कोपीन में लगा हुआ वीर्य जल में गिर गया जिसे एक मेंढकी ने पी लिया। उसके पीने से मेंढकी गर्भवती हो गई। यथासमय उसके गर्भ से एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई (11)। परन्तु मेंढकी ने उसे कमल के पत्ते पर रख दिया यह सोचकर कि यह शुभलक्षणा कन्या उसकी जाति की नहीं। जब मय (मय) मुनि वहां आया तो उसने उस सुंदरी को तुरन्त ही पहचान लिया कि वह मेरे वीर्य

से उत्पन्न हुई है। ऐसा समझकर उस पुत्री को ग्रहण किया और उसका ढंग से पालन-पोषण किया। तरुणी होने पर उस कन्या ने रजस्वलावस्था में पिता के वीर्य से सनी कोपीन को पहिनकर स्नान किया। स्नान करते समय उस कोपीन में लगे हुए वीर्य का एक बिन्दु उसके गर्भ में चला गया और वह गर्भवती हो गई। मुनि ने यह जानकर उस कन्या का गर्भ अपने तपोबल से स्तंभित कर दिया (12)। वह गर्भ सात हजार वर्ष तक उस कन्या में थमा रहा। बाद मे उस सुन्दरी को लंकाधिपति रावण ने मदोदरि के नाम से स्वीकारा। उसी से फिर इन्द्रजीत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (13)। अर्थात् इन्द्रजीत वस्तुत: सात हजार वर्ष पूर्व ही गर्भ मे आ चुका था। मनोवेग ने कहा कि जब वह सात हजार वर्ष तक गर्भ में रह सकता है तो क्या मै बारह वर्ष नही रह सकता ? तुम दूसरों के दोष मानते हो पर स्वयं के दोष को नही देखते। यह सुनकर ब्राह्मणों ने कहा– यह बात भी हम स्वीकार किये लेते हैं। पर तुम यह बताओ कि उत्पन्न होते ही तुमने तपोग्रहण कैसे किया ? तथा तुम्हारी मां परिणीता होते हुए भी कन्या कैसे कहलायी ? मनोवेग ने उत्तर दिया – सुनिए।

पराशर ऋषि और योजनगन्धा कथा

पराशर नाम के ऋषिवर ने कभी पूर्वकाल मे किसी कार्यवश गंगा नदी को पार किया। नौका चलाने वाली धीवर बालिका थी जो अत्यन्त सुन्दर नेत्रों वाली पीनस्तनी थी। उसका नाम मत्स्यगंधा था। पराशर उसके रूप पर आसक्त हो गये, मदन बाणों से विद्ध हो गये और उससे रति-याचना करने लगे। धीवर कन्या सत्यवती तपस्वी के अभिशाप के भय से इस नीचकृत्य करने के लिए तैयार तो हो गई पर उसे शर्म और निन्दा का भय बना ही रहा। इसे दूर करने के लिए पराशर ने दिन मे ही अपने तपस्तेज के प्रभाव से घनघोर अंधकार भरी रात्रि कर दी और मत्स्यगंधा के स्थान पर उसका शरीर सुगन्धित कर दिया और वह योजनगन्धा हो गई। वह जटा-जूट से अलकृता, उत्तमांगी, विद्रुम-कुण्डला भूषणों से संसक्ता, ब्रह्मसूत्रधारिणी भी बन गई और फिर उन्ही पराशर ऋषि ने स्वतन्त्रता पूर्वक उससे सभोग किया। योजनगन्धा ने पराशर ऋषि से वर मागा तब वह अक्षतयोनि बनी रही (14-15)। उसी धीवर कन्या से व्यास ऋषि का जन्म हुआ। बाद में उसी का विवाह भीष्म पितामह के पिता महाराजा शान्तनु से हुआ। व्यास को ही द्वैपायन और कृष्ण कहने लगे। योजनगन्धा किंवा सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न शान्तनु के पुत्र विचित्रवीर्य नि:संतान मरे। अत: माता की आज्ञा से विचित्रवीर्य की अम्बिका और अम्बालिका नामक विधवा पत्नियों से नियोग कर इन्होंने क्रमश: धृतराष्ट्र और पाण्डु को उत्पन्न किया। व्यास तपस्वी बन गये। पाण्डु ने कुन्ती का वरण किया। वरण करने के पूर्व ही कुन्ती ने सूर्य के सहवास से कर्ण को उत्पन्न किया।

मनोवेग ने कहा– व्यास जी जन्म लेते ही तपस्वी हो गये तो मैं तपस्वी क्यों नहीं हो सकता ? व्यास जी के उत्पन्न हो जाने पर भी योजनगन्धा 'अक्षतयोनि' बनी रही। कर्ण को उत्पन्न करने पर भी कुन्ती कन्या बनी रही तो मेरी माता कन्या रहे इसमें आपको संदेह क्यों हो रहा है ? (15)

उद्दालक और चन्द्रमती कथा

पूर्वकाल में उद्दालक नामक ऋषि ने अपने तप के प्रभाव से सुरेन्द्र को भी कंपित कर दिया था। एक बार उनका वीर्य स्वप्नावस्था में स्खलित हो गया जिसे गंगाजी मे कमलपत्र पर स्थापित कर दिया गया। उसी दिन रघुराजा की पुत्री चन्द्रमती रजस्वला होने के बाद चतुर्थ स्नान करने के लिए गंगास्नान को आयी। उसने स्नान करते समय वह वीर्यसहित कमल सूंघ लिया जिससे तत्क्षण गर्भाधान हो गया (16)। यह वृत्तान्त चन्द्रमती की माता ने रघुराजा से कहा। उसने क्रोधवश चन्द्रमती को जंगल में छुड़वा दिया। वहां उसने तृणबिन्दु नामक ऋषि के तपोवन मे नागकेतु नामक पुत्र को जन्म दिया और उसी समय अपने पिता को खोजने की आज्ञा देकर उसे मंजूषा में रखकर गंगा में प्रवाहित कर दिया। संयोगवशात् स्नान करते समय उद्दालक ने मंजूषा को देखा और उसे पकड़कर खोला तो पाया कि वह उसी का पुत्र है। चन्द्रमती भी पुत्र को खोजती हुई वही पहुंच गई। उद्दालक ने उससे विवाह करने की इच्छा व्यक्त की, परन्तु चन्द्रमती पिता की अनुमति पूर्वक ही विवाह करने को तैयार हुई। उद्दालक ने तुरन्त रघु के पास जाकर स्वीकृति ले ली और पुनः कुमारी करके चन्द्रमती के साथ विवाह कर लिया। यह कथा कहने के बाद मनोवेग ने कहा कि जब पुत्र होते हुए भी चन्द्रमती कन्या रह सकती है तो मेरी माता को कन्या मानने में आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए (17)।

बाद में वादशाला से निकलने पर मनोवेग ने अपने अभिन्न मित्र पवनवेग से कहा– आश्चर्य है, ये पुराण परस्पर विरुद्ध और असंभवनीय बातों पर कोई विचार नहीं करते। फनस वृक्ष के आलिंगन से यदि स्त्री के पुत्र होता तो मनुष्य के स्पर्शमात्र से केलें भी फलने लगती। गौ के संग से गौ का गर्भवती हो जाना, मेंढकी से मनुष्य की उत्पत्ति होना, शुक्र के स्पर्श मात्र से सन्तान होना, साठ हजार वर्ष तक मंदोदरि द्वारा गर्भ को बनाये रखना, रतिकाल में ही पुत्र का उत्पन्न होना और उसे जंगल में भेज देना, शुक्र सहित कमल के सूंघने से गर्भाधान हो जाना, आदि जैसी बेतुकी बातें इन पुराणों में ही मिलती हैं। ये सब उपहास के कारण हैं। अपनी विवेक बुद्धि से इन कथाओं की सत्यता–असत्यता पर गंभीरता पूर्वक विचार करो। यह सुनकर पवनवेग निरुत्तर हो गया।

८. अष्टम संधि

कर्णोत्पत्ति कथा

मनोवेग ने पवनवेग से कहा– जैन पुराणों के अनुसार कर्ण की उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है। सोमप्रभ नाम का एक राजा था। उसके दो पुत्र थे– शान्तनु और विचित्रवीर्य। विचित्रवीर्य के तीन पुत्र हुए– जात्यन्ध धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर। पाण्डु पाण्डुरोग से पीड़ित थे और रति संसर्ग करने की उनकी क्षमता नहीं थी। एक दिन किसी मनोहर उपवन में क्रीड़ा करते हुए उसने लता मण्डप में पड़ी हुई एक काममुद्रिका (अंगूठी) देखी। पाण्डु उसे अपनी अंगुलि में डालकर देख ही रहा था कि उसका मालिक विद्याधर चित्रांगद वहां आ पहुंचा। पाण्डु ने तुरन्त उसे वापिस कर दीया (1)। पाण्डु ने पूछा– मित्र, तुम खिन्न मन दिखाई दे रहे हो, शरीर भी कृश लग रहा है। इसका कारण क्या है? उत्तर में पाण्डु ने कहा– मित्र, सूर्यपुर राजा अन्धकवृष्टि की अतिसुन्दरी कन्या कुन्ती है। पहले उसने उसका विवाह मेरे साथ करने का निश्चय किया था परन्तु मुझे पाण्डुरोग देखकर अब उसका विचार बदल गया है। अब मैं उसकी वियोगाग्नि से संतप्त हूँ। तब चित्रांगद ने कहा मेरी इस काममुद्रिका को पहन लो जिससे तुम कामदेव के समान सुन्दर होकर उसका उपभोग कर सकते हो। जब वह गर्भवती हो जायेगी तो अन्धकवृष्टि राजा उसे तुम्हें दे देंगें (2)।

पाण्डु उस अंगूठी को पहिनकर अपने ससुर के घर गया। वहां प्रच्छन्न होकर कुन्ती से मिला। कुन्ती उसे देखकर कंपित हो गई। सुन्दर शरीर देखकर अनुरक्त हो गई। पाण्डु ने उसका सात दिन तक उपभोग किया जिससे कुन्ती गर्भवती हो गई। तब पाण्डु वहां से वापिस आ गया। कुन्ती को गर्भवती जानकर उसकी माता ने गुप्त रूप से उसकी प्रसूति कराई। सुन्दर लक्षणों से युक्त पुत्र हुआ जिसे उसने मंजूषा में रखकर गंगाजी में प्रवाहित कर दिया। उसे चंपापुर नरेश आदित्य ने पकड़ लिया। उद्घाटित करने पर उसे एक सुन्दर बालक मिला। वह अपने हाथों से अपने कर्ण पकड़े हुए था। आदित्य पुत्रहीन था। अतः उसने उसका 'कर्ण' नाम रखकर उसे अपना पुत्र स्वीकार कर लिया। आदित्य के देहावसान के बाद चंपापुर का राजा कर्ण ही हुआ। इधर कुन्ती को पाण्डु में आसक्त जानकर उसका विवाह पाण्डु के साथ कर दिया गया। माद्री का भी विवाह पाण्डु के साथ हो गया।

पाण्डव कथा

धृतराष्ट्र का विवाह गान्धार नरेश की पुत्री गांधारी के साथ हुआ। दुर्योधनादिक सौ पुत्र धृतराष्ट्र और गांधारी से हुए और युधिष्ठिर, भीम और

अर्जुन कुन्ती से तथा नकुल और सहदेव माद्री से उत्पन्न हुए। आदित्यज कर्ण के साथ सौ पुत्र प्रतिनारायण जरासिन्धु के अनुयायी थे तथा पंच-पाण्डव नारायण श्रीकृष्ण की सेवा में रहते थे। दुर्योधनादि को पराजित कर पाण्डवों ने अपना राज्य वापिस लिया (4)। चिरकाल तक राज्य करने के बाद उन्होंने जैन-दीक्षा ग्रहण कर ली। सुख-दुःख मान-अपमान और शत्रु-मित्र में समभावी होकर शान्त चित्त से बावीस परीषहों को और भयंकर उपसर्गों को सहते हुए शत्रुंजय पर्वत से युधिष्ठिर भीम और अर्जुन ने मोक्ष प्राप्त किया तथा नकुल और सहदेव सर्वार्थसिद्धि पहुंचे। वे भी दूसरे भव में मोक्ष प्राप्त कर लेंगे। इस प्रकार कर्ण की उत्पत्ति-कथा उपलब्ध होती है। वह सूर्य का पुत्र नहीं है। यदि धातु रहित देवों के द्वारा स्त्रियां नर को उत्पन्न करती है तो पाषाण के द्वारा पृथ्वी में धान्यादिक उत्पन्न होना चाहिए। संसार में सभी प्रकार के संबंध होते हैं, अघटित संबंध नही होते। स्त्री का संविभाग अविश्वसनीय है। योजनगन्धा धीवरी का पुत्र व्यास दूसरा होगा और सत्यवती पुत्र व्यास दूसरा होगा। नाम साम्य के कारण लोगों ने अलीक को अपना लिया (5)।

महाभारत कथा समीक्षा

महाभारत में व्यास ऋषि ने कदाचित् यह सोचा होगा कि विरुद्धार्थ प्रतिपादन करने वाला उनका बनाया असंबद्ध शास्त्र महाभारत भी प्रसिद्ध हो जायेगा। ऐसा सोचकर व्यासजी ने गंगा के किनारे अपना ताम्रपत्र बालूपुञ्ज मे गाड़कर स्नानार्थ गंगाजी में उतर गये। उनका अनुकरण कर बहुत लोग इसी तरह बालुपुञ्ज बनाकर गंगास्नान करने लगे। गंगास्नान से वापिस आने पर व्यासजी ने असख्य बालुकापुञ्ज देखे और अपना ताम्रभाजन नहीं खोज सके। समस्त लोक को मूढ समझकर उन्होंने श्लोक पढ़ा कि जो लोग परमार्थ का विचार न कर दूसरों का अनुकरण करते हैं वे मेरे ताम्रभजन की तरह अपना कार्य नष्ट कर लेते हैं। इस मिथ्यागामी ससार में शायद ही कोई विचारवान् होगा। अतः मेरा यह विरुद्धशास्त्र भी लोक में आदरणीय हो जायेगा। यह सोचकर व्यास जी बड़े प्रसन्न हुए (6)।

यह कहकर मनोवेग ने हंसकर पुनः कहा पवनवेग से कि इसी प्रकार की कुछ और पौराणिक कथायें सुनाता हूँ। यह कहकर मनोवेग ने रक्ताम्बर भेष धारणकर पंचम द्वार से पटना में प्रवेश किया और वादशाला में जाकर भेरी बजाकर स्वर्णासिन पर बैठ गया। ब्राह्मण के आने पर उसने वही पूर्ववत् अज्ञानता बताई। उनके आग्रह पर उसी प्रकार पुनः मनोवेग ने अपनी बात कही (7)।

भूगाल कथा

हम दोनों पूर्व देशवर्ती विक्रमपुर के उपासक हैं, भगवान बुद्ध के भक्त हैं।

एक दिन बौद्ध भिक्षुओं ने विहार में अपने चीवर सूखने डाल दिये और हम दोनों को लाठी देकर उनकी रक्षार्थ खड़ा कर दिया। इतने में दो शृगाल आये। उनको देखकर हम लोग भयभीत होकर स्तूप (टीले) पर चढ़ गये। हमारा चिल्लाना सुनकर बौद्ध भिक्षु दौड़े पर शृगाल हम दोनों सहित उस टीले को लेकर आकाश में उड़ गये (8)। बत्तीस योजन दूर पहुंचकर उन शृगालों ने टीले को जमीन पर रखा और हम लोगों का भक्षण करने के लिए उद्यत हुए। इसी बीच दो शस्त्रधारी शिकारियों को उन्होंने देखा और भयभीत होकर वे वहां से भाग गये। तत्पश्चात् हम लोग उन शिकारियों के साथ शिव नामक देश में आकर विचार करने लगे कि न देश जानते हैं, न विदेश। यहां क्या करेंगे? इससे तो अच्छा यही है कि हम बुद्ध भाषित तप करना प्रारंभ कर दें। रक्त चीवर हैं ही, शिर पर बाल भी छोटे छोटे हैं। इन्हीं के माध्यम से घर घर भोजन करते रहेंगे। यह सोचकर वैसा ही करते-करते इस नगर में बहुत समय के बाद पहुंच पाये। यह सुनकर ब्राह्मणों ने कहा कि तुम लोग तपस्वी होते हुए भी झूठ बोल रहे हो। मनोवेग ने कहा- यदि आप हमारे इन वचनों को झूठ मानते हैं तो आपके पुराणों में भी इसी तरह जो असत्य और बेतुकी बातें हैं उन्हें भी झूठ मानना पड़ेगा। ब्राह्मणों ने कहा- यदि ऐसा है तो तुम निर्भय होकर कहो (9)। मनोवेग ने तब कहा- सुनो।

लक्ष्मण – सीता सहित भगवान राम ने वनवास स्वीकार किया। खर दूषणादि राक्षसों को मारकर वे वन में रहते थे। तब रावण ने छद्मवेषी स्वर्ण हिरण का रूप धारणकर रामचन्द्रजी को लुभाकर, सीता का हरण कर लंका चला गया। बाद में बलशाली बाली को मारकर वानरों सहित सुग्रीव को राजा बनाया। सीता की खोज में हनुमान को भेजा। हनुमान ने लंका में सीता को देखकर रामचन्द्रजी से कहा। रामचंद्रजी ने हनुमान को लंका के विध्वंसन का आदेश दिया। बंदरों ने बड़े बड़े पर्वतों और शिलाखण्डों को उखाड़कर सेतु बनाया और सुग्रीव सेना सहित श्रीलंका में प्रवेश किया (10)।

मनोवेग ने कहा- रामचन्द्रजी का चरित्र रामायण में इसी प्रकार है या नहीं? ब्राह्मणों ने कहा- रामायण की इस कथा को कौन अस्वीकार कर सकता है? तब मनोवेग ने कहा- पण्डितवर, एक-एक बंदर पांच-पांच पर्वतों लीला के साथ आकाशमार्ग में ले जायें तो बड़े-बड़े शृगाल यदि एक छोटे-से टीले को उठाकर आकाश में ले जायें तो क्या उसे असत्य मानेंगे? तुम्हारा कथन सही है और हमारा कथन झूठा है, यह विचारशून्यता का ही द्योतक है। इसी तरह न सुग्रीव वानर था और न रावण राक्षस था। वे सभी वानरवंशी और राक्षसवंशी थे (11)।

विद्याधर वंशोत्पत्ति कथा

इसके बाद लेखक ने राक्षस वंशादि के विषय में कुछ विस्तार से कहा है। प्रथम जिनेश्वर को प्रणामकर भरत ने राज्य संचालन का प्रारंभ कर दिया। भगवान आदिनाथ भी देश-देशान्तर भ्रमण करते रहे। कच्छ, महाकच्छ आदि देशों के राजा उनकी स्तुति करने आते रहे। उन्होंने भगवान से उपदेश आदि देने की प्रार्थना की। लोगों के आने से कोलाहल उत्पन्न हुआ जिससे धरणेन्द्र का आसन कंपित हो गया। वह समझ गया कि यह भगवज्जिनेन्द्र के आने का संकेत है। धरणेन्द्र अपने विद्याबल से सुन्दर रूप धारणकर भगवान के पास पहुंचा। सुर, नर, विद्याधरों ने भगवान की पूजा की। इक्ष्वाकुवंश की उत्पत्ति भ. आदिनाथ से ही हुई। वहां नमि, विनमि को धरणेन्द्र ने विद्यायें दी। इन दोनों के वंश में उत्पन्न पुरुष विद्याधारी होने के कारण विद्याधर कहलाये। इसमें विद्युद्दृढ, दृढरथ आदि सैकड़ों विद्याधर हुए (12)।

राक्षस वंशोत्पत्ति कथा

इसके बाद ऋषभदेव का युग समाप्त हुआ और अजितनाथ का युग आया। अजितनाथ के ही पुत्र सगर चक्रवर्ती थे। इक्ष्वाकुवंश के समाप्त होने पर उससे राक्षसवंश की उत्पत्ति हुई। भरतक्षेत्र के विजयार्द्ध की दक्षिण श्रेणी में एक चक्रवाल नाम का नगर है। उसमें पूर्णघन नामक विद्याधर राजा था। उसने विहायस्तिलक नगर के राजा सुलोचन से उसकी कन्या उत्पलमती मांगी पर उसने वह कन्या सगर को दे दी। सुलोचन के पुत्र सहस्रनयन को विद्याधरों का अधिपति बना दिया। सहस्र यन ने पूर्णमेघ को मार डाला और उसके पुत्र मेघवाहन को निष्कासित कर दिया। मेघवाहन भयभीत होकर अजितनाथ के समवशरण में पहुंचा। इन्द्र ने मेघवाहन से उसके भय का कारण पूछा। मेघवाहन ने कहा-सगर का सहयोग लेकर सहस्रनयन ने मेरे वंश का उन्मूलन कर दिया है और इसी भय से मैं हंस-विमान से उड़कर यहां आया हूँ। इस बीच मेघवाहन का पीछा करते हुए सहस्रनयन भी समवशरण में पहुंच गया अहंकार के साथ। परन्तु भ. का प्रभामण्डल देखकर उसका अहंकार चूर-चूर हो गया। उसने अजितनाथ को प्रणाम किया। सहस्रनयन और मेघवाहन दोनों पारस्परिक वैरभाव को छोड़कर भगवान के चरणों में बैठ गये। तब गणधर ने भगवान से इन दोनों के वैर का कारण पूछते हुए उनके भवान्तरों को जानने की इच्छा व्यक्त की। अपने भवान्तर जानकर मेघवाहन और सहस्रनयन दोनों परस्पर मित्र बन गये। राक्षसों के इन्द्र भीम और सुभीम भी मेघवाहन से स्नेह करने लगे (3-14)।

राक्षसेन्द्र भीम और सुभीम ने स्नेहवश मेघवाहन को श्रीफल जैसे आकार वाली श्रीलंका का राज्य सौंप दिया। यह श्रीलंका तीस योजन लंबी और छः

योजन चौड़ी नगरी है जिसमें राक्षसवंशियों का निवास है। उन्होंने उसे हार, अलंकार और राक्षसी विद्या भी दी। इन सभी को लेकर वह त्रिकूटाचल के नीचे बसी श्रीलंका में पहुंचा और वहां राज्य करने लगा। राजा रतिमयूख की पुत्री सुप्रभा से उसका विवाह हुआ और उससे महारक्ष नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। कालान्तर में मेघवाहन ने महारक्ष को राज्याभिषिक्त कर जैन दीक्षा धारणकर ली। महारक्ष की पत्नी विमलाभा से तीन पुत्र हुए– अमररक्ष, उदधिरक्ष और भानुरक्ष। महारक्ष की इसी सन्तान–परम्परा में मनोवेग नामक राक्षस के राक्षस नामक प्रभावशाली पुत्र हुआ जिससे राक्षस वंश की उत्पत्ति हुई। राक्षस से आदित्यकीर्ति और बृहत्कीर्ति हुए। इसी परम्परा में मुनिसुव्रत तीर्थ काल में सुग्रीव, माली, सुमाली, दशानन (रावण), कुम्भकर्ण, विभीषण, चन्द्रनखा, इन्द्रजीत और मेघवाहन आदि विद्याधर भी हुए (1)।

वानर वंशोत्पत्ति कथा

विजयार्द्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी में मेघपुर नामक नगर था। उसका अतीन्द्र नामक राजा था। उसका श्रीकण्ठ नामक पुत्र था और महामनोहरदेवी नामक बहिन थी। इसी तरह रत्नपुर नगर में पुष्पोत्तर नामक राजा था और उसका पद्मोत्तर नामक पुत्र और पद्माभा नामक पुत्री थी। श्रीकण्ठ ने अपनी बहिन पद्मोत्तर को न देकर विमलकीर्ति को दी। इससे पुष्पोत्तर क्रोधित हो गया। पारस्परिक दर्शन से श्रीकण्ठ और पद्माभा में प्रेम हो गया। यह जानकर पुष्पोत्तर और भी क्रोधित हो उठा और उसका पीछा किया। श्रीकण्ठ उसे आते देखकर अपने बहनोई विमलकीर्ति (कीर्तिधवल) की शरण में श्रीलंका पहुंचा। विमलकीर्ति के प्रयास से युद्ध टल गया और दोनों का विवाह हो गया। तब श्रीकण्ठ से विमलकीर्ति ने कहा-विजयार्ध पर्वत पर तुम्हारे अनेक शत्रु हैं। अतः अब तुम यहीं रहो। यह कहकर महाबुद्धिमान आनन्द नामक मन्त्री से विचार-विमर्श कर उसे वानरद्वीप दे दिया। श्रीकण्ठ ससैन्य वानरद्वीप पर राज्य करने चल पड़ा। वानरद्वीप के मध्य किष्कु नामक पर्वत मिला। उसपर विविध प्रकार के सुन्दर वृक्ष दिखाई दिये। श्रीकण्ठ वहां इच्छानुसार क्रीड़ा करता रहा। तदनन्तर वहां उसने क्रीड़ा करते हुए प्रसन्नचित्त अनेक वानरों को देखा। उनके साथ भी उसने अपना समय बिताया। बाद में उसी पर्वत पर उसने स्वर्गपुरी जैसा किष्कपुर नामक नगर बसाया और वहीं पद्माभा प्रिया के साथ राज्य करने लगा (16)।

तदनन्तर श्रीकण्ठ ने वज्रकण्ठ को राज्य देकर मुनिदीक्षा ले ली। इसी वंशपरम्परा में अमरप्रभ नामक राजा हुआ। उसने गुणवती से विवाह किया। विवाह के समय अनेक प्रकार के चित्रों के साथ वानरों के भी विविध चित्र विद्याधरियों ने बनाये। उन वानरों के चित्रों को देखकर गुणवती भय से

कंपित हो गयी, मूर्छित हो गयी। उसकी यह अवस्था देखकर अमरप्रभ ने वानर-चित्र बनाने वाले को दण्डित करना चाहा पर वृद्ध मन्त्री ने यह समझाया कि ये वानर कुलपरम्परा से मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयुक्त होते आये हैं। इन्हीं के नामपर वानरद्वीप है। श्रीकण्ठ इन वानरों से अत्यन्त प्रेम करते थे। अमरप्रभ यह सुनकर सन्तुष्ट हुआ और वानरों के चिन्ह बनवाकर मुकुट में धारण किया, ध्वजाओं में चित्रित किया। अमरप्रभ के पुत्र कपिकेतु आदि ने भी वानरों को मांगलिक प्रतीक मानकर उनका आदर किया। इसी से वानरवंश चला। रावण सुग्रीव, नमि, विनमि आदि विद्याधर इसी वानरवंश से संबद्ध हैं (17)।

किष्किन्धा नगरी में बालि, सुग्रीव विद्याधर थे। उनकी श्रीप्रभा नामक बहिन थी। श्रीप्रभा को रावण अपनाना चाहता था पर बाली तैयार नहीं हुआ। युद्ध का समय आया तो उसने संसार के स्वभाव का परिज्ञानकर जैन दीक्षा धारण कर ली। फिर सुग्रीव ने श्रीप्रभा को रावण के पास पहुंचा दिया। खरदूषण ने रावण की बहिन चन्द्रनखा का अपहरण कर लिया। एक बार मुनि बाली के प्रताप से रावण का पुष्पक विमान आकाश में रुक गया। तब दशानन ने कैलाश पर्वत को उखाड़कर समुद्र में फेंकना चाहा। पर बाली मुनि ने पर्वत को अपने पैर के अंगूठे से दबा दिया जिससे दशानन विचलित हो गया। चूंकि संसार को अपने शब्द से शब्दायमान कर दिया था, इसलिए दशानन को तभी से रावण कहा जाने लगा। बाली का यह प्रभाव जानकर दशानन ने उसे प्रणाम किया और विरक्ति से मुक्ति पाई।

अग्निशिख नामक राजा ने सुग्रीव के साथ अपनी पुत्री सुतारा का विवाह किया। साहसगति विद्याधर भी तारा के साथ विवाह करना चाहता था पर उसकी अल्पायु जानकर अग्निशिख ने उसे तारा नहीं दी। बाद में रावण के साथ सहस्ररश्मि का युद्ध हुआ और फिर सहस्ररश्मि ने मुनिदीक्षा धारण कर ली। बाली जैसे महामुनि द्वारा सुग्रीव की पत्नी तारा के हरण की बात जो वैदिक पुराणों में कही गई है, कहां तक ठीक है? सहसगति ने सुतारा को पाने के लिए हिमवत् पर्वत पर विद्या-सिद्धि प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया (18)।

एक दिन जब सुग्रीव वनक्रीड़ा के लिए गया था सहसगति ने विद्याबल से उसकी प्यारी पत्नी तारा का हरण करने का विचार कर सुग्रीव जैसा ही रूप धारण कर तारा के पास पहुंच गया। इतने में सुग्रीव भी वहां वनक्रीड़ा से वापिस हो गया। वहां वह अपने ही समान कृत्रिम सुग्रीव को तारा के पास बैठा देखकर क्रोधित हो गया। दोनों युद्ध की तैयारी करने लगे। सभी लोग समरूप देखकर किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये। अंग कृत्रिम सुग्रीव के पास गया और अंगद अपनी माता तारा के कहने पर सत्य सुग्रीव के पास गया। सात सात अक्षौहिणी सेना दोनों के पास पहुंच गई। बालि के पुत्र चन्द्ररश्मि (शशिकिरण)

ने यह प्रतिज्ञा की कि जो भी तारा के भवन-द्वार पर जायेगा वह मेरी तलवार से मार दिया जायेगा। यह सुनकर सत्य सुग्रीव विराधित के माध्यम से राम के पास पहुंचा। राम ने उसकी सहायता का वचन दिया। कृत्रिम सुग्रीव के साथ राम, लक्ष्मण और सत्य सुग्रीव का युद्ध हुआ। कृत्रिम सुग्रीव ने सत्य सुग्रीव को घायल कर नगर में प्रवेश किया। फिर उसका युद्ध राम से हुआ। राम को देखकर ही उसकी वैताली विद्या लुप्त हो गई और वह यथार्थ सहसगति के रूप में आ गया और राम के साथ युद्ध करने लगा। राम ने अन्ततः उसका वध कर दिया। सुग्रीव को तारा मिल गई और वह उसके साथ रमण करने लगा। रमण करते करते 'सात दिन में सीता को खोज निकालूंगा' यह प्रतिज्ञा भी वह भूल गया। लक्ष्मण ने जाकर उसको उसकी प्रतिज्ञा का स्मरण कराया। इसके पूर्व सुग्रीव से खर-दूषण का युद्ध हुआ था और सुग्रीव पाताललंका चला गया था। बाद में वह राम के पास सहायतार्थ आया था। जाम्बूनद ने उसकी सहायता की थी (19-21)।

इस प्रकार परदुःख हारक राम के कारण सुग्रीव की अपनी पत्नी से पुनर्मिलन हुआ। राम ने विट सुग्रीव को मारकर सत्य सुग्रीव का दुःख हरण किया। परदारारमण का वैसा ही फल होता है जैसा विट सुग्रीव को मिला। ताराहरण इसी रूप में प्रसिद्ध है। पवनवेग को वैदिक पुराणों में प्रसिद्ध ताराहरण अयुक्त प्रतीत हुआ। वानर उनका हरण करें यह तथ्यसंगत नहीं लगता (22)।

९. नवम संधि

मनोवेग ने पवनवेग से कहा कि इसी तरह की कुछ और बेतुकी पौराणिक कथायें तुम्हें बताता हूँ। यह कहकर उसने श्वेताम्बर वेष धारणकर पटना नगर के छठे द्वार से प्रवेश किया और भेरी बजाकर सिंहासन पर बैठ गया। ब्राह्मण वाद करने आये और उससे नाम, गुरु, देश आदि के विषय में पूर्ववत् पूछने लगे और मनोवेग ने पूर्ववत् ही उत्तर दिया। ब्राह्मणों के आग्रह करने पर मनोवेग ने अपनी कथा सुनाई।

कपित्थखादन कथा

हम लोग ग्वालों के लड़के हैं। किसी भय से भयभीत होकर स्वयं ही यह तप ग्रहण किया है। हमारे पिता आभीर देश के मोट्टणु गांव के रहने वाले हैं और भेड़ों (बुट्टरखेणु) को पालने का व्यवसाय करते हैं। एक दिन भेड़ों की रक्षा करने वाला नौकर ज्वरग्रस्त हो गया तो हमारे पिता ने हम दोनों भाइयों को वन में भेजा (1)। उस वन में एक सुंदर कबीठों से लदा कबीठ वृक्ष देखा। मैंने अपने भाई से कहा— तुम भेड़ों को देखो, मैं कबीठ खाकर आता हूँ और तुम्हें भी ले आऊंगा। भाई के चले जाने पर मैंने देखा कि कबीठ का पेड़ बहुत

ऊंचा है। उस पर चढ़ना संभव नहीं है। तब मैंने अपने हाथ से शिर को काटकर पेड़ पर फेंक दिया। शिर ने कवीठ खाकर मेरी क्षुधा-तृप्ति की और बहुत सारे फल दांतों को तोड़े बिना ही नीचे गिरा दिये। मेरी क्षुधा-पूर्ति देखकर शिर पेड़ पर से नीचे गिरकर मेरे शरीर में पुनः जुड़ गया। फिर मैं उन कवीठों को लेकर भाई को खोजने निकल पड़ा। वहां देखा तो भाई सो रहा था और भेड़ों का कुछ भी पता नहीं था (2)।

भाई को जगाकर मैंने पूछा तो उसने कहा- मुझे भेड़ों के विषय में कुछ भी पता नहीं है। मैं तो यहां पेड़ के नीचे सो गया था। इस बीच भेड़ें कहां गईं, नहीं मालूम। यह जानकर मैं बहुत भयभीत हो गया और भाई से कहा कि अब हम लोग घर कैसे जायेंगे बिना भेड़ों के। पिताजी क्रोधित होंगे और पीटेंगे। अतः अपने देश न जाकर श्वेताम्बर साधु का भेष धारण कर, शिर मुड़ाकर, कंबल और लाठी(कन्दण्ड) लेकर आज हम आपके नगर में आये हैं। यह हमारा कुल परम्परागत धर्म है। इसमें पूरा सुख भी है। ब्राह्मणों ने कहा- तुम लोग तपस्वी का भेष धारण किये हो और असत्य बोलते हो (3)।

रावण दस शिर कथा

श्वेतपटधारी मनोवेग ने कहा- रावण ने त्रिलोकाधिपति शिव की विविध भावों से अर्चना की और अपने नौ मस्तक काटकर वर याचना की। फिर बीस हाथों से उसने दिव्यनाद हस्तक नामक संगीत पैदा किया। तब महादेव ने पार्वती की ओर से अपनी दृष्टि हटाकर उसकी ओर देखा और वरदान दिया। रावण ने उसी से अपने शिरों को अपने कंधों पर चिपका लिया (4)। रामायण में यह सब लिखा है या नहीं? जब रावण के कटे हुए नौ शिर संघटित हो सकते हैं तो क्या मेरा एक शिर संघटित नहीं हो सकता? यदि शिव में शिर जोड़ने की शक्ति होती तो तपस्वियों द्वारा काटा गया अपना लिंग नहीं जोड़ लेते? यह सब मात्र भ्रम है (5)।

दधिमुख और जरासन्ध कथा

मनोवेग ने पुनः अन्य पुराणों की भी इसी तरह की बेतुकी बातों को स्पष्ट किया। उसने कहा- श्रीमित्रा नामक ब्राह्मणी के दधिमुख नामक पुत्र था। उसका केवल मस्तक था, हाथ-पैर नहीं था। वह श्रुति-वेद का ज्ञाता और धर्म का आचरणक था। एक दिन अगस्त्य मुनि को आया हुआ देखकर उसने उनसे विनम्र अनुरोध किया कि हे मुनिवर, आप कृपया मेरे घर भोजन कीजिए। अगस्त्य मुनि ने कहा- तुम्हारा घर कहां है? घरवाला वही कहलाता है जिसमें महिला हो। तुम्हारे पिता का घर तुम्हारा घर नहीं है। अतः कुमारावस्था में दान नहीं दिया जा सकता है। तब दधिमुख ने अपने माता-पिता से कहा कि वे उसका

विवाह कर दें। माता-पिता ने कहा-तुम्हें अपनी पुत्री कौन देगा ? फिर भी प्रयत्न करके बहुत सारा धन-पैसा देकर किसी निर्धन की पुत्री के साथ विवाह कर दिया (6)।

दधिमुख ने माता-पिता से कहा- मैं तो अशरीरि होने के कारण कुछ कर नहीं सकता अतः उसका भरण-पोषण आपको ही करना होगा। माता-पिता ने कहा-जो हमारे पास अर्थ संचित था वह तुम्हारे विवाह में समाप्त हो गया। अतः अब तुम अपनी पत्नी का भरण-पोषण स्वयं करो। दधिमुख ने अपनी पत्नी से कहा- माता-पिता ने अपने को घर से निकाल दिया है। अब बाहर रहकर जीवन व्यतीत किया जाये। असम्मान पूर्वक जीना भी कोई जीना है। यह सब सोचकर पत्नी ने दधिमुख का मस्तक छींके में रखकर सभी को दिखाते हुए नगर-ग्राम में घूमने-फिरने लगी और भोजन-वस्त्र मांगती हुई उज्जैयिनी नगरी में पहुंची। वहां अपने पति सहित उस छींके को केरों की झाड़ी पर अथवा जुआड़ी घर की खूंटी पर (टिटामंदिर) रखकर वह नगर में भिक्षा के लिए चली गई। इसी बीच वहां दो जुआरियों में युद्ध हो गया। दोनों ने एक दूसरे के शिर काट दिये (7)। दोनों जुआरियों के वे सिर नीचे गिर गये। उनकी तलवारों के लगने से दधिमुख का छींका भी नीचे कटकर गिर गया। वह गिरते ही एक घड़े पर निःसंधिरूप लग गया। शिर के जुड़ जाने से वह काम करने में भी समर्थ हो गया। मनोवेग ने कहा कि क्या वाल्मीकि का यह वर्णन सही है ? ब्राह्मणों ने कहा- यह बिलकुल सही है। तब मनोवेग ने कहा-यदि दधिमुख का शिर जुड़ सकता है तो मेरे शिर के जुड़ने में आपको सन्देह क्यों हो रहा है ? रावण ने तलवार से अंगद के दो टुकड़े कर दिये फिर हनुमान ने उन्हें कैसे जोड़ दिया' एक दानपति ने पुत्र-प्राप्ति के निमित्त देवी की उपासना की। देवी ने प्रसन्न होकर एक गोली दी और कहा कि यदि इस गोली को तुम अपनी पत्नी को खिला दोगे तो उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी (8)।

दानवेन्द्र की दो पत्नियां थीं। उसने दोनों को आधी-आधी गोली दे दी। फलतः दोनों गर्भवती हो गईं। पूर्णमास होने पर उन्हें अधांग-अधांग पुत्र हुए। तब उन दोनों ने उन्हें निरर्थक समझकर फेंक दिया। जरा (बुढ़ी) नाम की देवी ने उन दोनों खण्डों को मिलाया तो दोनों खण्डों से एक पुत्र हो गया। वह बड़ा प्रसिद्ध योद्धा बना। उसी को जरासन्ध राजा के नाम से लोग जानने लगे (9-10)।

पौराणिक कथाओं की समीक्षा

हे ब्राह्मणों, जब भाव रहित शरीर के दो भाग जुड़कर एक हो गये तो मेरा मस्तक उसी समय का कटा होने पर भी क्यों नहीं जुड़ सकेगा ? पार्वती का पुत्र कार्तिकेय (षडानन) छः भागों से जोड़कर बनाया गया है तब मेरे कटे

हुए सिर का जुड़ना संभव क्यों नहीं ? अंगद, जरासंध आदि कथाओं में कहां तक प्रामाणिकता हो सकती है ? तुम्हारी बात सही और मेरी बात गलत, ऐसा क्यों ? ब्राह्मणों ने कहा– यह मान भी लिया जाये, पर यह कैसे हो सकता है कि तेरा सिर (मुण्ड) वृक्ष पर फल खाये और नीचे तेरा पेट भर जाये? मनोवेग ने कहा– इस लोक में विप्र श्राद्ध के समय भोजन करते हैं और परलोक में अशरीरी पिता, पितामहादि की तृप्ति होती है तो मेरा शरीर मुण्ड के अधिक निकट रहते मेरी तृप्ति और उदर पूर्ति क्यों नहीं हो सकती ? कपित्थखादन भी कैसे असत्य कहा जा सकता है ? रावण आदि की कथायें भी इसी तरह असबद्ध प्रलापमात्र हैं (11)।

श्वेतपटधारी मनोवेग की ये बातें सुनकर विप्रगण गंभीरता पूर्वक उनपर विचार करने लगे। निरुत्तर भी हो गये और सोचने लगे– सुशास्त्र, सुधर्म और सुलिंग (सुदेव) मोक्ष के कारण है। जहां स्वभावतः विरोध हो वहां इनमे मेल कैसे हो सकता है ? जहां सुधर्म होता है वहां कर्म नहीं रहता, जहां अहिंसा होती है वहां हिंसा भाव नहीं होगा। अठारह दोषों से मुक्त अपरिग्रही सुदेव सम्यग्ज्ञानधारी होकर मोक्ष प्राप्त करते हैं। जिन्हें स्व और पर का भेद-विज्ञान नहीं होता तथा सुदेव, सुशास्त्र, सुगुरु उपलब्ध नहीं होते उन्हें सांसारिक दुःखों से मुक्ति नहीं मिल पाती (12)। यह निश्चित जानकर व्यक्ति कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु को छोड़ देता है, उनकी भक्ति से दूर हो जाता है। नरक-तिर्यंच गति के दुःख भी उससे छूट जाते हैं। जहां जिनदेव और जिनगुरु तथा जिनशास्त्र हैं वहां व्यक्ति मोक्ष पा लेता है। मोक्ष का लक्ष्य बनाये बिना रक्त-वस्त्र पहिनना, जटाजूट धारण करना, मासोपवास करना, चंद्रायण व्रत रखना, दण्ड धारण करना, शिर मुंडन करना आदि सब कुछ मात्र शरीर को प्रताड़ना देना है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती (13)।

पुराणों में इसी तरह की और भी बेतुकी बातें हैं। सौधर्म स्वर्ग के निर्दोष इन्द्र को दूषित बता दिया जबकि इन्द्र नामका कोई विद्याधर दूषित हुआ था। जो सौधर्म स्वामी इन्द्र सत्ताईस कोटि देवों द्वारा पूजित है, सभी सुर-असुर जिसकी सेवा करते हैं वह अहल्या से दूषित कैसे हो सकता है ? और फिर देव और मनुष्यनी का संबन्ध कभी नहीं हो सकता। सहस्रयोनि की बात कहना भी विचित्र लगता है। कुन्ती द्वारा कर्ण को सूर्य के संपर्क से पैदा करना आदि कथन भी इसी प्रकार असत्यता से भरे हुए हैं (14)।

इक्ष्वाकुवंशीय प्रतिवासुदेव जरासंध अतुल तेजधारक था, बालि भी चरमदेही थे जिनका राम द्वारा वध बताया गया। एक समय कैलाश पर्वत पर बालि मुनि ध्यानस्थ थे। वहीं से रावण का विमान निकला और वह अटक गया। इसके

कारण रावण विद्याबल से कैलास पर्वत को उठाकर समुद्र में फेंकने के लिए तत्पर हुआ। बालिमुनि ने अपने पैर के अंगूठे से कैलाश पर्वत को दबा दिया जिससे दुःखी होकर रावण रो पड़ा। ऐसे बालिमुनि तथा रावण के विषय में व्यास ऋषि ने काफी ऊटपटांग लिख दिया है (16)।

रावण की यह अवस्था देखकर मंदोदरि भय से कंपित हो गई। उसने अपने पति रावण की ओर से क्षमायाचना की। रावण की मानकषाय का यह फल था। बाली ब्रह्मचारी था। उसके विषय में सुग्रीव की पत्नी की ओर कुदृष्टि रखने जैसी बात को जोड़ देना निश्चित रूप से असत्य कथन है। रावण बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के समय हुआ और रुद्र चौबीसवें तीर्थंकर महावीर के समय हुआ। इन दोनों का सम्बन्ध कैसे जोड़ा जा सकता है (17)?

धर्म का महत्त्व

इसी तरह हरि और हर में भी भेद नहीं किया। यदि हिंसा से ही स्वर्ग-मोक्ष मिलता है तो लोग दुःख सहन क्यों करेंगे? यदि वृक्ष के नीचे ही फल मिल जाता है तो वृक्ष पर चढ़ने की आवश्यकता ही क्या है? उत्तम क्षमा से धर्म होता है। मार्दव से अभिमान का दमन होता है, आर्जव से कुटिलता, सत्य से हितभाषी दिखनेवाला असत्य कथन, शौच से लोभकषाय, संयम से जीवरक्षा, सम्यक् तप से निरर्थक आतपन, त्याग से आरंभ, आकिंचन से शरीर मोह, ब्रह्मचर्य से कामवासना शान्त होती है। इस प्रकार जिनमुनियों के संसर्ग से निर्मल दस धर्मों की उत्पत्ति होती है। अतः व्यक्ति को हिंसा आदि भावों से दूर रहना चाहिए (8-20)। बारह भावनाओं का अनुचिंतन शाश्वत सुख की उपलब्धि के लिए आवश्यक है। यह जीव नव मास तक गर्भ में रहा और फिर इसी प्रकार जन्म-मरण की प्रक्रिया में दौड़ता रहा। अनेक बार स्वर्ग में पहुंचा, क्षीरसमुद्र-जल लाकर अभिषेक किया, समवशरण में गया फिर भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाया। सुर-नर जिनके पंचकल्याणक करते हैं, चौंतीस अतिशय और आठ प्रातिहार्य जिनके होते हैं, जो त्रिभुवन के नेत्र हैं, निर्मल मणि रत्न हैं, अज्ञानान्धकार के विनाशक हैं, षड्रिपुओं को जिन्होंने दूर कर दिया है ऐसे जिनेन्द्र देव की उपासना शाश्वत सुखदायी है (21-25))।

१०. दसम संधि

कुलकर व्यवस्था

पुनः उपवन पहुंचकर मनोवेग ने मित्र पवनवेग से प्रश्न किया- धर्म क्या है? मनोवेग ने उत्तर दिया- सुनो। इस भरतक्षेत्र में दो काल होते हैं- उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी। प्रत्येक काल के छः भेद होते हैं- सुषमा-सुषमा,

सुषमा, सुषमा-दुःषमा, दुःषमासुषमा, दुःषमा, व दुःषमा-दुःषमा। ये भेद उत्सर्पिणीकाल के हैं और इन छहों काल के व्यतीत हो जाने पर एक कल्पकाल होता है। अवसर्पिणी काल में इनका क्रम उल्टा हो जाता है। प्रथम तीनों कालों में व्यक्ति का जीवन कल्पवृक्षों पर निर्भर रहता था। अतः इसे भोगभूमि कहा जाता है। यहां अत्यन्त सुन्दर स्त्री-पुरुष युगल पैदा होता है और उसके उत्पन्न होते ही उसके माता-पिता काल कवलित हो जाते हैं। तीसरे काल के अंत में जब एक पल्य का आठवां भाग शेष रह जाता है तो उस काल में चौदह कुलकर उत्पन्न होते हैं। वे कर्मभूमि की व्यवस्था बताते हुए असि मसि, कृषि, वाणिज्य विद्या और शिल्प की शिक्षा देते हैं। चौदह कुलकरों के नाम हैं– प्रतिश्रुति, सन्मति, क्षेमंकर, क्षेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमलवाहन, चक्षुष्मान्, यशस्वी, अभिचन्द्र, चन्द्राभ, मरुदेव प्रसेनजित और नाभिराजा। अंतिम कुलकर नाभि-राजा और मरुदेवी से ऋषभनाथ नामक प्रथम तीर्थंकर हुए (1)।

तीर्थंकर ऋषभदेव और संस्कृति संचालन

पहले जीव युगल रूप में उत्पन्न होते थे और वैसे ही च्युत होते थे। वे युगल 49 दिनों में समस्त भोग भोगने में समर्थ हो जाते थे। कल्पद्रुम धीरे-धीरे समाप्त होते गये और अंतिम कुलकर ऋषभदेव ने कर्मभूमि का पाठ पढ़ाते हुए षड्विद्याओं की शिक्षा दी। इन्द्र ने कच्छ राजा की नन्दा और सुनन्दा के साथ उनका विवाह कर दिया। उन दोनों स्त्रियों से उनको ब्राह्मी और सुन्दरी नामक दो कन्यायें तथा सौ पुत्र हुए (2)।

अठारह कोड़ाकोड़ी सागर तक उन्होंने राज्य किया। एक दिन भगवान के सन्मुख देवियों का नृत्य हो रहा था। उस समय नाचते-नाचते नीलांजना देवी अदृश्य हो गई, चल बसी। यह देखकर भगवान ऋषभदेव को संसार से वैराग्य हो गया। फलतः अपने राज्य को भरत के लिए समर्पित कर निर्ग्रन्थ दीक्षा ग्रहण कर ली। दुस्सह परिषहों को झेलते हुए उन्होंने निवृत्ति मार्ग की सार्थकता पाई (3)। भगवान के साथ ही अन्यान्य राजाओं ने भी तपग्रहण किया। परन्तु थोड़े ही समय बाद पथभ्रष्ट होने लगे। उनका आचरण शिथिल हो गया। किसी देवता ने उन्हें उनके दिगम्बर स्वरूप का ध्यान कराकर इस शिथिलता से मुक्त होने का आग्रह किया। यह सुनकर कितने ही नरेन्द्र अपने घर वापिस हो गये, कितने ही अप्रासुक जलादि पीते हुए संकोचवश पाखण्ड वेष में ही बने रहे और कुछेक भरत चक्रवर्ती के भय से भगवान का साथ नहीं छोड़ सके। कच्छ महा-कच्छ राजा ने पाण्डित्य के गर्व से कन्दमूल भक्षण करना, वल्कल पहिनना ही कल्याणकारी धर्म बतलाया। मारीचि ने सांख्यमत की प्ररूपणा कर कपिलादि शिष्यों को उपदेश दिया। इस प्रकार 363 मिथ्यामत प्रचलित हो गये। भगवान ऋषभदेव ने यह सब देखकर आहार ग्रहण करने का मानस बनाया। पूर्वजन्म के प्रभाव

से हस्तिनापुर के राजा श्रेयांस ने आहारविधि पूर्वक उन्हें इक्षुरस का भोजन कराया। उस समय भरत चक्रवर्ती ने रत्नत्रय से युक्त उत्तम श्रावकों को ब्राह्मण वर्ण के रूप में स्थापित किया। परन्तु कालान्तर में वे अपने कुलधर्म को भूल गये और पाखण्डमय आचरण करने लगे। अश्वमेध, नरमेध, राजसूय आदि यज्ञ करने लगे। सारस, मेरुण्ड आदि पक्षियों को मारकर भक्षण करने लगे, रोहित मच्छ आदि को भी मारकर खाने लगे। गोमेध, पशुमेध, पशुहोम आदि हिंसक कार्यों में प्रवृत्त हो गये। अभक्ष्य भक्षण मद्यपान, परदारासेवन आदि जैसे गर्हित कार्य करने लगे। वेद अक्षुण्ण प्रमाण है, अविनाशी है यह मानने लगे। वासुदेव कृष्ण के शव को छः माह तक भ्रातृमोह के कारण छः माह तक रखे रहे, इसलिए कंकालव्रत प्रारंभ हो गया।

इसी प्रकार तीर्थंकर पार्श्वनाथ की तीर्थ में बुद्धोदन राजा हुए। उन्होंने भी अशुद्धाहार लेना प्रारंभ कर दिया। मछली, मांस आदि भक्षण करना भी उन्होंने विहित मान लिया। फिर जिन शासन से पृथक् होकर उन्होंने बौद्धधर्म की स्थापना की (4–10)।

पवनवेग का हृदय परिवर्तन

इस प्रकार धर्मपथ पाकर और मिथ्यात्व का वर्णन सुनकर पवनवेग ने मनोवेग से कहा– मित्रवर, अभी तक मैं अन्धकार में था। अब मुझे विवेक रखना होगा। तुम मेरे परममित्र हो, परमस्वामी हो, बंधु हो, गुरु हो, मेरा मिथ्यात्व तुमने दूर कर दिया है, दुर्लभ सम्यक्त्वरत्न की प्राप्ति तुम्हारे कारण हुई है, मैं अब जैन धर्म ग्रहण करना चाहता हूँ। वे लोग धन्य हैं जो जिनेन्द्र के गुणों का श्रवण करते हैं, जिनधर्म का पालन करते हैं और विमल चित्त में परोपकार के भाव को लिये रहते हैं। यह सोचकर उन्होंने उज्जैयिनी नगरी में केवलज्ञानी मुनि के पास पहुंचने का निश्चय किया (12)।

यह निश्चय कर दिव्याभूषणों से युक्त वे दोनों दिव्य विमान से निर्मल ज्ञानी मुनिचंद्र (जिनमति?) के पास पहुंचे। उन्हें प्रणामकर वे उनके पास बैठ गये। मनोवेग ने मुनिराज से कहा– यह हमारा परममित्र पवनवेग है। पाटलिपुत्र में वेद–पुराणों की सत्य–असत्य कथाओं को सुनकर मिथ्यात्व की ओर से इसका मन विरक्त हो गया है और इसने सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया है। अब इसे ऐसा उपदेश दीजिए जिससे यह व्रताभरण से भूषित हो जाये (13)। मुनिवर ने उसके निवेदन पर पवनवेग को श्रावकव्रतों का वर्णन किया।

श्रावकव्रत

हे पवनवेग, तुम अब श्रावकव्रतों को ग्रहण करो। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पंचाणुव्रतों का पालन करो। पंच उदम्बर फलों

(बड़, पीपर, कटहल, गूलर, उमरफल) को मत खाओ। मधुभक्षण, मद्यपान तथा मांस भक्षण मत करो, इन आठ मूल गुणों का पालन करो। दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्ड व्रत तथा चार शिक्षाव्रतों को ग्रहण करो। चार शिक्षाव्रतों में प्रथम है–जिनवन्दना। संयम धारण करने के लिए तथा शुद्ध भाव प्राप्त करने के लिए उत्तर दिशा मे मुंह करके जिन प्रतिमा के सामने खड़े होकर क्रियापूर्वक जिनवन्दना करो। यही सामायिक है। दिन में तीन बार सामायिक करना उसका उत्तम प्रकार है और दो बार तथा एक बार सामायिक करना क्रमशः मध्यम तथा जघन्य प्रकार है। सप्तमी और त्रयोदशी के प्रातःकालीन भोजन के बाद अष्टमी और चतुर्दशी का उपवास करना, रात्रिभोजन न कर प्रोषधोपवास करना। कृषि वाणिज्य से मुक्त रहना भी उपवास है। प्रोषधोपवास का तात्पर्य है– पर्व के दिनों चारों प्रकार का आहारत्याग करना और प्रोषध का अर्थ है- दिन में एक बार भोजन करना। श्रावकों और मुनियों को शुद्धाहार देना अतिथिसंविभागव्रत है। इस प्रकार तीन शिक्षाव्रत हैं (14)।

भूमिशयन, स्त्रीपरिहरण, जिनमंदिर गमन, जिनपूजन भी इन व्रतों के पालन करने के लिए आवश्यक है– स्नान कर, प्रासुक जल लेकर, शुद्ध वस्त्र पहिन कर अष्टविध पूजन करना चाहिए। भोगोपभोग परिमाण व्रत चतुर्थ शिक्षाव्रत है। मरणकाल में बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रह को छोड़कर शुभ भाव से मृत्युवरण करना सल्लेखना है। इसे भी चतुर्थ शिक्षाव्रत माना जाता है। रात्रिभोजन त्याग भी चार शिक्षाव्रतों में संमिलित किया जाता है (15)।

मधुबिन्दु का उदाहरण पीछे दिया है। संसार में यथार्थ सुख नहीं है, मधु-बिन्दु जैसा क्षणिक सुख मात्र है, सुखाभास है। परद्रव्यहरण में मृत्यु हो जाती है, परदारारमण मे दुःख प्राप्त होता है, बहुपरिग्रही होने पर निद्रा नही आती। यह सब इहलोक के दुःख हैं। परलोक के दुःखों का वर्णन ही क्या किया जाये! वे तो इहलोक के कृत्यों पर निर्भर करते हैं। यह सुनकर पवनवेग ने सहर्ष श्रावकव्रत ग्रहण किये।

११. ग्यारहवीं संधि

इन श्रावकव्रतों का फल है अमित सुख और शान्ति। इसका उदाहरण यह दिया गया है। जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र में मेवाड़ नाम का एक देश है। वह बड़ा सुन्दर है। उसमें उज्जैयिनी नाम की एक सुन्दर नगरी है। उसमें पांच सौ विशाल जिनमंदिर हैं। उस नगरी में वानरकुल स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण करते हैं। मन-मोहक निर्झर हैं, कामिनियां क्रीड़ारत हैं, चित्ताकर्षक कूप-तड़ाग हैं (2)। वहां प्रचंड नामक राजा और उसकी प्रियगौरी नामक महारानी थी। उसके श्रीपाल नामक मन्त्री और उसकी धनमति नाम की पत्नी थी। वह एक दिन

रात्रि में जिनमंदिर के दर्शन करने गई। फिर पुत्रों ने रात्रिभोजन मांगा पर धनमति ने उन्हें रात में भोजन नहीं दिया बल्कि उन्हें रात्रिभोजन त्याग का आग्रह किया। फलतः उन्हें कालान्तर में विपुल संपत्तिलाभ हुआ (3)।

एक चम्पापुर नामक सुन्दर नगर है। प्राकार और गोपुरों से सुसज्जित है। पर वहां एक दोष है और वह यह कि जिनधर्म का पालन लोग वहां नहीं करते हैं, मिथ्यात्वग्रस्त हैं। वहां का राजा प्रचण्ड है जो शत्रुओं के लिए वज्रवत् है। वहां एक वणिक् आया जिसके पास अपार धनसंपत्ति थी। उसी नगर में एक वेताल आया जो कपाल आदि धारणकर नृत्य करता था। उसने वणिक् को फुसलाकर उसे रात्रिभोजन कराकर उसके सारे धन का अपहरण कर लिया (4–6)। वणिक् ने यह वृत्तान्त राजा से कहा। राजा ने उस वेताल को दण्डित किया और वणिक् ने रात्रिभोजन का त्याग किया। रात्रिभोजन करने से पशु–पक्षी योनि मिलती है। जन्म–जन्मान्तर तक दुःख प्राप्त होते हैं। इस संदर्भ में यहां अनेक छोटी–छोटी कथायें दी गई हैं (8–10)।

अतिथिसंविभाग व्रत कथा के संदर्भ में नागश्री द्वारा दिये गये मुनियों को आहारदान का फल वर्णित है। पंचणमोकार मंत्रस्मरण के फल का भी उल्लेख है। अभयदान, औषधिदान आदि से संबद्ध कथायें भी यहां संक्षेप में है। ये कथायें अन्तर्कथाओं में जुड़ी हुई हैं (11–22)। बाद में शिक्षाव्रतों की महिमा का आख्यान करते हुए मानव जीवन में जिनधर्म की उपयोगिता के संदर्भ में कवि अपने विचार व्यक्त करते हुए कहता है कि उसका पालक अहिंसक, विनयी और भेदविज्ञानी होता है (23–25)।

अन्त में हरिषेण कवि ने अपनी प्रशस्ति और धर्मपरीक्षा लिखने का उद्देश्य स्पष्ट किया है। उन्होंने लिखा है– मेवाड़ में स्थित चित्रकूट (चित्तौड़) का मैं निवासी हूं उजौर (ओजपुर) से उद्भूत धक्कड़ मेरा वंश है। इसी वंश में हरि नामक एक कलाकार थे। उनके पुत्र गोवर्धन हुए और गोवर्धन का पुत्र मैं हरिषेण हूं। मेरी माता का नाम गुणवती है। यहीं कवि ने अपने दो विशेषण दिये हैं– गुणगणनिधि और कुल गगन दिवाकर। मैं किसी कारणवश चित्तौड़ से अचलपुर पहुंचा और वहीं छन्द–अलंकार का परिज्ञान कर धम्मपरिक्खा की रचना की। कवि ने स्वयं को 'विबुह–कइ–विस्सुअ' भी कहा है (26)। इसके पूर्व के कडवक में कवि ने सिद्धसेन की चरणवन्दना की है।

धम्मपरिक्खा की रचना वि. सं. 1044 में हुई। बुध हरिषेण ने सोचा कि जो किसी ग्रन्थ की रचना करे, ज्ञानवान की भक्ति करे, परदुःख दूर करे वह धन्य है। यही सोचकर धम्मपरिक्खा की रचना की है। जो उसे भक्तिभाव से पढ़ेगा, निर्मलचित्त होकर श्रवण करेगा उसका मन शान्त हो जायेगा (27)।

इस प्रकार बुध हरिषेण कृत धम्मपरिक्खा की ग्यारहवीं संधि यहां समाप्त हो जाती है।

५. कथावस्तु का महाकाव्यत्व भाषा और शैली

हरिषेण ने अपनी धम्मपरिक्खा ग्यारह सन्धियों में पूरी की है। प्रत्येक संधि में लगभग सत्रह से सत्ताईस कडवक हैं और कुल कडवक हैं 230 – I–20, II – 24, III – 22, IV – 24, V – 20, VI – 19, VII – 18, VIII – 22, IX – 25, X – 17, और XI – 27. इन कडवकों का कुल ग्रन्थ श्लोक प्रमाण है 2070. इसमें पौराणिक आख्यानों की समीक्षा करने का मूल उद्देश्य आदि से अन्त तक रहता है। इस दृष्टि से सारी सन्धियां विषय की अपेक्षा से पारस्परिक गुंथी हुई हैं। उनमें नायक कोई एक ही व्यक्तित्व भले ही न हो पर अन्तर्कथाओं में विभिन्न नायकों के व्यक्तित्व की स्पष्ट अवतारणा किया गया है। वे नायक पौराणिक क्षेत्र में विश्रुत हैं। काव्य में शान्त रस है, छन्दों में वैविध्य है, चतुर्विधाओं की यथास्थान भूमिका है, सज्जन–दुर्जन प्रशंसा है, प्राकृतिक चित्रण है। इन सारी दृष्टियों से धम्मपरिक्खा को महाकाव्य की श्रेणी में बैठाने में मुझे कोई संकोच नहीं हो रहा है। महाकाव्य की पारंपरिक परिभाषा के सांचे में एकाध बिन्दु पर भले ही हमारा निष्कर्ष मेल न खाता हो पर समग्र दृष्टि से देखे जाने पर प्रस्तुत ग्रन्थ को महाकाव्य की संज्ञा दी जा सकती है।

विजयार्धपर्वत, (1.3), वैजयन्ती नगरी (1.4), अवन्ति देश (1.9), उज्जैनिनी नगरी (1.10–11), पाटलिपुत्र वर्णन (1.18), मनोवेग और पवनवेग का रूप वर्णन (2.2–3) जिनेन्द्र गुणों की विशेषतायें (5.18–20), वेताढ वर्णन (11.1) आदि प्रसंगों में सुन्दर काव्यत्व दिखाई देता है।

धम्मपरिक्खा की भाषा परिमार्जित और शैली प्रभावक है। जिस विषय को एक श्लोक में अमितगति ने कहा है उसी को हरिषेण ने एक पद में कह दिया है। कवि की यह संक्षिप्त शैली कहीं दूभर नहीं हुई बल्कि उसने अनावश्यक विस्तार को कम किया है। लोक प्रचलित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करके काव्य में और भी सरसता ला दी है। इसलिए यह काव्य 'मनोहर' बन गया है। सुरबिन्दु (4.5), एवं (4.6), गुरुचरणारविन्द (2–23) जैसे कुछ संस्कृत शब्द भी यथावत् इस महाकाव्य में प्रयुक्त हुए हैं।

धम्मपरिक्खा की रचना प्रमुख रूप से सोलह मात्रिक पज्झटिका (पद्धडिया) छन्दों में हुई है। बीच–बीच में भुजंगप्रयात, रड्डा आदि छन्दों का भी प्रयोग हुआ है। समयुक्त मात्रिक और वार्णिक छन्दों ने काव्य में और भी सरसता ला दी है। घत्ता के साथ ही कहीं–कहीं ध्रुवक भी मिल जाते हैं।

६. मिथकीय कथा तत्त्व तथा कथानक रूढ़ियां

धम्मपरिक्खा में कोई एक कथा नहीं है बल्कि अनेक ऐसी कथाओं का संकलन है जो या तो पौराणिक हैं या फिर उन्हें अविश्वसनीय सिद्ध करने के लिए कल्पित कथाओं का आश्रय लिया गया है। ये पुराकथायें लोकानुभूति और अलौकिकता से संश्लिष्ट रहती हैं। धीरे-धीरे अन्धविश्वास और श्रद्धा से उनकी कथात्मकता बढ़ती चली जाती है और रहस्यात्मकता तथा लाक्षणिकता का आवरण बढ़ता चला जाता है। प्राचीन साहित्य में उपलब्ध देवता, राक्षस, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर आदि से संबद्ध कथानक इसी कोटि में आते हैं। इन्हीं को आज मिथक कहा जाने लगा है। उनका आविर्भाव भले ही विवादग्रस्त हो पर इसमें किसी को संदेह नहीं होगा कि जब इस प्रकार की पुरा कथाएँ भाषा का माध्यम लेती हैं तब वे एकांगी, तर्कहीन और मिथ्या जान पड़ती हैं। पौराणिक कथाएं, निजन्धरी कथायें और दन्त कथायें ऐसी ही मिथकीय कथायें हैं जिन्होंने प्रतीक विधान और बिम्बयोजना के परिपुष्टि में सम्प्रेषणीय तत्त्व को आगे बढ़ाया है।

श्रीमती लेंगर ने ऐसी कथाओं को धर्म के साथ जोड़कर उनकी अतिप्राकृतिकता को स्वीकार किया है। कतिपय विद्वानों ने ऐसी कथाओं के पीछे ऐतिहासिकता को भी खोजने का आग्रह किया है। ऐसी ही कथाओं को साहित्यकार अपनी कल्पनाशक्ति से समृद्ध कर उन्हें अभिव्यक्ति का साधन बना लेता है। सारे वैदिक आख्यान ऐसे ही मिथकीय तत्त्व हैं जिनपर साहित्य की एक लम्बी परम्परा खड़ी हुई है। जैन और बौद्ध साहित्य में भी ऐसी कथाओं की कमी नहीं है। सृष्टि, मृत्यु, लिपि, पर्वत, नगर, जगत, जीवन, पशु, पक्षी आदि से संबद्ध कथायें लगभग सभी धर्मों और धर्मग्रन्थों में उपलब्ध होती हैं। उन्हीं कथाओं पर विशाल महाकाव्यों किंवा प्रबन्धकाव्यों की रचना होती रही है। भक्ति तत्त्व से आवृत होकर इन कथाओं ने जन साधारण में अपनी लोकप्रियता भी पा ली है।

वैदिक साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि मूलतः तीन देव थे— ब्रह्मा, विष्णु और महेश। इन तीनों देवताओं के साथ शक्ति के रूप में क्रमशः सरस्वती, लक्ष्मी तथा गौरी संबद्ध हैं। बाद में यजुर्वेद में देवताओं की संख्या बारह हो गई है— अग्नि, सूर्य, चन्द्र, वात, वसु, रुद्र, आदित्य, मरुत, विश्वदेव, इन्द्र, बृहस्पति और वरुण। यहीं फिर अवतारकल्पना ने जन्म लिया। इन सभी से नूतन कल्पनाओं के साथ मिथक कथाएँ बनती रहीं। पशु, पक्षियों का संबन्ध भी प्रतीकात्मक रूप में उनसे जुड़ता गया। स्वर्ग, नरक तथा विचित्र भौगोलिक चिन्तन ने एक नयी परम्परा प्रारम्भ कर दी। इन सभी मिथक कथाओं ने मिलकर नैतिक-अनैतिक तत्त्व की व्याख्या समाज को दी और

सांस्कृतिक तत्वों से मिश्रित होकर समाज रचना में अमूल्य सहयोग दिया।

हरिषेण की धर्मपरीक्षा में ऐसी ही मिथक कथाओं का बाहुल्य है। उनका विश्लेषण करनेपर निम्नलिखित प्रमुख मिथकीय कथातत्व तथा कथानक रूढ़ियां दृष्टिगत होती हैं-

1. अप्राकृतिक, अतिप्राकृतिक तथा अमानवीय तत्व
2. आश्चर्यकारी कल्पनायें
3. लोक-मनोरंजक चित्रण
4. लोक-कथाओं का रूपान्तरण
5. लोकानुरंजन
6. कौतुहल प्रदर्शन
7. कामुकता और शृंगारिकता
8. अन्तर्कथात्मकता
9. पूर्वजन्मसंस्कार
10. लोक जीवन चित्रण
11. लोककल्याण भावना
12. धर्म श्रद्धात्मक तत्व की पृष्ठभूमि में अतार्किकता
13. उपदेशात्मकता
14. परम्परा का संवर्धन
15. लोक विश्वास
16. तंत्र मंत्रात्मकता
17. ऋद्धि-सिद्धि और चमत्कार प्रदर्शन
18. अविश्वसनीयता और अतिरंजनता
19. लोकचित्त को आन्दोलित करना
20. मिथ्यात्व का स्पष्टीकरण
21. सज्जन-दुर्जन संगति का फल

इन मिथकीय तत्वों के आधार पर धम्मपरिक्खा में समागत कतिपय वैदिक आख्यानों को यथारूप में प्रस्तुत करना उपयोगी होगा। इस दृष्टि से अब हम इन आख्यानों पर किञ्चित् प्रकाश डालते हैं।

७. वैदिक आख्यानों का प्रारूप

मण्डप कौशिक कथा (4.7–12)

इस कथा का संबन्ध 'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति सिद्धान्त' से है जो आरण्यक और उपनिषदों में प्रतिफलित हुआ। मण्डप कौशिक मूलतः ब्रह्मचारी थे पर

वृद्धावस्था में इस सिद्धान्त के कारण ऋषियों ने उनको निष्कासित कर दिया। फलतः किसी विधवा से उन्होंने संबन्ध किया और उससे छाया नाम की सुन्दर कन्या हुई। इसी प्रसंग में शिव का और गंगा शारीरिक सम्बन्ध बताया है।

पुराणों के अनुसार छाया विश्वकर्मा की पुत्री और संज्ञा की अनुचरी थी[1]। संज्ञा सूर्य की पत्नी और यम तथा यमुना की माता थी। सूर्य का तेज न सहन करने के कारण वह अपने पुत्रों को छाया के पास छोड़कर पिता के घर चली गई। छाया ने इन पुत्रों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। फलतः उसे उसने विकलांग होने का अभिशाप दिया।[2] पुराणानुसार गंगा हिमालय की पुत्री है। ऐसी प्रसिद्धि है कि गंगा पहले स्वर्ग में थी। सगर के पुत्रों की रक्षा की दृष्टि से भगीरथ उसे पृथ्वी पर ले आये। इसलिए उसे 'भागीरथी' कहा गया। गंगा जब स्वर्ग से गिरी थी तब पृथ्वी बह न जायें यह सोचकर शंकर ने उसे अपनी जटा में रोक रखा था। गंगा को इसी से शंकर की पत्नी कहा गया है।[3]

तिलोत्तमा कथा (4.13)

विश्वकर्मा ने ब्रह्मा की आज्ञा से विश्व सुन्दरी अप्सरा तिलोत्तमा का निर्माण किया।[4] इन्द्र ने उसे ब्रह्मा के पास उनकी तपस्या भंग करने के लिए भेजा। तिलोत्तमा ने अपने रूप से ब्रह्मा को आकृष्ट कर लिया। मत्स्यपुराण के अनुसार इनके चार मुख थे जिनसे नर्तकी तिलोत्तमा के रूप को निहारते थे। उसके आकाश में जाने पर उन्होंने अपना पंचम मुख गधे का बनाया। देवों ने उपहास किया तब उन्हें खाने के लिए ब्रह्मा ने कोपवश इसी पंचम मुख का उपयोग किया। यह देखकर महादेव ने उस मुख को काट दिया। बाद में कहा जाता है कि ब्रह्मा ने रीछनी के साथ संभोग किया जिससे जांबव नामक पुत्र हुआ।[5] ब्रह्मा के साथ ऐसी अनेक कथायें जुड़ी हुई हैं। कहा जाता है, सरस्वती, सावित्री, गायत्री श्रद्धा और मेधा इन पांच पुत्रियों में से सर्वाधिक सुन्दरी पुत्री गायत्री पर वे आसक्त हो गये। वह मृगी बनकर भाग गई। ब्रह्मा फिर मृग बनकर उसके पीछे दौड़े। तब शिव ने मृगवधिक का रूप धारण कर उन्हें रोका (ब्रह्मपुराण, 102)। अन्ततः पुत्री गायत्री ब्रह्मा की पत्नी बनी (भागवत. 1-18.14; 3-8, 22-32; 9-1.24; 29-44; 10-3.6, 8.13-26)।

---

1. भागवतपुराण, 8-13 8-10; मत्स्य. 11.5-9; 248.73; वायु. 84.39-77.
2. ब्रह्मा. 3.59: 32-77; भागवत. 6-6-41.
3. वायु. 42.39-40; 71-5;
4. महाभारत, आदिपर्व, 210.4-8;
5. भागवत. 1-3.2; मत्स्यपुराण. 1.14; 2.36; 260.40; महाभारत, वनपर्व, 276.6-7; पौराणिक कोश

इन्द्र भी तिलोत्तमा के रूप से मोहित होकर सहस्रनेत्र हो गये (महाभारत, आदिपर्व, 210.27)। गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या पर इन्द्र ने बलात्कार किया था। फलत. विश्वामित्र के शाप से उनके अण्डकोश समाप्त हो गये (महा. शान्तिपर्व 342.23)। यम ने भी छाया तथा सप्तर्षियों की पत्नियों का उपभोग किया (महा. वनपर्व, 224-33-38)। यमराज, मरुत और अग्निदेव भी कामवासना से दग्ध हुए बिना नहीं बच सके।

शिश्नच्छेदन कथा (5.1)

ब्रह्मा महादेव के विवाह में पुरोहित बने। वहां पार्वती के करस्पर्श मात्र से उनका वीर्यस्खलन हो गया (महा. अनु. 85-9-192)। महादेव ने ऋषि-कन्याओं के नृत्य करते समय उनका आलिंगन किया जिससे कुपित होकर ऋषियों ने उनका शिश्नच्छेदन कर दिया (महा. सौप्तिक, 17.21)। अग्नि और वायु ने शिव के वीर्य को धारण किया (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 36.5-29)। इसी तरह अहल्या ने इन्द्र को, छाया ने यमराज और अग्नि को और कुन्ती ने सूर्य को कामवासना में प्रवृत्त किया।

खरशिरश्छेदन कथा (5.6-7)

इस कथा का सम्बन्ध रुद्र से है। सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा की भौंहों से उत्पन्न ये एक क्रोधात्मक देवता हैं जिनसे भूत, प्रेत, पिशाचादि उत्पन्न माने जाते हैं। इनकी संख्या ग्यारह है- अज, एकपाद, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, अपराजित, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शम्भु, हरण और ईश्वर। मत्स्य और कूर्मपुराण में कुछ और ही नाम मिलते हैं। शिवपुराण (7.24) के अनुसार दैत्यों को समाप्त करने के लिए शिव ग्यारह रुद्रों के रूप में वसुधा के गर्भ से उत्पन्न हुए। ये ग्यारह रुद्र हैं- कपाली, पिंगल, भीम, विलोहित, शास्त्रभृत, अभय, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शंभु, भव और विरूपाक्ष। खरशिरश्छेदन कथा का सम्बन्ध कदाचित् अन्तिम रुद्र से रहा है। इस कथा में आयी चतुर्मुख और पंचममुख की कल्पना तिलोत्तमा के रूप को देखने के प्रसंग में उल्लिखित कर ही दी गई है (महाभारत, आदिपर्व, 210-22-28) उसी का कुछ परिवर्तित रूप इसमें मिलता है।

राजसूय यज्ञ से पूर्व जरासंध को जीतना आवश्यक था। युधिष्ठिर जब निरुत्साहित दिखे तो अर्जुन ने तदर्थ उत्साहित करने के लिए गाण्डीव धनुष के द्वारा तीक्ष्ण बाणों से पृथ्वी को भेदकर रसातल में जाकर दस करोड़ सेना सहित शेषनाग और सप्तर्षियों को ले आये (महाभारत, सभापर्व. 16.3) इसी का उल्लेख हरिषेण ने किया है (5-13)।

ऋग्वेद (7.33-13) के अनुसार अगस्त्य ऋषि मित्र-वरुण के पुत्र थे। उर्वशी को देखकर जब वे कामपीड़ित हुए तो उनके वीर्यपात से अगस्त्य ऋषि का जन्म

हुआ (महा-शान्ति, 342.51)। सन्तान पाने की कामना से उन्होंने लोपामुद्रा को उत्पन्न किया और उसी को बाद में अपनी पत्नी बनाया। उसी से दृढस्यु पुत्र का जन्म हुआ (महा-वनपर्व, 96-99)। तारक तथा दूसरे असुरों द्वारा संसार का कष्ट देखकर एक बार अगस्त्य समुद्र को चुल्लू में भरकर पी गये जिससे उनका नाम 'समुद्रचुलुक' और 'पीताब्धि' पड़ गया (भागवत. 4-1-36; महा. वन 105.3-6)। कमण्डलु और घट से इनकी उत्पत्ति हुई थी। वृष्टि को उन्होंने कमण्डलु में समाहित कर लिया था (भाग. 6-18.5; ब्रह्मा, 4-5-38; मत्स्य. 61.21-31; 2 1.29; 202.1) ब्रह्मा की मूर्ति चतुर्मुख, पद्मासनासीन और सरस्वती तथा सावित्री से युक्त होती है (मत्स्य. 260.40; 266.42; 284.6)।

भागीरथी और गांधारी कथा (7.9-10)

भगीरथ राजा अंशुमन के पुत्र दिलीप का पुत्र था। अपने पितरो-सगरपुत्रों का उद्धार करने के लिए वह गंगा को पृथ्वी पर ले आया। उसी गंगा ने पाताल लोक में पहुँचकर सगर पुत्रों का उद्धार किया। भगीरथ की पुत्री होने के कारण गंगा भागीरथी कहलाई। वही भागीरथी राजा के उरु पर बैठने के कारण उर्वशी कहलाई। भगीरथ की उत्पत्ति दो स्त्रियों के परस्पर स्पर्श मात्र से हुई थी (महा. वन, 25 108.9; शिवपुराण 11.12; भागवत. 9.9.2-13; ब्रह्मा. 3.54.48-51; वायु 47.49 आदि.)।

गांधारी के विषय में ऐसी ही कथा प्रचलित है। गांधारी फनस वृक्ष का आलिंगन करने से गर्भवती हो गई। व्यास से सौ पुत्रों की याचना वह पहले ही कर चुकी थी। गांधारी के गर्भ से एक मांस पिण्ड का प्रादुर्भाव हुआ जिसके सौ टुकड़े किये गये और उन्हीं टुकड़ों से दुर्योधन आदि सौ पुत्रों की उत्पत्ति हुई (महा. आदि. 114-8; 115.119; भाग. 9.22.26; मत्स्य. 50.47-48; आदि)।

मंदोदरि मय दानव तथा रंभा की पुत्री थी। पुराणानुसार मय एक प्रसिद्ध दानव था (वाल्मिकी रामायण, 52.8-12)। उसकी वीर्य मिश्रित कोपीन का जलपान करने से मेंढकी गर्भवती हुई जिसे, कहा जाता है मय सात, हजार वर्ष तक स्तम्भित किये रखा। बाद में उससे मंदोदरि उत्पन्न हुई (भाग. 7.18)। वही बाद में रावण की पत्नी बनी। इसी से फिर वही इन्द्रजित नामक पुत्र के माम से प्रसिद्ध हुआ (महा. वन. 285.8)।

पराशर ऋषि और योजनगंधा (7.14-15)

पराशर ऋषि वसिष्ठ के पौत्र और शक्ति तथा अदृश्यन्ती सत्यवती के पुत्र थे। बारह वर्षों तक माता के गर्भ में रहकर उन्होंने वेदाभ्यास किया था जन्म

देते ही वे तपस्वी हो गये थे (महा. आदि. 176–15)। धीवर कन्या सत्यवती पर आसक्त होने के कारण उन्होंने उसे मत्स्यगन्धा से योजनगन्धा और अक्षतयोनि का वरदान दिया। इसी के गर्भ से व्यास ऋषि का जन्म हुआ। इसी का विवाह भीष्म पितामह के पिता शान्तनु से हुआ (महा. आदि. 63.70-84; ब्रह्मा. 4.4.65–6; वायु. 61.47 आदि।

उद्दालक और चन्द्रमती कथा

उद्दालक आयोदधौम्य ऋषि के शिष्य अरुणि पांचाल का ही दूसरा नाम है। इन्ही का पुत्र अष्टावक्र था। स्वप्न में स्खलित हुए इनके वीर्य को गंगा में एक कमल पर रख दिया गया जिसे रघु की पत्नी चन्द्रमती ने सूंघ लिया जिससे तत्क्षण गर्भाधान हो गया। उससे तृणबिन्दु ऋषि के आश्रम में नागकेतु का जन्म हुआ। कहा जाता है उद्दालक ने वहीं चन्द्रमती मे उसको कुमारी बनाकर विवाह कर लिया (महा. आदि. 3.21–32; वन, 132.1–9; वायु. 41.44; वाल्मीकि रामा उत्तरकाण्ड, सर्ग 2.3)।

रावण की दशानन कथा (7.16–17)

रावण विश्रवा का पुत्र था। तपस्या से प्रभावित होकर इसे शिव से दश शिर मिले (महा. वन. 275.16–25)। यही शिर उसने अपने कंधों पर चिपका लिये। उसने अपनी ही पुत्रवधू नलकूबर की पत्नी रंभा से हठात् संभोग किया। इसी तरह पुंजिकस्थला नामक अप्सरा से भी बलात्कार किया जिसके कारण ब्रह्मा ने उसके सिर के सौ टुकड़े हो जाने का अभिशाप दिया (वा. रा. युद्ध काण्ड, 13.11–14, सर्ग 111)

द. जैन पौराणिक विशेषतायें

हरिषेण ने धर्मपरीक्षा में पौराणिक कथाओं की यथास्थान जैन दृष्टिकोण से समीक्षा की है। अमितगति की धर्मपरीक्षा में यह समीक्षा और अधिक गहराई से मिलती है। उदाहरणार्थ– विष्णु पर प्रश्नचिन्ह (H. 3.21; A. 10.21–40; विष्णु की कामुकता (H. 4.9–12; A. 11.26–28), ब्रह्मा और तिलोत्तमा का सम्बन्ध ,H. 4.13–16; A. 11.29–47), ब्रह्मा और विष्णु की कथाओं पर प्रश्नचिन्ह (H. 3. 16–20; A. 13.37–102; 15. 56–66), राम कथा समीक्षा (H. 8.11; A. 16.1–21), पौराणिक कथाओं की व्याख्यात्मक समीक्षा (H. 9.4–5; A. 16.44–57; H. 9.11–12; A. 16.58–84; H. 9.14; A. 16.99–100; H. 9.18–25; A. 16. 102–104; 17 वां परिच्छेद। इनमें की गई पौराणिक समीक्षा को विषयवस्तु में पाठक देख सकते हैं। उसे यहां दुहराने की आवश्यकता नहीं है।

इस समीक्षा को देखने से इतनी बात तो स्पष्ट हो जाती है कि जैनाचार्यों

में वैदिक पुराणगत अतिरंजित तत्वों को व्यावहारिक स्तर पर खड़े होकर नकार दिया है और उन्हें मानवीय तत्वों के आधार पर मोड़ दिया है। इतना अवश्य है कि महापुरुषों की व्यक्तित्व-शृंखला से जुड़कर इन कथाओं ने विद्याधरी कथाओं के रूप में अतिरंजित तत्वों को किसी सीमा तक बनाये भी रखा है। इस अस्वाभाविकता को दूर करने के लिए आचार्यों ने पूर्वोपार्जित कर्मों के फल को प्रदर्शित किया है। पौराणिक आख्यान महाकाव्यों के साथ ही प्रेमाख्यानक काव्यों की भी इसी से मिलती-जुलती एक लम्बी शृंखला जैन साहित्य में मिलती है।

लगभग सारी पौराणिक कथाओं का आकलन रामायण और महाभारत के आख्यानकों में समाहित हो जाते हैं। रामायण को पद्मचरित तथा महाभारत को हरिवंश अथवा पाण्डव पुराण के रूप में व्याख्यायित किया गया है। त्रेसठ महाशलाका पुरुष तथा विशिष्ट जैन नायक-नायिकाओं के चरित भी इन्हीं पौराणिक कथाओं की सीमा में आ जाते हैं। महाभारत के पात्रों में हरिवंश कुलोत्पन्न बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ और श्रीकृष्ण तथा उनके समकालीन पाण्डव और कौरवों का वर्णन है तथा रामायण के पात्र उनसे पूर्ववर्ती बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के काल में हुए हैं। महाभारत कथा की अपेक्षा रामकथा में परिवर्तन जैन परम्परा में अधिक हुआ है। अतः उस पर कुछ विशेष चर्चा आवश्यकता है।

दधिमुख और जरासन्ध कथा (9.6-10)

दधिमुख नामक एक ब्राह्मण पुत्र (या नागवंशी) था। उसका केवल मस्तक था, हाथ-पैर नहीं थे। अगस्त्य मुनि के आग्रह पर उसने किसी तरह निर्धन कन्या से विवाह किया। वह कन्या उसको छींके पर रखकर भिक्षा मांगने लगी। जरा नाम की राक्षसी ने उस मस्तक के दोनों खण्डों को जोड़ दिया जिससे उसका नाम जरासन्ध हो गया। (भाग. 9.22-8; 10.50-21; 71-3; 72-42; चण्डकौशिक मुनि द्वारा कृपा पूर्वक दिये गये फल का माताओं द्वारा भक्षण किये जाने पर पर उसका जन्म हुआ था (महा. सभा. 17.29)। बृहद्रथ ने आम दिया जिसे चण्डकौशिक ने आधा-आधा अपनी दोनों पत्नियों को खिला दिया। फलतः दोनों ने आधे-आधे बालक को जन्म दिया। दोनों ने उन्हें चौराहे पर फिकवा दिया। उन्हीं दोनों को जरा राक्षसी ने जोड़ दिया (महा. सभापर्व, 14.29-70)।[1]

---

1. इन सभी के उद्धरणों के लिये देखिए- महाभारत की नामानुक्रमणिका, गोरखपुर, सं. 2016; पौराणिक कोश, वाराणसी; भारतीय मिथक कोश, डॉ. उषा पुरी विद्यावाचस्पति, दिल्ली, 1986; वैदिक कोश-सूर्यकान्त, वाराणसी, 1963।

निजन्धरी कथायें

पौराणिक संदर्भों में इन आख्यानों को देखा जाये तो पाठक को पुराणों के स्वरूप का सहजता पूर्वक आभास हो जायेगा। उनमें अतिरंजनाओं से भरी घटनाओं का बाहुल्य है जिनपर विश्वास करना कठिन हो जाता है। मनोवेग ने ऐसे ही कतिपय आख्यानों का उल्लेख किया है और उनका खण्डन करने के लिए निजंधरी अथवा उन्हीं से मिलती-जुलती कल्पित कथाओं की रचना कर मनोवेग ने वादशालाओं मे विप्रों के सामने प्रस्तुत कीं। ऐसी कथाओं में मार्जार कथा (4·3-7), जल शिला और वानर नृत्य कथा (5.8-9), कमण्डलु और गजकथा (5.10-12), बृहत्कुमारिका कथा, (7.2-6), और कपित्थ खादन कथा (9.1-3) प्रमुख कथायें हैं। मनोवेग ने इन कथाओं की समीक्षा करने के पूर्व दस मूर्ख कथायें प्रस्तुत की। ग्रन्थ की प्रारम्भिक, द्वितीय और तृतीय सन्धियों में और उन्हें मधुबिन्दु का दृष्टान्त देकर मिथ्यात्व भाव की भूमिका पर संपुष्ट किया।

जैन साहित्य में राम कथा

धम्मपरिक्खा में राम-रावण कथा का भी उल्लेख आया है। आदिकवि वाल्मीकि के शब्दों में "रामो विग्रहवान् धर्मः" राम धर्म की प्रत्यक्ष मूर्ति हैं। इस धर्म मूर्ति का पौराणिक व्यक्तित्व सौजन्य और शौर्य-वीर्य के कारण जन-मानस का श्रद्धास्पद प्रेरणास्रोत रहा है। ऐसे अजेय व्यक्तित्व को किसी धर्म, समाज अथवा राष्ट्र की कठोर सीमा में बांधना हमारा कदाग्रह होगा। इसलिए रामकथा देश-विदेश के कण कण में मिश्रित हो चुकी है और उसका ऐक्य रूप पाना संभव नहीं है। भारतीय साहित्यकार ने हर नये युग में उसे नया काव्यात्मक परिधान दिया और प्रतीक का एक ऐसा लोकप्रिय माध्यम बनाया जिसे यथेच्छ कल्पनाओं की कूची से युगधर्म के अनुसार चित्रित किया जा सके।

जैन परम्परा में 63 शलाका पुरुष माने जाते हैं जिनमें 24 तीर्थंकर 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासुदेव और 9 प्रति-वासुदेव परिगणित हैं। इनमें राम, आठवें बलदेव और लक्ष्मण, आठवें वासुदेव तथा रावण, आठवें प्रतिवासुदेव हैं। वासुदेव सदैव प्रतिवासुदेव का घातक हुआ करता है।

जैनाचार्यों ने रामकथा पर पर्याप्त साहित्य सृजन किया है। इसमें यतिवृषभ की तिलोय पण्णत्ति, विमलसूरि का पउमचरिय, संघदास की वासुदेवहिण्डी, रविषेण का पद्मपुराण, शीलाचार्य का चउपन्नमहापुरिसचरिय गुणभद्र का उत्तर-पुराण, हरिभद्र का बृहत्कथाकोष, पुष्पदन्त का महापुराण, भद्रेश्वर की कहावली, और हेमचन्द्र का त्रिशष्टिशलाका पुरुष चरित प्रमुख हैं। हिन्दी में तो और अधिक लिखा गया है। इन ग्रन्थों में रामकथा के मूलतः दो रूप मिलते हैं

प्रथम रूप विमल सूरि के पउमचरिय में मिलता है जिसका अनुकरण रविषेण, स्वयम्भू, शीलाचार्य, भद्रेश्वर, हेमचन्द्र, धनेश्वर, देवविजय और मेघविजय ने किया है और द्वितीय रूप मिलता है गुणभद्र के उत्तरपुराण में जिसका अनुसरण पुष्पदन्त और कृष्णदास ने किया है। इन दोनों रूपों की संक्षिप्त कथा क्रमशः इस प्रकार है। इनमें प्रथम रूप इस प्रकार है-

श्रीलंका के राजा रत्नश्रवा के तीन पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रों के नाम थे। रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण तथा पुत्री का नाम था चन्द्रनखा। ये सभी राक्षसवंश के थे। राक्षस नहीं थे, विद्याधर जाति के मानव थे। इन्द्र, वरुण आदि देवता भी यहां विद्याधर ही बताये गये हैं। रावण का सम्बन्ध मन्दोदरि से और चन्द्रनखा का सम्बन्ध खरदूषण से होता है। चन्द्रनखा की पुत्री अनंगकुसुमा के साथ हनुमान विवाहे जाते हैं। इन सभी को जैन धर्म का पालन करनेवाला बताया गया है।

रावण की मृत्यु दशरथ व जनक की सन्तान के हाथ होगी यह जानकर विभीषण दोनों को मारने आता है। इधर नारद दशरथ और जनक दोनों को सचेत कर देते हैं। फलस्वरूप वे अपने पुतले महल में छोड़कर अन्यत्र चले जाते हैं। विभीषण उन्हें सही मानकर मारकर चला जाता है। दशरथ कैकेयी के स्वयम्बर में जाते है और उसे अपनी पत्नी बनाते हैं। बाद मे होने वाले युद्ध में कैकेयी दशरथ की भरपूर सहायता करती है। इसलिए दशरथ उसे एक वरदान देते हैं। जनक के भामण्डल नाम का पुत्र और सीता नाम की पुत्री होती है। चन्द्रगति नाम का विद्याधर भी मण्डल को हर ले जाता है। युवक होने पर नारद सीता के प्रति मोह उत्पन्न कराता है। चन्द्रगति जनक से भी मण्डल के लिए सीता की याचना करता है। जनक इसके पूर्व ही उनके यज्ञ की रक्षा करने वाले दशरथ पुत्र राम को सीता देने का संकल्प कर चुके थे। इस असमंजस को दूर करने के लिए चन्द्रगति एक धनुष देकर सीता स्वयम्बर का आयोजन कराता है। उसमें राम धनुष चढ़ाकर सीता का वरण करते ह। साथ ही सीता और भामण्डल का बहिन-भाई के रूप में मिलन होता है।

दशरथ और भरत को दीक्षित होता जानकर दोनों से संयोग बनाये रखने की दृष्टि से कैकेयी दशरथ से वर प्रदान के उपलक्ष्य में भरत को राज्य देने के लिए कहती है। राम भरत को समझाकर उसे राज्याभिषिक्त करते हैं और स्वयं लक्ष्मण तथा सीता के साथ वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं। अपराजिता और सुमित्रा का पुत्र-वियोगजन्य दुःख देखकर कैकेयी सन्तप्त हो जाती है और राम को लौटाने का प्रयत्न करती है। परन्तु राम प्रतिज्ञा पर अटल रहते हैं। इसी वनवास में अनेक राजाओं का मान मर्दन करते हुए वे दण्डकारण्य पहुंच जाते

हैं। लक्ष्मण की वीरता तथा सुन्दरता से प्रभावित होकर उसे अनेक राजा अपनी कन्या दान करते हैं।

एक समय दैविक तलवार की शक्ति देखने से लक्ष्मण झुरमुट काटता है परन्तु असावधानता वशात् शम्बूक का सिर कट जाता है। शम्बूक की माता चन्द्रनखा दुःखित होती है परन्तु राम-लक्ष्मण के रूप को देखकर मोहित हो जाती है और प्रणय प्रस्ताव रखती है। असफल होने पर खरदूषण से युद्ध होता है। रावण भी सहयोग के लिए पहुंचता है। सीता के रूप पर मुग्ध होकर वह सिंहनाद कर उसे हरण कर लेता है। सीता न पाकर राम विह्वल हो जाते हैं।

इधर विट-सुग्रीव को पराजित कर वानर सुग्रीव को उसकी पत्नी तारा वापिस कराते हैं। सुग्रीव के आदेशानुसार हनुमान सीता की खोज करने लंका जाते हैं। लक्ष्मण द्वारा रावण का वध होता है और राम, लक्ष्मण तथा सीता अयोध्या वापिस पहुंचते हैं।

तत्पश्चात् भरत और कैकेयी जिन दीक्षा ग्रहण करते हैं। राम स्वयं राज्यासीन न होकर लक्ष्मण को अभिषिक्त करते हैं। कुछ समय बाद सीता गर्भवती होती है परन्तु लोकापवाद से उसका निष्कासन कर दिया जाता है। संयोगवश पुण्डरीकपुर का राजा सीता को बहिन रूप में पालन, पोषण तथा संरक्षण करता है। वहीं लवण और अंकुश का जन्म होता है। कालान्तर में राम से इन दोनों बच्चों का युद्ध होता है और उसी के अन्त में पिता-पुत्र मिलन हो जाता है। सीता अग्नि-परीक्षा में निष्कलंक सिद्ध हो जाती है परन्तु वह गृहस्थावस्था में प्रविष्ट न होकर जिन दीक्षा धारण करती है और तपकर सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न होती है। लक्ष्मण के आकस्मिक मरण से राम उन्मत्त से हो जाते हैं और लक्ष्मण का शव लेकर इधर उधर भटकते हैं। मनोद्वेग शान्त होने पर जिन दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते हैं। इन्हीं प्रसंगों मे अनेक उपकथायें आती हैं जिनका अनेक दृष्टियों से महत्व उपलक्षित होता है।

रामकथा की दूसरी परम्परा मिलती है गुणभद्र के उत्तरपुराण में जिसका अनुगमण किया है पुष्पदन्त और कृष्णदास ने। इस परम्परा के अनुसार दशरथ की चार पत्नियां थीं। प्रथम सुबाला और कैकेयी थे दो पत्नियां थीं जिनसे क्रमशः राम और लक्ष्मण उत्पन्न हुए। बाद में दो विवाह और हुए जिनसे भरत और शत्रुघ्न पैदा हुए।

सीता जन्म के विषय में यहां बताया गया है कि रावण ने एक समय अमितवेग की पुत्री मणिमति की तपस्या में विघ्न उपस्थित करने का प्रयत्न किया। मणिमति ने निदान बांधा कि मैं आगामी जन्म में मन्दोदरि की पुत्री होऊं और रावण के वध का कारण बनूं। ज्योतिषियों से यह बात जानने पर

रावण उस बालिका को मञ्जूषा में रखकर मारीच से मिथिला में गड़वा दिया। किसी को हल चलाते समय वह मंजूषा मिली। जनक ने उस बालिका को पाला-पोसा और सीता नाम रखा। बाद में यज्ञ रक्षा करने के बाद राम का सम्बन्ध सीता से होता है। वनवास काल में रावण सीता का रूप देखकर मुग्ध हो जाता है। मारीच स्वर्णमृग का रूप धारणकर राम को दूर भगा ले जाता है। इस बीच रावण सीता का हरण कर लेता है।

अन्त में सीता के आठ पुत्र बतायें हैं। यहां सीता-त्याग का तो कोई उल्लेख है ही नहीं। यह अवश्य बताया है कि जिन दीक्षा लेकर सीता स्वर्ग गई और राम ने निर्वाण पाया।

दोनों जैन परम्पराओं में भेदक तत्व

1. विमलसूरि के लक्ष्मण सुमित्रा के पुत्र हैं, तथा भरत कैकेयी के, परन्तु गुणधर ने लक्ष्मण को कैकेयी सुत बताया है। विमलसूरि ने राम को अपराजित पुत्र लिखा है परन्तु गुणधर ने सुबला पुत्र।
2. विमलसूरि की सीता जनकपुत्री है परन्तु गुणधर ने सीता को मन्दोदरि से उत्पन्न लिखा है।
3. विमलसूरि के राम एक ही पत्नी वाले हैं परन्तु गुणधर ने राम के सात विवाह और करवाये हैं।
4. विमलसूरि ने वाल्मीकि की तरह राम का राज्याभिषेक और कैकेयी के कारण उनका वनवास लिखा है परन्तु गुणधर ने इन दोनों प्रसंगों को प्राय: छोड़-सा दिया है।
5. विमलसूरि ने सीता हरण का कारण रावण का उनके रूप पर मुग्ध हो जाना बताया परन्तु गुणधर ने इस प्रसंग को उपस्थित करने में नारद को कारण रूप में उपस्थित किया है।
6. सीता की अग्निपरीक्षा का उल्लेख विमलसूरि ने तो किया है परन्तु गुणधर ने सीता-त्याग का प्रसंग ही नहीं रखा।
7. विमलसूरि की सीता, लवण और अंकुश इन दो पुत्रों की माता है परन्तु गुणधर ने सीता के आठ पुत्र बताये हैं।

वैदिक परम्परा और जैन परम्परा में कुछ मूलभेद

1. सीता का एक सहोदर भामण्डल था जो अज्ञानता और परिस्थितियोंवश सीता से ही विवाह करने का इच्छुक था। वाल्मीकि रामायण में यह प्रसंग है ही नहीं।
2. यज्ञरक्षा के पुरस्कार स्वरूप जनक ने राम को सीता देने का निश्चय पहले

ही कर रखा था। सीता-स्वयम्बर तो बाद में हुआ। वैदिक रामायण में ऐसा नहीं है।

3. राम का वनवास स्वेच्छानुसार सोलह वर्ष का था परन्तु वाल्मीकि के रामायण में वनवास का कारण कैकेयी की आपत्ति थी और यह वनवास चौदह वर्ष का था।

4. राम वन-गमन पर दशरथ ने जिन दीक्षा ली, उनकी मृत्यु नहीं हुई। जबकि वैदिक रामायण में दशरथ की मृत्यु बतायी गई है।

5. वनमाला आदि अनेक उपाख्यानों का वाल्मीकि रामायण में अभाव है।

6. जैन रामायण में शूर्पणखा के स्थानपर चन्द्रनखी नाम दिया है और उसे रावण की बहन तथा खरदूषण की पत्नी बताया है। नाक काटने का प्रसंग भी यहां नहीं मिलता।

7. जैन परम्परा में लंका दहन का उल्लेख नहीं है।

8. कैकेयी का स्वयम्बर, राम द्वारा अनेक राजाओं को अपने आधीन करना तथा लव-कुश का राम से युद्ध होना वाल्मीकि रामायण में नहीं।

जैन परम्परा की कुछ मूलभूत विशेषतायें

जैनाचार्यों ने इन परम्पराओं को अतर्कसंगत और अविश्वसनीय घटनाओं से दूर रखने का प्रयत्न किया और उन्हें यथार्थवाद के आधार पर बुद्धिसगत बनाया। इसके साथ ही मानव-चरित्र को अधिक से अधिक ऊंचा उठाने का भी संकल्प किया।

१. यथार्थवाद

1. रावण वस्तुतः राक्षस नहीं था, वह तो हम आप जैसा मानव था। उसका मूल वंश विद्याधर था जो विद्याओं का स्वामी था, आकाशगामिनी आदि अनेकानेक विद्यायें जिन वंशजों के पास रहा करती थी। इसी वंश से राक्षस और वानर वंश का उद्भव हुआ।

2. राक्षस वंश की उत्पत्ति तब हुई जब विद्याधर वंशीय राजा मेघवाहन को लंकादि द्वीपों का राज्य दिया गया। इन द्वीपों की रक्षा करने के कारण उसके वंशजों को राक्षस वंशीय कहा गया है।

3. हनुमान वगैरह कोई बन्दर नहीं थे। वे तो विद्या सम्पन्न मानव थे जो वानर कुल में उत्पन्न हुए थे। इस वंश का प्रारम्भ अमरप्रभ से हुआ है जिसने वानर आकृति को राज्यचिन्ह की मान्यता दी और उस राज्यचिन्ह को अपने मुकुट आदि में अंकित कराया।

4. रावण के दश मुंह नहीं थे किन्तु उसके हारमें उसी की दश आकृतियां दिखाई दी थीं। इसीलिए दशानन नाम पड़ा।

5. दशरथ के साथ कोई देवासुरों का संग्राम नहीं हुआ। वह संग्राम तो कैकेयी स्वयम्वर के बाद उसमें पराजित राजकुमारों से हुआ था।

6. सीता की उत्पत्ति न पृथ्वी से हुई, न किसी कमल से और न अग्नि अथवा किसी ऋषि से। वह तो शुद्ध वीर्य-रजजात कन्या थी।

7. हनुमान ने कोई पर्वत नहीं उठाया था। वे तो विशल्या नामक एक स्त्री चिकित्सक को घायल लक्ष्मण की चिकित्सा के लिए ले आये थे।

8. ये मात्र अन्धविश्वास और भ्रान्ति उत्पन्न करने वाली कथायें हैं कि कुम्भकर्ण छह माह सोता था और करोड़ों महिष खाता था। कूर्म ने यदि पृथ्वी को धारण किया तो उस समय उसके स्वयं का आधार क्या रहा होगा? राम यदि त्रिभुवन भर माप करके भी अधिक होते हैं तो रावण सीता को कहां ले जा सकता है? रावण का पुत्र इन्द्रजित अपने पिता से किस प्रकार अवस्था में बड़ा रहा? विभीषण आज भी कैसे जीवित है?

इस प्रकार के और भी अनेक प्रश्न हैं। वस्तुतः ये कथायें निराधार हैं। सच बात तो यह है कि इस प्रकार की कथाओं का आकलन वैदिक, जैन और बौद्ध तीनों धाराओं मे मिलता है। यह सब शायद भक्तिवश ही होता रहा होगा।

२. मानव चरित्र

जैनाचार्यों ने स्त्री-पुरुष के चरित्र को परिस्थितियों के अनुसार निखारने का प्रयत्न किया है।

उदारता

दशरथ को अपयश से बचाने के लिए राम स्वेच्छा से वनवास जाने की इच्छा व्यक्त करते हैं। भरत के लिए भी जिन दीक्षा धारण न कर प्रजा पालन करने के लिए आदेश देते हैं। विद्या साधन में मग्न रावण को विभीषण के सुझाने पर भी डिगाते नहीं। अग्नि परीक्षा के बाद सीता से राम क्षमायाचना करते हैं। बालि-वध का प्रसंग उपस्थित ही नही होने देते। लक्ष्मण भरत वगैरह को नष्ट करने के लिए कहते हैं परन्तु राम ऐसा न करने के लिए लक्ष्मण को समझाते हैं। विन्ध्य के पार जलशून्य प्रदेश में एक ब्राह्मण ने रामादि सभी के गृह प्रवेश के समय भला-बुरा कहा। लक्ष्मण जब उसे मारने तैयार हो जाते हैं तब राम कहते हैं कि श्रमण ब्राह्मण आदि हन्तव्य नहीं हैं-

समणा य बम्हणा विय गो पसु इत्थी य बालया बुड्ढा।
जइ वि हु कुणन्ति दोसं तह विय ए ए न हन्तव्वा॥

इसी तरह राम वालिखिल्य राजा से रुद्रभूति नामक म्लेच्छ राजा को बन्धन मुक्त करने के लिए कहते हैं।

भ्रातृवात्सल्य

अतिवीर्य भरत से युद्ध करना चाहता था। वनमाला ने आकर राम को इस बात की सूचना दी। राम चिन्तित हो उठे। वनमाला ने सान्त्वना दी और जाकर अतिवीर्य को नृत्य करते समय पकड़ लिया। राम उसे जिनमन्दिर में ले आये। जिन भगवान की पूजन की और उससे कहा– तुम भरत के भृत्य रूप रहकर कोशल में रहो– "भरहस्स होहि भिच्चो, गच्छ तुम कोसला नयरी।" भाई के प्रति यह ममत्व प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बनाये रखना बहुत बड़ी बात है। लक्ष्मण भी इसी प्रकार राम के प्रति और गुरुजनों के प्रति भी सदैव विनयी रहते हैं।

अन्य विशेषतायें

रावण को भी जैनाचार्यों ने एक प्रखर विद्वान और धार्मिक नेता के रूप में चित्रित किया है। उपरम्भा का प्रणय–प्रस्ताव ठुकरा कर रावण एक आदर्श प्रस्तुत करता है। रावण का व्रत था– "अपसन्ना परमहिला न य भोत्तव्वा सुरूवा वि"। इसीलिए सीता का हठात् उपभोग उसने नहीं किया।

जैनाचार्यों ने बालि और सुग्रीव के बीच कोई स्त्री विषयक संघर्ष का उल्लेख नहीं किया। इसलिए बालि पर कोई चारित्र विषयक लाञ्छन नहीं है। हनुमान के चरित को भी उनके कार्यों से उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न किया गया है।

कैकेयी अपने वियोगी जीवन को स्वस्थ बनाये रखने के लिए भरत को राज्याभिषिक्त करने का प्रस्ताव करती है। परन्तु परिणाम देखकर अत्यन्त पश्चात्ताप करती है। अन्ततः राम को वापिस बुलाने के लिए जाती है और राम से नारी स्वभाव की चंचलता का आख्यान करती है।

सीता का चरित भी उन्नत है। अग्नि परीक्षा के समय राम को उद्बोधित करती है। राम के सादर आग्रह करने पर भी गृहस्थावस्था में न आकर जिन-दीक्षा ले लेती है।

३. जैनत्व

सम्पूर्ण रामकथा को जिस प्रकार वाल्मीकि ने हिन्दुत्व से रंग दी है उसी प्रकार जैनाचार्यों ने जैनत्व उसमें कूट कूट कर भर दिया है। राम दर्शन के समय कपिल से कहा जाता कि जो अणुव्रत धारण करने वाला हो, जिसे जिन

प्रोक्त धर्म में विश्वास हो, सुशील हो, राम उसका अनेक द्रव्यों द्वारा सम्मान करते हैं — सो पूइज्जयि पुरिसो पउमेण अणेगदव्वेणं, पउमचरिय–35–38.

जिनभक्त वज्रकर्ण का राम–लक्ष्मण ने पक्ष लिया। पउमचरिय में कहा गया है कि रामगिरि जिसे हम आज रामटेक के नाम से जानते हैं, पर रामचन्द्र जी ने जैन चैत्यालय बनवाये थे। इस नगर का परिकर मन हुर था जो वंशस्थलपुर के स्वामी सुरप्रभ के अधिकार में था। दण्डकारण्य में जैन शासनधारी मुनियों का आवास बताया गया है। जरायु ने भी, कहा जाता है, जैन व्रत लिये थे। रावण भी प्रतिदिन जिनेन्द्र पूजन करने वाला महाविद्वान महात्मा था। जैनधर्म विश्व को जड़–चेतन रूप से अनादि–अनन्त मानता है किन्तु उसका विकास कालचक्र के आरोह–अवरोह क्रम से उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी रूप में परिवर्तनशीलता लिये हुए है। इसी क्रम में वंशों, मनुओं और वंशानुचरितों का भी वर्णन जैन परम्परा में मिलता है। लोक स्वरूप का वर्णन भी इसी प्रसंग में जैनाचार्यों ने अपने पौराणिक ग्रन्थों में किया है। लोकतत्वों को अपनी परम्परा में रंग देने की यह परंपरा उस समय सभी संप्रदायों में प्रचलित थी। जैनाचार्यों ने भी इस परम्परा का अच्छा अनुकरण किया है। वह इतिहास-संमत कहा तक है, कहना कठिन है।

९. समसामायिक अवस्था

कवि की समसामायिक अवस्था उसके साहित्य में प्रतिबिम्बित हुए बिना नहीं रहती। हरिषेण की धम्मपरिक्खा यद्यपि विवरणात्मक रचना है जिसमें उन्होंने पौराणिक आख्यानों की समीक्षा की है फिर भी यत्र–तत्र समसामायिक अवस्था का चित्रण उपलब्ध हो जाता है। उसमें उन्होंने अपनी यात्रा के प्रसंग में भौगोलिक स्थिति का चित्रण कर पर्वत और वनों, तथा देशों और नगरों के सामान्य रूप को प्रस्तुत किया है तो साथ ही सामाजिक और धार्मिक स्थिति के ऊपर भी किञ्चित् प्रकाश डाला है। दसवीं–ग्यारहवीं सदी का भारत किस अवस्था में था, विशेषतः धार्मिक क्षेत्र में, इसकी एक झलक धम्मपरिक्खा में दिखाई दे जाती है।

कथा का प्रारम्भ अजातशत्रु से होता है। यहां उसे जितशत्रु कहा गया है। हम जानते हैं, जैनधर्म का उपलब्ध यथार्थ इतिहास मगध से आरम्भ होता है। महावीर और बुद्धकालीन राजा श्रेणिक बिम्बिसार राज्यक्रान्ति के उपरान्त शिशु नागवंश का प्रथम नरेश हुआ जो तीर्थंकर महावीर का अनन्य भक्त था। महावीर का उपदेश राजग्रह की पर्वत शृंखलाओं में से एक पर्वत विपुलाचल पर होता रहा। श्रेणिक उसी मगध का सम्राट् था। वैशाली नरेश चेटक की पुत्री उसकी महारानी चेलना का पुत्र अजातशत्रु कुणिक हुआ जिसने कोशल, कौशाम्बी,

वत्स आदि देशों पर कुशलता पूर्वक आधिपत्य किया । अवन्ती राजा चण्डप्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता से वत्सनरेश उदयन ने विवाह किया था । पंचम-चतुर्थ शती ई. पू. में अवन्ती जनपद मौर्य साम्राज्य में संमिलित था और उज्जैयिनी मगध साम्राज्य के पश्चिम प्रान्त की राजधानी थी । मध्यकाल में यह नगरी मालवा प्रदेश की राजधानी बन गई । इस नगरी से जैन संस्कृति का गहरा संबन्ध रहा है ।

हरिषेण ने जितशत्रु को अवन्ती का सम्राट् बताया है और उसी के पुत्र परम जिनभक्त मनोवेग को धम्मपरिक्खा का नायक बताया है । नायक इस अर्थ में कि अपने अभिन्न मित्र पवनवेग को सम्यक्त्व मार्ग पर लाने के लिए वह प्रारंभ से अंत तक प्रयत्न करता है । इसी अवन्ती प्रदेश की उज्जैयिनी नगरी के समीपवर्ती वन में मनोवेग ध्यानस्थ जैन मुनि से पवनवेग को धर्मान्तरित करने का मार्ग जान-समझ लेता है और फिर दोनों मित्र तदनुसार पाटलिपुत्र पहुंचते हैं । इस घटना के उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि जितशत्रु (अजातशत्रु)का राज्य मगध और अवन्ती पर समान रूप से था । सारी कथा पाटलिपुत्र के इर्दगिर्द घूमती रहती है । दोनों प्रदेशों में जैन संस्कृति समृद्ध रूप में प्रतिष्ठित ज्ञात होती है ।

मनोवेग और पवनवेग दोनों पाटलिपुत्र की चारों दिशाओं में स्थित वाद-शालाओं में जाकर वैदिक-पौराणिक आख्यानों की समीक्षा और परीक्षा करते हैं । इसी दौरान मनोवेग मलयदेश, आभीरदेश, रेवा नदी, सौराष्ट्र प्रदेश, मथुरा, अंग, चंपापुरी, चोल द्वीप, साकेत आदि प्रदेशों और नगरों का वर्णन करता है और पाटलिपुत्र में ही पवनवेग का हृदय परिवर्तन कर मनोवेग अपने उद्देश्य को पूरा कर लेता है । इसी संदर्भ में आचार्य ने जैन तत्वदर्शन को प्रस्तुत किया है ।

१०. जैन धर्म-दर्शन

आप्तस्वरूप

धम्मपरिक्खा का मूल उद्देश्य आप्त-स्वरूप की मीमांसा करना रहा है । पौराणिक आख्यानों के आधार पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र, पाराशर आदि महादेवों और ऋषियों की विषय वासनाओं की समीक्षा कर उन्हें आप्त स्वरूप की सीमा से बाहर कर दिया है । आप्त का अर्थ है- निर्दोष, परम विशुद्ध, केवलज्ञानी वीतराग परमात्मा[1] । हरिषेण ने कामवासना आदि से मुक्त देव को

1. आप्तेनोच्छिन्नदोषेण सर्वज्ञेनागमेशिना ।
भवितव्यं नियोगेन नान्यथा ह्याप्तता भवेत् ॥ रत्नकरण्डश्रावकाचार, 5;
नियमसार, 1-5;

आप्त कहा है। उसमें क्षुधा, तृषा, बुढ़ापा, रोग, जन्म, मरण, भय, गर्व, राग, द्वेष, मोह, चिन्ता, रति, विषाद, खेद, स्वेद, निद्रा और आश्चर्य ये अठारह दोष नहीं रहते हैं। वे भामण्डल, दुन्दुभि, चामर आदि अतिशय गुणों से अलंकृत होते हैं। उनके गुणों का अनुस्मरण और पूजन साधक के कर्मों का विनाशक होता है। इसी संदर्भ में महाकवि ने क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चन्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन दस धर्मों का तथा अनित्य, अशरण, संसार आदि बारह भावनाओं का वर्णन किया है।[1]

श्रावक व्रत

पवनवेग का हृदय परिवर्तन होने के बाद उसे श्रावक व्रतों का स्वरूप समझाया जाता है। कथा का प्रारंभ और अन्त उज्जैयिनी से होता है। यहीं मुनिचन्द्र ने उसे श्रावक व्रत दिये और फिर जैनधर्म में दीक्षित कर लिया। पवनवेग ने स्वयं धर्म के सम्यक् स्वरूप को समझकर दीक्षा लेने का आग्रह मुनिवर से किया।

इस प्रसंग में बारह व्रतों का जो वर्णन धम्मपरिक्खा में मिलता है वह उसकी परम्परा की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। नवम संधि में अष्ट मूल गुणों का उल्लेख है– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच अणुव्रत तथा मद्य, मांस और मधु का त्याग। जैसा हम जानते हैं, अष्टमूल गुण परम्परा समन्तभद्र से प्रारंभ होती है। उनके पूर्ववर्ती कुन्दकुन्द ने पृथक् रूप से उसका कोई उल्लेख नहीं किया। पूज्यपाद अकलंक और विद्यानन्द ने भी कुन्दकुन्द का अनुकरण किया। संभवतः समन्तभद्र के समय मद्य, मांस, मधु का सेवन अधिक होने लगा होगा। रविषेण (वि सं. 734) ने दोनों का समन्वय कर श्रावक व्रतों के साथ ही मद्य, मांस, मधु का वर्णन किया और द्यूत, रात्रिभोजन तथा वेश्यागमन को भी छोड़ने का आग्रह किया। हरिषेण ने रात्रिभोजन त्याग पर भी समान रूप से बल दिया है। ग्यारहवीं सन्धि में तो रात्रिभोजन कथा का भी वर्णन किया है।

अष्टमूल गुण परंपरा से ही विकसित होकर षट्कर्मों की स्थापना की गई। भगवज्जिनसेनाचार्य ने पूजा, वार्ता, दान, स्वाध्याय, संयम और तप को श्रावक के कुलधर्म के रूप में स्थापित किया है। हरिषेण ने इनका यथास्थान विवेचन किया है। पर इससे अधिक उन्होंने शिक्षाव्रतों को अधिक महत्व दिया है। कुन्दकुन्द ने सामायिक, प्रोषध, अतिथिपूजा और सल्लेखना को शिक्षाव्रत माना है। भगवती आराधना में सल्लेखना के स्थानपर भोगोपभोग परिमाणव्रत और कार्तिकेय ने देशावकाशिक रखा। उमास्वामी ने सामायिक

1. धम्मपरिक्खा, 4–23; 5.18–20; 9.13, 18–25.

प्रोषधोपवास, उपभोग, परिभोग, परिमाण और अतिथिसंविभाग व्रत दिये। हरिषेण ने शिक्षाव्रतों का नामोल्लेख किया है- सामायिक, प्रोषधोपवास, रात्रिभोजन-त्याग और भोगोपभोग परिमाणव्रत। लगता है, आचार्य ने जिन-मंदिर दर्शन को स्वतन्त्र स्थान देकर उसको अधिक महत्व दिया है। भूमिशयन, स्त्रीपरिहरण, जिनपूजन और सल्लेखना का भी यहाँ उल्लेख हुआ है। इनमें सल्लेखना को भी चतुर्थ शिक्षाव्रत के रूप में स्वीकार है।

११. धम्मपरिक्खा का व्याकरणात्मक विवेचन

धम्मपरिक्खा शौरसेनी किंवा नागर अपभ्रंश में लिखी कृति है। इसकी संक्षिप्त विशेषतायें इस प्रकार हैं-

प्रयुक्त स्वर : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ह्रस्व ए, ओ, ह्रस्व ओ, अनुस्वार एवं अनुनासिक

प्रयुक्त व्यंजन : क्, ख्, ग्, घ्,
च्, छ्, ज्, झ्,
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्,
त्, थ्, द्, ध्, न्,
प्, फ्, ब्, भ्, म्,
य्, र्, ल्, व् स्, ह्

भाषाविज्ञान की दृष्टि से इन्हें हम इस प्रकार विभाजित कर सकते हैं-

1) खण्डात्मक स्वनिम
   i) स्वर
   ii) व्यञ्जन

2) अखण्डात्मक स्वनिम
   i) अनुनासिकता
   ii) सुरलहर
   iii) बलाघात

1. खण्डात्मक स्वनिम विवेचन

स्वर विवेचन

स्वरों का वर्गीकरण तीन आधारों पर किया जा सकता है, यथा-

1) जिह्वा का व्यवहृत भाग
   i) अग्र स्वर- इ, ई, ए
   ii) पश्च स्वर- आ, उ, ऊ, ओ
   iii) मध्यस्वर- अ

2) जिह्वा के व्यवहृत भाग की ऊंचाई

1) संवृत– इ, ई, उ, ऊ

2) अर्धसंवृत– ए, ओ

3) अर्ध विवृत– अ

4) विवृत– आ

3) ओष्ठ की स्थिति

i) वर्तुलित– ओ, ऊ

ii) अवर्तुलित– इ, ई, ए

मात्राकाल और कोमल तालु की दृष्टि से अम्मपरिक्खा के स्वरों को तीन भागों में विभजित किया जा सकता है–

मूल स्वर– i) ह्रस्व– अ, इ, उ, ह्रस्व ए और ह्रस्व ओ

ii) दीर्घ– आ, ई, ऊ, ए, ओ

iii) संयुक्त स्वर– अइ, अउ, एइ, एउ

iv) अनुनासिक स्वर– अनुनासिकता प्रायः सभी स्वरों के साथ उपलब्ध है।

इन स्वरों के लघुतम युग्म शब्द की प्रत्येक स्थिति में मिल जाते हैं। इनके उपस्वनिम भी खोजे जा सकते हैं। इनमें बलाघात शून्य स्वर को ह्रस्व करने की विशेष प्रवृत्ति देखी जाती है। इसलिए अन्त्य स्वर ह्रस्व हो जाते हैं।

स्वर विकार

1) अ > इ = किंकिणपुर (8–21), कारणि, बहुत्तरि

अ > उ = तुरंगु (1.7), मुणइ, सम्मुहु, एक्कु

अ > ए = एत्थंतरे, एत्थु

2. आ > अ = रज्जंग, कज्जे (4.10), अल्लवइ (3.18), दिव्वहार (3.5), सीय (8.10)

आ > उ = विणु, पुणु, पच्छुत्ताव (3.10)

आ > ऊ = विणू

आ > ओ = तहो

3. इ > अ = सिरस

इ > उ = उच्छु

इ > ए = जे, ते

इ > ई = अइसिरीहर

4. ई > आ = आरिस

ई > इ = किरि, अलिय (3.6)

ई > ए = एरिस

5. उ > अ = मउड
   उ > इ = किंपुरिस
   उ > ई = धीय
   उ > ओ = पोग्गल

6. ऊ > उ = समुहि, कुटहंसगइ (3.15), पुव्व
   ऊ > ए = नेउर
   ऊ > ओ = तंबोल, मोल्ल

7. ऋ > अ = घय, (3.4), कय
   ऋ > इ = किट्ठभिक्खु (4.6), धयरट्ठ (8.1), मिच्च (4.5), णिवसेहुय (3.1), मियकुस (3.3)
   ऋ > उ = पुहवि, वुड्ढ, वुड्ढी
   ऋ > ए = गेह, णेह
   ऋ > रि = रिसहो (10.11), रिसि (4.16), रिच्छि (4.17),
   ऋ > अरि = उब्भरिय

8. ए > इ = अणिमिस, पंचिदिय
   ऐ > ए = केलास, कज्जे, परिहुए, मेहागए, ह्रस्व ए का भी प्रयोग मिलता है– सरीरे, पुरे पलोएवि पेच्छेवि, लोयणाए,
   ऐ > अइ = वइयस्स (4 9), कइलास, दइव

9. ओ > उ = अण्णुण्ण
   ओ > ऊ = ऊसारिय
   ओ > ह्रस्व ओ = तहो, मंजरहो, दिवसहो, ससुरहो (8.3),
   ओ > ए = करेमि

10. औ > ओ = कोऊहलु (8.10), पियणोरि (11.3), मोत्तिय
    औ > अउ = गउरिय (4.9)

11. ह्रस्व स्वर की दीर्घीकरण प्रवृत्ति– सीस, बीया

12. दीर्घ स्वर का ह्रस्वीकरण– परिक्ख, तिरथ, रज्ज, विण

13. ह्रस्व स्वर का अनुस्वारत्व– दंसण, अंसु, उंबर

14. स्वर लोप–
    i) आदि स्वर लोप – हउं, हेट्ठामुह, बलग्ग
    ii) मध्य स्वर लोप – पत्ति, उदिट्ठ, पडिलिउ
    iii) अन्त्य स्वर लोप– अब्भासें, सहावें, रोसें, सक्कें एउ

15. आदि स्वरागम : इत्थि

16 स्वरभक्ति : आयरिय, किलेस

17. स्वरव्यत्यय: अच्छरिय, अंगचरिय

18. स्वरागम: उच्छु, करेवि, आयग्णिवि, पेक्खिवि

19. संयुक्त स्वर

i) अइ : वइव, अइस

ii) अउ : कोऊहल

iii) अउ : अउरिय

iv) एइ : वेइ, लेइ

v) एउ : नेउर

20. अनुनासिक स्वर

i) अँ : हउँ 8.13 : तुम्हहँ 8.20 :

ii) एँ : माणवेएँ 4.1, दोसें 4.5, अणुराएँ 4.9, छइल्लें, राएँ

iii) इँ : पलाइँ 4.5, हिँ 4.5, हिएहि 4.5, गणइँ 4.6, तेहिं, जहिं, एयहँ

iv) उँ : रणरणउँ 4.9,

21. अनुस्वार स्वर

अनुस्वार के पूर्ववर्ती स्वर प्राय: अनुनासिक होते हैं। वर्ग के सभी अन्तिम वर्ण अनुस्वार में परिवर्तित हो गये। अनुस्वार कहीं कही बहुवचन का भी द्योतक है। निरनुनासिकता की प्रवृत्ति भी दृष्टव्य है। जैसे- तहि 4.8 जिह, तिह

i) अं : बाहुदंड 4.3, जं, जं, पच्चंगु

ii) इं : अहरहिं 4.23, चिंधी 8.17

iii) उं : उदर 4.5, भणिउं 4.5

स्वराघात : स्वराघात के उदाहरण मइ, किसि आदि जैसे शब्दों में देखे जा सकते हैं। अन्त्याक्षरों पर प्राय: बलाघात नही रहता।

व्यञ्जन परिवर्तन और विकार

22) i) आदि असंयुक्त व्यंजन : साधारणत: आदिवर्ती असंयुक्त व्यंजन अपरिवर्तित रहते हैं। जैसे-जणु, मित्त, सरीरहे आदि। पर कुछ विशिष्ट स्थानों पर उनमें व्यत्ययता भी देखी जाती है। जैसे- दुहिता > धीय; धृति > दिही

ii) आदि य को ज : जमहो 4.18; जमपासि 4.19; जुहिट्ठिलु, 8.4; जोयण, 8.9

iii) आदि में संयुक्त व्यंजन रहने पर एक का लोप हो जाता है। जैसे-खंधु, पडिमा, अंबरट्ठहो। परन्तु कहीं कहीं अपवाद भी मिलता है। जैसे-ण्हाइ, 8.6

23. 'य'श्रुति : जियारि, सीयलु 4.9; पयासिय, वणियवरी 3.11, सयल 3.11; पयडमि 4.5

24. 'व'श्रुति : बंधाविउ 8.10; मयणीवइ 8.16; लिहाविय 8.17; पोमाविय 8.17

25. संप्रसारण : i) य > इ = कोइलसमाण 3.9; कंचाइणी
ii) व > उ = जिणदेउ 9.13, वाउएव 8.4

व्यञ्जन परिवर्तन और विकारों के उदाहरण

क > य = पयडमि 4.5; कुलयर 10.1, सायर 10.4, रयणायर, पयासिय, वणियवरी 3.11, सयल 3.11
क लोप :– सउण, णउल 8.4, कोइल 4.23, आउल

ख > ह = सिहर, सुह, दुह, संलिहिय 4.15, रइसुह, 4.15

ग > य = णयर 9.7, सायरमुण 4.6, सरायवेणु 4.11, सीयजुयलु 10.2, णायसिरि 11.13, अणुराय

ग > उ = माणसवेउ

घ > ह = मेह, दीहंघो, पुण्णमेह

च > य = वयण 4.10, वियारविमुक्क, खेयइ 4.7, सुलोयण 8.13

ज > य = भोयण 9.7, सेसभुयंगो, पोमराय, णियजीविउ

ज > उ = राउ

ट > ड = घडमाण, पाडलीउत्त 10.13, कुडिलभाव 4.14, तड 4.5, कोडि

ठ > ढ = मढ, वीढ

ड > ल = कील

ण – णकार प्रवृत्ति अधिक है। जैसे– ताराहरणु 8.22, पुणु, णाम, तणउ, जाणेविणु, आयरेण

त > य = जियारि, गुणमय, रयणायर, सिय, असिय, सीय 8.10, अजिय 8.14, सीयलु 4.9, णियंब 4.16, अणुव्वय 10.14, वेयाल 11.6

त > व = माणवंभु 8.14

त > ह = भरह 10.5

त > ड = पडिवासुएव 4.1, पडिवमणु

त > उ = सिक्खावड = 10.15, कंकालवउ 10.9, विवज्जिउ 4.1, हिउमिउ

त लोप = सुमई 10.11, धणवइ 11.3, वियमूणवइ 11.26, रइसुह 4.15, कोऊहल 2,9, मंथरगइउ

थ > ह = णाहं 4.2, मिहुलरमणी 4.11, अमरणाह 8.16, वरणाह

द > य = सुलोयणु 10.10, मंदोयरि 9.17, परमारक्खा 4.11, मयणाणल 2.19, पायवूयणु 2.12

द लोप = वासुएव 10.9, सहएव 8.4, आइच्चणरेस 8.3, विसंगउ 8.1
द > ड = डड्ढ, डहण
ध > ह = पराहेणु, कुज्जोहण 8.4, लहु 4.2, बहिर 4.4, दहिमुहु 9.9
ध > ड्ढ = गोवड्ढण 11.26, बुड्ढी 9.9
न > ण = मणोहर 8.2, अणुरत्त, 8.3, भीमसेणु 8.4, जोयण 8.9; णियवंसु 8.9, णयरी
प > व = सेणावइ 9.22, कविट्ठतरु 9.2, सुवण्णदीव 11.13, दीवंती, कोवजलणु, पावजलणु, गोविए 4.10, उवरि, अवहरेइ, कावालि 4.17, उवसग्गु
'प' लोप = रहणेउर 11.4, भगवइ, अमराउरि, गोउर
प > फ = फुल्ल, फोफल 1.8
प > उ = आउण्णु, आउरिय, मणवेयरूउ, निउणमइ 3.4, वाणरदीउ 8.16, उहयमरूउ, गोउरेण
फ > ब = गुंहु
भ > ह = रासह 4.16, अहिणव, सोह, बलहद्दु, लोहण
म > व = सवण, दवण
य > ज = जमहो 4.18, जमपासि 4.19, जोयण 8.9, जुहिट्ठिलु 8.4, दुज्जोहणु 9.14
य > उ = जिणालउ
य > इ = अक्खइ, कोइल 3.9
र > ढ = आढविअ
र लोप = पउ
व > उ = जिणदेउ 9.13, वासुएउ 8.4, सुग्गीउ, 8.18–19
व > अ = तिहुअण
व > य = जुयरायहो 3.3, गुणलायण्णहो
व लोप = पइट्ठ 4.10
ष > छ = छट्ठ
श > ह = दहलक्खण, दहविह
श > स = सरीर, दस
ह > भ = बंभण 10.6, बंभहो 4.12

समीकरण

प्रबलतर ध्वनि अपने से दुर्बल ध्वनि को अपने में समाहित कर लेती है। इसी को समीकरण कहा जाता है। जब पश्चाद्वर्ती व्यंजन पूर्ववर्ती व्यञ्जन को प्रभावित करता है तब उसे पुरोगामी समीकरण कहा जाता है। जैसे– सुग्गीव कम्म, धम्म, अक्क आदि। इसी तरह जब पूर्ववर्ती व्यंजन पश्चाद्वर्ती व्यंजन को समीकृत करता है तब वह पश्चगामी समीकरण कहलाता है। जैसे– अग्गि, जोग्ग। कभी-कभी ऊष्मों का भी समीकरण होता है जैसे–

धम्म, मागधम्म, पासत्थ आदि। संयुक्त व्यंजन का सरलीकरण करके अनुनासिकीकरण के भी उदाहरण मिलते हैं। जैसे– जिणवंसण, पक्खिपइ।

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन

क्त > त = रत्तंवठ, मुत्त

क्ष > क्ख = रक्खस 8.12, लक्खण 8.10

क्ष > ख = खणमित्तु 4.19, खंतव्वु

ज्ञ > ण = णाणावरणीय कम्म

> ण्ण = वण्णाण, अण्णाणुवएस

ग्ध > द्ध = दुद्ध 3.4

ज्य > ज्ज = रज्जंग, पित्तज्जरेण

त्य > च्च = णच्चंती 10.3, सच्च

त्म > प्प = अप्पउ, अप्पणु

त्स > च्छ = उच्छव

द्य > ज्ज = खिज्जइ 9.12, विज्जाहर 8.16, उज्जाण 11.1

ध्य/ध्व > ज्झ = बुज्झइ, अज्झाण

र्प > प्प = कप्पूर

द्र > ह = महि

ष्ट्र > ट्ठ = मयरट्ठ 8.4, अंधयविट्ठि 8.2

ष्ट > ट्ठ = मुट्ठि 2.7, दुट्ठ 4.22

ष्ठ > ट्ठ = परमेट्ठि 10.3

ष्ण > ण्ह = कण्ह, विण्हु

ष्क > क्ख = पुक्खर

स्क > ख = खंध

स्व > सो = सोच्छंद, सच्छंद 4.17

स्म > म = विम्हिय

स्न > ण्ह = ण्हाणकज्ज 8.6

2. अखण्डात्मक स्वनिम

इसके अन्तर्गत अनुनासिकता विवृत्ति, सुरलहर तथा बलाघात आते हैं। धम्मपरिक्खा में इसके उदाहरण खोजे जा सकते हैं।

शब्दसाधक प्रणाली

अपभ्रंश में शब्द-रचना तीन प्रकार से होती है–

1) शब्दों में पूर्वप्रत्यय (उपसर्ग) तथा परप्रत्यय लगाकर

2) दो शब्द जोड़कर, समास बनाकर, तथा

3) शब्दों की पुनरुक्ति द्वारा

शब्दों में प्रत्ययों के योग से संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण, नाम, धातुएं आदि शब्द रूप निर्मित होते हैं और उनसे विविध भावों की अभिव्यक्ति होती है। इन्हें हम तद्धित प्रत्यय कह सकते हैं।

1) पूर्वप्रत्यय- शब्दों के पूर्व कुछ प्रत्यय लगाकर शब्द बनाये गये हैं। जैसे- अ + काल = अकाल, अ + ब्रह्म = अब्रम्म, अप् + जस् = अपजस, दु + जन = दुज्जन, अ + भय = अभय, स + फल = सफल आदि।

2) परप्रत्यय- ये प्रत्यय मूल प्रातिपादिक, व्युत्पन्न प्रातिपदिक अथवा धातुओं के बाद जोड़े जाते हैं। इनसे संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों का निर्माण होता है। जैसे- अल्ल : एक्कल्ल, नवल्ल। इल्ल : पुरिल्ल। इल्लु : केसरिल्लु। आवण : भयावण। ऊण : पच्छिऊण, हसिऊण। इसी तरह से धक्कु, मोल्लु, मल्लु, पेच्छिवि, हसेविणु, हणेवि, मुणेवि, पमोत्तूण, जिसुणेविणु, पमोत्तूण, बोल्लाविय, पोलिलउ आदि शब्द भी परप्रत्यय लगाकर बनाये गये हैं।

समास

रचना की दृष्टि से शब्द दो प्रकार के होते हैं- सरल शब्द और जटिल शब्द। जो रूप मुक्त है वह सरल शब्द है। जैसे गुरु, भाइ आदि। जटिल शब्द के दो भेद हैं- 1) मिश्र शब्द, 2) समस्त शब्द या सामासिक शब्द। पूर्व या परप्रत्यय (बद्धरूप) मुक्त रूप (मूल शब्द) में जोड़कर मिश्र शब्द बनाये जाते हैं। समस्त शब्द में एक से अधिक शब्द रहते हैं। वह प्रायः दो धातुओं, संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों, अव्ययों तथा दो विभिन्न पदों के योग से निर्मित हैं। पारम्परिक दृष्टि से इसे हम मुख्यतः चार प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं- अव्ययी भाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व। अव्ययीभाव में पहले पद के अर्थ की तत्पुरुष में दूसरे पद के अर्थ की, बहुव्रीहि में अन्य पद के अर्थ की तथा द्वन्द्व में सभी पदों के अर्थों की प्रधानता होती है। धम्मपरिक्खा में समास के इन चारों भेदों-प्रभेदों को देखा जा सकता है। यद्यपि वहां समस्त शब्दों का बहुत अधिक प्राबल्य नहीं है फिर भी यत्र-तत्र समासान्त पदावली मिल ही जाती है।

रूप साधक प्रणाली

रूप प्रक्रिया के अन्तर्गत संज्ञा के लिंग, वचन और कारक पर विचार किया जाता है। संज्ञा को प्रातिपदिक कहा जाता है और प्रातिपदिक में वचन, लिंग, कारक आदि सूचक प्रत्यय समाविष्ट होते हैं। ये प्रत्यय दो प्रकार के हैं- व्युत्पादक प्रत्यय और विभक्ति प्रत्यय। व्युत्पादक प्रत्यय प्रातिपदिक के पूर्व अथवा परस्थिति में लगते हैं जबकि विभक्ति प्रत्यय शब्द की अंतिम स्थिति में ही लगते हैं।

प्रातिपदिक स्वरान्त और व्यंजनान्त दोनों प्रकार के होते हैं। उनके कारक रूपों की एक झलक हम निम्न प्रकारों में देख सकते हैं। धम्मपरिक्खा के आधारपर अकारान्त पुल्लिग के रूप निम्नप्रकार हो सकते हैं।

१. देउ, देवु, देवो, रिसहो	देउ, देव, देवा, रिसहा
२. देउ, देव, देवा	देउ, देव, देवा, रिसहा
३. देवें, देवे, देवेण, रिसहेण	देवहिं, देवेहिं, रिसहेहिं
४. देव, देवस्सु, देवहो, रिसहो	देवहं, रिसहं
५. देवहु, देवहे, रिसहे	देवहुं, रिसहुँ
६. देव, देवहो, देवस्सु, रिसहस्सु	देव, देवहं, रिसहं
७. देवे, देवि, रिसहे	देवहिं, देवाहिं, रिसहिं
८. देव, देवो, रिसहो	देव, देवा, रिसहा

इनके कारक प्रत्ययों को देखने से ऐसा लगता है कि इनमें मुख्यत: प्रथम, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियां शेष रह गई हैं। उकार बहुला प्रकृति है। निर्विभक्तिक पुल्लिग अकारान्त प्रयोग अधिक मिलते हैं। इनके कारक प्रत्यय इस प्रकार हैं-

	एकवचन	बहुवचन
१.	उ, ओ	०
२.	उ, ०	०
३.	ए, एँ, ण	हिं
४.	सु स्सु हो ०	हं
५.	हु हे	हुँ
६.	सु स्सु हो	हं
७.	इ ए	हिं

पुल्लिग इकारान्त तथा उकारान्त आदि और स्त्रीलिंग के इकारान्त, उकारान्त आदि के रूप प्रत्यय कुछ परिवर्तनों के साथ इसी प्रकार लगाये गये हैं।

सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
१. हउँ, तुमं, सो; इह, तुहँ	जे मे
२. मइं, तं, तुमं, ममं	जाइँ, ताइँ, अम्हे
३. मइँ, तेण, जेण, एण	अम्हारिहिं, अम्हेहिं
४. ६. मज्झु, मम, मोर, तोर, तव, तहो, जासु, मम	तुम्हहँ, अम्हहँ, अम्हाणं, ताणं, जाणं

५. मइ, ममाहि — अम्हाहितो
७. अम्हहिं, मइ — अम्हासु, ममेसु
८. शून्य

विशेषण

१) परिमाणवाचक विशेषण – जेवडु, तेवडु, केवडु, एवडु, केत्तउ, जेत्तिउ, तेत्तउ

गुणवाचक विशेषण – एहउ, जेहउ, तेहउ, अम्हारिस एहु, जेहु, तेहु

रीतिवाचक विशेषण – जेम, केम, जिह, किह

अव्यय

i) स्थानवाचक– जेत्थु, केत्थु, तेत्थु, एत्थु, इह, कह, कहिं, एत्तहि, तहिं, इह
ii) समयवाचक – जा, जाम, ताम, जाव, ताव, एम्वहि, ताम्वहि
iii) रीतिवाचक – जइ, जह, किह, जेम, तेम, तह, तहा, तहो
iv) षष्ठी रूप – अम्हारउ, तुम्हारउ, अम्हकेरउ
v) संबन्धवाचक– सहुँ

संख्यावाचक शब्द

एक्कु, दो, बिण्णि, तिउ, तिण्णि, चउ, चयारि, पंच, छ, सत्त, अट्ठ, नव, दस, दह, एयारह, बारह, तेरह, चउदह, चउदस, पण्णारह, पंचदह, सोलह, सत्तारह, अट्ठारह, वीस, बावीस, पंचवीस, सत्तावीस, पणवीस, तीस, तेतीस, बत्तीस, चालीस, पंचास, सउसहु, चउसट्ठि, बाहत्तरि, छहत्तरि, पंचासी, सय, सहसु, लक्ख, कोडि, कोडाकोडि

संख्यावाचक विशेषण–

पढमु, बीयउ, बीऊ, तइउ, चउत्थो, पंचमो, छट्ठो, छठ्ठो, सत्तमो, अट्ठमो, नवमो, दसमो, दहमो, एयारहमो, चउक्क, पंचहिं, तिहिं

तद्धित प्रत्यय

अल्ल, आल, आर, आवण, इक्क, इण, इल, इर, उल्ल, एर, त्तण, प्प

क्रिया रूप

अपभ्रंश में क्रियाओं के वर्तमान और भविष्य कालके रूप अधिक मिलते हैं। भूतकाल का काम प्रायः कृदन्त शब्दों से निकाला गया है। कृदन्तीय

और परस्मैपद का भेद भी यहां समाप्त हो गया है। आज्ञार्थक और विध्यर्थक रूप समान हैं। कर्मणि-प्रयोग के भी रूप मिलते हैं। धातुओं में अधिक वैविध्य दिखाई नहीं देता। कहीं-कहीं तो बिना धातुओं के ही काम चला लिया गया है। इसलिए सरलीकरण की दृष्टि से धर्मपरीक्खा ग्रन्थ बहुत महत्वपूर्ण है।

वर्तमान काल

एकवचन	बहुवचन
प्र. पु. : भणमि, भमामि, होमि	गच्छामो, पेच्छामो
द्वि. पु. : होसि, सुणहि	
तृ. पु. : अत्थि, हसइ, गच्छइ, होइ, हवेइ, बोल्लइ	उप्पज्जंति, दीसंति, रमंति

भूतकाल

तृ. पु. : आसि, अब्भसियउ

भविष्यत काल

तृ. पु. : उप्पज्जेसइ, भमेसइ, होसइ, करेसइ

आज्ञार्थ

द्वि. पु. : जाणाहि, भणु, करउ

विध्यर्थ

द्वि. पु. : देहि, देहु, पेक्खु, भणहि, करहु
तृ. पु : चलंतु, सहंतु, जियंतु, होउ

कर्मणि प्रयोग

भणिज्जइ, दिज्जइ, किज्जइ, सुव्वइ, अच्छिज्जइ

कृदन्त

वर्तमान कृदन्त – आवंत, पढ़संत, सोहमाण
भूतकृदन्त – गयं, गयउ, हुअ, अणिय, जंपिउ, कंपिउ, पभणिउ
हेत्वर्थ कृदन्त – गंतु, गंतूण, गहिऊण, भणिऊण
पूर्व कृदन्त – आयण्णिवि, अणुमण्णिवि, करिवि, पेक्खवि, पइसिवि, मेल्लिवि, मुणूण, भक्खेविणु, करेविणु, जहेविणु

इस प्रकार धम्मपरिक्खा की अपभ्रंश भाषा का विश्लेषण करने से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि इस पर एक ओर संस्कृत का प्रभाव है तो दूसरी ओर शौरसेनी प्राकृत का। इसे शौरसेनी किंवा नागर अपभ्रंश भी कहा जा सकता है। इसमें देशी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। कुछ उंदुर जैसे शब्द ऐसे भी हैं जो मराठी में आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं। यह हम जानते हैं कि हरिषेण ने अपना ग्रन्थ अचलपुर में लिखा था और अचलपुर आज परतवाड़ा(अमरावती) के पास महाराष्ट्र में है। मध्यकाल में, विशेषत: 9 वीं से 12 वीं शती तक अचलपुर जैन संस्कृति का प्रधान केन्द्र रहा है। मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र इसी के समीप अवस्थित है। अत: मराठी के विकास की दृष्टि से धम्मपरिक्खा की भाषा पर विचार किया जा सकता है।

आचार्य हेमचंद्र ने अपभ्रंश के भेदों का वर्णन तो नहीं किया है पर उनके वैकल्पिक नियमों से उनकी विविधता अवश्य सूचित होती है। पश्चिमी सम्प्रदाय के हेमचन्द्र आदि वैयाकरणों ने प्राय: शौरसेनी को अपभ्रंश का आधार माना है। आभीरों का आधिपत्य पश्चिम प्रदेश में रहा है और पश्चिमी अपभ्रंश का आधार शौरसेनी रहा है। हरिषेण ने भी आभीर देश का वर्णन किया है (2.7)। पूर्वीय वर्ग के प्राचीनतम वैयाकरण वररुचि ने भी अपभ्रंश के भेदों का कोई उल्लेख नहीं किया पर क्रमदीश्वर और पुरुषोत्तमदेव के अनुसार नागर अपभ्रंश का प्रयोग क्षेत्र पश्चिमी प्रदेश रहा है। रामशर्मतर्कवागीश (16 वीं शती) ने 27 प्रकार की अपभ्रंशों में नागर अपभ्रंश को मूल माना है। इस प्रकार नागर और शौरसेनी अपभ्रंश का बड़ा सामीप्य सम्बन्ध है। लगभग समूचा अपभ्रंश साहित्य इसी भाषा में लिखा गया है।

छंद योजना

धम्मपरिक्खा की रचना प्रमुख रूप से पज्झटिका समवृत्त मात्रिक छन्दों में हुई है। पुष्पदन्त के समान हरिषेण ने भी कथा-वर्णन में इस समचतुष्पदी छन्द का सुन्दर प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त पादाकुलक, मदनावतार, स्रग्विणी, समानिका, मौक्तिकदाम, उपेन्द्रमाला, सोमराजी, अर्धमदनावतार, रासह, विद्युन्माला, तोटक, तथा दोधक आदि छन्दों का भी प्रयोग कडवकों में उपलब्ध होता है। इनमें अल्पमात्रिक छन्द कम हैं। समवृत्त वार्णिक

छन्दों में से भुजंगप्रयात को ही कवि ने अधिक पसन्द किया है पर उसे भी उन्होंने द्विपदी जैसा बना दिया है।

अपभ्रंश के प्रबंध काव्यों में प्रायः कडवकबद्ध छन्दों का प्रयोग मिलता है। कुछ कवियों ने वर्णनों के अनुसार छदों को भी चित्रण में सजीवता लाने के लिए परिवर्तित किया है। हरिषेण ने भी इस रचनाशैली को अपनाया है। उन्होंने चतुष्पदी षट्पदी छन्दों का द्विपदी के समान भी प्रयोग किया है। समान मात्राओं वाले चार चरणों से एक छन्द बनता है। पर अन्य अपभ्रंश कवियों के समान हरिषेण ने भी प्रयोग करते समय इस नियम का ध्यान नहीं रखा। उनकी पज्झटिका में दो चरणात्मक इकाइयों में भी समानता नहीं है। कहीं-कहीं दो छन्दों को मिलाकर तीसरा छन्द बना दिया गया है। घत्ता (सन्ध्यादौ कडवकान्ते च ध्रुवं स्यादिति ध्रुवा ध्रुवकं घत्ता च, छंदो. 6.1) का तो प्रयोग समूचे ग्रन्थ मे हुआ है। कवि ने चरणों के विषय में कोई नियम नहीं रखा। कडवक छोटे भी हैं और बड़े भी हैं। उनके चरणों में कोई एकरूपता नहीं है। पर प्रायः घत्ता के साथ ही कडवक पूरा होता है। संधि के प्रारंभ में भी घत्ता के रहने का उल्लेख हेमचंद्र ने किया है (कविदर्पण, 2.1.) हरिषेण ने इस सिद्धान्त का पालन किसी सीमा तक किया है।

हरिषेण की धम्मपरिक्खा के प्रस्तुत अध्ययन से इतना तो निश्चित हो जाता है कि इस प्रबन्ध काव्य ने परीक्षात्मक शैली में व्यंग्य का मिश्रण कर एक नई विधा का विकास किया था। पौराणिक मिथक परंपरा पर गहरी चोट करते हुए तत्वविनिश्चय के लिए वैचारिक वातावरण तैयार करने की भूमिका को निर्मित करने का श्रेय भी हरिषेण को ही जाता है। जैनधर्म हठात् धर्मान्तरण के पक्ष में कभी नहीं रहा। उसकी दृष्टि में बिना हृदय-परिवर्तन हुए धर्मान्तरण का कोई तात्पर्य नहीं है। जैन सांस्कृतिक इतिहास में जितने भी धर्मान्तरण हुए हैं, वे सभी हृदयपरिवर्तन के आधार पर ही हुए हैं। इस दृष्टि से भी धम्मपरिक्खा के महत्व को आंका जा सकता है।

धम्मपरिक्खा का प्रस्तुत संस्करण प्रथम बार प्रकाशित हो रहा है। इसकी पाण्डुलिपियां जुटाने और प्रतिलिपि करने में हमारे अभिन्न मित्र प्रो. भागचन्द्र …, भूतपूर्व पालि-प्राकृत विभाग प्रमुख, शिवाजी आर्ट्स

कालेज, अमरावती की सहायता अविस्मरणीय है। ग्रन्थ के संपादन में उनकी सहायता के लिए हम आभारी हैं। मेरी पत्नी डॉ. पुष्पलता जैन, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, एस. एफ. एस. कालेज, नागपुर का भी विविध सहयोग उल्लेखनीय है।

सन्मति-विद्यापीठ के प्रस्तुत प्रकाशन में मानव संसाधन विकास मंत्रालय का आर्थिक अनुदान मुख्य सहायक रहा है। तदर्थ हमारा संस्थान उसका अत्यन्त कृतज्ञ है। प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन में मंत्रालय का यह योगदान निश्चित ही प्रशंसनीय है। इसकी मुद्रण व्यवस्था में राधाकृष्ण प्रेस के श्री सेवकराम-रूपनारायण नंदनवार बंधुओं का सहयोग भी सधन्यवाद स्मरणीय है।

न्यू एक्सटेंशन एरिया,
सदर, नागपुर-440 001.

भागचन्द्र जैन "भास्कर"
पालि-प्राकृत विभाग प्रमुख
नागपुर विश्वविद्यालय

दीपावलि : १८-१०-१९९०

धम्मपरिक्खा

णमो सुयदेवयाए

सिरीहरिसेणविरइआ

धम्मपरिक्खा

१. पढमो संधि

(1)

सिद्धि-पुरंधिहि कंतु सुद्धें तणु-मण-वयणें ।
भत्तिए जिणु पणवेवि चिंतिउ बुहहरिसेणें ॥ छ ॥

मणुय-जम्मि बुद्धिए किं किज्जइ मणहरु जाइ कव्वु ण रइज्जइ ।
तं करंत अवियाणिय आरिस हासु लहहि भड रणि गय-पोरिस ।
चउमुहुं कव्व-विरयणि सयंभु वि. पुप्फयंतु अण्णाणु णिसुंभि वि ।
तिण्णि वि जोग्ग जेण तं सीसइ चउमुह-मुहे थिय ताव सरासइ ।
जो सयंभु सो देउ पहाणउ अह कह लोया-लोय-वियाणउ
पुप्फयंतु ण वि माणुसु वुच्चइ जो सरसइए कया वि ण मुच्चइ ।
ते एवंविह हउँ जडु माणउ तह छंदालंकार-विहीणउ ।
कव्वु करंतु केम णवि लज्जमि तह विसेस पिय-जणु किह रंजमि ।
तो वि जिणिंद-धम्म-अणुराएं बुहसिरि-सिद्धसेण सुपसाएं
करमि सयं जि णलिणि-जल-थिउ जलु अणुहरेइ णिरुवमु मुत्ताहलु ।

घत्ता— जा जयरामें आसि विरइय गाह-पबंधि ।
साहमि धम्मपरिक्ख सा पद्धडियाबंधि ॥ १ ॥

Note : Numbers under Bracket ( ) indicate the numbers of verses and numbers without the bracket in lines represent the numbers of lines of the verses.

(1) a. begins with "ॐ नमः सिद्धेभ्यः" b. begins with ॐ नमो वीतरागाय ॥छ॥ 2.a ॥१॥ for ॥छ॥ 1.a मणहर b न रइज्जइ inter. भड and रणि, 5.b अण्णाण णिसुंभु 6.b जेणा, b ताम for ताव, 7.b ०वियाणउं, 9.b हुउ, a जउ, b माणउं, b ०विहूणउं, 10.b पिउजणु, 11.a ०अणुरायइं, b बुहहिसिरि०, 12.b नलिणिदल० ।

(2)

इह जंबूतरु–लंछणदीवए भरहखेत्तु अत्थि रवि दीवए
सावयदिट्ठियह जिणवरवयणु व सरह सुरयविंयट्ठु बहुवयणु व ।
विविहारामगामसीमंतहिं ण सीमंतिणिकुलु सीमतिहिं ।
सोहइ पुरणयरेहिं विसालउ हरगलकंदलु णाइं विसालउ ।
जक्खफलोहाणंदियविउलइ पिहियदियंतुज्जाणइं विउलइ ।
जहिं मणहरखेयर त्तिलयाहरे भमिरभमरफुल्लिरलललयाहरे
जहिं मयघुम्मिराइ कलहंसइ रइरसवसइं मुयहिं कलहंसइ ।
कय गोमहिसिवसहणिग्घोसइ णंदहिं बहुपयाइ जहिं घोसइ ।

घत्ता– तहिं थिउ मज्झ पएसि गिरिवेयड्ढुविसालउ ।
बहु सउणउलणिवासु सोहइ णाइं जिणालउ ॥ २ ॥

(3)

जो उत्तंगो छत्तपयंगो दीहंगो णं सेसभुयंगो ।
णरणाहो इव बहु-मायंगो विविहकुसुमसरु णाइं अणंगो ।
केसरिल्लु णावइ पंचाणणु तिलयसोहजुउ णं वेसाणणु ।
सुरसेविउ णं दससयलोयणु थियसारंगु णाइं णारायणु ।
मेहु व वरणियंबु रुप्पयमउ सोहइ बलहद्दु व धवलंगउ ।
कत्थइ पोमरायकंइरत्तउ सरयमेहु णं संझाजुत्तउ ।
कत्थइ इंदणीलमणिसामलु णाइं सुरिंदकरिंदु सभयजलु ।
फलहंतरि अवलोइय मोरो देइ झडप्पं जहिं मज्जारो ।
जहिं रमणीयपएसहिं रमणिउ किण्णरीहिं सहुं चलहारमणिउ ।
सुरयसुक्खु माणहि गेयंतरे हावभावविब्भमेहिं णिरंतरे ।
संचरंत अच्छरयणसारो जहिं सुम्मइ णेउर झंकारो ।
सालत्तयपयपायाउलउ जो सोच्छदो इव पायाउलउ ।

---

(2) 1 b लच्छण, b भारहखेत्तु 2.a सरसुवियट्ठु, b सुरयवियट्ठु, 5.b रिहियदियंतुज्जाणइ विउलइ ।। विविहदियतुज्जाणइं विउलइं, a ॰दियंतु उज्जाणइ, 6.a जहिं, a भमिय॰, a ॰लयाहर, 7.a जहि, b मयघुम्मिराइं, a रइरसवरइ, सुयहिं, b मुयहिं, 8.b बहुपयाइं ।। b घोसइं, 9.b णंदउ॰, for तहि थिउ, 10.a णाइ ।

(3) 1.b उत्तुंगो छित्त॰, 3.b वेसायणु, 4.a थिउ, 6.a पोमराइ॰, a ॰जुत्तो for जुत्तउ 8.a जहिं, 9.b जहिं, b किण्णरेहिं, 10.a सोक्खु, b माणहिं गेयंतरो, a ॰विब्भमहि, b जहिं, 12.a पयउ for पय,

घत्ता— उत्तरसेढिहिं सट्ठि तहिं णयरीउरवण्णउ ।
दाहिणसेढिहिं अत्थि पंचास जि जणपुण्णउ ॥ ३ ॥

(4)

तहिं पंचासहं मज्झि सुरिद्धी णयरि बहुजयंती सुपसिद्धी ।
कामिणि व्व जणणयणपियारी जहिं दीसइ तहिं सहइ जणेरी ।
जा सुरतरुउववणें णं विसालें अइ रेहइ णेत्तें णवणीलें ।
परिहएसारसहंसखालए मेहालए णं किंकिणि मुहलए ।
सियपायारमित्तिकंचुलियए पंचवण्णधयमालए भुलियए ।
उप्परिय ण सोहइ सोहंती कणयकलसउरुह दरिसंती ।
गोउरेण णं रुंदें वयणें हसइ व तोरणमोत्तियरयणें ।
भवणरयणणयणेंहिं णिहालइ अहिणवतरुपल्लवकरवालइ ।
मंदिरसिहरचवकसिहिजूहें सोह देइ णं केससमूहें ।
संचरंत माणिणि पब्भारें चल्लइ णं णेउर झंकारें ।
अइ सोहाजुय किह वण्णिज्जइ जाहि सुराहिव णयरि ण पुज्जइ ।

घत्ता— महिहरपियउच्छंगे पउरभोय गुणवंती ।
वसइ तरट्ठि व कंत रयगदित्ति दीवंती ॥४॥

(5)

तहिं आसि राउ णामें जियारि णयदंडपहावे णिज्जियारि ।
पयडु वि खयरेसु ण खयरणाहु असिरोहरो वि लच्छीसणाहु ।
अपुरंदरो वि विबुहयणइट्ठु परिपालियसज्जणु णिहयदुट्ठु ।
अकुमारु वि जो सत्तीपयासु बधवपरियणभूरि पूरियासु ।
अदिसागअविअणवरयदाणु अदिणेसु विउग्गपयावथाणु ।
तणुकंतिपरज्जिय छणससंकु अणुरायणमिय सामंतचक्कु ।
तरुणो वि विसयसुहरइविरत्तु अइहरिसमाणमणमोहचत्तु ।
समसलिलसमियणियकोवजलणु जिणमुणिपमाणकयपावखलणु ।

---

b जो छंदो, a omits इव, 13 a ०सोढहिं, b सट्ठि, a णयरियउर०
b ०वण्णउं, 14.b जि संपुण्णउ ।

(4) 2.b कामिणी व, a जा णयण०, b सुहइ, 3.a सुरतरु०, 4.b ०हंसवमालए,
8.b भवणरयणवयणेंहिं, a अहिणव०, 12 a पीय०, 13 a तरट्ठी,
b रयणदित्ति ।

घत्ता– पयभरधरणपवीणु   दुव्विज्झयमिच्छत्तमलु ।
रज्जंगसमिद्धु   सो णिउ इंदु व अतुलबलु ।।५।।

(6)

तहो वासवेव णामेण घरिणि   पइवय णावइ परलोयकुहिणि
णारी सुहलक्खणलक्खियंगि   मुहणयणहिं जियचंदणससिकुरंगि ।
तहे अहिमअजोवणु वणु विहाइ   अरुणच्छवि णं अंकुरिउ भाइ ।
अइरत्तपाणिपल्लव चलंतु   वेल्लहल बाहुवल्ली ललंतु ।
कोमलजंघारंभा सहंतु   सियआसियणयणकुसुमइ ललंतु ।
पिहुपीणपओहर फलमहंतु   अलयावलिअलिउलसोह दिंतु ।
रत्ताहरबिंबीहल फुरंतु   सच्छाउ सविब्भउ तिलयवंतु ।
चंदणकप्पूरहिं महमहंतु   खयरवर वि सयवर दिंहि जणंतु ।

घत्ता– तहिं तें खयरणिवेण लक्खण गुणसंजुत्तउ ।
जणिउ पुत्तु मणवेउ संगु अणंगु व वुत्तउ ।। ६ ।।

(7)

सो णंदणु णंदणु सज्जणाहं   णावइ मसिकुव्वउ दुज्जणाहं ।
वट्टइ व मणोरहु बंधवाहं   णं वज्जणिहाणु अबंधवाहं ।
आबालु समग्गसईहे   जो जा उवाउ वेणसईहे ।
सो अवसें परतिय परिहरेइ   परधणु ण कयाइ वि अवहरेइ ।
परजीविउ णियजीविउ गणेइ   हिउ मिउ मउ सच्चु वयणु व भणेइ ।
परिगहे पमाणसंखा करेइ   विणएणप्पाणु अलंकरेइ ।
इय पंचाणुव्वय विणयजुउ   गुणवयसिक्खावयधम्मरउ ।
साहइ विज्जाउ ण वल्लिमउर   णाणाविहपवर–गुणल्लियउ ।

घत्ता– सो णियतायहो गेहिं अत्थसत्थु जाणंतउ ।
माणसवेउ कुमारु हुउ जोव्वण भुणवंतउ ।। ७ ।।

(8)

सहयरखेयरमणणंदणहो   कीलंतहो खगवइणंदणहो ।
साइयसम्मत्तविराइयहो   जिणवयणरमय–अणुराइयहो ।

---

(5) 1.a तहि, 3.a ०सज्जणणिहय०, 4.a Page No. 4th is lost after बंधवपरिय, 10. a. b अतुलबलु ।

(7) 1.b वट्ठइ, 6 a from here page No. 5 continues, 8.a गुणिल्लियउ, a.b सत्थसत्थु, 10. b जोवण० ।

विजयाउरिखयररायजणिउ जो णामि पवणवेउ भणिउ ।
सो खेयरु हुउ तहो मित्तु णिहु जम्महो वि ण तुट्टइ णेहु जिह ।
मिच्छादिट्ठि वि तहो आवडइ अण्णोण्णु ताहं णिउ आवडइ ।
अह णेहु ण एक्कासिउ घडइ अह घडइ खण वि परिचलइ ।
ते विण्णि वि परमणेहिं चडिया णं इंदपडिंद बे वि घडिया ।
ते विण्ण वि सयलकलाकुसला जिणविण्हुपायपंकयभसला ।
ते विण्णि वि मंदरकंदरेहिं कीलंति विविहसरिसरवरेहिं ।

घत्ता– एक्कहिं दिणि माणवेउ दाहिणभरहि भमंतउ ।
वंदणहत्ति करेइ जा जिणपयपणमंतउ ॥ ८ ॥

(9)

चलंतउ वि थक्कु णिएवि विमाणु विचिंतइ खेयरु ताम विमाणु ।
मुणीसरु केवलणाणसमिद्धु सुमित्तु भवंतरणेहणिबद्धु ।
अमित्तु व होज्ज रउद्दसहाउ ण चल्लइ जेण विमाणु णहाउ ।
वियप्पे वि एम अहोमुहु जाम णिरिक्खइ दिट्ठु मुणीसरु ताम ।
णरामरकिण्णर खेयरवंदु तमोहणिसुंभु फुरंतु व चंदु ।
णहंगयणे तु वियारविमुक्क फुरंतअणंतसुहाइं चउक्कु ।
विसट्टु सरोरुह वीढविसण्णु अघाउ अच्छाउ सरोरु पसण्णु ।
सियायवयवारणचामरजुत्तु दिसासु समुग्गय कित्ति महंतु ।
पयाणपयासियणिम्मलधम्मु समाहि विसेसविणासियकम्मु ।
सुरासुरढोइय कुसुमदामु वियाणियछंदु वि मोत्तियदामु ।

घत्ता– तं केवलि पिच्छेवि णहयलउ उवयरियउ ।
ताम भवंतीवेसु पेच्छइ सिरिपरियरियउ ॥ ९ ॥

---

(8) 2.a.b संमत्त०, 3.b ०जणिउं, b भणिउं, 4.b तहु, a मित्त, 5.b ताहं, 6.b omits the line अह . . . घडइ to परिचलइ, 7.b परमणेह, b पडिया for घडिया, 8.b ०भसल, 9.a ०मंदरकंदरेहि, a ०सरवरेहिं, 10.b एक्कहिं, b दाहिणहरहे, 11. b त्ति करेवि, b ०पणवंतउ ।

(') 1.a थक्क, a ताव, 4. a एव अहोमुह जाव, 5.a ०किणर, b किण्णर, 6.a त्तु, a ०विमुक्क, a ०सहाइ चउक्क, 7.b विसट्टु, b ०विढणिसण्णु, b अच्छाहि सरीर, 8.a समुग्गय, 9.a वियाणियकम्मु, 10.a.b ०कोसुमदामु, 11.a खेयरि च in margin before णहयलउ, b अवयरियउ, 12.a ताव, a सिरिपरियउ ।

(10)

जहिं गिरिवर रेहइ णं सायर   सज्झसविद्दुमवहुरयणायर ।
तीरि णीउ णावइ वररमणिउ   कुडिलउ मंथरगइउ सुररमणिउ ।
मोत्तियहारसुत्ति पयडंतिउ   पुलिणणियंबविंबु सोहंतिउ ।
जहिं गोवलहिं गोविमंडलियउ   रासु रमहिं जोव्वणमय ललियउ ।
छित्तइं णाणासाससमिद्धइं   जहिं उववणइं कुसुमफलरिद्धइं ।
वयकारंडहंसपरिपुण्णइं   जहिं सरवरइं भिसिणिदलछण्णइं ।
गोमंडलमंडियसीमंतइं   गामइं बहुधणकंचणवंतइं ।
जहिं गोउरपायाररवण्णइं   णयरइं णायरणरपरिपुण्णइं ।

घत्ता– तहिं उज्जेणि णाम वरणयरि मणोहर दिट्ठ ।
अमराउरि व विहइ जा विवुहयणह मणिट्ठ ॥१०॥

(11)

णाणाकेउपंतिधुवंतिउ   जहिं णहलग्गउ सुरहरपंतिउ ।
सवणसहरि करिकंचणमयधर   जहिं सोहंति णाइं सुरमहिहर ।
गुरुविणयाणुगामि ण य जिणवर   जत्थ भव्व णर णं पवरामर ।
जहिं रइकरणालिंगणकोच्छर   सयल वि तिय णं मणहर अच्छर ।
बहुचंदणभुयंगकयराइय   णं मलयायल अडइ विराइय ।
सरयरणयणायरवेलाइ व   बहु पयसावणघणमालाइ व ।
चउवण्ण सयसुर धणुद्दित्ति व   पंडुर दीसइ तिणयण मुत्ति व ।
सकलसजिणअहिंसेयपवित्ति व   सव्वसुहं करिमुणिवइवित्ति व ।

घत्ता– तहिं उत्तरहे दिसाइ माणसवेउ खण्णउ ।
उववणु अत्थि णिएइ णाणातरुसंछण्णउ ॥११॥

---

(10) 1.a जहिं, b सज्झससविद्दुम०, 2.b वररमणिउं, a मंथरगइसुर०, b सुरमणिउं, 3.a ०णियंबविंब, 4.b omits the line जहिं गोवलहिं . . . ललियउ, 5.b छेत्तइं, a ०समिद्धइ, a उववणइ, a ०रिद्धइ, 6.a ०पुण्णइ जहिं सरवरइ, a ०छण्णइ, 7 a ०सीमंतइ गामइ बहुकणकंचणवंतइ, 8.a ०पायारवण्णइ णयरइ, a ०णरसंपुणइ, 9.b तहिं, b ०वरणयरिं, 10.b अमरावरि, b विवुहयणमणिट्ठ ।

(11) 1.b जहिं, a णहिलग्गउ, 2.b जहिं, 3.b पररमर, 4.b जहिं, b सयलं, b inter. णं and मणहर, 5.b ०भुअंग, a ०कइराइय, b मलयाणिल-भुवणराइय, 7.b ०हुत्ति for ०दित्ति, 8.b सव्वं, b ०मुणिवरवित्ति, 9.b तहिं, b दिसाहे माणसवेउं, 10.a णिएवि, b तरुवरछण्णउ ।

(12)

चहु चुहंति खयरावलिसद्देहिं जं रेहइ मंदहि मायंदेहिं ।
सिंदुवारमंदारहि कुंदहिं चंदणपिचुमंदहि मुचुकुंदहिं ।
ताम्बेहिं तालहिं तालूरहिं सालतमालतालमालूरहिं ।
चंदणधवअक्खहि रुद्दक्खहि फोफलिमाहुलिंगवहु वक्खहि ।
णालिएरजंबीरकविट्ठिहिं पुण्णायहिं णायंजणरिट्ठिहिं ।
लवलिलवंगेलाकंकोल्लहि कप्पूरायरतिलयहि बउलहिं ।
तहिं खगणागणरामरवंदहो वंदणहत्ति करेवि मुणिंदहो ।
सेसाण वि मुणीण पणवेप्पिणु भवियह इच्छाकारु करेप्पिणु ।
गोत्तु णाउ अप्पउ पयडंतउ परमाणंदे णाइं णडंतउ ।
जाणुअसिरु धरणियलि णिविट्ठउ ता पुच्छंतु एक्कु वणि दिट्ठउ ।

घत्ता– इह संसारि मुणिंद केत्तिउ सुह दुह पाणिहिं
सामिय करुणमईहें अक्खहि महु अण्णाणिहें ॥ १२ ॥

(13)

एत्थंतरे अहिणवजलहर सरु वच्छायण्णहि भणइ मुणीसरु ।
को वि पुरिसु कत्थइ गच्छंतउ विज्झाडइहि भिल्लपहे पत्तउ ।
ता समुहितु दिट्ठु तें करिवरु णिज्झरवंतु तुंगु णं गिरिवरु ।
उण्णयकुंभु अण्णुण्णयपच्छउ महियलुलंतदीहरकरपुच्छउ ।
पिच्छेवि मणुअरुउ णिरु रुट्ठउ धावंतेण तेण अइदुट्ठउ ।
करिण करेण ण धिप्पइ जावहिं अडइवहअडु तें दीसइ तावहिं ।
कासहो तं चु तेत्थु अवलंवेवि गयभएण अण्णाणउँ लंबेवि ।
जाम अहोमुहुं किर अवलोयइ ता गुरु अजयरु तेत्थु पलोयइ ।
चउकोणेसु चयारि भुयंगम दीह णाइं तमतमणरयहो गम ।
खणिउ सिया ऽ सियखुहिताकासो पारभिउ णं भवित्तिहि णासो ।

(12) 1.b चुहंत, b ०सद्दहिं, a मायंदेहि, 2.a सिंदुवारिमंदारेहिं कुंदहि, b मचुकुंदहि, 3.b हिंतालहिं तालहि, a तालूरहि, a omits ०ताल० before मालूरहिं, 4.b चंदणधुवअक्खेहिं, रुद्दक्खेहिं, b पुप्फल०, a ०माहुलिंग०, b वहुववखेंहि, 5 णालिएरिजंबीरिकविट्ठहि पुण्णायहि णायंजणरिट्ठिहि, 6.b ०लवंगएल०, a ०तिलयहि वउलहि, 7.a तहि, b खयणाय०, 8.b भवियहं, b करेविणु, 10.b जाणयसिरु, b एक्कु, 11.b inter. सुहु and दुहु, b पाणिहे, 12 a करुणामईए, a अण्णाणिहि ।

एत्तहिं करिणा तं अलहंतें अडतडविडविसमाहउ दंतें ।
करिमुह घाएँ जा तरु पेलिउ ता साहहिं भामरि महु पयलिउ ।

घत्ता– उट्ठिउ महुयरिसद्दु णिसुणेवि उद्धु णिरिक्खइ ।
किमिणं इय चिंतंतु महु गलंतु ता पेक्खइ ॥१३॥

(14)

तो उद्धवयणस्स उद्धउड महुबिंदु पडिउ जिणुत्तम्मि जोगिंदु अइमंदु ।
सोसाउलहिओ ण लोहेण ण उ चलइ पाविट्ठु चिंतेइ अण्णो वि जइ गलइ ।
तो महुयरी नयणसुईहिं विज्झेइ इंदियवसो किं पि दुक्खं ण बुज्झेइ ।
इय एत्तियं वच्छ दुक्खं मणे मुणहिं सोक्खं पि महुबिंदुणा तुल्लु परिगणहि ।
तहिं अडवि जा कहिय तं मुणहि संसारु पुरिसो वि जो जीवो करी मच्चु दुव्वारु ।
भिल्लाण पंथो अहम्मो अडो देहु अजयरु पुणो णरउ तरु कम्मबंधो हु ।
कालस्स तंवो वि आउसु वियप्पेहि सियअसिय दो उंदुरा पक्ख जंपेहि ।
सप्पा चयारि वि कसाया वि णिद्दिट्ठ वाहिउ महुयरीउ जाणेह धम्मिट्ठ ।
एरिसु वियाणेवि जिणधम्मु कीरेइ अइदुत्तरो जेण भवजलहि तीरेइ ।
धम्मेण कुलयर जिणा चक्किणो होंति छंदं पि मयणावयारं पयंपंति ।

घत्ता– वरसोहग्गहो पुंजु गुणलायण्णहो सायरु ।
धम्में सुरणरदेहु होइ णिरोउ कलेवरु ॥१४॥

(15)

धम्मेण रयणंसुजालाही रम्माइं कंचणविणिम्मियइं उत्तुंग हम्माइं ।
धम्मेण हरिरहा जाण जं पाण धम्मेण सियचामरा छत्त णर जाण ।
धम्मेण मणिकडय कुंडिसुत्तकुंडलइं धम्मेण देवंग व छाइ उज्जलइं ।

---

(13) 1.b वच्छायण्णहिं भणइं, 2.a कत्थ वि, b गच्छंतउ हिंडइहें, a भिल्लपहु, 4.b अणुण्णय०, b ०चुसंतु, 5.b मणुयरूउ णिरुद्धट्ठें, b अइदुट्ठें, 6.a जावहिं अडइहिं अडु, a तावहिं, 7.a अप्पाउ, 8.a जाव अहोमुहु, 9.a ०णयरहो, 10.b सियासियआहुतकासो पारंभिउ णरवित्तिहे णासो, 11.b अडतडि०, 12.a ०घायं जा तरु पयलिउ, b भामरिहु पयलिउ, 13.b उट्ठिय ।

(14) 1.a उद्धउवरि, b जिणुत्तम्मि सुत्तंमि जोगिंदु, 2.b पाविट्ठु, 3.b तं for तो, a नयणसुईहिं, 4.a.b मुणहिं, a.b परिगणहिं, 5.b अडइ, b मुणहिं, 6.b अजगरु, 7.a कालस्स, a वियप्पेहिं, 8 a महुरीउ, b जाणेहिं, 9.a तो for जेण, 10.a चक्किणा, 11.a वरसोहगुहो, b गुणलायण्णहं, 12.a कलेयरु ।

धम्मेण संपुण्णछणयंदवयणाउ पप्फुल्लकंदोट्टदलदीहणयणाउ ।
उत्तुंग अइपीणथोर-थणालाउ भंगुरिय सुसिणिद्ध भसलंउलवालाउ ।
दरपक्कबिंबव्व अणजणियलालाउ झसइंधरायस्स णं बाणमालाउ ।
जायंति पुरिसाण बहुणेहवंताउ गेहम्मि महिलाउ गुणविणयजुत्ताउ ।
धम्मेण सव्वाहं पुज्जा णरा होंति धम्में विणा ते वि बयणु वि ण पावंति

घत्ता– अहवा किं बहुएण जं जं सोहणु दीसइ ।
तं तं फलु धम्मस्स जाणहि केत्तिउ सीसइ ॥१५॥

(16)

तो लहेवि अवसरु स खेयरो मुणिणो वे वि सिरसिहरकयकरो ।
भणइ दियपुराणत्थि संदिट्ठउ मज्झ मित्तु अइमिच्छदिट्ठउ ।
जिणवरिंदमग्गाणुजाइउ कह हवेइ सम्मत्तराइउ ।
तं सुणेवि मुणिणा पयंपियं कुसुमबाण देवाण जं पियं ।
तम्मि णेवि परकयपुराणयं पयडिओ ण अ घडमाणयं ।
हेउ ण य सुदिट्ठंतसोहियं जिणमयं पमाणा विरोहियं ।
कम्मबंधसंसारमोक्खयं भासिओ ण वियवरसमक्खयं ।
करहि ता सुमइगुण विलासिणी हवइ छंदु एरिसु विलासिणी ।

घत्ता– इय पभणिउ णिसुणेउ पय णवेवि मुणिणाहहो ।
खेएँ माणसवेउ चल्लिउ सम्मुहु गेहहो ॥१६॥

(17)

जा विमाणे ण खे खेयरो गच्छए ता विमाणत्थु मित्तं सुहं पेच्छए ।
ताम तेणावि सो झत्ति आलोविउ वाउवेएण एंतूण आलोविउ ।
मित्त मुत्तूण मं कत्थ तं अच्छिउ ताय गेहे मया सव्व आउच्छिउ ।
कील सेलें तहा कील वावीजलो वल्लिगेहे सरे वाहियालीयले ।
देव हम्मे वणे लोयणाणंदिरे जोइउ पट्टणे मंदिरे मंदिरे ।

---

(15) 1.b ॰जालाहिं रम्भाइं, b ॰हुम्माइ 2 b हरिकरिनहा पवरणर जाण धम्मेण, b छत्त जं पाण, 3 a ॰कुंडलइ, a उज्जलइ 4.b ॰छणइंद॰, 5.b भंगुरियसुसणिद्ध॰, 6 a झसबेंध ायम्स णं वालमालाउ, 7.a पुरिमस्स, b ॰णेहबंतउ 8 a सव्वाइं, b धम्मं, b पावंति, 10 b जाणहिं, a किं किर for केत्तिउ, b सीसइं ।

(16) 1.a सो for स, 2.b भणइं दियपुराणस्स संठिउ, a ॰दिट्ठउ, 3.b हवेउ सम्मत्तरइउ, 5.b ण अ इय घडमाणयं, 8.a परिसु for एरिसु, 10.a तेयं, a गेहहो ।

जा ण दिट्ठो सि ता एत्थ हं आइउ   ते विउयम्मि मे झिज्जए कायउ ।
जा जियारी सुएणं समालत्तयं   मित्त जं दाहिणं भारहं खेत्तयं ।
अत्थि रम्मं तहिं पावअग्गीवए   भत्तिए वंदमाणो जिणाणं पए ।
पट्टणे पट्टणे जाव गच्छामहं   ताव दिट्ठं मए दिट्ठिसोक्खावहं ।
पाडलीउत्तं णामं पुरं सुंदरं   छंदयं सग्गिणी णाम एयं वरं ।

घत्ता- जहिं चउवेयणिघोसु दियवरविंदा उच्चरिउ ।
छिप्पइ बहुयसएहिं जणकम्मउवयरियक ॥१७॥

(18)

जहिं गंगायडि मुंडियमुंडा   धरियकमंडलभिसियतिदंडा ।
हरि हरि हरि उच्चरणसमत्था   ण्हाहिणि च्च बहु ण्हायपसत्था ।
वंभमालउवइट्ठपहाणा   वायजप्पवइतंडवियाणा ।
विण्हुपुराणु भयव वक्खाणहिं   अण्णविहाणु के वि दिय जाणहिं ।
वुज्जहिं के वि तित्थ वइसेसिउ   मीमंसा दियगुरु उवएसिउ ।
साहिय के वि के वि गहजोइसु   के वि भणंति कविलगोयरपसु ।
पुज्जिय गरिहिवत्त आह वणिय   दक्खिणग्गिहुय णाणाहवणिय ।
अग्गिपरिग्गह दीसहिं होत्तिय   छडवण्णिय णाणाविह सोत्तिय ।
जत्थ के वि दिय छक्कम्मरय   अण्णे वंभयारि तियविरय ।
अक्खमालदालणणियमिय मण   कय कमलासण णं कमलासण ।

घत्ता- तहिं जा मित्त णिएमि इय णाणाविह चोज्जइं ।
उप्पणाइं सुहाइं तामरुवेय मणोज्जइं ॥१८॥

---

(17) 1.a मेत्तं, 2.a ताव, b अवलोइउ, b आलाइउ, 3.a मेत्तु, b मत्तु, b ताय मेहो मए, 4.a बेल्लिगेहे, 5.a मंदेरे मंदिरे, 8.b तहिं, 9.b जामि गच्छामि हं । ताम, 10.b वरं for पुरं, 11.b दियवरिंद उच्चारहिं, 12.a बहुयसएहिं, b उवयारिउ ।

(18) 1.a जहिं, 2.b omits one हरि, b ण्हायसमत्था, 3.a ०उवइट्ठपहाण, 4.a भणहिं for भयव, 5.a मीसंसं, 6.b संहिय, b कपिलमउहं य पसु, 7.b गरिहुपत्त, b दक्खिणग्गिहुअ, 8.b दीसहिं, 9.a छकम्मरय, b छक्कम्मरया, 10.b जं before अक्खमाल०, a अक्ख-मालढालणि०, b कयकमलासण, 11 a तहिं, b चोज्जइं, 12.b उप्पणाइं सुहाइं ।

(19)

साहियवत्तो पहसियवत्तो ।
खगवइपुत्तो सुहिणाउत्तो ।
माणसवेया माणसवेया ।
किमहो जुज्जइ तुह मणि छज्जइ ।
एवं काउं मइं विणु जाउं ।
इट्ठं वोज्जं जइ वि मणोज्जं ।
हो हो पुज्जइ किं बोलिज्जइ ।
तो माणवेउ पभणइ छेउ ।
पउरायरियं बहुअच्छरियं ।
तहिं पेच्छंतो तित्ति ण पत्तो ।
विम्हयभरिउ पइ वीसरिउ ।
जं हो मित्ता गुणगणजुत्ता ।
तं अवराहं खमसु वराहं ।
तो हसिऊणं माणवेएणं ।
भणिओ मित्तो तं पर धुत्तो ।
माया णेहिय अप्पाणेहिय ।
उज्झिय तावं ता खमभावं ।
गच्छइ वित्तं मित्त णिरुत्तं ।
जइ गच्छामो तं पिच्छामो ।
छंदु सकलउ पायाउलउ ।

घत्ता-ता माणवेउ भणेइ जा हु गमणु आसंघहि ।
फुडु कुसुमउरहो णेमि जइ महु वयणु ण लंघहि ॥१९॥

(20)

तो भणिउ तेण माणयजवेण किं जंपिएण बहुणा अणेण ।
जं भणहि जेम त करमि तेम णेहें वसियरणु ण होइ केम ।
जइ ण करमि वयणाइ मित्त ता तुह सरीरु गुरु पायछित्तु ।
ता खयररायतणएण भणिउ कुसुमउरु जाय जं जेम भणिउ ।

---

(19) 2.a खगवयपुत्ता 3.b omits one माणमवेया but writes the sign × for repetition of the same word, 5.b काउ, a मइ, 10 a त for तहिं 11 b विभयभरिउ पइं. 13.a पराहु, 16.a अप्पा णेहं.हिय 21 a तो for ता, 22.a फुड, b कुसुमउरहो ।

तं तुह दरिसमि पच्चूसयालि वसिऊण अज्ज मंदिरि विसालि ।
सो तहि विण्णि वि गुणगणमहंत मणवेयगेहिं सह सत्तवत्त ।
दिव्वहिं आहारहिं बहुरसेहिं ण तरुआहारहि बहुरसेहिं ।
विहि पाविय पोसिय सुहगणाइं लइयइ तंबोलविलेवणाइं ।

घत्ता– आलिंगिवि हरिसेण पंडियविज्जवियाणा ।
रयणिहि सहयरसुत्त हरिवल अणुहरमाणा ॥२०॥

इयधम्म परिक्खाए चउवगाहि ठियाए चित्ताए ।
बुहहरिसेणकयाए पढमो संधी परिछेओ समत्तो । ॥१॥

(20) 1.b भणिउं, 2.b भणहि, 3.b न्हरमि, a जयणाइ, b तो, 4.b भणिउं, a जे जेव भणिउ, 5.a तह, 6.a ते, b सत्तियत्त, 7.a दिव्वहि आहारहि बहुरसेहि, 8.a सुहिमणाइ, b लइयइं, a ०विलेवणाइ, 10.b adds ॥छ॥ after ॥२०॥ 11.a चउवग्गाहिट्ठियाए बुह०, a बुहहरिसेणे, 12.a परिसं, a ॥छ॥१॥ श्लोक १७८ ॥ छ ॥

२. बीओ संधि

(1)

अवरहिं दिणि दिणमणि उग्गमणे ते तिण्णि वि कुसुमउरहो चलिया ।
किंकिणिरणंत जाणहिं खयर गय णायरणरमउरहो ॥ छ ॥
तहिं पुरबाहिरि अवसरहिं जाम मणहरु उववणु पेच्छंति ताम ।
हिंतालतालताली ललंतु कंकेल्लिवेल्लिपल्लव चलंतु ।
अहिणवहरियंदण लय संहंतु कप्पूरसुरहितरु महमहंतु ।
तहिं थाय वि विज्जाबलवलाइं णाणारयणावलि उज्जलाइं ।
णह जाणइ जाणइ संवरे वि कमणीयय रइरूवइ करेवि ।
मणवेउ भणइ भाणयउ करेहि मउणेण मित्त मइ अणुसरेहि ।
तिह कयउ तेय संचलिय वे वि विज्जाकयखडलक्कहइ लेवि ।
मणिकइयमउडकुंडल हरहिं पुरवरपइसंतह णरवराहँ ।
जंपंति सविब्भम के वि एम एरिस विक्कट्ठतणवहहिं केम ।
लक्खिज्जइ जणियसुमुद्धदेह परमत्थु अहव किं कीलएह ।

घत्ता– अवर भणहि जेम मणिमउडहर णरविक्कहि तणकट्ठहि ।
तहो तणिय तत्ति ण वि परिहरइ जो सो पावइ कट्ठइ ॥१॥

(2)

इय मुणेवि परतत्ति ण किज्जइ कज्जरंभु फल हि जाणिज्जइ ।
एत्थंतरें पुरवरणारीयणु बोल्लइ मयणाण लुभावियमणु ।
हले हले कामएउ हरएवें जणु अंपइ दड्ढ कोवें
णवर मार विहि रूवइ आयउ णं तो पीडइ कह महु कायउ ।
क वि भासइ बवंसि सुकुमारहु एयहु दासिहु वेउ कुमारहु ।
आलावेण कयत्थ हवेसमि पयपक्खालणकंखु लहेसमि ।
का वि भणइ हले जइ विक्कइ तणु पुच्छि पयच्छमि मोल्लु जइ वि ।

---

(1) 1. b omits चलिया, 3.a तहिं, a अवयरहिं, a मणहर, 5.b महुमहंतु, 6.a तहिं, b थाए, a ०बलाइं, a उज्जलाइं, 7.b जाणइं जाणइं, b कमणियइं रइरूवइं, 8.a करेहिं, b मइं अणुसरेहिं, 9.b ०कयखडं, 10 a णरवराहे कुडलवराहं, 11.b सविब्भम, b कट्ठ, 12.b लक्खिज्जहिं, 13.b मउडधर णरविक्कहिं तणं कट्ठइं, 14.a सत्ति, b णं वि, b कट्ठइं ।

जीविएण सहि किं अकियत्थें जहिं थणफंसु ण एयहु अत्थें ।
जंपइ अवर जासु सिरिकट्ठइं तासु जि अंगइ मज्झु मणिट्ठइ ।
भणु हले कीलउ सो महु जोव्वणे अण्णहो मुय थलेज्जउ सवयणे ।

घत्ता– अवर भणइं हलि अण्णभवे भइ तउ चरगु ण चिण्णउ ।
तणकट्ठमोहु पुच्छंतियहिं कुमरिहिं वसणु ण दिण्णउ ॥२॥

(3)

अइरूवेण सुजोव्वणसहिएँ किं वण्णमि सोहग्गें रहिएँ ।
जहिं अंतरगुणु फरहु ण सहयरु आउलिहुल्लहिं रमइ ण महुयरु ।
अण्ण भणइ सलोणु अइसुहव दीसहि वे वि णाइँ ले माहव ।
आलि आलि एहु उप्परि वट्टइ जहु दंसणे रइसलिलु पयट्टइ ।
पियविरहेण हियवउ फुट्टइ तल्लोवेल्लिसरीरहो वट्टइ ।
सच्चउ लौयाहाणु परिद्धउ खोडससे व गाडउ रुद्धउ ।
अह जंपरणिमित्तु सइं किज्जइ कम्मु अ भुरतु केम तं खिज्जइ ।
इय वयणाइँ णिसुणंत समासए वंभसाल जा थिय पुव्वासए ।
तेत्थु गंपि तणकट्ठ मुएप्पिणु घंटाजुयभेरी पाएप्पिणु ।
कणयवीले मणवेउ बइट्ठउ इंदु व पेच्छय लोएँ दिट्ठउ ।
तो दियवर णिसुणिय भेरीरव णाणाहिमाणजलणसिहिभइरव ।

घत्ता– वायं अहमहमिय करमि एम सव्वं जंपंता ।
कणयासणसिहराखढु जहिं खेयरु तहिं संपत्ता ॥ ३ ॥

---

(2) 1.b कज्जाइंमु फलहिं, 2.b लताबियमणु, 3.b हररूवें, 4.b णवरि, a माइ for मार, b omits कह, 5.b वंइसि, b एयहं, a कुमारहुं, 6.a गणेसमि for लहेंसमि, 7.b भणइं, a मोल्ल, 8.a जहि, b एयहो, 9.a कट्ठइ, a मणिट्ठइ, 10.b कीलउं, b अण्णइं, 11.a अवरे पभविउं, a अवरे भवे for अण्णभवे, 12.a मोल्ल, b कुमरेहिं, b दिण्णउं ।

(3) 1.b वण्णें, 2.a जहि, a आमलिहुल्लहि, b भमई for रमइ, 3.b अण्णइं सालेण, 4.b writes number 2 for the repetition of the word आलि 5.b ण after ०विरहेण, 6.b खंजेसएव ण वाडउ for खोडससे व, 7.a ०णिमित्त सइ, 8.a वयणें, 10.b णिविट्ठउ for बइट्ठउ, b लेयहिं, 11.b णिसुणेवि, a ०जलणसिय भइरव 12.a एव सव्व, 13.b जहि, a खेयर ।

(4)

पुणु मणवेयरूउ पिक्खेविणु   अवरोप्परु पभणहिं वि हसेविणु ।
अम्हहं भत्तिभावें रंजियमणु   सइ पच्चक्खी हुउ णारायणु ।
जय जय विण्हु विण्हु परमेसर   लोयणिमित्तु णिहयअसुरेसर ।
पुडविहिं एम भणंत लुडंता   सब्भावें गीयाउ पढंता ।
अवरहिं भणिय काइं किर जंपहु   विण्हु चउब्भुउ किं ण वियप्पहु ।
भणहिं केवि एहु वंभु पहाणउ   अवर भणेहिं वंभु चउवयणउ ।
इय रूवेण हवे सइ संकरु   अह तियच्छु सो लोया संकरु ।
इंदु वि सो सहसक्खु पसिद्धउ   किं ससरीरु अह वि मयरद्धउ ।
अण्ण भणहिं किमणेय वियप्पें   एहु णउ जाणिज्जइ विणु जप्पें ।
तो दियपवरें एक्कें वुत्तउ   सरहु णिय आगमणु णिरुत्तउ ।

घत्ता– किं तुम्हइं कवणु वाउ करहु भेरीघंटावायणु ।
वायं अजियं तेहिंमि कयउ किं कणयासणि रोहणु ॥४॥

(5)

चत्तारि वेय छद्दंसणाइं   इह पुरवरि रंजियबुहयणाइं ।
सयलु वि जगु जाणइ हम्मे हम्मे   णिच्चुच्छव विरइय विविहधम्मे ।
तुम्हइं पुणु किं वायहु कुणेहु   किं किं अउव्वु अवरु वि मुणेहु ।
जियसत्तुसुएण तो भणियं   णाउ विण अण्णवायहु मुणियं ।
परजाणहु वाउ पहुंजणउं   जो पयडउ रुक्ख विहुंजगउं ।
वेउ वि हरि णइं धावंतयहं   दंसणु वि मुणहुं णियकयंतहं ।
इह दुण्णि वि दुग्गयत्तणवजं   गिण्हेविणु लक्कडभारमिणं ।
आइय गुरु तूर णिएवि मए   वायउ णउ आयए वायं मए ।
एव दुहो केवडउ भणेवि   णिसुणियउ सद्दु घंटहो हणेवि ।
कोउहलेण कणयासणयं   आरूढउ मि भा भूसणयं ।

घत्ता– जइ मइ हे भासंणसंहिएण तुम्हइ भावइ दुण्णउं ।
तो एत्थु ण अच्छामि खणु वि हउ इय भणेवि उत्तिण्णउं ॥५॥

---

(4) 1.b भगवरूउ, b वईणहिं पियसेविणु, 2.b सइं, 3.a सिहय for णिहय, 4.a एव, a मसावे for सब्भावें, 5.a अवरहि, b किण्ण, 6.b भणहिं, b पहाणउं 6.b भणहिं वंभु वि चउ०, 7.b लोया भंकरु 8.a इंदु सो वि, a सरीरउ, a omits वि, 9.a अण for अण्ण, b किमणेक, b ण for णउ, 10.b वियमउरें, 11.b repeats घत्ता- 11.b के for किं, 12.b कणयासण (अमितगति धर्म० 3.66)

(6)

तओ सुटठु वट्ठेण भट्टेण पुट्ठं ण एवंविह चेट्ठियं सिट्ठ इट्ठं ।
तुमि किं पयंडेण रुक्खेण भुत्तो अलंकारदप्पेण किं सपउत्तो ।
किमुम्मीणतारुण्णगव्वेण भग्गो किमेएण रूवेण उम्मग्गलग्गो ।
समत्थत्थवेईण भट्टाण ठाणे करे भोरिसद्देण हुं तं णियाणे ।
अलं ता इमेणालजालेण धुत्ता णियट्ठाण मज्झम्मि मायाण जुत्ता ।
पमोत्तूण डंभं पसाडेह कज्जं किमुप्पाइयं अज्ज लोयाण चोज्जं ।
तउ भासियं तेहिं रोडेहिं वुत्तं ण जुत्तं पि रंजेवि अट्ठाणचित्तं ।
ण केणावि दोसेण हुं भंतचित्तो खडं लक्कडं विक्किउं एत्थ पत्तो ।
पुणोत्तं दिएणेरिसा कत्थ दिट्ठा तणं विक्किणंता पुर तं पइट्ठा ।
ण-याणंति एयं भुयंगप्पयाउ फुडं छंदु एसो भुयंगुप्पयाउ ।

घत्ता— अहवा जइ जाणहि तुहुं मि भणु कडयमउडकेउरहरा ।
भारहे पुराणि रामायणि वि णीय कम्मकर कहिमि णरा ॥६॥

(7)

तो वाहइ मयतिमिरदिवायरु तं णिसुणेविणु पभणइ खेयरु ।
जाणमि परपेसणरयणरवर किंतु भएण ण पयडमि दियवर ।
सहसा विरइयकज्जाण णिहिं कोवजलणजलियहिं अहिमाणहिं ।
सोलह मुट्ठिहिं तणउ कहाणउ मा मह्नु किज्जउ दुक्खणिहाणउ ।
दियवरु भणइ तं पि जिह जाणहि सोलह मुट्ठि कहाणउ पभणहि ।
ता माणवेउ भणइ सोक्खालउ अत्थि गामु मलए संगालउ ।
मधव णामु तहिं णिवसइ गिहवइ तासु पुत्तु णामं महुयरगइ ।

---

(5) 1.b छइंसणाइं, b पुरे वरे, b ०वहयणाइं, 2.a णिच्चुच्छवि, b हम्मे हम्मे for विविहधम्मे, 3.b कं वायं, a अपुव्वु, 4.a णियसत्तदुएण, b तउ, a णाउ मिण, b अण्णवायहु, 5.b परजाणह, a विहंजणउ, 6.a विहरिणइ धावंतयाहं, a मुणहु णियकंतयाहं, 8.a णियेवि, a वाइउ, 9.b केवट्टउ a घंटहे, 10.b भू भासण्यं, 11.a हेमारुणे सिरिट्ठिए b हेमासणसंठिएण तुम्हइं, b दुण्णउ, 12.b उत्तिण्णउं ।

(6) 1.b वुट्ठं, a रक्खेण, 3.b ०गव्वाण, a किएण for किमेएण, 4.a करे हरिसंजेण वं हुं णयाणे, 5.a धुत्ती, a जुत्तो, 6.b पमोत्तुण, a पसाहेहि, 7.a तेण रोडेण पुत्तं, b यट्ठाण, 8.b भव्वचित्तो, b खडं, a विक्किउ, 10.b भुअंग०, b भुयंगप्पायाउ, 11.b जाणहिं, a तुहु, b ०केउरधर, 12.b भर ।

गउ अहीरवेसु पिउरोसें   भणइ रासिउ पेच्छवि रोसें ।
भाणिउ तेण पियणयणहिं दिट्ठउ   जं केण वि ण कयाए वि सिट्ठउ ।
मिरियहं रासिउ जिह महुमंडणि   तिह इह पुणु भणमाण व बलि आणि ।

घत्ता– तो कणयंडायणकरणु तहिं भणइ एहु धुत्तसि ।
अम्हाण देहु उवहसइ कणु बंधहु किं बहु वुत्तें ॥७॥

(8)

छेत्तकुडुंबिएण ता वुत्तउ किज्जइ   वडदोसरूवाण णिउत्तउ ।
इय मुणेवि विण्णत्तउ किज्जइ   उवहासाणुरुउ विरइज्जइ ।
दो दो पोल्लिउ मुट्ठिउ एयहो   सिरि दिज्जंतु अवियअविविवेयहो ।
तं विरइउ सावज्जें करणें   चितइ गहुवइसुउ सिरहणएँ ।
सच्चए वोल्लिए जहिं एही गइ   असउ मारि तहिं णउ महुयरगइ ।
इय चितंतु स एसहो गच्छइ   जा ता मिरियह रासिउ पेच्छइ ।
तहिं मि तेण पुणु एहउ भासिउ   धणयाणं एव हुउ रासिउ ।
मइ अहिरवेसि सइ दिट्ठउ   तहिं मि कण्णु पभणइ ॰ इट्ठउ ।
उसहकारणि धणव ण लब्भहिं   तहिं कहि किर रासिउ उवलब्भहिं ।
तेत्थु सो वि दंडतें पाविउ   णियमुहकयदुक्खें संताविउ ।

घत्ता– अवर विवहपुरि सा अत्थि जइ तुम्ह मज्झि तउ बीहमि ।
सच्चं चिय कहिउ ण सद्दहइ तेण वियंद ण साहमि ॥८॥

---

(7) 1.b पभणइं, 2.b परपेसयर, 3.a मिहि and in margin अज्ञानी, a ॰अलियहिं अहिमाणहिं, 4.b तणउ, 5.b भणइं, b जाणहिं, b कहाणउं पभणहिं 6.b तो, 7.b णामि, a तहिं, a बणहवइ, a महुयरकवइ, 8.b पडरोसे, b बणवहे, 9.b ॰णयणहिं, a काया वि, a ण before सिट्ठउ, 10.a मिरियहु, a भणमाणं, a omits व, 11.b भणइं, 12.b बंधहु बंधहु वुत्तें ।

(8) 1.a छेत्तकुडुंबिएण, b वंडुदोसरूवण, 2.a उवहासुणुरुहु, 4.a विरइउ सावज्जें करणे, b सिरिवहरणें, 5.b मारि णउ तहिं महुयरगइं, 6.b मिरियहं, 7.a तहिं वि, 8.b मइं, b सइं b पभणइं, 9.a लब्भहिं तहिं, a उवलब्भइ, 10.a adds वि before सो, a दंडु तें, 11.a जइं, a ता for तउ 12.a सद्दहहिं, b वियंद ।

१. रयण मूढ कथा

(9)

तो दिएण भासिउ सइं इच्छए मूलकहाणु कहेज्जसु पच्छए ।
कहि ता कोऊहलहो णिहाणउ जिह वित्तउ दहपुरिस कहाणउ ।
तं णिसुणेवि भणइ खगणंदणु द्रसण किरण विप्फुरियणहंगणु ।
इत्थु दुट्ठ मूढउ दुग्गाहिउ णिसवाहिणु णु चूवविरोहिउ ।
खीरागरुचंदण मुक्खाविय इय अण्णाण दह वि संभाविय ।
एयहं मज्झे पढमु साहिज्जइ रेवादाक्खिणयडि णिसुणिज्जइ ।
सामंतवरु तेत्थु बहुधणगी णिवसइ गामकूडु बहुधण्णी ।
पढम घरिणि जिह णामें सुंदरि तिह रूवें सीले ण वि सुंदरि ।
अवर तासु मणहरतणुअंगी पीवरथण णामेण कुरंगी ।
पढम हीणजोव्वण जाणेविणु इयर तरट्टि जुवाण गणेविणु ।
रत्तु विरत्तु कुरंगिहि कंतहो ण गणइ किं पि विढंतरि जं तिहि ।
दुच्चरियह भरियह खल खुद्दइ णिब्भच्छिउ णियकंतु कुरंगइ ।
हंसावराइ पवंचु करेविणु भणिय तेण णियअद्धु लएविणु ।

घत्ता— अवरहि घरि णिय पुत्तें सहिया अच्छहि णिए सुहभायणि ।
तं तिह करेवि थिय सुक्खमई चिंतेविणु णियकम्मु मणि ॥९॥

(10)

गहवइ इयरए सहु अच्छंतउ इट्ठकाम भोयइ भुंजंतउ ।
दियहि जंति ण वियाणइ जइयहु राए वि जमअत्तकय तइयहु ।
तेण वि सो वि हक्कारिउ जामहिं भणियं पुरिल्लएण थिय तामहि ।
णिच्छल्लियचवयगोरंगिए खंदावारहो जामि कुरंगिए ।
वणियसरिउ मयणसरजालें आवेसामि अहरेण विकालें ।
तं णिसुणेविणु णयणजलोल्लिय कवडवयणेहि कुरंगि पवोल्लिय ।
पइं विणु मज्झु विरहम्मि पलिप्पइ तणु मसणसरहि तिलु तिलु कप्पइ ।
वरि तुह अग्गिइ मरमि ण अच्छमि दीहु वि तुय दुक्खु ण समिच्छमि ।

(9 1.a सइ, a मूलकहाण, 2, a adds प after आ, b कहाणउ for णिहाणउ 3.b भणइं, 5.b ए for इय, b दह दह मि, 7.b सामंतउरू, b धणी णिवसइ, 8.b जिम for जिह, 9.b वर for मणहर, 10.a मज्जेविणु for जाणेविणु, a गणेप्पिणु, 11.b गणइं, 12.b दुच्चरियइं भरियइं खलखुद्दए णिब्भच्छइ, b कुरंगइं, 13.a हंसावइ, a पियअद्धु, 14.b अवरहि, b सहियं अच्छहि, a पिय, 15.a सुक्खमइं ।

घत्ता– तो पयणणवेप्पिणु पिउ भणइ हउं मि विओयहु बीहमि ।
परमविरालु जिउ पइ हरइ त तुह गमणु ण ईहमि ॥१०॥

(11)

इय भणेवि महल्लउ णामएण   बहुबुद्धि णामु तहिं मुक्कु तेण ।
अप्पणु मुक्कु खंदावारु जाम   आरेहिं समेउ कुरंगि ताम ।
कीलइ अणुदिणु अणुरत्त चित्त   ण मुणमि णियकंतहो तणिय वत्त ।
भोयणतंबोलविलेवणाइं   तहो देइ णिच्च बहु णिवसणाइं ।
इय कइ वि दिवस किर जहिं जाम   कणसेसु वि ण वि उव्वरिय ताम ।
णिद्धण जाणेविणु आरएहिं   तप्पिय आगमणासंकिएहिं ।
मुक्किय झड त्ति झाडें वि केम   परिपक्क पवि णिय बोरि जेम ।
णियपिय–आगमणु मुणंतियाए   किउ पयसियमिय तिय वेसु ताए ।
एत्तहो संपत्तपुरिल्लएण   णियपुरिसु पुरउ पट्ठविउ तेण ।
विण्णविय णवेवि कुरंगि तेण   वद्धाविय भाए पियागमेण ।

घत्ता– तं णिसुणेविणु मंदिरु सुंदरहि जाएवि धुल्लिए वुच्चइ ।
पिउ आयउ अक्किरंधि तुरिउ केम कुलक्कमु मुच्चइ ॥११॥

(12)

तो सुंदरि पभणइ महु मंदिरु   तुह कंतहो णउ णयणाणंदिरु ।
सो कहु एत्थ माइ भुंजेसइ   रद्धरसोइ विहल जाएसइ ।
ता कुरंगि पभणइ महु वयणें   भुंजइ उक्कोइय मणमयणें ।
इय आयण्णेवि अकुडिलभावए   कय बहुरसरसोइ मयभावए ।
बहुसण्णी वि ता ताव सुच्छपउ   लहुलहुहिहं धरिणिहे घरु आयउ ।

(10) 1.a महुवई इयरएं, b.सहुं, b ०कामजोयइं, 2.b वियहु अंत, a omits वि, b भाणइ, 3.b omits वि after सो, a जावहिं, a पुरिल्लएहिं पिय तावहि, 5.b आएसमि, b वकालें, 6.b कवडसणेहु, 7.b मयणसरहिं, 8.b अणइ, a दुक्ख, 9.b ०पणवेविणु, b भणइं, a हुउ मि, b विउयहुं 10.b णिउ पइं, b तें for तं ।

(11) 1.a तहिं, 2.b अप्पुणु, a जाव आरेहिं, a ताव, 4.a ०विलेवणाइ, b वर for बहु, a णिवसणाइ, 5.a जाव कणसेस, b ण, 3 उव्वरिउं, a हाय, 6.b आरएहिं, 7.b मुक्की, a केव, a पवि, a जेव, 8.a णियंतियाए किउ, b inter. पिय and तिय, 10.b विष्ण for विण्ण, a वद्धविय, 12.b पहु for पिउ, a केंव कुलक्कमुच्चइ ।

चउरियाए जा तित्थु णिविट्ठउ कुडिलए कुडिलिए दिट्ठए दिट्ठउ ।
भणिउ धुत्तणेहेण सवत्तिहे जहि रसोइ भुज्जइ अवरा सवत्तिहे ।
कारविय तहि भवण पियारइ गच्छहि मंदिरि सुंदरि केरए ।

घत्ता– एत्थंतरि सुंदरि पेसिएण धुत्तें ए वि भणिज्जइ ।
सिद्धरसोइ वररससहिय एहि ताय भुंजिज्जइ ॥१२॥

(13)

कुरंगि णिविडपेम्मगुण चडियउ सुणइ ण वयणु कट्ठेणं चडियउ ।
अवलणयणु पियवयणु विभावइ ण वियाणइ अच्छंतु विभावइ ।
चंचल लोयण णाइ कुरंगी तो रूसेविणु भणइ कुरंगी ।
किं किर पयडियाए बहुमायए आहि आहि हक्कारिउ मायए ।
इह किं वाइहीसि अप्पाणउ तहि तुह वल्लहाए किउ पाणउ ।
किं इह भुत्तेण वि विणु णेहें भुत्तु वि ण वि जीरइ विणु णेहें ।
तो तहे वयणें कज्जु वियारिवि गउ सुंदरि घरि माणु वियारिवि ।
आसण करयहत्थ ता सुंदरि थिय पडिविल्लि पयासिय सुंदरि ।
दिण्ण वालकंचोलसुवासिय णिम्मलरयणं सुकइ सुवासिय ।
अकुडिलमणहि ण मच्छरु वड्ढिउ णाहहो छडरसभोयणु वड्ढिउ ।

घत्ता– पर सच्चहो जरियहो विरहियहो अण्णु कया वि णं सच्चइ ।
अहियथरु पयासई उण्हजरु तेणोसासु पमुच्चइ ॥१३॥

(14)

पणयकोवकुडिलीकय दिट्ठी चिंतइ किं कुरंगि मह रुट्ठी ।
अहवा अधावारिण रिदहो सुरयसोक्खु पणयंगणविरहो ।

---

(12) 1.b पमणइं, 2.b माइं, 3.b पभणइं, b उक्केविय, 5.b घण वि ताम, a घरणिहे 6.a कुडिलए for कुडिलिए, b omits दिट्ठए, 7.b भणिउं, b om जहि... सवत्तिहे, 8.b भयणपियारए, 9.b एम for एवि, 10.b सिद्धी, a ॰सहिया ।

(13) 1.a.b कुरंगि after णिविड, b पेम्मयण, b सुणइं, 2.a ॰णयण, 3.a रूसेविण्णु, 4.a बहुमाए, 5.b अप्पाणउं, a कउ for किउ, 6.a भुत्त वि, 7.a कज्ज, b omits घरि, 8.b करयहत्थ, b पडिवल्लि, पयासिवि, 9.b कच्चोल, a सुकइ सुहासिय, 10.a मच्छरु, 11.a सच्चउ, 12.a अहियथरु पियासए उण्ह जुरु, b तेणासासु विमुच्चइ ।

जं माणिउ तं केणवि अविखउ   इय कारणु मइको महो लक्खिउ ।
तो पालत्थ भणहि पुच्छिज्जइ   मुंचह सव्वु काइ चिंतिज्जइ ।
ताम पुरिल्लएण बोल्लिज्जइ   भोयणु एक्कु कुरंगिए भज्जइ ।
आणिज्जउ वयणु तहो गेहहो   ता सुंदरि गय णाहें गेहहो ।
ताए भणिउ कुरंगि तुह हययहो   अण्णु ण वज्जइ गेहें छययहो ।
वंजणु देहि किं पि जं तुह पइ   भुंजइ ताम कुरंगी जंपइ ।
वंजणु णत्थि अक्कि ता सायय   पुणरवि पियवयणेण समायय ।
भणिउ कुरंगि काइ बोल्लिज्जइ   देहि किं पि जं कइ उप्पज्जइ ।

घत्ता— णेहंधु मुणेवि कुरंगियए अद्धवयणसंमीसिउ ।
जरकसरच्छाणु अच्चुण्हु तहो हत्ति पडिच्छि वि पेसियउ ॥१४॥

(15)

तो तं ताए णेवि तहो दिण्णउ   भुंजतें हि भणिउ पडिवाण्णिउ ।
रत्तु ण-याणइ किं पि हियाहिउ   कज्जाकज्जु ण मोहें मोहिउ ।
गम्मागम्मु ण हेयाहेयउ   भक्खाभक्खु ण हेयाहेयउ ।
अहवा छणु काइ अक्खिज्जइ   रत्तें पुणु विट्ठु वि भक्खिज्जइ ।
इय सहरिसचित्तें भुंजेविणु   पुच्छिउ सो सुयहि वि हसेविणु ।
किं महु णेहु ण करइ कुरंगी   पइ ण भणिय काइ वि वलियंगी ।
किं महु दोसु ण पयडिउ केण वि   भणु भणु सयणु मिउभउ वियाणेवि ।
भणिउ तेण भो णिसुणहि महवइ   छाया इव दुग्गेज्झ महिलामइ ।
सप्पगइ व ससहावें कुडिला   णवघणविज्जुलया इव चवला ।
जन्तकीला इव अमुणियचारा   किं पयहो मुक्तणहो सयरा ।

---

(14) 3.b भणिउं, b कारणु मइ, 4.b ता, b भणहि, a मुंचह सव्वु b काइं, 5.a ताव, b कुरंगेए, 6.a वंजण, 7.b भणिउ, b अणु णं इच्छइ, 8.a वंजण, a तात, .b अक्को, 10.b भणिउं, b काइं, a पेसिउ बोल्लिज्जइ, 11.a णेहिंधु, b सामीसिउ, 12.a जरकसरच्छाणुं अच्चुण्हु किं तहो, a पेसिउ ।

(15) 1.b omits हि, b भणिउ, a पडिवण्णउं, 2.a रत्तु णाय ण याणेइ, b रत्तु ण याणइ, a कज्जाकज्ज, a णेहें for मोहें, b मोहिउं, 4.b काइं, b inter. विट्ठु and वि, 5.b सहरिसें, 6.b पई, b काइं वि, 7.b वियाणेवि वि, 8.a वाहि, a for छाया इव is written for explanation, 9.a °विज्जुलया, 11.b कुवहु पत्थ, 12.b जाइहि सई ।

घत्ता– अहवा किं बहुणा वित्थरेण तुज्झ अत्थु तुह कंतए ।
आरहिं सहु सयणु वि विलसियउ मयणुम्माईयचित्तए ।।१५।।

(16)

२. छिंधु मूढ कथा

इय णिसुणेवि अदिण्ण पडुत्तरु गउ बहुधण्णी लहु बहुयहि घरु ।
ताए पडीवउ सो वि कडक्खिउ मइ रक्खणु णिय भुक्कु णिकिट्ठउ ।
पेक्खहिं अहह तणु वि णहमंडिउ धाहावंतिहि सीलु ण खंडिउ ।
तहि कहेवि दुव्वयणेहि ताडिउ तेण घरहो सुबुद्धी णिद्धाडिउ ।
दियवरिंद इय जाणहि रत्तं णिसुणहि दुट्ठुं साहिज्जंतं ।
इह सोरट्ठि धण्णधणरिद्धा कोडि णयरि गहवइ सुपसिद्धा ।
होंता बंधु बंकु णामंकिय अवरोप्परु णियदासह सकिय ।
बंकु मिलेवि णामभोत्तारहो पीड करेइ जणहो जोत्तारहो ।
खंधबंधउप्पाडणचित्तहो असमत्थहो अणुदिणु झिज्जंतहो ।
जाव असज्झवाहि तहो बंकहो संति अहव कहि पावकलंकहो ।
तो सो बंकदास णामंकें पुत्तें णियकुलगयणससंके ।
भणिउ ताय संसारि असारए को वि ण कासु वि दुहगरुयारए ।
मुय मणए सहु अत्थु ण गच्छइ सयणु मसाणु जाव अणुगच्छइ ।
धम्माधम्मु णवर अणुलग्गउ गच्छइ जीवहो सुहदुहसंगउ ।
इय जाणेवि ताय दाणुल्लउ चिंतिज्जइ सुपत्ते अइभल्लउ ।
इट्ठदेउ णियमणि झाइज्जइ सुहगइगमणु जेण पाविज्जइ ।

घत्ता– तं णिसुणेवि बंकें भासियउ बंकदास आयण्णहि ।
कालाणुरुउ मइ चिंतियउ पुत्तय जइ तुहु मण्णहि ।।१६।।

---

(16) 1.b धण्णी, 2.a rubbed with white ink half line & other half with black ink and in the top margine the portion is written by some other person, मइ रक्खइ पियमुणु निकिट्ठउ, 3.a पेक्खहि, 4.a दुव्वयणें, b णिसारीउ, 5.a इह for इय, b जाणहिं, b णिसुणहि, 6.b सोरट्ठदेसे धणरिद्धा, 7.a होता, b बंधवंक, b णियदासहि, 8.a णहो for जणहो, 9.b खंदकंध, 10.b कहि, 12.b भणिउं 13.b मणुए सहुं, b जाम, 15.b चितज्जइ 16.b इट्ठु, b भविज्जइ for झाइज्जइ, a जेम for जेण 17.b आयणहि, 18.b मइं, a चिंतियउ, a जय for जइ, b तुहुं मण्णहि ।

(17)

तो पुत्तें तं वयणु सुणेविणु जंपिउ णियपिउपय णवेप्पिणु ।
ताय देहि आएसु म वंकमि सारमि ण पावहि व हाकमि ।
ता वंकेण पुत्तु मयलंदहो जीवंतेण पुत्त मई वंदहो ।
णउ अवयारु करेविणु सक्किउ एवहि णिमहिय उल्लए तक्किउ ।
मुउ मइं पच्छिमरयणिहि णेविणु मेल्लहि कंबलीए वड्ढेविणु ।
वइसारेवि तहो खेतब्भंतरे णियमहिसीउ मल्लि वालंतरे ।
सो पुणु मइ गोवालु गणेविणु दंडें हणइ झत्ति आवेविणु ।
तुहुं पुणु एविणु रोसें कंपहि मारिउ मज्झु ताउ इय जंपहि ।
जें णिवइ एतहो अत्थु लइज्जइ महु सग्गत्तहो वि हि उप्पज्जइ ।
इय बोल्लंतु वि पाणहि मुक्कउ वुत्तु पवंचु ता सुपुत्तें कउ ।

घत्ता– बंधु वि विडंबाडिउ राउलेण वंकु णरयदुहु पत्तउ ।
अवरु वि णरु वरसतावयरु कवणु ण तत्तउ दुक्खें ॥१७॥

(18)

३. मनो मूढ कथा

पुणरवि खगवइणंदणु भासइ मूढ कहाणु णिसुणे दियसीसइ ।
इह कंठोट्ठणयहे गुणरिद्धउ भूयमइ त्ति विप्पु सुपसिद्धउ ।
बालत्तणहो सत्थअब्भासें थिउ पंचास वरिस सुहवासें ।
वुड्ढु वि विप्पहि गणि पभणेविणु जण्ण णाम दिय सुय मग्गेविणु ।
परिणाविउ पुणु मंदिरु सिद्धउ दिण्णु तासु धणकणयसमिद्धउ ।
तहिं जण्णाए सहिउ जा अच्छइ वियडिमहं सुहसत्थु पयच्छइ ।
ता विज्जत्थिउ एक्कु समायउ जण्णुवट्टु णामें विक्खायउ ।
भणिउ तेण सो पणविय भावें सिक्खमि विज्जउ तुम्ह पसाएं ।
एम भणंतु तेण सो इच्छिउ णावइ णियमयमविरहु पडिच्छिउ ।
जण्णाए जण्णवट्टु मणे भाविउ सुहणिहाणु वम्में वाविउ ।

घत्ता– सो विहिमि सुपेसणु आ पढइ वेउ ताम भूयमइहे ।
पट्ठविउ लेहु महुरादियहि जण्णविहाणा णिउणमइहो ॥१८॥

---

(17) 1.a पुणु for पय, 2.b पाणेहि, 3.a णिलंदहो, a मइं, 5.a कम्मलीए, 6.b तहो खेतब्भंतरे, b पसरंतरे, 7.a मणेविण्णु, b हणइं, 8.b युणु, a मज्झ, 9 a हितहो, 10.a वुत्त, 11.b बंध for बंधु, 12.a तत्तउ ।

(18) 2.a कंठोट्ठयरे, b धणरिद्धउ, a विज्जfor विप्पु, 4.a बेव वि विप्पहि, a पभणेप्पिणु, a णाम, 5.b दिण्णउं तहो धणु॰, 6.a तहि, 7.a जण्ण-वट्टवह णामें, 8.b पाएं for भावें, a पसायं, 10.a जण्णवट्टु ।

(19)

अण्णोण्णु णिएवि अवलवणु   मकुराविएहिं पुंडरिउ जणु ।
आढविउ वेस्तु वउ विप्पुआव   इहकालि णिरंकुसु अण्ण जाव ।
बहुएँ णिवडंती रमणभाव   अहिणवजोव्वण घण जणिय ताव ।
कलियक्खर जंपइ बहुयमइं   पीहइ अणंगु ण वि काइं पइं ।
अह तियहिं को ण परिहउ करइ   पइँ गोहु मणोविणु परिहरइ ।
णिहलेविणु तो बहुएण वुत्तु   गोरीगंगा रइसोक्खरत्तु ।
जें मयणें हउ देउ वि णिगुत्तु   तहो किं अम्हारिसु मणुयमेत्तु ।
इय वयणहिं मवणाणलु पलित्तु   ते तत्तलोहु जिम मिलियचित्तु ।
णेहेण णिरंतर णिलिय मत्त   दियहेहिं वेवि एक्कंतु पत्त ।
इय तहु रइसुहरंजियमणाहँ   चउमास णिगयदोहि वि जणाहँ ।

घत्ता— णवरेक्क दिवसि अण्णाए भणिउ अण्णबहुय किं दुम्मणु ।
णिसुणेवि तेण पडिजंपियउ णियडु अम्ह भट्टागमणु ॥१९॥

(20)

वट्टइ अण्णे तेण जें झिज्जमि   णं तिलु तिलु करवत्तें छिज्जमि ।
मरमि विडंबिउ णइ इह अच्छमि   अहव जामि तुह वयणु ण पिच्छमि ।
तो सा भणइ तुज्झु साहिज्जइ   ललिए विरहदुक्खु जें छिज्जइ ।
रयणिहिं मडयजुयलु आणेविणु   महु तुह सयणोवरि मेल्लेविणु ।
भवणब्भंतरे सिहि जालेविणु   पय उत्तरदिस वव झंपेविणु ।
सणिउ सणिउ सिहिमज्झि डहेविणु   णयह जउ खरपवणु लहेविणु ।
तं णिएवि हा हा पभणंतउ   सजलकुंभु दियसत्थु पहुत्तउ ।

घत्ता— जंपइ जणु एयहिं महिवलए अण्णबहुय अण्णामरणे ।
गुरुविणयसहत्तण उभिय कहा गय अइरेण अकारणे ॥२०॥

---

(19) 1.a अण्णोण्ण, a.b पुंडरिउ जणु, 2.b आढविउ णिण्णु गउ तित्थ जाम, b णिरंकुस जण्ण ताम, 3.a बहुयं, b जोव्वण, 4.a बहुयमइ, a काइ पइ, 5.a कोण्ण, a करेइ, a परिहरेइ, 6.b गंगाणई, 8.b इहवायहिं for इय वयणहिं, b जिह for जिम, b ०चित्त, 9.b सिढिय for णिलिय, a दियहिहिं वेवि वेयंतु पुत्तु, 10.b णिगयदोहिं, a जणाहु, 11.b अण्णए भणिउ ।

(21)

के वि भणंति हुयास हुयासणं　　पइधय दडढ काई पई भीसणं ?
हा हा अण्णवड्डुय किं ण पलित्त　　अलियजलणजालहिं किं पजलिउ ।
एव भणंतहिं ग्रिहिं उव्हाविवि　　विहिमि अमिलियदेहु पुंजाविवि ।
अवरहिं वासरि महुरापुरवइ　　भूयमइहे पेसिउ किंपरहिं वइ ।
अहउ सो वि समाणवि जायं　　सोयाउर सोयइ पियजायं ।
हा हे अण्णे मईं मेल्लेवि　　कहिं गयणेहणि बप्पु वि मेल्लेवि ।
हा किं करमि कत्थ फिर गच्छमि　　मुद्धे मुद्धे तुह मुहु जहिं पेच्छमि ।
कहिं तुह ते उत्तुंगपओहर　　जिय मयच्छि विद्दुमरयणाहर ।
णिअच्छिय तामालकोइलगिर　　कहिं ते पेच्छमि चिहुर सुणमि सर ।
कहिं अहिणवअसोयपल्लवकर　　कहिं कमकमलजणियभमरायर ।
किं मई तुज्झ मरणे जीवंतें　　कंतविउय सोयसंततें ।
हा हा अण्णवड्डुय कुलणंदण　　मइ कयंतु साहारहिं णंदण ।

घत्ता– इय सो विलवंतउ पुणु वि पुणु वंभयारि बहुयं भणिउ ।
भो भो भूयमइ अयाणमइ णारिदेहु णारिदेहु किं बहु भणिउ ॥२१॥

(22)

जा लालाविट्टलु णारिमुहु　　संभरहि किं ण ता विच्छु तुहु ।
जा सरिहे पउहर सुंदरिहिं　　ता किण्णि महामुजलि सुरकरिहे ।
जा सलउ पियणयणाहरहो　　ता किण्ण होहि वरहरिहरहो ।
जा चिंतहिं पिहुरसारसरा　　सुइमहुर किण्ण ता सुइहे सरा ।

---

(20) 1.a घेण तेण तं for जण्णे तेण जें 2.b मरमि for मरमि, b अहवा, 3.a जवें छक्केइ, 4.b चल्लेविणु, 5.a सिहिजलेविणु, a णिहुय, 6.b भणिउं ताम, b तेम for तेम्व, 7.b सणिउं सणिउं सिहिमज्झु, b बद, 8.b ता for तं, 9.a बहुयजण जणामरणं, 10.b कहू for कहा ।

(21) 1.a काइ पइ, b भीसण्ण, 2.b •जालेलिहिं पयलिउ, 3.b पुंजावेवि, 4.b inter. पेसिउ and किंपरहिं, 5.b आयउ, b समाणिवि, b सोअइ, 6.b हा हा, a मइ, a कहिं b बंधुमोल्लेवि, 7.b inter. तुह and मुह, a कहिं, 8.a कहिं, a •रयणाहर, 9.a तामल•, a कहिं. b inter चिहुर and सुणमि. 10.a णियिय• 11.a मइ, b तुज्झु, b कंतिविउय, 12.a अण्णवडुय, b कयंतु, 13.b वहुए, b भणिउं ।

जा मायहि रमणिहे करचरणा   ता किं ण विप्पच्छकम्मगुणा ।
इय चित्तमूढ परिहरहि तुहुं   मा पावहि णरए रउद्दु दुहु ।
जो सयलदेवगुरु परमपउ   तहो पायजुयलु सउ सोयहरु ।
तं णिसुणेवि भासइ मूयमई   दिता अम्हहु वि मवअणमई ।
परसुरहु विमुसहु पियविरहु   किं मणुयहु होइ ण कामगहु ।
उरदेहलच्छि गउरिहरहं   मूढत्तणु किं तहो हरिहरहं ।

घत्ता– इय भणेवि भरेवि दो तुवइ अट्ठिया ण जा चलियउ ।
गंगहे ता एक्कहे गामि तहिं सो जण्णवट्टु तहो मिलियउ ॥२२॥

(23)

तेण णवेवि भणिउं पाविट्ठहो   धम्महि मज्झु उज्झायणि किट्ठहो ।
पुच्छिउ दिउ को तुहु सो पभणइ   जण्णवट्टु किं गुरु मइ ण मुणइ ।
तं णिसुणेवि भट्टु हसेविणु   सव्व वि बहुमयणु दूसेविणु ।
भणइ हयास वंचिअप्पाणउं   किं बक्करु पहिं पहिं सम्माणउ ।
गुरुचरणारविंदफुल्लंधउ   अच्छइ तु वयम्मि सो इह मुउ ।
इय भणेवि जा अग्गइ गच्छइ   जण्ण वि विहिवसेण ता पेच्छइ ।
ताए भएण पवेविरगत्तए   पयणिवडियए अजोइयवत्तए ।
पइ दो हियाहि धम्महि सा भासिउ   अच्छइ सामि अत्थु अविणासिउ ।
पुच्छिय का तुहुं ता सा जंपिय   जाणहि जण्ण किं ण मइ णिय पिय ।
तो पभणइ कोवें कंपंतउ   भट्टु गामु कहिं हउं संपत्तउ ।
जइ विरयउ जगु वि सुहसंगहे   तो वि णेमि जण्णं इय गंगहे ।
एम भणेवि झत्ति णीसरिउ   गयविवेउ मूढत्तें तरियउ ।

घत्ता– णिसुणेवि किं पि कासु वि वयणु अणिउ वि सच्चउ मण्णइ ।
सच्चु वि सइ दिट्ठु ण सद्दहइ सो वि मूढ इहु भण्णइ ॥२३॥

---

(22) 1.a जो for जा, b किं, a.b तुहुं, 2.b परहि, a किम्हु, 4.b जा चित्तहि कंतहि विहुरसरा, 5.b करचरण, b किम्बप्पच्छकम्मगुणा, 6.a सूद for मूढ, a तुहु, a णरये, 7.b भूयमई, 8.a हेंता, b अम्हहं मि पराहंमइ, 9.b देवाणं विद्धसहु पियविरहु, 10.b गोरीहरहं, a हरिहरहु, 11.b भणेवि दो तुंवयइ, 12.a तहो for तहिं, b जण्णवट्टु सो मिलियउ, a जण्णवट्टु ।

(24)

४. व्युद्ग्राही मूढ कथा

पुणरवि खग णिवणंदणु पभणइ एक्कग्गाहि कह दिहमणु णिसुणइ ।
णं दुक्खारिहे हुवउ रायउ ता सुपुत्तु आयउ अयाणउ ।
कडयमउडकुंडलकेऊरहे दिणि दिणि वंछिय जहो दिहि पूरहि ।
दइ जाम सो मंति पघोसइ णिव तुह सुउ वसु चाएँ णासइ ।
मा दुक्कइ पभणइ णउ भुजइ जइ तहो जउ आहू णउ दिज्जइ ।
ताम लोहविरइउ तहो मंतें अप्पिउ भूसणु वयकुलसंतें ।
भणिउ कुमार कुलक्कयभूसण मा कासु वि दिज्जसु कुलभूसण ।
एयहुँ चाहुँ रज्जु पणासइ लोहाहरणे इय जो भासइ ।
तहो पहारु इय दंडें मुच्चइ एम करेमि कुमारें वुच्चइ ।
अह तं लोहमयं जो पभणइ तं दंड सि सिरि दंडें पहणइ ।

घत्ता- जो गहिउ अजुत्तु वि णउ मुयइ वुहयु झाइउ रूसइ ।
हरिसेण वि वज्जिउ गुणरहिउ सो दुग्गाहिउ वुच्चइ ॥२४॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए ।
वुहहरिसेणकयाए बीउ संधी परिसमत्तो ॥छ॥ श्लोक ॥३३०॥छ॥

* * *

(23) 1.a भणिउ, a खमहो, b खमहिं, 2 b पुच्छइ, a परमणहि, b पभणइं, a मुणहि, b मुणइ 3.a सव्व विहुसवयणु, 4 b भणइ, a बंधि अप्पाणउ, b पहिएहि समाणउ, a संमाणउ, 5.a b वयमि, b मुउ for मउ, 8.b पइ for सो 9 a तुहु, b जाणहिं, b मइ, 10.b पभणइ, a कहि इउ 11.a विषयक, b सुहि संगहो, a ण्णोमि, b मइ 12.a एव, a ययनिवेय, 13.b मण्णइं, 14.a सच्चु, b भण्णइं ।

(24) 1.b पुणरवि, a खगवइ, b पभणइं, 2.b दुक्खारिहिं, b रायउं, a जायंध, b आयायउं, 3.b केऊरहं, b पूरइ, 4.b ता for सो b, 5.b पभणइ, a अहारवउ, 6.a ताव, 7.a कुमार, a कुलक्कयभूसणु, b कुला गयभूसण, a कुलभूसणु, 8.a एयहु चार्ये, b लोहाहरणइ इह, 9.6 करेपि कुमारे मुच्चइ, 10.b पभणइं, 11.a वायउ, 12.b सीसइ for वुच्चइ, a after ॥छ॥28॥, 13.a omits चित्ताए, 14.a omits बीउ, a परिसेउ for संधी, b परिच्छेउ समत्तो ॥छ॥ संधि ॥2॥छ॥

३. तइअ संधि

५-६. पित्तदूसित मूढ तथा आम्र मूढ कथा

(1)

आयण्णहो पुणु अवरु वि भणमि   पित्तदोसु णिक्किट्ठउ ।
विवरीयभाव संजणणयरु   गुणदूसणु जिह दिट्ठउ ॥छ॥
पित्तजरेण को वि णरु जरियउ   णवर कुसलु विज्जहिं उवयरियउ ।
सक्करखयपयपाणु पियंतउ   अइ महुरु वि कडयउ भासंतउ ।
माणसदुक्खें अइ आवण्णउ   पभणइ णिवु काइं महु दिण्णउ ।
जिह सो तिह अवरु वि अण्णाणिउ   जुत्तु अजुत्तु भणइ अहिमाणिउ ।
इय भासिउ पित्तिलाहाणउ   णिसुणहि एवहिं चूयकहाणउ ।
एत्थंग विसए चंपापुरवरु   णिवसेहुव णामें तहिं णरवरु ।
तासु सबवाहिहरु हियत्तें   अंपयइ तुरंगहिं व मित्तें ।
पेसिउ तेण भणिउ किं किज्जइ   एक्कु केम फिर सइं भक्खिज्जइ ।
तो तें तं वणवालहो अप्पिउ   करि अइरेण रुक्खु इय जंपिउ ।
णिउ पणवेवि कयंजलि हत्थें   पुणु पभणेउ पसाउ परमत्थें ।

घत्ता– अह तं रुक्खाउ वेउ कुसलु लेविणु सो वणवालु गउ ।
तें वरिसें तइयए अम्बतरु वलकलगुंदिहिं सहिउ कउ ॥१॥

(2)

ता णहम्मि पविय को वि   जाइ जाम सप्पु लेवि ।
ता विसस्स बिंदु तम्मि   पत्ति पत्तु अंबयम्मि ।
तेण पक्कु अंबु एक्कु   मूसले मसेवि पक्कु ।

(1) 1.b आयण्णहुं, b पित्तहो दोसु, b णिकिट्ठउ, 2.a संजणणपर, b जिह, 3.b पित्तजरेण, a विज्जहिं, 4.a ०पाण b कडुयउ तासंतउ, 5.b माणसदुक्खें, अइआवण्णउं पभणइं, a णिवु, b णिवु, b दिण्णउ, 6.b भणइं, 7.b पित्तिल्लाहाणउं णिसुणहि एवहिं चूयकहाणउं, 8.a adds वसइ before तहिं for तहिं, 10.b भणिउं, a एक्कु a सइ, 11.b inter. तें & तं, a अप्पउ, a करिइरेण, 12.b पभणिउं, 13.a केम for वेउ 14.a तइए, b फलवलगुंछइं ।

तं लएवि कवडवालु पत्तु जत्थ सामिसालु ।
अप्पियं करेवि तस्स तें पुणो कुमारयस्स ।
दिण्णु णिविसवप्पएण भक्खियं कुमारएण ।
अम्बयस्स मूलु छिण्णु चंदयस्स अग्गि दिण्णु ।
ताम बुत्तु वाहिएण अम्ह काइं जीविएण ।
भक्खिऊण अम्बयाइं देहिणं मुएहु काइं ।
एम ओल्लिऊण जाम अम्बयाइं खाहि ताम ।
णट्ठु ताहं वाहिया हु छुदओ समाणिओ हु ।

घत्ता– सयलाण वि रोयणासु मुणिउ पुणु महिवालें बुत्तउ ।
जं दिण्ण कुमारहि चूयहलु त मइं कयउ अणुत्तउ ॥२॥

(3)

अह दिण्णु काइं किउ चूयणासु कुमरायहो किं विम्भउ हुयासु ।
कम्माणुसारि बुद्धिहि पयासु हा हा अविवेइउ हउं हयासु ।
हा हा कुमार पच्चक्ख मार हा हा णंदण गुणरयणसार ।
हा हा कुलगयण मियंकसुरत हा हा हे सुय सुम विणयवंत ।
कुडु त्रिससिहिवसु त अंधु एक्कु अह कि अयालि पल्लिऊण चक्कु ।
पडि सवणसुद्धि विरइसण जाम णिउ को वि किं वि णमयाउ ण ताम ।
इय विलविऊण अंधु सुयासु मा करहु डाहु विसमुच्छियासु ।
इय भणिउ आसि जं तेणसिस्थु अज्ज वि चलिदु णं हुयइ एत्थु ।
इय पच्छायावाणलपलित्तु उज्जइ अवह वि अविवेयवंतु ।
अवियारिय इय आणेवि किं पि किज्जइ ण कज्जु तिणस्सिसु वं पि ।
किं पुणु भवणमिल पसिद्ध जाम किज्जंति धम्ममोक्खत्थकाम ।
बुद्धिहे फलु पयडु वियारु भणिउ विणु तेण णक वि पसुसरिसु भणिउ ।

घत्ता– जो बुद्धु विहवे विणु कज्जु ण वि णिउणमइए परिभावइ ।
सो णाम भिल्लु परितुट्ठमणु अंधु सलोयणु णावइ ॥३॥

---

(2) 2.b स for ता, a has written इकक अंबए हुलम्मि, 4.a तें for तं b अेत्थु, 5.a रावण (in margin) for तें पुणो, 6.b दिण्णु, 7.a सो for मुख, b मुओ, 8.b दिण्णु, 9.a ताव, b वाहिएहिं, a कार, b जीविएहिं, 10.a अम्बयाइ, a काइ, 11.a एव, a जाव, b खाहि, a तम्व, 12.a ताइ वाहु वाहिओ, 13.b मुणिउं, b इत्तउ, 14.b जं दिण्णु, a मइ, b कय ।

७. खीरमूढ कथा

(4)

पुणरवि पभणइ सो मइसायरु खीरकहाणु णिसुणि वियसायरु ।
को वि वणीसरु णामें साहउ जलजाणेण तरेविणु सायरु ।
पज्जलंतइ णाणामणिदीवहो णालिएर फुल्लहो गउ दीवहो ।
दुद्धदहियघयभोयणणंदिणि णिय तहिं सरिसु एक्क तें णंदिणि ।
दहिहंडिए भिल्लाहिउ तोमरु दिट्ठु करग्गधरियधणु तोमरु ।
मिट्ठाउ त्ति समप्पिउ गोरसु भणिउ चिलाएं भुंजेवि गोरसु ।
अमयाहारु सेट्ठि कहिं लद्धउ जहिं मइँ अइसयरसु उवलद्धउ ।
तं णिसुणेवि वणीसरु भासिउ महु कुलदेवि पयच्छइ भासिउ ।

घत्ता– तो तोमरु पभणइ सेट्ठि महु णियकुलदेवि पयच्छइ ।
तुहु देमि परोहु णुपुरु हउं रयणवत्थु जं इच्छइ ॥४॥

(5)

तो वणियए पच्चुत्तरु दिज्जइ णियकुलदेवयदेहु ण जुज्जइ ।
जइ वि अजुत्तु तो वि आसंघमि तुम्ह वयणु किर किं हउ लंघमि ।
एम भणेवि धेणु तहो अप्पेवि जाणु भरेविणु रयणहं अप्पेवि ।
लहु छोहारदीउ गउ वणियरु एत्तहे मज्झण्णए सो तोमरु ।
सुरहि सुरहि कुसुमहिं उम्मालेवि पणवेप्पिणु णियवयणहिं लालिवि ।
पुरउ थवेविणु कंचणभायणु भणइ देवि तं देहि रसायणु ।
जइ वि ताए तं वयणु पडिच्छिउ तो वि ण दिण्णु तासु हियइच्छिउ ।
गोवि जइ वि विणए णो लक्खिय देइ दुद्धु किं कासु वि मग्गिय ।
तो तोमरु पभणइ मइँ लक्खिय एसा इट्ठविओएँ दुक्खिय ।

(3) 1.a काइ, b भूयणासु, a दिण्णुउ, 2.a हुउ, 3.a गुणणियरसार, 5.b ०वसि, a अंमु for अंबु, b अयालिऊ थक्कु, 6.a जाव, a ताव, 7.b सुआसु, 8.b भणिउं, b वहइ for हवइ, a.b पच्छत्तावाणल०, a उज्झेवि, 10.a कुज्ज, 11.b भुवणयल, a किजंति मोक्खु धम्मत्थकाम, 12.b भणिउं, b गणिउं, 14.a परितुट्ठु ।

(4) 1.a पुणुरवि, a खीरकहा णिसुणहे, 2.b वाणीसरु, 3.b जीवहो for दीवहो, 4.b णिय for णय, a तहिं, b सरिस, b तं for तें, 6.b मिट्ठाउच्छ समप्पिय चिलायं, 7.a कहिं, a जहिं मइ, 8.b वणीसर, 10.a हउ रयणावत्थु ।

दिव्वहार ण देइ भणंतहँ   सुमरइ बणिवर गुणइँ महंतहँ ।

घत्ता— ता अच्छउ अज्ज ण मण्णियइ णियपरियणु आणत्तउ ।
परयम्मेसरि परमरसु अम्हहँ देइ णिरुत्तउ ॥५॥

(6)

णवर अवसरे तहो मुद्धहो   मणिय संबातंबु वि दुद्धहो ।
देइ ण जाव ताव णिद्धाडिय   कंडदंडमणघायहिं तडिय ।
जो सइँ मणइ ण पुच्छइ णाणी   णासइ वत्थु वि सो अण्णाणी ।
मुद्धे सुवण्णु वसइ विणु भत्तिए   उवलब्भइ ण णवर विणु जुत्तिए ।
इय मुणेवि सयलु वि पुच्छिज्जइ   अलियवुद्धाहिं माणु ण रइज्जइ ।
पुच्छंतहो अण्णाणु पणासइ   हेयाहेयहँ णाणु पयासइ ।
णाणे णरु सुहज्झाणपरायणु   झाणें सग्गमोक्खु सुहभायणु ।
जो अयाणु अहिमाणे भज्जइ   सो संसारसमुद्दि णिमज्जइ ।

घत्ता— अह तोमरु भिल्लु अयाणगुणु वत्थु मुयइ तं चोज्जं ण वि ।
अच्छरिउ महंतउ एउ पुणु जुत्तु वि वज्जइ जं गुणि वि ॥६॥

(7)

८. अगुरु मूढकथा

जिणचरणारविंदरयमहुयरु   अवरु कहाणउ भासइ खेयरु ।
अत्थि एत्थु दिय बम्हाणमंडलु   तहिं गयरहु णिउ णं अहंडलु ।
एक्कहिं दिणि किर कीलए गच्छइ   दूर आणु जावहि तो पेच्छइ ।
एक्कु जिणिय तुरंगुअच्मड णरु   पुच्छइ तो णियमंति णरेसरु ।

---

(5) 1.b वणिए, 2.b कि हउ व लंघमि, 3.a भणेमि, b रयणिहि, 4.b छेहारदीउ, 5.b सुरहिं कुसुमहिं ओमालेवि, a कुसुमहि, a णियवयणहि, 6.a पवेप्पिणु, b भणइं, 7.a परिच्छिउ, a हियपच्छिउ, b हियइच्छिउ, 8.b गाविं, .b पभणइं, a मइ, a इट्ठविओयं, 10.a भणंतहो, a गुणहु अणुसहु, 11.b मण्णियइं, 12.a अम्हइ ।

(6) 1.a दुद्धहो for मुद्धहो, b मणिय तंबु वि, 2.b जाम ताम णिद्धाडिय, b घणघाएँ, a ताडिया, 3.a सइ, b अण्णाणी, 4.b वस्तु, b भंतिए, b जित्तिए for जुत्तिए, 5.b माणु णउ जुज्जइ, 6.b हेयाहेयहु, 7.a णर, 8.a संसारे समुद्दे णज्जइ, 10.b जं पुणु ।

कासु पुत्तु भिच्चु वि किं पच्चइ जो महु कज्जि तिणु व तणु मण्णइ ।
तं णिसुणेवि मंति तहो वुच्चइ हरिसेहरणंदणु हलि वुच्चइ ।
बारह वरिस जाम गुणकित्तणु तुम्हहँ देव करइ भिच्चत्तणु ।
तो एत्थंतरे राएँ वुत्तउ हा अमच्च पइं कयउ अजुत्तउ ।
चिरसेवयजणु जं ण वि अक्खिउ तं पइँ णीइसत्थु ण उ सिक्खिउ ।
जो ण मुणेइ मंतित्तणु सो कह चितइ पहुहि पहुत्तणु ।

घत्ता– सत्तंगु रज्जु तहो पंचविहु मंतु मंति जो जाणइ ।
चउ विज्जउ भिच्च गुणागुण वि पहुपसाय सो माणइ ॥७॥

(8)

स एवं चवंतो परिंदो णियंतो ।
तओ तुट्ठएणं हलियस्स तेणं ।
सया पंच रण्णा सगामाण दिण्णा ।
णिओ तेण उत्तो सुहीबंधुपुत्तो ।
ण सो अत्थि जो मे पलोएमि गामे ।
पुणुत्तं णिवेणं अस रे अणेण ।
जया हुंति गामा तया अत्थकामा ।
जणा आणयारा भया सेण्णसारा ।
हया वाउवेया भडा चंडतेया ।
रहा चारुचक्का छया छत्तढक्का ।
सुरूवा सुमेहा पिया पीणणेहा ।
सुपुत्ता सुमित्ता सुबंधू वि भत्ता ।
अत्थं तेण वालं धणं सव्वमूलं ।
धणे सोक्खभाई जणा पुत्तभाई ।
विआई सुआई बुहाणंदआई ।
णिवत्थाय काई णिरूवी सुरूवी ।
अवीरो वि वीरो अधीरो वि धीरो ।
अकण्णो वि कण्णो गुणी होइ मण्णो ।
अलोयाण पुण्णो सया सो सपुण्णो

(7) 1.a अवुर for अवरु, b कहाणउं, 2.a णियउ, 3.b एक्कहिं, b जाम ता पेक्खइ, 4.b तुरंग, 5.a कहो for किं, b मण्णइं, a तणु व तिणु, b मण्णइं, 7.a वरिसइं जाव, a तुम्हहु, 8.a राएं, a पइ, 9.b ०सेवयह, 10.a कहिं, 11.a सत्तंगु रज्ज, b तहिं, b मंति मंतु जो जाणइं, 12.b भिच्चु, b माणेइं ।

जया धम्मराई इमी सोमराई ।

घत्ता– जो पुणु संपयकारणु धम्मु ण करइ अयाणउ ।
सो धम्मक्खउ अहवा हवइ घर पसुएण समाणउ ॥८॥

(9)

इय जाणिवि गिण्हहि णाम तुहुँ चंहुरहि मए तुहु लच्छि सुहुँ ।
ता हलिणा जोइउ रायमुहु जइ तुट्ठु देउ तो देउ महु ।
कोइलतमालच्छवि छित्तडउ विण्णविउ देव मइ एत्तडउ ।
णिउ मंतिहि वयणु णिएवि चवइ पुण्णे विणु लच्छि ण संभवइ ।
एयहे दरिसहि तुहु अगरुवणु जीवइ कट्ठइ विक्कंतु भणु ।
णिववयणु तेण परिभावियउ तहो अगरुक्खवणु दावियउ ।
पिच्छिविणु त तरुवरगहणु चिंतवइ हलि उज्झिज्जंतमणु ।
वावइ ण देइ किर जो णिवइ सो पवरगाम महु अल्लवइ ।
गउ सव्वु कयावि ण संभवइ जणरजणाए णरवइ लवइ ।
अवरहि दिणि खंडेवि सयलु वणु जालेविणु कोइव ववियं पुणु ।

घत्ता– मंतें वणदहणु णिसुणेवि हलि पुच्छिउ का किय वणहो किय ।
तें भणिउ दट्ठु छिण्णेवि मइँ पुणु पच्छा कोद्दव ववियं ॥ ९ ॥

(10)

ता पभणइ मंति दड्ढु व रिउ जइ अत्थि कट्ठु आणहि तुरिउ ।
तें आणिउ एक्कहत्थपमिउ सयमेव जलणु जहि उवसमिउ ।
ता मंते पभणिउ विक्किणेवि जं लहइ दव्वुं तं लइ गणेवि ।

---

(8) 3.b सुगामणि दिणा, 5.a पजोइहु गामे, 6.a पुण्णं, b अण्णं तं णिवेण्णं, 7.a अत्थिकामा, 8.a जणा याणुयारा, 13.a अण्ण तेज वाल, 14.a omits जणा पुत्तभाई, 16.b अवरो विरुवि, 19.b वुणो for पुण्णो, a सुपुण्णो, 20.a इमी, 21.a adds हुवि वि, before धम्मु, b अयाणउं, 22.a धम्मक्खउ, b पसवेण समाणउं ।

(9) 1.b गेण्हहि, a सुहु, b मएं लउ, b सुहु, 2.b जोइउ, b ता for ता, 3.b मइं, 4.a चवई, a संभवई, 5.a एयहु, a अगुरुवणु, b अगरुवणु, b जीवइ कट्ठइं, 6 b अगरुक्ख०, 7.a उज्झिज्जंतु०, 8.b inter. किर & जो, a णिवई, a अल्लवई, 9.a संभवइ, a लवई, 10 b अवरहिं दिण खंडिव, b कइव, 11.b मंति, a सुणेवि, b पुच्छिय, 12 a सई पुणु ।

विक्कंतइ पंच दिणार तेण पाविय जा ता चिंतिउ मणेण ।
करमेत्तहो एत्तिउ मोल्लु जेत्थु णीसेण वणहो को मुणइ तेत्थु ।
मइ पावें खंडिउ काइ वणु खंडिउ जइ तो किं वड्ढ पुणु ।
इय पच्छुत्तावाणलजलियउ अप्पापउ सोयइ सा हलिउ ।
अवरु वि जो अत्थिउ कयकिलेसु लद्धहो वि ण याणइ गुणविसेसु ।

घत्ता– सो अमुणियसारासारगइ हलिउ जेम दुक्खहो मिलइ ।
अहवा पुण्णविरहियहो माणुसहो करयलाउ रयणु वि गलइ ॥१०॥

(11)

९. चंदनत्यागी कथा

अग्गिसेहरउ पुणु खेयरउ ।
तहो बंभणहो कहु चंदणहो ।
वसणेइ सुहा णिसुणेहि बुहा ।
पयसुहयरिहे महुराउरिहे ।
उवसंतमणो णिउ संतमणो ।
तहो गाढयरो हुउ पित्तजरो ।
ण समेइ जरो हुय दुक्खभरो ।
कुलमंति तओ कयमंत जओ ।
पुरि पडहसरं कारवइ अरं ।
णिव दुक्खयरं जो हरइ जरं ।
तहो गामसयं आहरण जुयं ।
जच्छइ णिवरो ता वणियवरो ।
जइतीरु गओ दिट्ठउ रजओ ।
धोवंतु जहि चंमण वि तहि ।
गोसीरिसयं मिलियालिसयं ।
दट्ठुं मुणियं वणिणा भणियं ।
णिवहो सयलं लहुं समलं ।
कहि रे रजया तें भणिउ तया ।

---

(10) 1.b भणइ, 2.a सइ चेय for सयमेव, 3.b तो for ता, a विक्किणवि जं लहहि, b किणिवि for गणेवि, 4.b विक्कंतें, a दीणार, 5.b एत्तउ, b णीसेसय, b गणइं for मुणइ, 6.b मइं, b काइं, a ज्जइ, 7.a पच्छुत्तावाणल॰, b ॰जलिउ, a हालिउ, 8.a inter. वि & ण, b याणइं, 10.b पुण्णुरहियमाणुसहो ।

इत्थं विमले अउणम्य जले ।
ता महुरझुणी भासइ वणी ।
महु देहि इमं महु कट्ठ तुमं ।
गेण्हेहि तओ भासइ रजओ ।
कुण एम अहो भणिऊण तहो ।
अदियप्पियउ तें अप्पियउ ।
वणिणा वि तहो घसिउं णिवहो ।
लाइउ तुरिओ जरुओ सरिओ ।
हयगाममणी गहिऊण वणी ।
णियगेहे गउ एत्तहो रजउ ।
सुणिउं रुयई महु णत्थि मई ।
लहुकट्ठकए वहुकट्ठसए ।
दितो वि वणिउ ता वि ण मुणिउ ।
रजओ छंदो एसो मंदो ।
सोयाउलओ पायाउलओ ।

घत्ता– इय जो विवेयवज्जिउ अवहु वत्थु अवत्थु ण वुज्झइ ।
सो परियट्ठो मूढमइ उंतो अंतो डज्झइ ॥११॥

(12)

१०. चार मूर्खों की कथायें

पुणु वि भणइ मइसुइपारंगय मुक्खकहाणउ णिसुणि मुणिसंगय ।
णर चत्तारि कहि वि जा गच्छहिं ता समुहि तु एक्कु मुणि पेच्छहि ।
जो तिगुत्तिगुत्तु वि बंधणचुउ समणु वि णिम्मलयक बुहयणथुणउ ।
आसावसणु वि आसविरहियउ मुक्कहरणु वि तिरयणसोहिउ ।
णिग्गंथु वि वहु गंथपरिग्गहु विकहविहिणु वि कहिय जण वि कहु ।
कयपरयारगमणु ण वि दुज्जणु तक्कंतु वि परलोए सुसज्जणु ।

---

(11) 3.b णिसुणेहु, 4.a पयरसुहयरिहे महुराउरेहि, 5 a अवसंतमणे, णिवु संतमणो, 13.b दिट्ठो, 14.b तहो for जहि, b जहि for तहि, 15.b सोसीरसयं, 18.b भणिउं, 19.b एत्थु जे for इत्थं, b जउणाहि, 20.b महुरं, 25.a घसिउ, 28.a णियगेहगउ, b वओ, b रजओ, 29.a सुणियउ, b रुवई, 31.b दितो वणिओ, 32.b रणउ छंदो, भणिउ मंदो, 34.a वज्जियउ मूढु, b उज्झज्झइ, 35.a परियट्ठो मूढमई ।

मयविद्धयणो वि ण मयाहिउ मह सीसु वि ण बुत्तु लंकाहिउ ।
कउहि वि वंदिउ सिरिण णमंतें दिण्णासीस ताहं मयवंते ।

घत्ता - जोयणु दिवट्ठु गंणिणु भणिउ ताहं मज्झे एक्के णरेण ।
एक्के आसीस कासु हवइ दिण्ण तेण जा मुणिवरेण ॥१२॥

(13)

एक्कें भणिउ मज्झु पुणु अवरें तइएं मज्झु मज्झु पुणु इयरे ।
इय कलहंत पुणु वि गय तेत्तहे गच्छमाणु पहे मुणिवरु जेत्तहे ।
तेहि णमेविणु भणिउ भडारा दिण्णासीस कासु रिसिसारा ।
भणइ मुणिंदु जासु मुक्खत्तणु जो सईं धम्मु चरइ पंडियजणु ।
तं णिसुणेवि विवाउ करंतहिं महु महु मुक्खत्तणु पभणंतिहि ।
णायवियारसारु णर भरियउ पट्टणु एक्क तेहिं अणुसरियउ ।
भणिय सिट्ठ सुबुद्धिए भल्लहु अम्ह विवाउ पियारिवि घल्लहु ।
तहिं पुच्छिय कारणु समवाएं तेहि भणिउ मुक्खत्तविवाएं ।

घत्ता— णायरणरणियरे पुणु भणिउ अणुपरिवाडिए वज्जरहु ।
तुम्हहं मुक्खत्तु परिक्खियइ अण्णोण्णु जि मा कलि करहु ॥१३॥

(14)

प्रथम मूर्ख कथा

तो तहु मज्झि एक्कु पडिजंपिउ दो पियाउ महु हुउ दोहि वि पिउ ।
एक्क दिवसि किर णिद्दए भुत्तउ रयणिहिं जा उत्ताणउ सुत्तउ ।

---

(12) 1.b पुणु जणु पभणइं, b विय॰ for गुणि॰, 2.b घत्तरि कहि मि, a गच्छहि, a एक्क, 3.a सिगुत्तु, b वंदणं, b तुउ for थुणउ, 4.b आचाररहियउ मुत्ताहरणु वि तिरयणसहियउ, 5.a णिग्गंथु, b ॰विहीणु कहिय जिणविक्कहु, 6 a परयाव, 7.b चहुं मि वंदिउ, 8.b दिपासीस ताहं, 9.a गंप्पिणु, b भणिउं, 10.a हवइं, a मुणिवरिणा ।

(13) 1.b भणिउं मज्झु महु इयरें, a तइए, 2.b कलहंत गहय पुणु तेत्तहो, 3.a तेहि णवेविणु, b भणिउं, 4.a भणई, b मुक्खत्तणु, a जे सइ, b धरइ for चरइ, 5.a विवा for विवाउ, a करंतहि, a writes महु three times, a मुक्खत्तु भणंतहि, 6.b ॰सार, a तेहि, 7.b adds व before सिट्ठ, a सिट्ठ for सिट्ठ, b सबुद्धिए भेल्लहु, b पियारवि, 8.a तहि, a विसवाएं for समवाएं, a तेहि, b भणिउं, 9.b भणिउ, a वज्जरई, 10.a तुम्हहं, a अण्णोण्ण ।

ता दोण्णि वि दो भुय चप्पेविणु सुत्तउ महु पासहिँ आवेविणु ।
दीवयवट्टि णवर पजलंती उप्परि डंबरे पगिज्जंती ।
णिवडिय मज्झु वामणयणुल्लए ता मइँ चितिउ णियहियउल्लए ।
वामकरेण वट्टि जइ फेडमि तो रुट्ठा पिय णेहहो तोडमि ।
अह इयरेण कंता रूसइ णिहुयच्छंतहो लोयणु णासइ ।
तो वरि अक्खि जाउ सयसक्करु विहडिउ णेहु हुंड अइदुक्करु ।
इय चिंतंतहो फुट्टउ लोयणु हउँ जणि भणिउ बिलमक्खलोयणु ।
मज्झु अहिउ सरिसु वि जइ णियडउ अत्थि मुक्खु तो अप्पउ पयडउ ।

घत्ता– एम भणेवि आ थक्कु तहिँ णिय मुक्खत्ता चिट्ठउ ।
मुक्खत्तणु पयडहु अवरु णरु णायरसहहिँ पविट्ठउ ॥१४॥

(15)

द्वितीय मूर्ख कथा

तेण भणिउ मज्झउ वि खरिरिच्छिउ दो महिलाउ णाम सारिच्छिउ ।
खरि दाहिणउ पाउ पक्खालइ लामउ रिच्छिका लइय चोलइ ।
तावेक्कहिं दिणि खरी आवेप्पिणु गय दाहिणउ चरणु धोवेप्पिणु ।
सो मइँ जा वामोवरि दिण्णउँ रिच्छिए रूसेवि मुसलें भिण्णउँ ।
एत्थंतरि खरि मम्मु विघट्टइ तुह घरे बोडमडप्फरु वट्टइ ।
जेण तेण णिय पइ अवमाणहिँ अडतडविडविवणे विड माणहिँ ।
ता रिच्छिए पभणिउ तुह कित्तणु चच्चरगोउररमणिसइत्तणु ।
जाणेवि अवरु कंतु सिरु मुंडेवि वल्लहु घल्लइ णास विहंडेवि ।
एव भणंत भणिय जइ सक्कहिँ रक्खहिँ पाउ एहिँ मा चक्कहिँ ।
इय कोवेण वामचरणुल्लउ भग्गु खरिए हउँ थिउ णं कल्लउ ।

घत्ता– तहो दिवसहो लग्गि विहडउ जणेण कुंडहंसवइ भासिउ ।
पयडउ अप्पाणउ अत्थि जइ अवरु मुक्खु महु पासिउ ॥१५॥

---

(14) 1.a ताह for तहु, a मज्झि वि एक्कु पजंपिउ, b महु हुउं, b मि for वि, 2.a रयणिहिं, b उत्तायउं, 3.a भुव for भुय, a पासउ, 4 a पयलंती, b डंडुरे, 5.a तो मइ, 6 .a adds को before कंता, 8.a वर, 9.a भणिउं, 10.b जो for जइ, 11.a एव, a तहि, 12.b पइट्ठउ ।

(16)

तृतीय मूर्ख कथा

तइएण भणिउ मुक्खासु मज्झु — णिसुणहु साहमि ण उ करमि गुज्झु ।
सयणयले माणमोणण जाम — अच्छइ महु पिय मइँ भणिय ताम ।
जो बोल्लइ सोधयपोलियाउ — हारइ सखंड दह पोलियाउ ।
इय होउ एम ताए भणिउ — एत्तहि चोरहि घरे खत्तु खणिउ ।
घरदव्वु सव्वु वत्थइ णियाइ — कण्णाहरणाइ मि केडियाइ ।
णिवसणहि पत्तए ताए भणिउ — णिल्लज्ज कत्थ धुत्तत्तु मुणिउ ।
चोरेहिं हरिउ णिवसणु वि जाम — मोणउ ण मिल्लहि तो वि ताम ।
ता मइँ जंपिउ पिए देहि ताउ — हारियउ जाउ दह पोलियाउ ।

घत्ता— गय तक्कर सयलु अत्थु हरिवि महु धुत्तहिं विरइज्जइ ।
बोदो त्ति णाउ जणवय पयडु जं तुम्हे हि वि मुणिज्जइ ॥१६॥

(17)

चतुर्थ मूर्ख कथा

पुणु चउथउ णह णियमुक्खत्तणु — भणइ जडत्तगव्वरं जियमणु ।
जणियाणंद पवरपियसुरयहो — हउ संचलिउ जाव सासुरयहो ।

---

(15) 1.b भणिउं, b खररिच्छउ, b सरिच्छउ, 2.b दाहिणउं, b वामउं, a.b लुइय, 3.b तावेक्कहिं, b आवेपिणु, b दाहिणउ, b धोवेविणु, 4.a मइ, b inter. मइं and जा, b ईसिवि for रूसेवि, 5.b omits करि, a करि मणु वि पयट्टइ तुह घडवोडे, 6.a अवमाणहि, a has written in margin by other person जुत्ताजुत्तउ किंपि ण याणहि for अडतड० etc. 7.b पभणिउं, a चच्चरगोवयरमणे सयत्तणु, 8.a कउ तह अप्पइ for वल्लहु चल्लइ, 9.b भणंति, 10.a हउ 11.a अणेणा ।

(16) 1.a मज्झ, b णिसणहु साहंमि णं उं, 2.a मइ, 3.b थयबोलियाउ, 4.a हउ, b adds ता before ताए, b भणिउ, b चोरहिं, 5.b वत्थइं णियाइं, b फेडियाइं, 6.b णिवसणेहिं प्पंतए b भणिउं, b कंत धत्तुत्तु मुणिउं, 7.a चोरेहिं, a ज्जाम, b मोणवउ, 8.a मइ, a ज्जाउ, 9.a धुत्तहि, 10.b बोदि, a त्ति for त्ति, b णाउं, a तुम्हेहि, b omits वि ।

ता सिक्खविउ णवर णियमायए पुत्त तित्थु ववहरिय एमायए ।
जेमिज्जइ ण अहव जेमिज्जइ हट्ठिए तोवि लेवि छड्डिज्जइ ।
इयाणि सुणेविणु गउ तहिं पत्तउ तहिणे जिमिउं ण जइ वि पवुत्तउ ।
अवरहिं दिणि णारिहिं णिरंतरु एंतिहिं जंतिहिं लद्धुण अंतरु ।
रयणिहि किर सालय भुंजावहि मइ तहुँ दिण्णु पडुत्तउ तावहि ।
भुक्ख ण अत्थि केम जेमिज्जइ अवइ भुत्तु अइदुक्खें जिज्जइ ।
सासुयाए तं वयणु सुणेविणु तंडुलधरियसलिलि बोलेविणु ।
मग्गेसइ जव्वेलई भोयणु रंधेसमि तव्वेलए भोयणु ।

घत्ता– रयणिहिं विरामे पीडिउ छुहए जा किर पासु णिरिक्खमि ।
ता मंचयतले तदुलु भरिउ ससलिलु भायणु पेक्खमि ॥१७॥

(18)

तहिं अवसरि वाहिरि गय महु पिय वियणु वि जाणेवि मइं वि रइय किय ।
असहंतेण तेण भुक्खाउहु तंदुलेहि चप्पेवि भरियउ मुहु ।
ता सहसा पिययम संपत्ती महिलारूवें णाइं भवित्ती ।
हउ वि गरुयलज्जए तुण्हिक्कउ तडियबोलणयणु ता थक्कउ ।
बोल्लावंतिहे जाव ण बोल्लिउ तावंगुलिए गल्लु महु पिल्लिउ ।
महु मरणासकि भयवेविर णट्ठु कज्जं पभणइ गग्गिरगिर ।
दीसहि माय णयणआयंबिर तुह जामायहो किं जायउ किर ।
णउ जाणिज्जइ दोसु ण कारणु तं णिसुणिवि मिलियउ णारीयणु ।
कवि जंपइ संपइ हलि जायउ कुलदेवयहि दोसु मइं णायउ ।
कण्णमूल पभणिज्जइ एक्कए गंडमाल भासिय अवरेक्कए ।

---

(17) 1.a चउत्थ, b भणई, 2.b हउं, b जाम for जाव, 3.b पियमायए, 4.b inter. ण and अहव, a छंडिज्जइ, 5.a तहि, 6.a अवरहि, a एंतिहि जंतिहि, 7.a रयणिहि किल, a तहु दिणु, b तावहिं, 8.b भुंजिज्जइ for जेमिज्जइ, a भुत्त, 10.a जहि वेलए for जव्वेलइ ।

(18) 1.a तहि, b वियणु वि त्ताणेवि, a मइ विरय, 2.a भित्तु for तेण, a मंदुलेहि, b मुहु, 3.a महिलरूवं णाइ, b विभत्ती for भवित्ती, 4.b हउं मि, 5.b जाम for जाव, 6.b मरणासंकिय, b कज्ज, b गग्गरगिर, 7.b दीसहि माइ, 8.a तें for तं, 9.a मइ, 10.a कण्णमूलु, 11.b कण्णहं सूयउ, a सुणह गल्ल, a संलवई, 12.a अल्लवई, b अल्लवइं ।

घत्ता– क वि धावइ कण्णहु सुहयउ सूणगल्ल क वि संलवइ ।
असुणंतु वि जाम हु महिलयणु णाणावाहिउ अक्खवइ ॥१८॥

(19)

वाहिउ फेडमि इय जंपतउ सत्थविज्ज ता तहि संपत्तउ ।
महिलयणेण ता मुहउ दाविउ पेक्खेवि मह सरीरु ते भाविउ ।
जुत्तिविहीणु काइँ किर सीसइ एयहो वाहि मणा वि ण दीसइ ।
तंदुल भायणि खोज्जु णिएविणु घट्टु कवोलजुयलु पेक्खेविणु ।
ते ण णिउणु सक्खोवि भणिज्जइ तंदुलवाहि एहु जाणिज्जइ ।
एयइ वाहिए ण उ जीविज्जइ ता महु सासुयाए वोलिज्जइ ।
देमि जमलि तुहु पुण्णहि आयहो वाहि पणासहि महु जामायहो ।
ता महु वे वि गल्ल ते फाडिय रत्तलित्ततंदुल दक्खालिय ।
किमि भणेवि लोयहो साहेविणु तुरिउ विणिग्गउ जमलि लएविणु ।
महु धुत्तेहिं णामु विरइज्जइ गल्लफोडि लोएँ जाणिज्जइ ।

घत्ता– भम चउहि वि पभणिउ सुणेवि णायरणर सहु जंपइ ।
तुम्हहु मुक्खत्तु विसेसु जइ सइँ अमरगुरु वियप्पइ ॥१९॥

(20)

इय चत्तारि कहियं जे मइ णर ताह सरिसु जइ एक्कु वि दियवर ।
अत्थि एत्थु तो कहु वि ण साहमि सव्वु वि अलिउ भणंतहो बीहमि ।
अवरु वि जासु ण लिंगग्गहणउ घट्टमट्टपोत्थयसगहणउ ।
जणरंजणु णाउ य जुयलुल्लउ को वि ण वयणु भणइ तहो भल्लउ ।
तो विप्पेहि वुत्तु पइँ जारिसु भणिउ ण को वि अत्थि इह तारिसु ।
जुत्तिजुत्तु भण्णहु मा बीहहि विहडइ जं ण किं पि तं साहहि ।
तो खयरेण भणिउ अवहारहि विलणवुद्धि महु वयणु वियारहि ।
लच्छि वत्थु मणिमउडंकियसिरु जणु दक्खिद्दमणु पय ण य सुरु ।
हरि सव्वण्हु सव्व जय संठिउ अत्थि अहव ण पुराणहि दिट्ठउ ।
ता सिरसि हर चडाविय हत्थें भणिउ दिएण अत्थि परमत्थें ।

(19) 1.b वाहिउं, 2.b मुहउं, a भासिउ for भाविउ, 3.b जुत्तुविहीणु, a मणवि, 4. a खोज्ज, b पेच्छेविणु, 5.a एण for एहु, 6.a तो for ता, b वोल्लिज्जइ, 7.a देवि, a पुणहि, a पणासइ अइ जामायहो, 8.b फाडिया, 10.a धुत्तेहि, 11.b चउहुं मि पभणिउं, 12.b मुक्खत्त, a सइ ।

घत्ता— विसुणेविणु मच्चेएँ भणिउ जइ एरिसु हरि बुल्लउ ।
तो पंचमेट्ठि मेवाणु हुउ कि पहु गुणहि विरत्तउ ॥२०॥

(21)

पेहसुएँ पहिउ णियसामिहिउ हूउ हूउ दुज्जोहणपासं कयमहिपासं कीस गउ ।
जं वामणरूवेणं कयकडेणं बलि बसु हं घत्तिउ सरपहुणा कि दणुरिउणा विण्णसुहं ।
अविरलसवाएँ सत्तुणिवाएँ पत्थरहो होउं सरहिया वेढिउ विहुणा कीस अहो ।
तहो एसा कीला वज्जियवीला जइ भणहु आणिय कट्ठाणं ता अम्हाणं सहु सुणहुं ।
अहवा कस्सा वि हु आणए सो वि हु संचरइ अम्हभरिसु माणुसु कस्सपरावसु कि करइ ।
पुच्छिउ तुम्हहिं जिह भासिउ मइ तिहं जं वयणं घडइ ण घडइ व विज्जउ महु विय पडिवयणं ।
ता तेण दिएसें वि हु णिय सीसे भगु भणिउ अम्हेहि पुराणे वयडियणाणें हरि सुणिउ ।
एयारिसउ अम्हेह वंचिय कि करहु पडिउत्तरु दाउं वायं काउ णउ तरहु ।
अम्हाण वि पट्टइ कह वि ण तुट्टइ भंति मणो जइ णाणिउ विदो मत्ताछंदो एस जणो ।

घत्ता - तो मच्छु कुम्मु किडिणरहरि वि वामणु रामु तिवारहं ।
होएविणु जम्मणमरणदुहु देउ णिरंजणु सहई करहं ॥२१॥

(22)

परमप्पउ कि रसरुहिरमस मेयट्ठिमज्जसुक्कंतदोसे ।
दूसिउ सरीरु करेय वि हुवेइ णिक्कलु त्रि कहि वि किं डहु सेहेइ ।

---

(20) 1.b रयरत्ताइ for इय चत्तारि, b मइ, b तीहं, b जइक्कु वि णरवर, 2.a कहि वि, a सव्व वि, 3.a संसग्गहणउ, 4.b भणेइं, 6.b मण्णहुं मा वीहेहि, a जण्णे, b साहहि, 7.b वुत्तु for भणिउ, b अवराहहि, b वियारहि, 9.a सव्वण्हु, b जण for जुय, b पुराणाहिट्ठिउ, 10.b भणिउं, 12.a गुणहि विरत्तउ ।

(21) 1.b दुज्जोहणपासें कयमहिपासें, 2.b वामणरूवेणं, b सुरपहुण कि दणुरिउणा, 3.a पत्थणहो is written in margin. 4.b कट्ठतणं, 5.b तो for तहो, b तो for ता, b इय for सहु, 6.a कम्मो for कस्सा, a संचरई, b कामपरवसु 7.b जिह मई भासिउ तिह 8.a अम्हेहिं, a पयडिय णाणें, 9.b णिम्मलु b मत्ताछंदो, 10.b वावणु, 11.a किरहु for करहुं ।

सव्वण्णु ण पुच्छइ णरु कया वि तहु पत्थइ ण कयत्थउ सया वि ।
ण मरेइ अमरु ण वि य हवेइ भयवज्जिअउ णउ पहरण्णइ लेइ ।
सव्वंगु ण गच्छइ वाहणेण अह तित्तु करइ किं भोयणेण ।
जो लच्छिणाहु सुरपहु अमिच्चु सो होइ केम किर परहो भिच्चु ।
इय कारणेण णउ विण्हु होइ सव्वण्णु अवरु जइ होइ को वि ।
जरमरणरोयभयजम्ममुक्कु पुव्वावरवयणविरहमुक्कु ।
तं कइ वि गवेसहु णाणदेहु जडवाइय तुम्हइ जाहु गेहु ।
तं णिसुणेविणु कंटइयगत्तु सुहिवयणकमलु पुणु पुणु णियंतु ।

घत्ता–णिग्गउ मणवेउ सुबुद्धि लहु विप्प णिरुत्तर करेवि तहिं ।
हरिसेणासाइ विविहफलु गउ पुब्वुत्तुज्जाणु जहिं ॥२२॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गवहिट्ठियाए चित्ताए ।
बुहहरिसेण कयाए तइआ संधी परिसमत्तो ॥३॥छ॥

* * *

---

(22) 2.b कहिं मि, 3,a पइ for णरु, 4.b णा वि, b पहरणइं, 6.b आमच्चु, 7.a सव्वणु, b सव्वन्हु, b हवइ, 9.b तुम्हइं, 11.b सुबुद्धिलइ, 12.a हरि-सेणा विविहफलु in margin हरि is explained as वानर, b adds प before विविहफलु, a गयउ, a उजहिं for जहिं, b जहिं, 14.b संधी परिच्छेओ समत्तो, a परिसमत्तो, a ॥3॥श्लोक॥२३०॥

४. चउत्थ संधि

(1)

पुणु माणवेएँ वुत्तु मित्त ण किं पि मुणिज्जइ ।
अण्णाणंधजणेण हरि सव्वण्हु भणिज्जइ ।।छ।।

भो पवणवेय णिसुणहि सुमित्त — छक्काल कहमि जिह जिणहि वुत्त ।
सुसमसुसमु वि सुसमदुसमु — दुसमुसुसमु दुसमु वि दुसमदुसमु ।
दुसमसुसमि जिण चउवीस होंति — चक्कवइ हवइ बारह ण भंति ।
बलएव णव वि णव वासुएव — णव चेव हवहि पडिवासुएव ।
तहो मज्झि के वि पावंति मोक्खु — सग्गं के वि हु णरयदुक्खु ।
तहो हरिहु मज्झि जोअंति मिल्लु — कंसासुररिउ चाणूरमल्लु ।
सो वासुएव वसुएवपुत्तु — सव्वण्णु पुराणि दिएहि वुत्तु ।
कि वि भणइ रमइ दहजम्म लेवि — जम्माइ विवज्जिउ भणहि के वि ।

घत्ता – इय अण्णोण्णविरोहु जाणंत वि अवगण्णहि ।
एक्कु वि उहयसरूउ गयविणेउ हरि मण्णहिं ।।१।।

(2)

तथाचोक्तं ।। तैरेव ।।

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः ।
रामोरामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दशः ।।१।।
अजराअमरनिर्मुक्तं जन्ममृत्यु विवर्जितं ।
अव्ययं सत्यसंकल्पं विष्णुध्यायात् सीदति ।।२।।

---

(1) 2.a सव्वण्हु, a drops छ, 3.a हो for भो, b वुत्तु, 4.a सुसमुसुसमु सुसमु वि सुसदुसमु दुसमु, 5.b हवहि, 6.b हवहि, 7.a पहो को वि मज्झे, b सुक्खु संग तहु, a को वि, 8.b हरिहुं, a जेपच्छ for जोअंति, 9.a सव्वण्हु b दियहि, 10.a भणहि, b भणइ नमइ दहु०, b भणहि, 11.a इह अण्णोण, a अवगण्णहि, 12.a गयविवेय, a मण्णहि ।

विण्हुमुणि कथा

आयण्णहि मित्त ण करमि गुज्झु बलिबंधणकारणु कहमि तुज्झु ।
बलिमंति तासु मुणिहणणकामु दिण सत्त रज्जु णियणिवहो पासु ।
तें मग्गिउ तेण वि विण्हु तासु उवसग्गु घोरु जणणहो मिसासु ।
अवहिउ अकंपणमुणिहे तेण हरिमुणिणा मुणिकज्जुज्जएण ।
कवडेण वसुह बलि पत्थिऊण उवसग्गु हरिउ तं बंधिऊण ।
इय बलिबंधणु जयउ णिरुत्तु अण्णारिसु पुणु दियवरहिं वुत्तु ।
लोयहु बलि जेण पायालि णमिउ सो विण्हु णरामरणाय णमिउ ।
मायंतु ण सोसइ तं कयावि सुह वाणु होइ णरु सइ सया वि ।
एवं भणेवि णरवइसुएण पभणिज्जइ सुहि चिंतियहिएण ।

घत्ता– णिसुणिउ परहु पुराणु मित्त वियारिज्जंतउ ।
णाहु पुराणउ चीरु लहुसयसक्करु जंतउ ॥२॥

(3)

मार्जार कथा

मणवेएँ पुणरवि पवणवेउ पभणिउ वुहेण वड्ढिय विवेउ ।
अवरु वि अजुत्तु लोइयपुराणु तुह दरिसमि उज्झिय णयपमाणु ।
एवं भणेवि संजणियमाय अलिउलतमालणिह भिल्ल जाय ।
मच्चरियचिहुर टट्टुरियसीस गुंजहलणयण छिण्णरियणास ।
दढकढिणवच्छ भीसण पयंड कोमंडविहूसिय बाहुदंड ।
विज्जाणिम्मिउ मज्जाव लेवि रुहिरेल्लकण्णु कलसए छुहेवि ।
उत्तरदिसि संठियबम्हसाल पइसेविणु कय भेरीरवाल ।
कणयमयवीढि मणवेउ चडिउ जं मेरुसिहरि णवमेहु चडिउ ।
दियवरहिं एवि भेरीरवेण पुच्छिय ते पुव्वविहाकमेण ।

(2) These two verses are given by अमितगति in somewhat different form, see 10.58-9. 1.b omits ॥ तंरेव ॥ 2.a मत्सकूर्मो, 3.a ते यम, 4.a of मुंमत्तं, 5.a अहृयं, b विष्णुध्याई न, 6.b आयण्णहि, a कहमि, b कहंमि, 7.a दिण्ण, 9.a adds णवरऽट्ठगुणहि संजुत्तएण before हरिमुणिणा, 10.b तैं for तं, 11.b दियवरेहिं, 12.b लेहु for लोहय, b णमिउं, b णमिउं, 13.b सइं, 14.a णमवइसुएण, a चिंतियहिएण, 15.b णिसुणिउ परहुं, 16.b णाइं पुराणउं, b मणुसंबं• for लहुसय•, cf. for बलि-भागवतपुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण etc. ।

मणवेएँ तो पडिवमणु सुट्ठु मंजर विक्कहो हुउँ इह पइट्ठु ।
तो तेहिं भणिउ हयमेरि कीस कणयासणि किं थिउ पाणिसीस ।
तेणुत्तु गरुय कोऊहलेण णवजोव्वणवलविब्भामएण ।

घत्ता– जइ मूसयस्स ण जुत्तु कणयमयासणरोहणु ।
तो एत्थहो उत्तिण्णु करहु पसाउ णियमणु ॥३॥

(4)

तो भणहिं विप्प को गुणविसिट्ठु एयहो मंजरहो सरीरि दिट्ठु ।
भिल्लेण भणिउ गंधेण जंति वारहजोयण उंदर ण हुंति ।
तो ते हिं भणिउं भणु मोल्लु काइँ तें भणिउ सट्ठि कणयहो पलाइँ ।
दिय भणहिं कणयहो पडउ वज्जु मज्जारें पुणु बहु सरइ कज्जु ।
एक्कहिं दिणे पुरि मूसयहिं अत्थु णासिज्जइ जो सो मिलइ केत्थु ।
सारियए ण एक्कुवि रूउ एइ जं करइ मह जणु तं हवेइ ।
तहो देवि हेमु अवियारएहिं कुंभत्थु वि लइउ विरालु तेहिं ।
तें भणिउ पलोएवि लेहु एहु मा पच्छताव हु करहु देहु ।
तो छिण्णु कण्णु रुहिरावलित्तु पिच्छेवि तासु वियवरहिं वुत्तु ।
रुहिराहणु दीसइ काइ कण्णु भिल्लेण ताव पडिवमणु दिण्णु ।

घत्ता– अम्हइ पंथें रीण णिद्द उंदुरकुलआउलि ।
भुत्तच्छुहासंतत्त रयणिहिं एउ विदेउलि ॥४॥

(5)

किल सयलकाल अम्हाण जाइ एयहो दुट्ठहो गंधेण जाइ ।

---

(3) 3.a एम वि for एवं, a ०तमालणिहि, 4.a गुंजाहलणयण छिच्चिरियणास, 6.b कहिरोलकण्णु कलसें, a छहंवि, 7.b विसंठियवंमसाल, a बंम्हसाल, 9.a दिसवरहि, a वेरीरेवेण, 10.a मं मंजर, b विक्कउं, a हउ, 11.a तेहि, b भणिउं, b थिसीस, 12.b णउजोवण०, 13.a जह for जइ, a कणया-सणआरोहणु, 14.a णियमणु ।

(4) 1.a भणहिं, b गुणु, 2.b भंति for होंति, 3.a तेहिं, b भणु for भणु, a काइ, b भणिउं, a पलाइ, 4.b मंतहिं for भणहिं, 5.a एक्कहि, 6.b महायणु, 7.a तेहि, 8.a पच्छताव, b पच्छत्त पावा करहुं, 9.b तो छिणकण्णु, b पेछेवि, a वियवरहि, 10.b दीसइं, b ताम, 11.a उंदुरकुल,० 12.a रयणिहि ।

तो अवकरेहो वरसुत्तयासु | जिउ हरइ रंधि पहुरंतयासु ।
इय उंदिरेहिं वइरं सरेवि | कण्णद्धु खद्धु णिहु अंसरेवि ।
कोवि कंपंतहिं ता हिएहिं | एयहो वि कण्णु मूसयदिएहिं ।
अइच्छिण्णु आलउ तो तुज्झु वयंगु | इय भणिउ पलोइउ तासु वयणु ।
एक्कें दोसें भासिउ खणेण | किं बहुय वि गुण णिज्जहिं खएण ।
हिय भणहिं भणिउ तुहु केम घडउ | सुरविंदु वि णासइ दुद्धघडउ ।
सवरेण वुत्तु तुम्हहिं पमाणु | रोडाण बादु ण हवइ समाणु ।
तें भणउ दोसु अइ परिहरेहि | तो बंभणाण जसु परिहरेहि ।
पुणु तेण भणिउ संकमि भएण | परिहरिउ दोसु णं भणमि एण ।
अवरु वि जइ अडवडूरसमाणु | तहु कइयव वहिरिव णरसमाणु ।
चिरविरइय कट्ठभिक्खसमयं | पिच्छेवि ण पयडमि तो समयं ।

घत्ता– ता भासिउ भट्टेहिं ता णरतिउ साहिज्जइ ।
णियमजरदोसस्स पुणु परिहारउ दिज्जइ ॥५॥

(6)

तो सवरु भणइ समुद्दतडहो | तहिं आयउ हंसु जाम अडहो ।
मेडुएँ पुच्छिउ आगमणु | रयणायराउ तें कहिउ पुणु ।
भएण वुत्तु केवट्टु उवहि | तें भणिउ मुणहि अइ वहु सुहि ।
करपसरु करेविणु दद्दुरेण | एवहु होइ किं भणिउ तेण ।
तेणुत्तु गरुउ पुणु मंडुएण | कच्चइ किं सरिसउ महु अडेण ।
हंसे भासिउ को मुणइ माणु | तें वुत्तु अडाउ वि किं महाणु ।
जो कूवि वसइ दद्दुरु सया वि | सो सायरगुण ण मुणइ कया वि ।
एवं भणेवि उड्डीणु हंसु | अवरु वि सो णरु अडमेयसरिसु ।
गुरु गणइ लहु वि जो पुव्वदिट्ठु | सद्दहइ ण पयाडिउ गुणगरिट्ठु ।
कइयव वहिरु वि अवउ ण भएण | रत्तिहे गच्छइ तुरहरवेण ।
दुण्णिमित्तु ण पिच्छइ जेम किं पि | सुणिमित्तु ण याणइ तिह हियं पि ।
इय असुहभीउ जो सुहु चवेइ | अवरु वि सो कइयव वहिरु होइ ।

---

(5) 1.b किर, 2.b जउ, 3.a उंदिरेहि, a खुद्दु, 4 in margin the meaning of दिएहिं is given as दंतें, 4.a तो for ता, 5.a पलोयवि, 6.b खएण, b णिज्जहिं, 7.b णासइं, 8.b समाणु, b वाउ, 9 a भणहिं, b भणउं, b परिहरेहिं, b परिहरेहिं, 10.b भणिउं, a संक्कमि, b णइ for णं, 11 omits वि, a कयत्थ ववहिरु वि णरसमाणु, 13.b तो भासिउं, a भट्टेहिं ।

घत्ता– दुट्ठु वि पहु जाणेवि चिरसेविउ मण्णंतउ ।
जो परिहरइ ण मूढु किट्ठभिच्चु सो वुत्तउ ॥६॥

(7)

मण्डपकौशिक कथा

इय तें तिण्णि वि पुरिस पसासेवि सोलह मुट्ठि कहाणउ भासिवि ।
रत्ताइ य दह पुणु वि भणेविणु दियवर सह भणिय वि हसेविणु ।
एयहो सरिसु अत्थि जइ एक्कु वि तहो गुणु लहिवि ण पयडमि सक्कु वि ।
तं णिसुणेविणु बंभण जंपहि वुहयण सह वड्डइ एरिसु कहिं ।
ता सम्मत्तरयणरयणायरु भणइ समुद्दु महिरसरु खेयरु ।
दिय पुराणे आगमे जो वुत्तउ सो हउँ अक्खमि तुज्झु णिरुत्तउ ।
मंडवकोसिउ णामें तावसु उब्भतेयसउणाइ विहावसु ।
एक्कहिं दिणे केण वि आमंतिउ तावसजुउ णिविट्ठु कयसतिउ ।
ता तावस कुडिलिकय दिट्ठिय तं णिएवि सहस त्ति समुट्ठिय ।
जजमाणेण भणिउ विणु दोसें चल्लिय कंपमाण किं रोसें ।
तावसेंहिं पभणिउ गुरुभत्तिए पइ पाविट्ठु णिवसिउ पंतिए ।
मंडवकोसिएण ता वुत्तउ कहहु काइ मइ कायउ अजुत्तउ ।
तेहिं भणिज्जइ जेणय अपुत्तउ अच्छइ एहु दोसु णिरुत्तउ ।

घत्ता– विणु पुत्तेण ण कोवि इहपरलोए वि पुज्जिउ ।
भोयणपंतिहे तेण तुहु संसग्गु वि वज्जिउ ॥७॥

---

(6) 1.a खेयरु for सवरु, b भणइं, a समुहितडहो, 3.a उवहे, b भणिउं मुणहिं, b सुहिं, 4.b भणिउं, 5.b अइ for पुणु, a कें for किं, 6.b मुणइं, a तेणुत्तु, a कें for किं, 7.a ववदुरं, b मुणइं, 8.a उड्डीण, 9.b व for वि, a पडियउ for पयडिउ, 10.b व for वि, 11.a दुणिमित्त, b तह, 12.b चएइ, 13.b चिरसे वि, 14.b मूढू, b कट्ठभिच्चु ।

(7) 1.b कहाणउं, 3.b एयहं, a तहि गुण लहइ ण बोल्लिवि सक्कु वि, 4.b जंपहिं, a बंभण for वुहयण, b कहिं, 5.b तो for ता, b भणइ समुद, 6.a पुराण आगम, a हउ, a उज्झ for तुज्झ, 7.b तउणाइं, a in margin gives meaning of विहावसु as सूर्य, 8.b एक्कहिं, 9.b णिएसि, 10.b चलिय, b विणु for किं, 11.a तावसेहिं, b पभणिउं गुरुभत्ति पइं, 12.a मंडवकोसएण, b omits कहहु काइ....अपुत्तउ, 13.b एउ जि for एहु ।

तथाचोक्तं ॥

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च ।
तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा पश्चाद्भवति भिक्षुकः ॥१॥

तो कोसिउ भणइ वियकुलसमुप्पण्ण   को देइ किर मज्झु थेरस्स णियकण्ण ।
ता तावस भणहि जं पुव्वमुणि भणिउ   परमत्थु सुइसाव त किं ण भइ सुणिउ ।
णट्ठे मुए पव्वइयम्मि कीवम्मि   अवरो वरो होइ भत्तारि पडियम्मि ।
इय पंच आवएहि विवकुलहँ अम्यारु   एवं भियागे वि लइ काबि अवियारु ॥छ॥

तद्यथा–

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥२॥

इय तवसिवयणेण विहुवा वि तें गहिय   णामेण छाया पुणो जाय तहि दुहिय ।
अह अट्ठ वरिसाइं गेहम्मि वसिऊण   पिय कोसिएणं समालत्त हसिऊण ।
किर तित्थजत्ताफलं वे विजइ लेहु   छाया तया कस्स पासम्मि मिल्लेहु ।
अह भणहि हरपासि ता गंगकण्णा वि   जो लेइ मिल्लेइ तो धीय महु णा वि ।
आयण्णि सो आसि णिहु वित्तु वित्थंतु   हर गउरिसंजुत्तु कइलासि णिवसंतु ।
जा संकवंदणणिमित्तेण गच्छेइ   तलि थंभ तियरूव कीलंति पिच्छेइ ।
तं णिएवि तहि सबु पिक्खेवि सहुस ति   हुउँ मयणबाणेहिं हयणिएवि ते झत्ति ।
णिय मणिण चिंतेइ कहो तणिइ इहकण्ण   अणुहरइ उब्वसिहि णउ होइ इह अण्ण ।

घत्ता– तो दंसणमित्तेण तें मयणग्गिपलित्तें ।
चिंतिउ एहु ण कण्ण अहि ते कि देवतें ॥८॥

---

(8) 1. This verse occurs in the यशस्तिलकचम्पू (बम्बई 1903), vol. 2, p. 286. Amitagati's verse runs thus, see 11.8. 2.b आपुत्रस्य, b स्वर्गो, 3.a भिक्षुका, b ॥छ॥ 4.b कोसिओ भणइ, a ०समुप्पण्ण, 5.b तावसा भणहि, b भणिउं, 6.a कीयम्मि and gives its meaning in the margin as नपुंसके, 7.a वियकुलह, 8.b omits तद्यथा; cf. Amitagati's DP.11.12. This verse is identical with पाराशरस्मृति, 4.28 quoted by Mironow, p-31 of his Die Dharmapariksha etc. It is also attributed to Manu as found in the स्मृतिचन्द्रिका, see the suppliment to the मनुस्मृति, Gujarati Press ed. Bombay, 1913, p. 9, verse 126. 12.a वरिसाइ, 13.a तय, a पासम्मि मि मिल्लेहुं, 14.b भणहि, a गंगकण्णे, 15.b गोरिसंजुत्तु,

तो वरिसे आवमि एहु णारि | किं णायहि सुरहरिकुमारि ।
ता हुउ संकउ संकर कुमारु | पच्चणवु णाईं ससरीर मारु ।
बोल्लाविय एरिसु जोव्वणेण | किं णिउणवेण वेविय वणेण ।
किं तणुलायण्णें सुल्लहेण | थें णउ माणिज्जइ वल्लहेण ।
गंगाए ताम वालिय णबु राए | बोल्लिउ मणुराएँ महु गिराए ।
हुउ कण्ण ण परणइ अहिलसेमि | सुहु कीरंती कावमि मसेमि ।
हुउ पभणिइ हुउ मि अच्छमि कुमारु | जोव्वण ण जीव्वु संसारसारु ।
इय वयणहिं गंगए साहिलासु | अप्पाणु समप्पिउ संकरासु ।
सुरयम्मि जाए पुणु णियवरेण | पुच्छिय कंता जं तें हरेण ।
आरुहमि उवरि महु णिसउ जेत्थु | आवेसमि दिव्वि दिवें मुणि एत्थु ।
सइ काइं गंग संकरु ण बेइ | सव्वु वि कयरस्सु जीवतु हवेइ ॥
भए पिए तहे णिम्मयणीससाहे | रयरणउँ सव्वु आविमरसाहे ।

घत्ता— अप्पुमण्णें दइयस्स सा गय जा कइलासहो ।
गउरिए पुच्छिय ताव पेच्छवि पच्छइ ईसहो ॥९॥

(10)

का त्वं सुंदरि जाह्नवी किमिह ते भर्ताहरो नन्वयं ।
अम्भस्त्वं किल वेत्सि मन्मथरसं जानात्ययं ते पतिः ।
स्वामिन्सत्यमिदं नहि प्रियतमे सत्यं कुतः कामिनां ।
इत्येवं हरजाह्नवी गिरिसुता संजल्पनं पातु वः ॥१॥

अह भणहि कंते गुणगणमहंतु | सुय वायणियाहे मोल्लउ अणंतु ।
सुणु ते ण रमिय जिह गोत्तरमणि | लोयवयणोणउम्मत्ततरुणि ।
कव्वे ण कहेवि वच्छंति विट्ठ | सुरिसिहिअए मयणबाणु व पइट्ठ ।
जयसंकुसु मोल्लु सव्वु माउँ | पियमाणुसु जहि तहिं णिरुत्तु जाइं ।
परियणु सुहिहिं सहुं हवइ भासु | ण सुहाइ किं पि मयणाउ रोसु ।
तिहुयणमोहणु मोहियउ ताए | पोसिय णं मोहणवल्लियाए ।

17 a संहियव पेच्छेइ, a हुउ, a मुणिवि for णिएवि, b तं for तें,
18.a णिवेइ इह तरिणय कइ कण्ण, b उम्मउइ मउं, b कण्ण for अण्ण,
19.a ण्णपिवसउ, 20.a जहि. Note : मच्छपकोसिक may be the name of विश्वकर्मा ऋषि whose daughter was स्वाहा, the wife of Agni. See the story – भागवतपुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण etc. For गंगा, see पद्मपुराण (42.39–40). महाभारत आदिपर्व, 210.11-16.

अमुणंतियाए पीवरथणाए थंभिउ णं विज्जए थंभणाए ।
धावइ असिय रणपउरित्तयाए वसिकिउ हियवए पइसंतियाए ।
हरि चिंतइ किं कामिणि सहासु वरि एक्क वि दिय पियविरहणासु ।
सो धण्णउ जीविउ सहलु तासु सह जेण एह जंपइ सुहासु ।

घत्ता– पेम्मपरव्वसचित्तु पियमुहकमलु णिएविणु ।
सरसवयणु जंपेइ हरि ईसीसि हसेविणु ॥१०॥

(11)

आढत्तु गमणु कहिहं समयणे को धण्णु रमणु अइपिहुलरमणे ।
चुंबहि जसु वयणु मियंकवयणे को सहलणयणु सिसुहरिणणयणे ।
जो जोयइ तुज्झु सरायवयणु आयण्णिओ ण तं हरि हे वयणु ।
वोलिज्जइ ताए वियक्खणाए किं परमहिलाए सलक्खणाए ।
पुरिसोत्तमासु एरिसु ण जुत्तु अहिलसियइ जं किर परकलत्तु ।
परयारकहा लज्जावणी य सज्जणमत्थयसंपावणी य ।
बहु धिद्धिक्कारपडिच्छणी य णिम्मलयरसुहि मुहलंछणी य ।

---

(9) 1.a वससं, b माणं, दूसहुह, 2.a णाइ, 3.b एरिस, 4.b माणिजइ थलहेण, 5.b अलियक्ख, राए वोल्लिय, a गिराइ, 7.b हुउ भणइ हउं मि, a संसारसरु, 8.a वयणहिं, 9.b दुगु for पुणु, 10.a त्तेत्थु for जेत्थु, 11.b सयलु वि, 12.a रणणणउ, 14.b गउरिय, b ताम, a पच्छा एसहो ।

(10) 2.a वेल्लि, 4.a पासु व, 5.a भणहि, b कंत, a थवणियाहे, 6.b मुणि, b गोविरमणि, a लोणससलोण, 7.b कहिमि for कहेवि, a मयणबाणाइ पइट्ठ, 8.a रण्णु गेइ, b पिउ माणुसु, a तहि, a जाइ, 9.b सहिहिं, b रासु, 10.a ०वेल्लियाइ, 13.b सहास, a वर for वरि, b ०विरहणास, 14.b धण्णउं, b एस for एह, a तंपइ, 15. a पेम्मवरव्वस०, 16.b जंपेवि, The corresponding verse is not found in Amitagati's DP. Amitagati refers to the incident in only one verse as followes :

देहस्थां पार्वतीं हित्वा जान्हवीं यो निषेवते ।
स मुञ्चति कथं कन्यामासाद्योत्तमलक्षणाम् ॥ 11.23

Harishena provides this incident in rather more detailed form. For श्रीकृष्ण or हरि, see भागवतपुराण, विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण etc.

तह जाउ विढंबु मरणु लहेइ परभवि पुणु दूसहु दुहु सहेइ ।
तें भणिउ अणप्पिय मयणहासु पिए पइ मोहइ विसयाहिलासु ।
पइँ माणेविणु वणमित्तु जं पि जीवमि मण्णमि बहु सहलु तं पि ।

घत्ता— आणुराइय अंगु आणिउ तहो सुयवयणए ।
ताए समप्पिउ अंगु उड्डीविय मणमयणए ॥११॥

(12)

पुणु भणिज्जइ रमणिहि एहि छिद्दणिवेसणु जणु परिहरेहि ।
संकेउ देवि गय गोवि जाम हुउ दिवसु परिससमु हरिहे ताम ।
रवि कोडि जुत्तु पडिहाइ गयणु कमलसयणु णं पज्जलिउ जलणु ।
पंचमसरु सरु पंचमसरासु कप्पूरु धूरु णं सायरासु ।
तंबोलु वोलु जुयरवयजलासु हरियदणु मद्दणु तणुवलासु ।
णिम्मलु वि हारु णं असिपहारु आहारु णाइँ जीवावहारु ।
पडिहाइ भाणु लहु अच्छवंतु उग्गमिउ चंदु णावइ कयंतु ।
समयम्मि जाए हरि जाए जाम गोविहि घरु झंपिउ णियइ ताम ।
जइ वोल्लावमि तो जणु सुणेए मउणेणच्छंतु ण पिय मुणेइ ।
इय चिंतिऊण अंगुलिए जाम आहउ कवाडु सा भणइ ताम ।

तद्यथा— अंगुल्या कः कपाटं प्रहरति कुटिले माधवः किं वसंतो ।
नो चक्री किं कुलालो नहि धरणिधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः ।
नाऽहं घोराहि मर्दी किमसि खगपतिर्नो हरिः किं कपीशः ।
इत्येवं गोपवध्वा चतुरवचनविहितः पातु वश्चक्रपाणिः ॥१॥

जो तिय सोलहसहसण तित्तु इय चोरिए माणइ परकलत्तु ।
परतियलंपडु घर आणियाहे पिए सो ण ओन्नु तिय धवणियाहे ।
संकरहो कहाणउ कहिउ तुज्झु मइँ अक्खिउ तुहु जिणमणे ण गुज्झु ।
देवत्तणु वुज्झिउ केसवासु परतियलंपडु सिव कवणु वासु ।
अह भणहि कंत कह पासि थवमि अच्छइउ भाउ सो तुज्झु कहमि ।

घत्ता— अहवा वंभहो पासि वंभणि जइ सुय मुच्चइ ।
जिह वीरु वि अइकामिउ णिसुणहि सो जिह पुच्छइ ॥१२॥

---

(11) 1.a आढविउ, b ॰रमाणि, 3.b सरयवयणु, 4.b बोलिज्जइ, 5.a परकलुत्तु, 8.a लहेइ, 9.b समप्पिउ, b मोहणुइ, 10.a पइमाणेविणु, a सहल, 11 सुयवयणइं ।

(13)

आहुट्ठ वरिससहसाइं जाम   तउ करइ बंभु सुरवइहिं ताम ।
आसणु कंपिउ पुच्छिउ समंति   भासइ भेयइ णहु सुणि भविति ।
बंभा तुह रज्जहो कारणेण   तउ चरइ चलिउ हरिवीढु तेण ।
तिणु विणु कवहो अच्छरहो केवि   पट्ठविय तिलोत्तम तें करेवि ।
आउलिवि पट्ठ तहो पुरउ ताएं   पवहुप्पभुसारि चालियपयाए ।
वरहरिसिय णाहिं पएसियाएं   ईसीसि पयासिय कक्खभुयाएं ।
उण्णामियणमियचालिय भुयाए   विब्भमकमलंतरणु भूलयाए ।
सविलासकडक्खालोयणाए   णवरसविसेसगुण भावणाए ।

घत्ता– ता कण्णंतरे तासु ओवग्गिहविरइसणु ।
पडिउ णीयमुणि झत्ति हुउ सराउ कमलासणु ॥१३॥

(14)

जिह जिह पेच्छइ तहे चरचरणइँ   तिह तिह सिढिलइ णाणावरणइँ ।
पेच्छंतह तहि सरलंगुलियउ   हलहिं ण अक्खसुत्तमणिमुलियउ ।
जिह जिह जंघाजुयलु अवलोयइ   तिह तिह सुरयजुत्ति अवलोयइ ।
जिह जिह कडयलु थलु णियच्छइ   तिह तिह तहो णीसासु णियच्छइ ।
जिह जिह चितइ सोणीमंडलु   तिह–तिह ढहळइ मुयइ कमंडलु ।

---

(12) 1.b रयणियहे, एहे, 3.b पज्जलिय, 4.a जमय for णं, 6.b णित्तलु, a णाइ, 7.b उप्पामिउं, 10.b चिचिक्कण, b भणइं, 11.b अंगुल्या, 14.b झाराहिमंवि, a जयपति मो हरि, 14.b चंतुरमणिहितः, a चतुरमणिहितः, 15.b ०सहसहि, b मांगइं, 16.a कह, a जोग्ग, 17.b कहिउं, a मइ, b तुह, विचमे च, 18.b ०अंचकसिउ, 19.b वण्णहि, कंति कसु पासि, 20.a वम्हणि, 21.a जइ चेव वि णिच०, Amitagati has not got any verse similar to this. It is, ofcourse, found with some veriations in the सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, p. 38, verse 166 of the section of दशावतार (Bombay, 1891).

(13) 1.b ०सहस्साइं, a वम्ह, 2.b inter. णहु and मुणु for सुणि, 3.a बम्हहो for बंभा, 4.a तिलोत्तिम, 6.a हरि for वर, b पएसियाइं, b कक्खभुयाए, 7.a ०भमु भूलयाइ, 9.a तो for ता. Note see for ब्रह्मा, तिलोत्तमा, शिव & इन्द्र, महाभारत (आदिपर्व, 210.18–28), भागवतपुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण etc ।

जिह जिह णियइ महीहरि णाहिहे तिह तिह भज्जइ मणु मयणाहिहे ।
जिह जिह थीणपओहर जोयइ तिह तिह मयणु सरज्झणु ढोयइ ।
जिह जिह णिज्झइ सुवलियबाहुउ तिह तिह संभवंति तहो दाहउ ।
जिह जिह णियइ णवणरयणावल तिह तिह धवइ रायरयणामय ।
जिह जिह कुंतलकलउ णिलोयइ तिह तिह तहो मणु मयणु पलोयइ ।

घत्ता– इय जोयंतु णिएवि कुडिलभावमणु रंजेवि ।
णिय उत्तरहे णिसहे कण्हहो दिट्ठि णिबज्झेवि ॥१४॥

(15)

जइ वि दिट्ठि परिहरेवि परिट्ठिय तो वि तासु आसत्ति ण णिट्ठिय ।
णयणहो पुरउ णाइँ अवलंबिय णं हियवए णिलीण णं बिम्बिय ।
णं संलिहिय अहव णं रोविय णं उक्किण्णरूव णं वाविय ।
चिंतइ णिहि वलेवि जइ पिच्छमि भुवणगुरु वि लहुयत्तहो गच्छमि ।
अहव ण णियमि णयणफलु हारमि लहु उइंत पाण कह धारमि ।
तो वरि जाउ लज्ज तं कारहो कह दुल्लहु रइसुहु परदारहो ।
एउ जे कज्जु काले ण वि आयहो णाणज्झाण संजमसंधायहो ।
सइ संपडिउ जइ वि वज्जिज्जइ तो वि ण कम्मु पुराणउ जिज्जइ ।

घत्ता– अहवा किं बहुएण दोसु गुणु वि अवमण्णमि ।
एयहो दरिसणसोक्खु सिद्धिसुहहो वहु मण्णमि ॥१५॥

(16)

वम्हेण पुणु वि पुणु चिंतविउ जं एहु उम्मु मइँ तउ कियउ ।
तहो वरिस सहास फलेण मुह महु होउ कणिय वेच्छणय मुहु ।
ता झत्ति जाउ सुंदरु वयणु जा तेण पलोयइ णिरणयणु ।
पिहु थणि णियंब गुरु मज्झ किस मय ताम तिलोत्तम अवयरिय ।
तिस्सु वि अवरा णणु जाउ पुणु पिच्छंतु णियंबिणि वहुगुणु ।

(14) 1.a मरमरणइ, b सिहिणइं, a झाणायरणइ, b झाणायरणइं, 2.b पेच्छंत-होर, 3.a बालोवइ, a सुरयं, 4.a थीसासु णियच्छइं, 7.a तरासणे, 10.a कुंतलु, b omits one तिह, a णिलोयइ for पलोयइ, 11.b अइ for इय, 12.a उत्तरणिसहे, b कंण्हहो ।

(15) 1.a आसत्ति, 2.b णयणहँ, a णाइ, b बिंबिय for बिम्बिय, 4.b भुवणगुरु, a लहुयहो, 6.a परदारहो, 8.b पुराइय, 9.a दोसुगणे वि, 12.b एयहे ।

तहो णिविडपेम्मु तहिं जणे विमणु लीलए दाहिणदिसि किउ गमणु ।
पियरूवें तण्हुणेहें जडिउ तहिं अवरु वि वत्तु तासु घडिउ ।
चउदिसु मुणेवि णयणइ पसरु गयणयलि विहिउ संबीयसरु ।
पंचसयवरिस तवे संठियए कमलासणेण कलियउ हियए ।
उव्वरिय तवाणुरूउ वयणु महु होउ णिएमि णारिरयणु ।

घत्ता– ता रासहरिसि जाए गउ असेसु तउ जाणेवि ।
गय सुरतिय सुरलोउ णियपहुकज्जु समाणेवि ॥१६॥

(17)

विप्फुरिय हारमणि गय जाम सुररमणि ।
ता मयण जज्जरिउ विरहेण विहि जरिउ ।
उट्ठमुहुं एक्कंगु जाणियए तहो मग्गु ।
कय भउहखेवेहिं ता हसिउ देवेहिं ।
किर कुद्धु ते गसइ खरमुहेण खरु रसइ ।
ता भीए कंपंत हरसरणु ते पत्त ।
खरसीसु णहरेण जा खुडिउ तहो तेण ।
कोवग्गिउण्हेण ता भणिउ वम्हेण ।
महु हव्व तह चडउ सिरु करहु मा पडउ ।
ता सा व किण्हेण सोयाणलुण्हेण ।
बहु सामवयणेण उवसमिउ तहो तेण ।
पुच्छियउ सामंतु विहिणा वि सो जुत्तु ।
बहु णरकवलेहि अंगट्ठिजालेहि ।
भूसिय सरीरस्स जडजूडधारस्स ।
चियछार धवलस्स तवदीण सकलस्स ।
भिक्खं भमंतस्स एत्थु वि जिमंतस्स ।
इस इउ वहंतस्स पूरेइ रत्तस्स ।
जइ को वि ता पडइ हत्थइ तुह झडइ ।
इय भणिय बयमालि हरु जाउ कावालि ।
सच्छंदो वि सुपसिद्धु मयणावयारद्धु ।

---

(16) 1.b वंचेवि, a मइ तउ त कियउ, 2.b inter. महु and मुहु, 3.b चोरभणु for चिरणयणु, 4.a ताव तिलोत्तिम, 6.a तहिं for तहो, a तहो for तहिं, 7.b पियरूवतण्हु०, a तहिं, 8.b adds वि before मुणेवि, b णयणपसरु, 10.b तवाणुरूववयणु ।

घत्ता—बम्हें कामग्गहेण गहिए लज्जमुएविणु ।
रिउ संपण्णिउ रिच्छि रमिय रण्णि पइ सेविणु ॥१७॥

(18)

तो जंबओ पुत्तु उप्पण्णु गुणजुत्तु ।
इयरित्थि जो रमेइ सो कण्ण कह मुयइ ।
अह रवि समासण्ण जइ धरहु णियकण्ण ।
ता जें अदिण्णा वि किर कुंति कण्णा वि ।
अणुहवि य सुउ जाउ कण्णे त्ति विक्खाउ ।
घर थविय सुछाय सो मुयइ कह छाय ।
चंदो वि सकलत्तु दट्ठूण भुंजंतु ।
कोवग्गिदित्तेण रिसिविस्समित्तेण ।
मयचम्मधाएण सकलंकु किउ किउ तेण ।
गोयमहो महिलाहे आहल्लणा माहे ।
इंदो वि रइरत्तु जा ताए घड पत्तु ।
सविऊण सहस भउ कुविएण तेण कउ ।
अपरोहवरोहेण उवसमिउ कोहेण ।
पुणु जणिउ सहसक्खु इय लोय पच्चक्खु ।
इय देवसंघाउ परयारअणुराउ ।
सायलो वि किंकरहु कहु पासि सुय धरहु ।

घत्ता— पर अज्जवि पिए दोसु एक्कहो बम्हो ण दीसइ ।
धम्माहम्मु वि सेसु जो मज्झत्थु गवेसइ ॥१८॥

(19)

इय भासिवि मंडवकोसिएण छाया अमयासि णिहित्त तेण ।
सइ समहिलु तित्थ भमेइ जाम जमु छायारूउ णियंतु ताम ।
मयणसरविद्धु हुउ वियलचित्तु सा तेण अविण्ण वि कयं कलत्तु ।
बाहिरे किर दीसइ सुरयणेण पिय गिलिय जमेण भएण तेण ।

(17) 3.a उट्ठमुहु, b जाणियइं, a तहि, 4.a देवेहि, 5.a कुढ, 8 b उग्गेण for उण्हेण, b बंभेण, 9.b तव for तह, 11.b उवसमिउं, a सो for तहो, 12.b सम्मंतु, b ति सो उंतु, 13.a अंगिट्ठिम॰, b ॰आलेहिं, 15.a तवरकीणतवलस्स, 16.b इत्थ वि, 17.a एंतस्स, 18.b हुत्था वि, 20.b छंदो वि, 21.b वंपें, b गहिएं, 22.b संपण्णियरिछि, a रण्ण ।

णवरिक्क दिवसि धवलेण अवलु — धवलिउ जम जीविउ मित्त सहलु ।
जं सब्बु मारि चिर कय सुहेण — अवसु आइ कालु सही रइसुहेण ।
तो तेण भणिउ संजोउ ताहे — तहि केम होइ जमु णिक्कमाहे ।
मउ भणइ मित्त जो विसयलुद्धु — कउज्जाइ वियप्पइ सो ण मुद्धु ।
अंगुलिए पसारिए बाहु पडइ — कहे ताहे केम संवग्गु घडइ ।
सो पवइ कंत उयरंतराले — वहि एक्कु पहरु बरुणियमकाले ।
तें भणिउ तिलोवासियउ जाउ — पहरेक्कें माणमि तियउ ताउ ।
किं एक्क वियणे गुरुयणविहीण — छुट्टइ महु मयणुम्मत्त पीण ।

घत्ता— इय भणेवि गउ तेत्थु जेत्थु णिवसइ जमु भंगहे ।
छाया उम्मिलिऊण लग्गइ आणपरिग्गहे ॥१९॥

(20)

तहि पिउ पछण्णसरीरु जाम — सहसा एंतूण जमेण ताम ।
उम्मिलिय कंत वियग्गं णिएवि — आढविउ णियमु जले पइसरेवि ।
एत्तहो धूमद्धउ विब्भरुउ — करिऊण पत्तु छायासमीउ ।
हंसयमसेण वि एक्कमेक्कु — इच्छिउ रइरसु पिउ महुरवक्कु ।
रमियावसाणे विससुय भणेइ — णा जाहि कंत जा जमु ण एइ
पइ हुणइ मज्झु णासिय लुणेइ — एत्थंतरे सिहि पडिवयणु देइ ।
ण वहंति पाय पिए कहमि तुज्झु — तुह पुरउ होउ जं होइ मज्झु ।
तो णियमएण सो ताए गिलिउ — एत्तहि जमु एविणु ताहे मिलिउ ।
गिलिऊण भज्ज गउ गेहि जाम — अणि भट्ठ पवण किय सयल ताम ।
अलणेण विणा णिय विप्पहु जाव — विणु जामहु सुरवर वियल जाय

घत्ता— ताम पवणु इंदेण भणिउ समिसु गवेसहि ।
जाउ पलोएवि तेण दुत्तु ण दिट्ठु मए कहि ॥२०॥

---

(18) 1.a जेवणो, b पुत्तु उप्पणु, 2.b मुवइ, 3.b फिर कण्ण, 4.b तायें, 6.b inter. सो and कहु, 7.b पि कलत्तु, 11.a रयरत्तु, 13.b जयसमिय, 14.a इउ for इय, 16.b कसु for कहु, 18.b सम्माहम्मबलेसु ।

(19) 2 b तेत्थ, 4.b वहिरे, b गसिय, 5.b धवलिउं, 6.b काइ for जाइ, b रहे for सही, 7.b भणिउं, 8.b मणइं, 9.b चहि for कहे, 10.b भरइं, a उयरंतराले, a वरुणियमकाले, 11.a जाव for जाउ, a तियउ, 13.b तत्थ जेत्थ ।

(21)

अज्ज वि एक्कु ठाणु जउ ओयमि   अइ भिक्खमि तो पहु संजोयमि ।
एम भणेवि देव आमंतिय   आइय सयल वि सामर पंतिय ।
सव्वहो एक्केकासणु दिण्णउ   जमहो तिण्णि ता तहो मणु भिण्णउ ।
भणिउ विसेसु कवणु संभाविउ   जेणासणतिउ महु देवाविउ ।
भणइ वाउ अलिएण ण भासमि   जइ उग्गिलहि कंत ता सासमि ।
तो उग्गिलिय कंत जमराएँ   मेल्लिय मज्झु तुहि बोल्लिउ वाएँ ।
छड्डिउ ताए जाम मे सासणु   ता अक्खंतकुडु जमु भीसणु ।
णासइ किर भयतट्ठहो आसणु   ता पुट्ठोए जमु मह्हिसाणणु ।

घत्ता– जिहिं उट्ठंतु पडंतु वा णासे वि ण सक्कइ ।
सिल वह तव धरणीसु ताव पईसेवि थक्कइ ॥२१॥

(22)

तहो दिवसहो लग्गेवि गहियमउ   वइसाणरु दीसइ सव्वमउ ।
आणियं तुहु आसय मज्झु तहिं   पल्लट्टेवि गउ जमु जक्ख जहिं ।
इय विप्पुराणकह संभरहु   किं अत्थि णत्थि फुडु पज्जरहु ।
एत्थंतरे पभणिउ दियवरेहिं   छायइ रविबिंबु कवणु करेहिं ।
पुलु खयररायणंदणु भणइ   ते लोउ तियालु वि जो मुणइ ।
णउ मुणेवि सुसीलु सग्गे धरइ   दुट्ठ होइ पुणु णरयगमणु करइ ।
दुच्चरिय भरिय कह इत्थियहे   उयरात्थिउ णियउयरत्थियहे ।
जइ कह वि ण जाणिउ तेण हुवि   ता किं जमु सयलु वि मुणइ ण वि ।
एक्केण वि दोसें बहुयणुण   अइ णासहि एम भणंति जण ।
तो जमहो जमत्तणु खयहो गउ   अहवा मज्झरहो दोसु णउ ।

---

(20) 1.b एहिं for तहि, a एतूण अक्खेण, 3.a ॰समीउं, 4.b एक्कुमेक्कु, 5.a रमियावसाण, b रमियावसासे, a कंत जइ जमु मुणेइ, 6.b पइं हणइं, a हणहे, 7.b कहेंमि, 8.b तासु for तासु, 9.b पयण किय, 10.a जलणेणु, b दिवहु, b आयहिं, 11.b भणिउं ।

(21) 2.a सत्तिय for पंतिय, 3.b सव्वहं, b दिण्णउं, b भिण्णउं, 4.b ॰तउ for ॰तिउ, 6.b वहिं, a बोल्लिय, 7.a छड्डिउ, 8.a अक्खंतु, a जम, 8.b भयतट्ठहु, a. after भयतट्ठहो in margin हु, आसणु, b ॰तट्ठहु, 9.a णासणहि ण सक्किउ, 12.b ताम (स्थवण in margin) ।

घत्ता– दिवहुराइ णिरुत्तु सव्वु पुराणि पवुत्तउ ।
भणिउ जिणेहिं गुणड्ढु तह विरालु पइ जित्तउ ॥२२॥

(23)

पुणु वाइय सिरिय सोयामणि भणइ रवणिवु भव्वचूडामणि ।
णियसोहग्गदमियरइरमाणिहिं बालमरालीलगइगमणिहिं ।
पयजिय, पोमराय रुइसंचहिं मासि ण वि सिर वि रोमवरजंघहिं ।
सुरकरिकरसमऊरु विसेसहिं गंगापुलिणणियंबपएसहिं ।
गहिरणाहिराय रोमावलियहिं तोच्छोयर सोहंतहि तिवलियहिं ।
सिहिणभार भारियललियंगहि भुयलयकय अणंगगणसंगहिं ।
रत्तुप्पलदलकोमलपाणिहिं सरलंगुलिवहुसोहाखाणिहिं ।
गयणफुरंतदित्ति णहपंतिहिं तणुतेओ हामि य ससिकंतिहिं ।
जियपरिवय विंबीहलअहरहिं मुत्ताहलविलासदंतहरहिं ।
फुल्लकमलदलदीहरणयणिहिं सरयसमयछणससिसम वयणिहिं ।
कोइलकलयमहुरालावहिं सिहिकलावसमकेसकलावहिं ।
हावभावविब्भम पयडंतिहि णवरसणट्टविसेस णडंतिहिं ।

घत्ता– इय तिहुयणरमणिहिं जासु ण मणु खोहिज्जइ ।
सुरणरणायणुयस्स तहो देवहो पणमिज्जइ ॥२३॥

(24)

हरदेह णारिहुव जेण कउ गोविंद गोविगुणणेहमउ ।
बंभु वि अवंभवउरित्थियए सुरणाहु अणाहु अहल्लकए ।

---

(22) 2.a यासण, a तहि, a जहि, 3.b inter. अत्थि and णत्थि, 4.b पभणिउं, a रविवु, 5.b यरराउ, a b भणइं, b मुणइं, 6.a सग्गें, b हो for होइ, 7.a इत्थियहि, a उयरित्थिउ, 8.b कइ व, 9.a गुणु b णासहि, 10.b णउं, 12.b भणिउं, b त्तुह, b पइं ।

(23) 1.b भणइं, 2.a रइरमणहि, a °गमणिहे, 3.a °संघहिं, a जंघहि, 4.a विसेसहि, a °पएसहि, 5.b °भम for °राय°, b °सोहंततिवलियहिं, a तिवलिहिं, 6.a °ललियंगहि, a °अणंगगलसंगहि 7.a पाणिहि, a °खाणेहि, 8.a. b णहपंतिहिं, a ससिकंतहि, 9.a पवक in margin, a °अरहिं for अहरहिं, 10.b णयणहिं, b वयणहिं, 11.a महुरालावहि, a °कलावहि, 12.b °पयडंतहि, b विसेसु, 13.b °रमणीहिं, 14.b पणमिज्जइ ।

कंतिल्लु आसि जोवइ समलु ता असि परयारे ससि समलु ।
सो मयणु जेण हुज्जउ जियउ सो देउ सुरासुर पुज्जियउ ।
तं वंदइ जो भवभमण चुयं सो णइ वंदारयवंदणुयं ।
पावेविणु सुरणररायपयं पावइ मोक्खं पिहु सोक्खमयं
इय मित्तणिमित्तें देवगुणु भासंतु संतु णोसरिवि पुणु ।
गउ खगवइणंदणु उववणहो खेयरणरवाण?णंदणहो ।

घत्ता– पुणुरवि वुत्तु खगेण सुरगिरिसिरिअहिसेयणु ।
जासु करइ हरिसेणु तुहु पणवहि सुहि तं जिणु ॥२४॥छ॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए ।
वुहहरिसेणकयाए चउत्थसंधी परिसमत्तो ॥संधि॥४॥श्लोक॥२३३॥

* * *

(2) 1.a in margin कामेण for जेण, 2.a ०अवंभवउरिरियरय, a अहल्लकयं, 3.a जोअइ, अमलु, 5.b ०चुअं, 6.a पहु, 8.b ०वाणरमंदणहो, 10.b हरिसेण, b तुहुं पणवहि, a omits छ, 12.b चउयो संधी परिछेओ समत्तो, b परिसंमत्तो ॥छ॥ संधि ॥४॥b omits श्लोक ॥२३३॥

५. पंचम संधि

(1)

कणवेएँ पुणरवि तहिँ भणिउ भिसुणि मित्त वहाडगुणु ।
देवहँ साहारणु सव्वु जिह हो इ तं पि तुह करमि पुणु ।।छ।।
अणिमा महिमा लहिमा पावइ अप्पा गम्मई सत्तु वि हावइ ।
कामरूउ वसिया सव्वाणँ इय गुण अट्ठ हुंति देवाणँ ।
एयहु अकह अउव्वउ दीसइ बम्हाइयहु लहिमगुणु सीसइ ।
जइयहो हरविवाहि कमलासणु जाउ पुरोहिउ हुणियहुयासणु ।
गउरि अणलपासहिँ भामंतउ खुहिउ पाय अंगुट्ठ णियंतउ ।
ताम तासु मयणाउरचित्तहो सुक्कच्चवणु जाउ अणुरत्तहो ।
चउरियवालुयउवरि पगलियउ लज्जए सुक्कु पयहि दरमलियउ ।
तहि अंगुट्ठसमहु गुणवंतहो अट्ठावसिहासहुयपुत्तहो ।
वालिखील णामहो सुपसिद्धहु रिसि अयत्थि सहियउ तवसिद्धहु ।
इय तइयहो उक्कोइयमयणें लहिमा गुणु पाविउ चउवयणें ।

घत्ता- तह गउरिए गिरिकइलासिहरु वुच्चइ भच्चहि दासणु वणु ।
अइ पिम्मपरव्वसु पहु वि गुणि करइ अजुत्तु वि पियवयणु ।।१।।

(२)

सिहलच्छेयनकथा

तो णाइयरसु उहीविउ हुय चंदकलालंकिउ जडसेहरु ।
वरकप्पूर धूलि धूलियतणु कुंकुमरसरंजियपुप्फाणणु ।
वसियरणंजणअंजियलोयणु मयणाहीमयवट्टयमंडणु ।
णीलणेत्तवलणवत्थमासिउ परअंगट्ठिविहूसण भूसिउ

(1) 1.b सहिँ भणिउं, 2.a देवहु, 3.b पामरुमई, b मावइ, 4.a वसियाव्वाणं, a होंहि for हुंति, 5.a एयहुं, b बंभाइयहं, 6.b •हुयासणु, 7.a •पासहि, a खुहियपायअंगुट्ठणियंतउ, 9.a •वरे for उवरि, a •पयहि, 10.b अट्ठासीसहासहुयपुत्तहु, 11.b सहियहु, a •सिद्धहो, 12.b उक्कोयिय• 13.b तहज्जुरिहे, a •कइलासहरु, b दावणु, 14.b •परव्वसु ।

कणरणंतकिंकिणिमेहलसरु वीरघंटटंकारमणोहरु ।
रयणथंतवरकंचणणेउरु जणमोहणु गायइ सुमेअसरु ।
णियकरडमरुयसरघोलियभंगउ णवविहरसवहु भावसंगउ ।
इय णडंतु गउ तावसआसमु तावसिअणहु जणंतु विरहसमु ।
भिक्खु देहु एरिसु जंपंतउ हरुरूवेण अणंगु व पत्तउ ।
कवि चिंतइ किं एहु देउ हरु णं णं चोव अहव किं मणहरु ।

घत्ता– क वि देइ भिक्ख णाणापउर वणहलकंदलकंचहि ।
सइ आइ पसाइयउववणहि मयपयदहियहि मंचहि ॥२॥

(3)

क वि हर हरियचित्त रिसिपत्ती करि करेवि देवच्चणपत्ती ।
हरणामे णियपिउ बोल्लावइ पुज्जहु देउ एमउच्चावइ ।
क वि बोल्लइ किं बुज्झइ संकरु जो तावसियहं तियहं असंकरु ।
क वि मयणवसें किं पि वियप्पइ भिक्खु भणेविणु किंचु समप्पइ ।
क वि संकरि करेवि आलिंगणु मायावयणहि रंजइ पियमणु
हले हले हउं हउं क वि उरि पेल्लिय परमत्तारहो उप्परि घल्लिय ।
क वि पिय तच्चक्खे वि ण संकइ हरहो अहरु अप्पंति ण थक्कइ ।
जसु आरूढु सरीरं मणोब्भउ सा ण मुणइ अक्खर सब्भावउ ।
क वि गउ गउ ईसरु पभणंती गय वक्कलणिवसण झायंती ।
गुरुयणपुरउ वि पिम्में विणडिय सरमहुमहिव हरोवरि णिवडिय ।

घत्ता– इय तावससणु विवरीयमणु हरदंसणे जा जायउ ।
रूसेविणु ता तावस भणहि कहि उड्डाणु समायउ ॥३॥

---

(2) 1.a णाडयरस, b उद्दीविय, a चंदकलालंकिय, 3.b वड्ढइ, 4.a घवलणयरइ-ब्भासिउ, 5.b कररणंत, a ०मेहलहरु, b omits the line वीरघट... मणहरु, 6.a जणमोहणगाइयमेयंहियरु, 7.b पउ for भंगउ, a भावरसंगउ, 8.b ०जणहं, b विरहुसंमु, 9.b भिक्खा, 11.a णाणावर, b कंदलिकंदहि, 12.b सई णावपयाइयउववणहिं ।

(3) 3.b तावसियहु, 4.b मयणवसेण किं, b भिक्ख, 5.b संकर, 6.a हले हउ काइ वि उरि, 7.a पच्चक्ख, a adds वि before संकइ, 8.b मणोभउ, a जो, b मुणइं, a adds स before सब्भावउ, 11.b तावसिगणु, 12.b भणहिं ।

(4)

पुणरवि तावसेहिं पभणिज्जइ हो पुज्जइ केत्तिय खम किज्जइ ।
जें महिलहँ आयउ कामग्गहु एयहो दट्ठहो किज्जइ णिग्गहु ।
इंदियजणिउ वियारु सरीरए दंडु पउंजहु इंदियसारए ।
एम भणेवि सा व वरसत्थें छिण्णु लिंगु तहो तावससत्थें ।
णवर ताण सव्वाण वि लिंगइ कयइ तेण परिवज्जिय अंगइ ।
चोज्ज भिण्णचित्तहि झाणें हरु तावसेहि जाणिउ मयाहरु ।
भणिउ जयहि पिहि बीरूवें हरु जयहि जयहि जलरूवें संकरु ।
संभु पवणरूवें रयणासण रइरूव जय जयहि हुयासण ।
ईसरूव जजमाण परिट्ठिय जय सिवरूवायास अणिट्ठिय ।
सोमरूव तमणास तिलोयण सुररूव महएव सुतेयण ।

घत्ता- इय अट्ठ वि मुत्तिउ तुज्झ जए परउवयारहो कारणु ।
बिहिहरिहरसव्वहि करहि पुणु सिट्ठि धरणु संहारणु ॥४॥

(5)

जं अम्हहिं अण्णाणहिं सामिय किउ अजुत्तु तं खमि वि सगामिय ।
डिंभु सपियरो अविणउ पयासइ सो परमत्थे तासु ण रुसइ ।
अम्हइ दप्पें पाविय आवइ पर चिंतिउ णियदेहहो आवइ ।
अरिहुमि उवरि सविणउ णमंतहु खमउ वज्जइ उत्तमसंतहु ।
अम्हइ पुणु पइ हियए थवेविणु अणुदिणु झायहु झाणु धरेविणु ।
तो हरु भणइ पइट्ठ करेविणु पणमहु मज्झु लिंगु पुज्जेविणु ।
पुणरवि जेण तुम्हु लिंगग्गइ लिगइ हुवहि विहिय णियसंगइ ।
हत्थपहत्थहिं णवर धरेविणु सव्वहि सव्वायासु करेविणु ।
खग्गें लेवि पइ तुट्ठंतहिं सव्वहि आसमु पत्तु चलतहि ।
कय पइट्ठ तहिं तेहिं णवंतिहि भत्तिए जय जय जय पभणंतिहि ।

घत्ता- तहो दिवसहो लग्गेवि एत्थु जय कयपमाण मुणिवयणिहिं ।
अट्टलज्जावणु वि लिंगु हरहो पुज्जिउ णरहिं अयाणहिं ॥५॥

---

(4) 1.a तावसेहि, 2.a महिलइ, 3.b जणिउं, a दंड, b ०सारउ, 5.b लिंगइ, a परिसेसिय, 6.b ०भित्तहि, a तावसेहि, 7.b भणिउं जयहि, b जयहि, 8.a ०संभ, b वणरूवें, b जयहि हुआसण, 10.a सूररूव, a सुतेयणि, 11.b कारण, 12.b विहि० b रूवहि, b धरणसंधारण।

(6)

एम सा व विवलियगुज्झवर्खे तहिं लहि मा गुणु लद्दु तियवर्खे ।
परिउंबिय छायामुहकमलहिं तहि लहि मा गुणु पाविउ अणलहिं ।
आहलु सुरयसुहाणंदहो लहि मा गुणु संजाउ सुरिंदहो ।
तवसिय परयारम्मि ससंके हुउ लहि मा गुणु जुत्तु ससंकें ।
जाणिय कुंती सुरयविसेसहो जायउ लहि मा गुणु दिवसेसहो ।
पवणवेय कित्तिउ बोलिज्जइ परयाग्गियकहाए लज्जिज्जइ ।
परयारें वियलइ गुणकित्तणु परयारेण ण होइ गरुत्तणु ।
परमारें अकयत्थु णरत्तणु परयारें णासइ देवत्तणु ।
परयारें सुवित्तु खणे खिज्जइ सयलजणहो अवि सासुप्पज्जइ ।
पियरु वि कयदोसाण परम्मुहु पर पुणु थाइ कयाइ ण सम्मुहु ।

घत्ता– सच्चउ चउमुहखरसिरखुडणु णिसुणि मित्त जं वित्तउ ।
संभू सच्चइ जेट्ठासुएण जिणवर तउ आढत्तउ ॥६॥

(7)

उग्गतवेण कालु जा गच्छइ ता विज्जासमूहु आगच्छइ ।
पुणु विज्जाणुवाउ जोयंतहो आयउ वरविज्जासमूहु तहो ।
पंचसयाइं तित्थु महविज्जहु अवरइं सत्तसयइं पुणु खुज्जहु ।

---

(5) 1.a अम्हहिं अण्णाणिहिं, b अहुत्तु, a inter. तं and खमि, 2.b डिंभे सपियरे, b पयासइ, 3.b अम्हइं, a पर चिंतिउ, b णियदेहंहो, 4.b णवंतहु खमउप्पज्जइं, 5.b अम्हइं, b मइं, 6.b भणइं, b पणवहु, 7.a तुम्ह लेंभांसइ, b लिमग्गइ, a लिगइ, हवहिं, a विय for विहिय, 8.a ॰पहुत्थहु, b सग्गिहिं सव्वायामु, 9.b बंधेहि लेवि, a पडं तुट्ठंतहिं, b पत्तचलंतहिट्ठंतहिं, 10.a तहो तेण णवंतहि सत्तिए, a पभगंतहिं, 11.a ॰वयणहिं, 12.a omits वि, a णरहिं cf. पद्मपुराण, शिवपुराण, रुद्रसंहिता (11–14), महाभारत, सौप्तिक, 17.21 etc.

(6) 1.a पाउ for लद्दु, 2.a छायसरीरि पहु ठउ समलहिं, b omits तहिं, b adds जम after पविउ, a अणलहिं, 3.b आहल्ला, 4.b तावम्मि पर॰, b ससंकहो हुउ लहि माणु जुत्तु ससंकहो, 6.b वोल्लिज्जइं, 8.a अकियत्थु, 10.b परम्मुहं, b पर, b सम्मुहं, 11.b omits सच्चउ, b चउमुहं खरसिरक्खरखुडणु, b तिह for जं, 12 संभुइ. See for अहल्या, ब्रह्मपुराण, मत्स्यपुराण, महाभारत (शान्तिपर्व) etc.

ताउ भणहि भणु भणु किं दिज्जउ सामिय किं दासत्तणु किज्जउ ।
इय बहुमुक्कपयरि जा अच्छइ ता बगकण्णउ अट्ठ णियच्छइ ।
परिमिय तिन्न बहुहि वि सुवण्णउ रइ असहंतिउ ताउ विवण्णउ ।
अट्ठविज्जकम्मु देविणु पच्छए परिणिमयउरिसुरउ किउ इच्छए ।
अकयकामसुद्धि किर पुज्जा छित्तणट्ठ ता मूलिविधिज्जा ।
पडिमापुरउ केरविणु जावँहि सो बंभणि जवइ वा तावँहि ।
विज्जा दिट्ठ तेण णायंती तियरूवेण गयणि णच्चंती ।
तं णिएवि जा पडिम णिरिक्खइ चउमहु थोव पुरिसु ता पेक्खइ ।
रासहसिरु तहो उप्परि दिट्ठउ बड्ढंतउ हुत्थें परमट्ठउ ।
णट्ठविज्ज सिरु लग्गउ करयले पुणु गय काले भमंतें महियले ।
वाणारसिसमीवि जिणवीरहो घोवबसणु करेविणु धीरहो ।
रयणि विरामे जाम पयजुयकरु भत्तिए थविउ पडिउ ता धरसिरु ।

घत्ता— इय चउमुहुधरसिरखुडणु सुहि जाउ आसि जं एरिसु ।
अण्णाणिजणहो अण्णाणि जणु भासइ तं अण्णारिसु ॥७॥

(8)

जलशिला और वानर नृत्य कथा

पुणरवि मणवेएँ भासिज्जइ अवरु वि परपुराणु दरिसिज्जइ ।
इय भणेवि रिसिरूउ धरेविणु पच्छिमदिसि पउलिहे पइ सेविणु ।
गंपिणु बंभसाले भेरि हय जा हय घंटा ता दिय आगय ।
कणयासणे मणवेउ णिविट्ठउ दियहि सगणहरेहि जिणु दिट्ठउ ।
भणिउ मुणहु कं वाउ कवणु गुरु ता भासइ भणु मण्णारिसिवरु ।
वाउ ण मुणहु णत्थि अम्हहं गुरु दिय पभणहि किं किउ भेंरीसरु ।
रिसि भासइ पिहुलए णिएविणु आवज्जउ अलब्भु मुणेविणु ।

---

(7) 1.b omits the line उज्झतेवण etc. . . . आगच्छइ. 2.b णियतहो for जोयंतहो, 3.a पंचसयाइ अवरइ सत्तवयइ, b बुणहु 4.b भणहि, 5.b बगकण्णउं, 6.b परिमिउं तिउ बवहे वि सुवणउं, 7.a पच्छइ, b •गोरिसुरउ, 8.a सुद्धिए किय पुज्जा, b मूलिविधिज्जा, 9.a जावहि a बंभणि, a तावहि, 11.b चउमुहं थोरपुरिसु ता पेच्छइ, 12.a दिट्ठिउ, 13.a काल, 15.a जाम पयजुएकरु, 16.a omits सुहि. See for the story of the ब्रह्मा & others, भागवतपुराण, मत्स्यपुराण, महाभारत (आदिपर्व) etc.

हृणिउ आवकोऊहलभावें ता दिय भणहिं किमेण पलावें ।
कहहु कहिंवि जइ मुक्करहियउ तउ दिट्ठु सुणिउ अह अइ वि पसिद्धि गउ ।
ता मुणि भणइ मुणंत वि ण मुणहु जँ कज्जे तें णिसुणहु पभणहु ।

घत्ता– कंचणपुरि णिउ गुणधम्मु तहो आसि मंति हरिसंकणु ।
तें सलिलि तरंती दिट्ठ सिल कहिय णिवहो एयं ते पुणु ॥८॥

(9)

पुणु वि पुणु वि हरि कहइ एमहो तह वि णिउ गपत्तियइ जामहो ।
छलिउ भणेवि मंतेहिं ताडिओ बंधिऊण धरणियलि पाडिओ ।
अलिउ अलिउ भणिउ जा मंतिणा ता हसेवि मेल्लविउ राइणा ।
परिहलं वहंतेण णियमणे तेण मूढकोवेण णिव वणे ।
पइसिऊण एक्केण वाणरा णट्टकम्मु सिक्खविउ जिह णरा ।
णवर कहिंमि वासरे सकतउ कीलमाणु णिउ वणे भमंतउ ।
णिएवि णच्चमाण पवगमा पेच्छ पेच्छ जा भणइ णिययमा ।
ताम सेट्ठु सुणिऊण तट्ठया तीए ते अदिट्ठ वि णट्ठया ।
णवर तेण तं पियहि भासियं ताए चोज्जु मणिहिं पयासियं ।
भणइ मंति णिउ वणे भमंतउ कहिंमि दुट्ठभूएण पत्तउ ।
ताम मंति वाईहिं राणओ बंधिऊण ताडिज्जमाणओ ।
जइ वि दिट्ठु कइणट्टु बोल्लिओ सो वि मंतिवयणेण मेल्लिओ ।

घत्ता– हरिणा वि हसेविणु णिउ भणिउ चोज्जु वियणे जं दिट्ठउ ।
तं जुत्तु वि णीउ ण सद्दहइ जइ बम्हेण वि सिट्ठउ ॥९॥

(10)

कमण्डलु और यव कथा

यथाचोक्तं तैव–

[illegible] ।
[illegible] ॥१॥

(8) 2.a पच्छिमदिसहिं–मउलि–मइ, 3.b णंपि बंभसालहे, b जा सघंट, 4.b हियहिं सवणह सेज्ज णिवु, a दिट्ठउ, 5.b भणिउं मुणहुं, b मायासिरिहर, 6.b मुणहुं, a कहहु, b पभणहि, 7.b णिहुतम, a भणेविणु for मुणेविणु, 8.b भणिउं for हणिउ a तो, b मुणहि, 9.b कहि मि, a गुणहियहु, b सुणिउं, a कंइए पविट्ठउ, 10.b ता, b भणइं b मुणहुं तें कज्जें तं, b पभणहुं, 11.a गुणधम्मं, b तहुं, b हरिसंकणु, 12.a हियजत्त for एयं ते ।

कारणेण एएण इच्छियं बहुयरं ण साहेमि पुच्छियं ।
पिय भणेहि मा भणहि एरिसं सुणहु तुज्झु जुत्तीए जारिसं ।
तो कमेण रिसिकवधारिणा भणिउ जइ ण समयाणुसारिणा ।
मज्झु ताउ जिणचरण भत्तओ मुणिहु पासि जा तेण खित्तओ ।
पढमि जाम तहिं विणयजुत्तओ एक्कदिवसें गुरुणा पउत्तओ ।
तुरिउ ऐहि घरे भरेवि कुंडियं ता गओ पहे डिंभमंडियं ।
दिट्ठु खेडु रमिउ पयट्टउ भणइ एवि ता अवरु चट्टउ ।
णासि तुज्झु गुरु कुविउ आगओ तो भएण हउं तुरिउ णिग्गओ ।
जामि जाम किर अवर पुरवरं ता णिएमि उम्मिट्ठगयवरं ।
गुलगुलंतु गज्जंतु मत्तओ मइं णिएवि कालु व्व पत्तओ ।

घत्ता— पुव्वक्किय दुक्किय कम्मु जिह करि महु पुट्ठि ण मेल्लइ ।
णासंतहो संतहो भयजुयहो देहु णिरारिउ डोल्लइ ॥१०॥

(11)

तो णासेविण सक्किउ जावहि कुंडियभिडडाले मइं ताकहि ।
धरिय तेन्थु णालेण पइट्ठउ हउं जो ताम करिंदें दिट्ठउ ।
अणुमग्गेण मज्झु तहो सो धाविउ कह व कह व हउं तेण ण पाविउ ।
कुंडियमज्झि मज्झु णासंतहो भइभएण उट्ठंतपडंतहो ।
करिणा महु चेलंचलु धरियउ हउं वियच्छु पुण्णहिं उव्वरियउ ।
मइं मुणंतु पइ दारइ कुडउ जाम ताम तइं अंतरु लद्धउ ।

---

(9) 1.a वि प्पुणु, b जण जणिय for हरि कहइ, b हरि कहंतु हरिसेण रायहो for तह वि... आयहो, 2.a मंतेहि, 3.a भणिमउ, b inter. भणिउं for भणिउ and जा, a तो, 4.a बहुतेण, a पि for पिय, 5.a सिक्खविय, 6.b णिय for णिउ, 7.b भणइं, 9.a चोजु, 10.b भणइं, b णिउ, b भमंतओ, 11.a ताव मंत वाईहि राणाओ, a ०माणंउ, 12.a कइणट्ठ, 13.b. विय सेवेणु णिउ भणिउं, a वियाण for वियणे, 14.a लोय for लोउ, b बंभेण ।

(10) 1.a स्तेन कविनाश्लोका, 2.a मद्भेवित्, cf. Amitgati's धर्मपरीक्षा, 12–72–3. 3.a खिसा, b खिस, 4.a एण for एएण, b बिहयरं, 5.b दिय भणेंहि, a मुणहु उत्तजुत्तीए, 6.b सो for तो, भणिउं, 7.b मुणिहे, a हउ for जा, 7.b जास for जाम, a तहि, 9.b एहिं, 10.b खेड, b पयट्टउं, a एव, b तां, b चट्टओ, 11.a भण for भएण, a हउ, 13.b ०वुलंत गज्जंत a मइ, 14.a कम्म तिह, b मेल्लइं, 15.a णिराउ ।

भिमारिय सुहिरें णीसरियउ 'आम पलीयमि दूरंतरियउ ।
ताम हु खिज्जेण वि णिग्गंतउ पेच्छमि पुच्छवाले गउ कुतउ।
एत्थंतरे मई बोल्लि मावें मउ माविट्ठु महु मावें ।
अवरु वि जो परपीडहिं कारणु सो वि लहइ दुहु जिह सो कारणु ।
हउँ पुणु अवरणयरि पइसेविणु जिणभवणम्मि पमाहिण देविणु ।
जिणु वंदेविणु मज्झे णिविट्ठउ मुणिउवयरणु जुण्णु ता दिट्ठउ ।

घत्ता– जिणमंदिरु सुण्णउ णिएवि मई चिंतिउ हउँ सावयहु सुउ ।
चीररहिउ को तं को देइ महु कारणेण इय लिंगि हुउ ॥११॥

(12)

संबंधु इय कहिउ सइ जेम तउ गहिउ ।
तो भणिउ वियवरहिं किं सच्चवय धरहिं ।
भवियव्वु णियमेण तुहुँ चसु धम्मेण ।
कुट्ठेण सव्वेण णिम्मियउ दइवेण ।
तं सुणेवि मुणि लवइ एउ अलिउ संभवइ ।
जइ वेइ ण उ हवइ वियसत्थु पुणु चवइ ।
अम्हेहिं ण उ मुणिउ तुहुँ भणहिं जइ सुणिउ ।
मुणि भणइ णिब्भंतु जाणेमि भयवंतु ।
पर तुम्ह बीहेमि तेण जिण साहेमि ।
दिय भणहिं जइ मुणहि तो णत्थि छलु भणहि ।

घत्ता– जइ को वि हेउ दिट्ठंत णय सहिउ वयणु मुणि जंपइ ।
णिम्मच्छर तो फुडु वि उ सुसहुं किं विवरीउ वियप्पइ ॥१२॥

---

(11) 1.b जावहिं, b णिडियालि, a मइ, b तावहिं, 2.b तेण for तेत्थु, a हउ, b जा, 3.b omits तहो, a हउ, 4.b ॰मएण्ण, 5.b दिट्ठु for महु, a हउ, a पुण्णहिं, 6.a मइ, a जाव ताव मइ 7.b सुमरें, 9.b पाविट्ठवट्ठु, 10.b दुहुं, 11.a हउ, b ॰ववणंति, 13.a जिणुमंदिरु, a मइ, a हउ, b सावयहु, 14.a omits तं, a देउ महु हु ।

(12) 1.b सई, a जेव, 2.b भणिउं वियवरहिं किर सच्चु जइ वरहि, 3.a भवियव्व, a तुहु चत्तुम धम्मेण, 4.b णिक्किमयउं, 6.a ण उ, a पुणु, 7.a अम्हेहिं, b मुणिहुं, a तुह, b भणहिं, a ज for जइ, 8.b जाणामि, 9.b साहेमि, 10.b भणहि, b मुणहिं, b भणहिं ।

(13)

पौराणिक कथाओं पर प्रश्नचिन्ह

एत्थंतरि सो दियवरसिरोमणि णवयणसुणि बोल्लइ मायामुणि ।
रामसुयमहक्किहि अणुराएं भणिउ सहाए बुहहिट्ठसराएं ।
वाणु कय अण्णविप्प कणिणाहे आइएण ससरि सिसणाहें ।
णासइ पर सो कह आणिज्जइ सो तहिं अच्चुणेण पमाणिज्जइ ।
आणमि हउँ ता पेसिउ रएं महिबलु दारेविणु णाराएं ।
पायालए पइसेवि णरेणँ आणिउ तेण वि सरसु सिरेणं ।
विणयपसण्णवयणु फणिराणउ 'रिसिजुउ दहबलकोडि समाणउ ।
इय वेयत्थि पुराणें तुम्हह अत्थि ण वा फुडु साहह अम्हह ।
दिय भासिहि कहिए गउ सच्चउ जो णउ मण्णइ सो वि असच्चउ ।
तो खगु भणइ दियंबरवेसें सामरमुणिवलरिट्ठि फणीसें ।
सरविवरे वि माइ तं मण्णहु किं मइँ भणिउ वयणु अवगण्णहु ।
तं णिसुणेविणु विप्पहिं घुट्ठउ जइ तुहु कुंहिहि सकरि पइट्ठउ ।

घत्ता– तो थिर णासंतउ कह भमिउ कह सो भेउ ण भग्गउ ।
णिग्गए गए भिंगारिय सुसिरे पुच्छवालु कह लग्गउ ॥१३॥

(14)

जिणकमकमलु भसलु पुणु भासइ एरिसु किं ण पुराणहिं सीसइ ।
करअंगुट्ठसमेण सजलयव रिसिअगत्थिणा पीहिउ सायर ।
तासु उवरि किह माइ जलहिजलु कह ण कमंडले माइ तहुँ मयगलु ।
अवरु वि पलयभिया वणुरिउणा थविउ तिलोउ उयरे किह हरिणा ।
कहिं मइ तिहुयणु इय चिंतंतउ जोयइ जाम विरिंचि भमंतउ ।
ताम ससत्थियवक्लि तें दिट्ठउ कुमावलि अवालिततलि णिविट्ठउ ।

---

(13) 2.b भणिउं सभाए, 3.a वाणुय भिण्णवण्णहो कणिणाहइ आपएणा, a ०सणाहु, 4.a तहिं, 5.a हुउ, b पेसिउं, a णराएं 6.b आणिउं, 7.b ०पसणु, a रिसिजुय, 8.a वेयत्थ, b तुम्हहं, b सहहु अम्हहं, 9.b भासहिं, a कहिहि, b ण वि मण्णइं, 10.b भणइं, b सामतुमुणिवलु रिट्ठ, 11.b मण्णहुं, a मइ, b भणिउं, a अवगण्णहो, b अवगण्णहुं, 12.a विप्पहिं, b तुहुं, 13.b किह भमिउं, b किह, 14.b किह. See for the [illegible], महाभारत, मत्स्यपुराण etc.

सरिस व सरिसु कमंडलु तालए अवलंबियउ दिट्ठु अविसालए ।
रिसिणा अब्भुत्थाणु करेविणु पुच्छिउ बंभु सिरेण नवेविणु ।
तुम्हहँ कज्जे केण समागय तेण जंपिउ महु भय कारण वि गय ।
अह केण विणासिय ण मुणिज्जइ एत्थंतर मुणिणा पभणिज्जइ ।

घत्ता– जं णिम्मियउ तुम्हहँ आयरेण तं किर काहिं इय जोयहो ।
पइसेवि कमंडले महु तणए तिहुयणु देव पलोयहो ॥१४॥

(15)

जा अयत्थियवयणेण पइसइ बंभु कमंडले
ता णिएइ तहिं सुत्तु पुरिसु वडदलहो विउलदले ।
कवणु एहु चिंतंतु एम किर णियडए गच्छइ
तो णिएवि विण्हुत्ति बंभु पुणु पच्छा पुच्छइ ।
किं हरि तं सुत्तो सि एत्थ ता हरिणा जंपिउ
तिहुयणु जं मइ रयउ देव तुज्झु वि णिरु अंपिउ ।
त मा पलए विणासु जाउ इय उयरि करेविणु
सुत्तउ गुरुभारेण संतु एयंतु भणेविणु ।
तो तं वयणु सुणेवि बंभु मणि णिरु पंजोल्लिउ
साहु कयउ इच्छमि विण्हु दट्ठु इय बोल्लिउ ।
तो हरि भणइ णिएहि सिट्ठि मुंडेण वि सेविणु
ता पइसेवि चराचरं पि लो यं पिच्छेविणु ।
किर णिग्गइ सो ताइ ताम अपविस्तउ भावइ
णाहिकमलसुसिरेण हरिछेणीसरियउ पयावइ ।
णवर कमलकण्णियए बसणकेसरहिं आलुद्धउ,
चंदलेहिया णाम छेदु वि वुहयण पसिद्धउ ।

घत्ता– तो कमलु जि आसणु होउ इय चिंतेवि णिविट्ठउ ।
तहो दिवसहो लग्गिवि चउवयणु कमलासणु जगि घुट्ठउ ॥१५॥

---

(14) 1 b किण्ण, a पुराणहि, b सीसइं, 2.b •अयत्थियणा, 3.b उयरि, a कह for किह, a कमंडलु लइ, b लिहुं, 4.b उयरि, 5.a काहि, a कोइस, a. in margin बह्मा, 6.a in margin कमलिद, a घुमाउले, b महट्ठउ, 7.a अविलंबियउ, 8.b सिरेणा, a नवेणु, 9.a तुम्हइ, b कज्जें, b समागया. b, भणिउं, 10.a मय for भ, 11.a जे for जं, b णिम्मिउं, a तुम्हहि आयरेणा, 11.a इह for इय, 12.a कमंडल, b तणइं ।

(16)

भणइ पुणु वि मुणि विसहु असच्चउ परिहरहु
एरिसु अत्थि पुराणि ण वा फुडु वज्जरहु
दियवर भणहिं पुराणि पसिद्धउ रूढिगए
वेयवयणु किं को वि असच्चउ भणइ जए ।
तो खगमुणि पभणेइ सरिसवसम कुंडियहे
तिहुयणु माइ किं ण करि मईं सहु कुंडियहे ।
लोयभरेण ण भज्जइ एसिहिं तंबु जिह
महु सकरिहे भरवि सहइ भिडहो डालु तिह ।
किह सयंभु विणिग्गउ जलरुहकण्णियहे
लग्गइ बंभु काइ ण करी भिंगारियहे ।
इय पुराणु जइ अलियउ तो मज्झु वि वयणु
तं णिसुणेवि णिरुत्तरु जायउ विप्पगणु ।
कवडरिसी तो सुहिवयणु णिएविणु हसिउ
हरि तिहुयणु गिलिऊण कमंडले जइ वसिउ ।
तो कहिं एसि अयत्थि कमंडलु थिउ चडेवि
कहिं वडविडवि परिट्ठिउ जहिं ठिहु हरि चडिव ।
पुव्वावरहिं विरुद्धउ णाणिहिं उवहसिउ
एहउ जो पडिवज्जइ फुडु सो साहसिउ ।
इय परवइयपुराणे ण सच्चउ मइं मुणिउ
रासहछंदु वियाणहु एरिसु मइं भणिउ ।

घत्ता– तहिं जो वि हु सुमरियमेत्तु णिव मिल्लावहिं भवपासहो ।
सइं बुप्पइ विण्हुणाहिकमले कह एउ होइ ण हासहो ॥१६॥

(17)

कमलासणासु जइ णाणु अत्थि किं सिट्ठिवस पुच्छिउ अयत्थि ।
जइ करइ णारि तिहुयणविसिट्ठु सइ रित्थि काइ सेवइ णिकिट्ठु ।

---

(15) 1.a जाम, b पईसइ, a बइसवइ, 2.a ता मुणेवि, 3.a एत्थु, a रहउ, 4.a एयंसु, 5.b inter. मणे for मणि and थिव, a इयं, 6.b भणइं, a म्मि for णि, 7.b णिग्गइं सोत्ताइं, a अवविसइ, a णाहिकमल०, b णीसरिउं, 8.a चंवलेहिव, 9.a चित्तेवि. See for the story मत्स्यपुराण, महाभारत (वनपर्व) etc.

जइ जाणइ सिद्दिठहिं भवइ विण्हु कि ण मुणिउ णियसियहरण विण्हु ।
णियजम्म कहिय णारयहो जेण कि पुच्छिउ अहि णियवत्त तेण ।

तथा चोक्तं–

भो भो भुजंगतरुपल्लवलोलजिह्वे बंधूकपुष्पदलसन्निभलोहिताक्षे ।
पृच्छामि ते पवनभोजनकोमलांगी काचित्त्वया शरदचंद्रमुखी न दृष्टा ॥१॥
गता सा चंपकपुष्पवर्णी पीनस्तनी कुंकुमचर्चितांगी ।
आकाशगंगा हिमशीतलांगी नक्षत्रमध्ये शशिचंद्ररेखा ॥२॥

जो मोहइ भुवणत्तउ खणेण सो किम समरि सहु लक्खणेण ।
महिरावणेहि पासेहिं बद्धु मोहें किं महि रावणु ण छुद्धु ।
इय गुरुअच्छरिय परंपराए हो हो पूरइ विम्भयकराए ।
किं बहुणा जिसणहो जयपयासु भुक्खा तण्हा भउ राउ दोसु ।
मोहो चिंता वर वाहि मरणु सेउ खेउ मउ अरइ करणु ।
विम्भउ जम्मणु णिद्दा विसाउ इय दोससहिउ भउ होइ देउ ।

घत्ता– एए अट्ठारह दोस जए सव्वाण वि दुहकारण ।
सुहु जीवहो कउ कय जाव णवि एयहो दूरो सारण ॥१७॥

(18)

हवि हरि छुहणिद्दादोसाउर रायरयहि पीडिय चउमुहरुह ।
जमु विहुयणचिंताए णिरुद्धओ रवि अफंसु कोढेण पसिद्धओ ।

---

(16) 1. b भणइं, a पुराणें, 2. a पुराणें, a रूढिगउ, b भणइं, a जइ, 3. a कुंडियहो, a.b किण्ण, a मइ, a कुंडियहो, b उंडियहे, 5. a कह, a बम्ह, a मिगारियहे, 6. a विप्पुगणु, b विप्पगणु, 7. a विसिउ, 8. b एसि in margin चउमि, a मइ in both places, b वियाणहुं, a भणिउं b भणि, 11. b तह जो वि हि, b मिल्लवइ, 12. a सइ, a मुप्पइ विम्हणाहि॰, a ताहहो, b हासओ ।

(17) 1. b repeats जइं णाणु, a सदि्ठवत्त, 2. b जइं करइं, b ॰विसिदि्ठ, b सेवइं णिकिट्ठा, 3. b जइं, b दि्ठहि, 4. b णायरहो, 5. b भुजगतरुपल्लव, a जिव्हा, b बधूकं, a ॰सन्निहलोहि ताक्ष, 6. a भो for ते, b पवनभोजण-कोमलांगी, a ॰सरद॰, 7. a पुष्फुवर्णी, a ॰चर्चितांगी, 8. b omits the verse गता गता etc to ॰चंद्ररेखा, 9. b मोहइं, b सह for सह, 10. b छद्ध, 11. a पच्छरिय, b परंपराइं, a विम्मय॰ b ॰कराइं, 13. b चिंता, b वहि, b adds तह before सेउ, a सेउ खेऊ, b खेउं मउं, a अरई, 14. b विमउ, b ॰सहिउं, a होउ, b देउं, 15. b अट्ठारहं, 16. b जीवहु कउं, b जाम, a णेवि, b एयहुदूरो ।

जो जो देउ वि पहरणु धारइ सो सो भयजुउ पर संहारइ ।
इय तिलोउ कुकम्मणिबद्धउ छुहतिसाइ दोसहिँ उट्ठद्धउ ।
जे पुण छुहतिसाए परिवज्जिय ते जिण सुरणरविसहरपुज्जिय ।
गय घणकम्मबहल सासयसुह थिय परिस गुण गुणसयणिहि ।
अह केत्तिउ गुणगणु अक्खेवउ देवें देउ णरें णरु परिक्खेवउ ।
धम्मेँ धम्मसारु अह जइणा आयमु आयमेण बहुभइणा ।

घत्ता– जिह चउहिँ सुवण्णु परिक्खियइ ताव छेयकसताडणहिँ ।
देवा इय दयसुय तवचरिय गुणहिँ मुणेवउ सज्जणहिँ ॥१८॥

(19)

जासु अहिंसासासणु सासणु सासयसुह संपावणु पावणु ।
भाविज्जइ मुणिवंदहिँ वंदहिँ वुच्चइ देवा सारहिँ सारहिँ ।
जासु असोउ विसालउ सालउ सुर मुयंति संफुल्लइ फुल्लइ ।
पहवइ सयलु वि भासा भासा परिखिवंति णिव्वामर चामर ।
सिंहासणु जयसुहयरु सुहयरु भामंडल जियभावइ भावइ ।
दुंदुहिसरु जगु बहिरइ बहिरइ छत्तत्तउ ससिभासिउ भासिउ ।
सो देवाण वि देवो देवो अहिवंदेउ अरिहंतं हुंतं ।

घत्ता– तें भासिउ दहविहु धम्मु वरु अह सुपरिक्खेवि किज्जइ ।
चउगइ संसारहो तणउ दुहु तो अइरेण वि छिज्जइ ॥१९॥

(20)

तह जिणेण जो भासिउ आयमु सो सम्मापवग्गु सुह आयमु ।
जे अरि सुहि तणकंचणसमाणा ते मुणिवर गुरु भणिय समाणा ।
खमगुणेण जे जिणहिँ वसुंधर पंचमहव्वयभार धुरंधर ।

---

(18) 1.b ०दोसायर राइ रइहिँ पडिय चउंमुहसर, 2.b तिहुयणचिताइं, b अफसु, 3.b धारओ, b पसुसंहारओ, 4.a तिलोय, b छुहतिसाहं, 5.b जो for जे, 6.b ०फबल, b गुणगणणिहु, 7.b देवे, b णरे नरु, 9.b सुवणु a छेज्ज०, 10.a गुणहि, b मुणेवा for मुणेवउ ।

(19) 1.a ०सुह, 2.a भाणहि जइ मुणिवंदहि, b वंदहि वुच्चइ, b सारहि सारहि, 3.b संफुल्लइं फुल्लइं, 5.a व for भव० a in margin explains भवहिसय रत्तमक्कमावें, 7.b हरिहरहिं न भरियइं भरियइं, 8.b अहिवंदे, 9.a सुपरिक्ख वि, 10.b तणउं ।

पंचमसमिदि सब्भाव पयासण अट्ठकम्मबंधणमहणहुयासण ।
तिसगुत्तिरयणत्तयभासिय भूयहिं जेहिं अहिंसा भासिय ।
एरिसु धम्मु देउ आगमु गुरु जो मण्णइ तहो सुणसंयमु गुरु ।
किं बहुएण सारु अक्खिज्जइ जिणगुणसुमरणें कलिमलु खिज्जइ ।

घत्ता– हरिसेण ते आयारु जसु रूउ मुणिहिं झाइज्जइ ।
तहो णयणरामणंदियहो जिणणाहहो पणविज्जइ ॥२०॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए ॥
बुहहरिसेणकहाए पंचमसंधि परिच्छेओ समत्तो ॥छ॥५॥ श्लोक ॥१९४॥

* * *

(20) 1.b जं for जो, 3.a बसुधर, b •महाबय•, 4.a •बण• for •घण•, a •हुबासण, b हुयासण, 5.b •रयणत्तयभूसिय, a भुयहं जेहि, 6.b मण्णइं, 7.a •समरणे,. 8.b तेम for ते, 10.a चउग्गाहि, 11.b संधी, a परि for परिच्छओ), a संमत्तो, b omits श्लोक ॥१९४॥

६. छट्ठ संधि

(1)

लोकस्थिति : नरक वर्णन

गुणलिसु भणेवि देवधम्मआयमजइहु ।
णिग्गउ मणवेउ विम्हहु लाइवि दियवइहु ॥ छ ॥

पुणु उववणे थाएविणु मित्तहो लोयट्ठिदि पभणइ गुणवंतहो ।
लोउ अणाइणिहउ जिणु भासइ करइ ण धरइ ण कोइ वि णासइ ।
थिउ तिवायवेढिउ अविणासहो मज्झि अणंताणंतायासहो ।
णिच्चलु चउदहरज्जु पमाणउ तलि वेत्तासण अणुहरमाणउ ।
झल्लरिरूउ मज्झि जाणिज्जइ उवरि मुयं गुणाइं भाविज्जइ ।
सयलु वि तलउब्भयसारिच्छउ छुडु जीवाइदव्व परिहुच्छउ ।
तहिं अह लोए अहो हो संठिउ भूमिउ सत्त मुदुक्खाहिट्ठिउ ।
रयणप्पह अवर वि सक्करपह वालुयपह तह पुणु पंकप्पह ।
धूमप्पह तमपह तमतमपह णामसमाणताहं सयलह पह ।
तहिं बिलाण चउरासीलक्खइ संभवंति संपाइय दुक्खइ ।

घत्ता— रयणप्पहमहिहि तीसलक्ख णाणिहिं मुणिय ।
सक्करपहधरहि लक्ख पंचवीस जि भणिय ॥१॥

(2)

वालुप्पहाहि ते पंचदहा पंकपहाहि संभवहि दहा ।
णारइयणियर दुक्खावलक्ख धूमप्पहाहि पुणु तिण्णिलक्ख ।
पंचाणुलक्खु तह तमपहाहि पंचेव बिलइ तमतमपहाहि ।

(1) 1.a जइयहु, 2.b विभउ, 3.b पभणइ गुणवंतहु, 6 a पमाणो, a अणुहरमाणो, 7.b ओल्लरित्तउ, a गुणाइ, 8.b वि तणुतुंबय सारिच्छउ, a ०सारिच्छा, a परिहुच्छो, 9.a तहे, b भूमिउं, 10.a वालुप्पह, b पंकप्पहं, 11.b सयल वि पहं, 12.a तहि, b ०लक्खइं, b दुक्खइं, 13.a णाणिहि, 14.b सक्कारपहु, a भणिया ।

तहिं उप्पज्जहिं पर मच्छरया पल मद्दु पंचु वर भक्खिरया ।
हिंसयर असच्चवयणभणणा परदव्वहरण परतियरमणा ।
परिगहगहणम्मि अतिसियरा परवंचणपरअक्खारया ।
णारयकयदुक्खुपायणाइं कढकढकढंतजलपायणाइं ।
लोहमयतत्तपलकवलणाइं कुंभीपायाणल पउलणाइं ।
असिपत्तवणंतर पाडणाइं चडचडचडियजीहु उप्पाडणाइं ।
पाणहरदुक्खविरइयगणाइं तत्तायसमहिलालिंगणाइं ।
सिरधारियलोहधराधराइं णिज्जियगरुयसव्वसुंधराइं ।
इय एवमाइं दुक्खइं सहंत गय जम्मवइ खइयउ कहंत ।

घत्ता– हम्मंत हणंत करुणु रुवंत महिहि घुलहि ।
सयखंडगयाइ वि पुणरवि तहं देहहि मिलहि ॥२॥

(3)

भवनवासी देव वर्णन

इतो भावनव्यंतरसुरा सन्निहिता
इति सामान्येन किंचित्सुरस्वरूपमुच्यते ॥ तद्यथा ॥

उववाइय जम्मघायरहिया सुरहवहि विउव्वण गुणसहिया ।
चउरंससरीर चारुवयणा सोहग्गरूव णिज्जियमयणा ।
वलवंतणउँ सयवेयचुया अवि हिंडिय आउ पलंबभुया ।
जरवाहिविवज्जियकंतिजुया पुण्णाणुरूव परिवारजुया ।
अणिमाइय अट्ठरिद्धिणिलया णाणाविहवं सुयबहुविलया ।
आयारविराइय अलिचिहुरा सहजायकणयमणिमउडधरा ।
कुंडलजुयमंडियगंडयला विलुलियहारावलिवच्छयला ।
केऊरविहूसियभुयसिहरा खणखणखणंत मणिकडयकरा ।
किंकिणिकणंतकडिसुत्तधरा पयरणझणंत मंजीरसरा ।

---

(2) 2.b घम्मपहाहिं, 3.b पंचोणु, a तह तमरहाहे, 4.a उपज्जहिं, a पंचु, b तुक्खिरया, 6.b परिगहणम्मि, b परवंचणयरअबयारयरा, 7.a ॰प्पायणाइ, a ॰जलपायणाइ, 8.a ॰पलकवलणाइ, a पउलणाइ, 9.a पाडणाइ, b omits some चड. a उप्पाडणाइ, 10.b अमहुयरदुक्ख॰, a ॰गणाइ, b घणाइ, a लिंगणाइ, 11.a ॰धराइ, b ॰गरुवत्तवसुधराइँ, a ॰वसुंधराइ, 12.a एवमाइ दुक्खइ, 13.b हम्मत, b रुवंतहं महि घुलइं, 14.a पयरा वि, b ताह देह मिलहिं ।

अच्छरकरचलियसियचमरा इय एवमाइ वर गुणणियरा ।

घत्ता– चिंतिय आहार विविहभोयसंतित्तमणा ।
वज्जियणीहार हियइच्छिय अखलियगमणा ॥३॥

(4)

रयणप्पहणारइय मुएविणु जोयणसहसु उवरि लंघेविणु ।
भवणणिवासियदेव परिट्ठिया ते दहविह संखाए अहिट्ठिया ।
असुरोरयसुवण्णदीवोवहि थणियतडि दिसग्गिवायकुमरसुहि ।
सहजहु कणयरयणमयसिहरहु चउसट्ठी लक्खइ असुरहरहु ।
ताणोवरि णायकुमरणिलयहु चउरासी लक्खाइ अविलयहु ।
हेमकुमारहु भोयाहिट्ठिउ भवणहु लक्ख बहत्तरि संठिउ ।
तह दीवोवहि थणियकुमारहु तडि दिसग्गिकुमरहु सुकुमारहु ।
एक्केक्काण विवज्जिय दुक्खइ वरगेहाइ छहत्तरि लक्खइ ।
पुणु छण्णवइलक्ख णिरु रम्मइँ होंहि अणिलकुमार सुरहहम्मइँ ।
मज्झिममहि अप्पट्ठिय भेयहिं जोयणलक्खु अलंकिउ एयहिं ।

घत्ता– इय कोडिउ सत्त बाहत्तरि लक्खहि सहिउ ।
भावणभवणाहु एक्कहि पिंडेविणु कहिउ ॥४॥

(5)

व्यंतर–ज्योतिष देव वर्णन

उवरि अट्ठविह संठिय विंतर तत्थ पढम पभणिज्जहि किंणर ।
किं पुरूसोरुउरय गंधव्वय जक्ख रक्ख तह भूयपिसायय ।

---

(3) 3.b जम्मजाओ रहिया, 4.b तविहडिय, 6.b पुण्णाणुरूव, 8.b सहजायमउं-डमणिकुंडधरा, 10.a मणिकणयकरा, 13.a चिंतियइ, a विविहभेयेसंसित्तमणा, 14.a ◦गमणु, b ◦गमण ।

(4) 1.a ◦सहसउवरि, 2.b परिट्ठिय, b अहिट्ठिय, 3.a असुरोरग सवण्ण◦, a थिणिय◦, a ◦कुमारसुहिं, 4.b लखइ असुरहरहो, 5 b फणिकुमरहो णिलया, b लक्खइं, 6.a सुवण for हेम◦ a भोयहिट्ठिय, a भुवणह, a संठिय, 7.a तहि दीवोयहि, a कुमारहो, a दिसग्गि सकुमह कुमारहु, 8.b दुक्खइं, b लक्खइं, 9.a ◦रम्मह, a ◦हम्मंह, 10.a भेयहि, a एयहिं, 11.b सत्ता for सत्त, b लक्खहं, 12.b ◦भवणाहं ।

एयहु पुरणयरेंहि विमाणेंहि रयणमएंहि असंखपमाणहिं ।
तिरियलोउ अकएंहि विहूसिउ इय सेणियहो जिणिंदि भासिउ ।
मज्झिमलोय गुणेंहि अहिट्ठिय दीवसमुद्दअसंख परिट्ठिय ।
मणुयखेतु अड्ढाइय दीवहिं पुणु तिरिक्ख पंचेंदिय जीवहिं ।
पूरिउ मणुसुत्तर परहुत्तउ जामसयंभुरमणु जिणवुत्तउ ।
जोयणसयइ अट्ठदहक्कणइं उवरि कमेविणु जोइसभवणइं ।
तहिं जोइससुर पंचपयारय रविससिगहणक्खत्ततारय ।
विप्फुरंत णाणामणिरयणइं एयहु संख,विहीण विमाणइं ।

घत्ता– उवरोवरी ताण वहमाणियसुर कहमि सुणु ।
ते कप्पुववण्ण कप्पतीद वि होंति पुणु ॥५॥

(6)

वैमानिक देव वर्णन

सोहम्मो ईसाणो अवरो तइओ भण्णइ सणयकुमारो ।
माहिंदो बंभा बंभोत्तरु लंतउ तह काविट्ठु अणंतरु ।
सुक्का महसुक्को य समारो सहयारो आणयपाणयरो ।
आरणु अच्चुउ एए कप्पा उड्ढं णवगइवेय वि अप्पा ।
उप्परि णव अणुदिस पभणिज्जहिं पुव्वदिसाइ कमेण गणिज्जहिं ।
लच्छि सोमुलच्छी मालिवरो सोमरुवेरो अंको अवरो ।
वरो अणुफलिहो य अणुवमो मज्झें थिउ आइच्चो णवमो ।
उप्परि पंचाणुत्तर भासिय हरिजमवरुणकुबेरदिसासिय ।
विजउ वइजयंतो वि जयंतो तहिं चउत्थु अवराइउ वुत्तो ।
तह सव्वत्थसिद्धि सयलुत्तमु इहु मज्झम्मि परिट्ठिय पंचमु ।
पुणु सव्वत्थसिद्धि लंघेविणु वारहजोयण उवरि कमेविणु ।
थिय विवरीयछत्त आयारें मोक्खासिला जि लोयवित्थारें ।

घत्ता– सा ससि भासेहि मज्झि अट्ठजोयण कहिय ।
पासहिं हीयंति मक्खिय पंख व तणुय थिय ॥६॥

---

(5) 1.b भणिज्जहिं, 2.a रुउरय is explained as गरुड in margin 3.b एयहं, a पुरणयरेंहि विमाणहि रयणमएहि असंखइ माणहि, 4.a अकरएहि, a सेणियहो, 5.a गुणेहि, 6.a दीवहि, 7.a जाव सयंभुरमणु, 8.a ऊणइ, a भुवणइ, 9.a तहि, 10.a •रयणइ तहि परि संख•, a विमाणइ, 12.a कप्पववण्ण, a होहि ।

(7)

विद्दुमपोमरायरवि कंतहि वरकक्केयववज्जससिकंतहि ।
पोमरायगरुडोवलणीणीलहि मरगयइंदणीलमहणीलहि ।
इय णाणारयणहि णिरु रइयहो सुहसासयहो अणेयायारहो ।
वियसियमहमहंतमंदारहो सुरतरुतोरणपल्लवदारहो ।
घणलंबंततारतरहारहो पंचवण्णधयमालाहारहो ।
कामिणिकरवीणाझंकारहो वेणुरावरंजिय सुरणियरहो ।
वरसंगीयमहाझुणिसारहो पडहमुयंगभेरिगंभीरहो ।
वरणाडयणिरुद्धसंचारहो वंदिण कय जय जय उच्चारहो ।
सुरणिकायकामिणिय उज्जाणहो णहि भमंत मणिमंडियजाणहो ।
थिय बत्तीसलक्ख सुहठाणहो सोहम्मि वरसग्गम्मि विमाणहो ।

घत्ता– लक्खट्ठावीस वारह अट्ठ कमेण तहि ।
चउलक्ख हवंति मिलिएहि मिउवरि महि विहि ॥७॥

(8)

विहि कप्पिहि सुरेहि वरसइ समद्दियाइ पंचाससहासइ ।
सुक्को महसुक्को वि विमाणहो फुडु चालीस सहासइ पमाणहो ।

---

(6) 1.b भणणइं, 3.b सुक्के, 4.b आरण, 5.b यगुदिस, a गणिज्जहि, 6.a मालिवइ, 7.b वेरोयणुफलिहो, a अणुफलिह यणुधमो, b ठिय, 8.a यम for जम, 9.a विजय, b जहि, 10.a Corrects ०सिट्ठि for ०सिद्धि, b तह for इहु, b उत्तमु for पंचमु, 13.a भासेहि, a कहिया, 14.a पंख, b पक्ख तणु, a थिय, a थिया ।

(7) 1.b रुइकंतहि, a ०कंतहि, a ससिकंतहि, 2.a ०णीलहि, a ०महणीलहि, 3.a ०रयणहि, b णिरुद्धसंचारहो, b takes the line वंदिण कय जय जय उच्चारहो after णिरुद्ध संचारहो and adds णाणारयणहि णिरु इइयरहो before सुहसासयहो, 4.b omits वियसियमहमहंत etc. to तारतरहारहो after अणेयायारहो, 7.a ०सारहुं, a ०गंभीरहुं, 8.b omits वरणाडयणिरुद्धसंचारहो, b omits the line वंदिण etc. . . उच्चारहो which is taken above, 9.a उज्जाणहुं, a ०मंडियजाणहुं, 10.a सुहथाणहुं, b omits वर, a विमाणहि, 11.b लक्खइ अट्ठावास, a जहि for तहि, 12.b चउलणाइ हवंति मिलिएहि मिओवरमि विहि ।

तह सयारि सहसरि पसिद्धहो छह जि सहास विमाणहं रिद्धहो ।
आणयाइं उवरिम चउकप्पहि सत्त जि सयइ विविहमाहप्पहि ।
नहि पुणु सउ पयारहि अहियउ तहि मिलिवि सउ सत्तहि सहियउ ।
उवरिम तिहि गइ वेयहि साहिय हवहि णवइ विमाणएक्काहिय ।
अणुदिस णव पंचेव अणुत्तर एय जिण भणहि तिलोय महत्तर ।
कप्पुवण्ण कप्पवासिय सुर कप्पातीदहमिंद सुभासुर ।
कय बालतव अकामियणिज्जर तह सरायसंजम वयजज्जर ।
दिढसंमत्तसील कय तव णर सुहकम्मे उप्पज्जहि तहि सुर ।

घत्ता– चउरासीलक्ख सत्तणवइसहस हिय ।
तेवीस विमाण एक्कहि मेलिविणु कहिय ॥८॥

(9)

चारुसुवण्णभित्तिरइरम्मइं वरउत्तुंगसिहए बहु भूमइं
णाणामणिकलसावलि सारइं विद्दुममयविमाणमलसारइं ।
चंदकंत भा भासिय गयणइं सूरकंतपडिहयरविकिरणइं ।
पंचवण्ण मणिगणमयदारइं टणटणंत घंटा टंकारइं ।
मरगयफलिहणीलवरसालइं झणझणंत घुयकिंकिणिजालइं ।
विविहालंबिकुसुमसुमालइं सुरणिकाय कयथोत्त व मालइं ।
दिणयरकोडिपडिमजिणबिंबइं भवणिवडंत भवियणालंबइं ।
णट्टसालगोउरसिहरालइ जलरुहछण्णतलायविसालइ ।
दुदुहिसरभरंतदिव्वलयइं उववणपरिभमंतसुरविलयइं ।
भवियविंद पारंभिय ण्हवणइं अत्थि अकित्तिमाइं जिणभवणइं ।

घत्ता– सुरलोइ इमाइ गिहविमाणभवणइं मुणहि ।
महियलि अडवण्ण चउसयाइं संखए गणहि ॥९॥

---

(8) 1.a तरबाअइ, b वरसइं, b समुदाइय पंचासहासइं, 2.a सुक्के महसुक्के विमाणहु, b चालीसा सहास, a माणहु, 3.a पसिद्धउ, a विमाणहु, रिद्धहु, 4.a आणआइ, b चउकप्पहिं, b सइं for सयइ, 5.a तिहि, b सउं पयारहं अहियउं, a तहि, a विहियउ for सहियउ, 6.b गई, a वेयहि is explained as जिनै: कथिता in margin, 7.b भण तिलोया, 8.b कप्पुववण्ण, b सुभासुभर, 10.b ०समत्त, b सुहफलेण उप्पज्जहि तहि, 11.b सत्ताणवइ सहस अहिय, 12.b विमाणण ।

(10)

कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालय

महियले जिणवरभवण असंखइ   णाणावण्णविचित्त महंतइ ।
पंचहि मेरुहिं चउदवणेहिं   चउ चउ हवंति पमणिउ जिणहिं ।
एक्केक्कमेरुपासहि दुसंख   सालम्मलिजंबूआइरुक्ख ।
गयदंतगिरि वि चउ चउ विसालु   कुलसेलहि छहि मंडियउ पासु ।
धादइसंडे तह पोक्खरद्धे   सरिसण्णिहु गिरि दो दो पसिद्धे ।
वेयड्ढ वि चउजुय तीस तीस   वक्खारगिरि वि चउहीण वीस ।
सालम्मलि आइ करेवि तेसु   एक्केक्कु जिणालउ मणहरेसु ।।
मणुसोत्तरे चउदिसु एक्कु एक्कु   सुरमणहरु जिणहरु उवरि थक्कु ।
णंदीसरे चउदिसु वरसिरीहिं   एक्कं जण चउदहि मुहगिरीहिं ।
अट्ठट्ठहिं रइयरमहिहरेहिं   एक्केक्कु भवणु वंदिउ सुरेहिं ।
कुंडलवरदीवेरु जगवरदीवे   चिण्णि जि गिरिचिररविससिपईवे ।

घत्ता– ते कुंडलरु जग णामहिं वे वि भणिय पयउ ।
एक्केक्कहिं चउ चउ उवरि जिणालयथिय पियउ ।।१०।।

(11)

देव नारकियों का आयु– आहारादि वर्णन

इय भणिउ लोउ जिह जिणवरेण   तिह तुह भासिउ मई आयरेण ।
सुणि णारयतिरियणरामराण   उच्छेहाउस आहारणाण ।

---

(9) 1.a उत्तुंग, a भूमइ, 2.a ०णमल is explained as स्फटिक in margin, a सारइ, 3.b चंदकंति, a गयणइ, a ०किरणइ, 4.a ०हारइ, a हंकारइ, 5.a ०सालइ, a रणझणंत जय, a ०आलइ, 6.a सुकुसुममालइ, b सुमालर, a आलइ, 7.a ०बिंबइ, b भवबद्धत०, b च आलंबइं, 8.b छण०, b विसालइं, 9.b ०तरंत, a तायइ, a सुरविलयइ, 10.a ०भुवणइ, a थकिहिलमाइ जिणभवणइ, 11.a माणइ for भवणइं, b मुणहिं, 12 a चउसयाइ, b भणहिं ।

(10) 1 b महंतइं, a adds णं तं जहा after महंतइ, 2.a मेरुहि चउ चउ वण्णेहि, b उववणेहिं चउ, b पभणिउं, a जिणेहि, 3.b पासहिं, a सालमलि, a रुक्खु, 4.a गयदंत, b कुलसेलहिं, a वहि for छहि, 5.a पसिद्ध,. 7.a एक्केक्क, 9.b णंदीसरु, b वरसरीहिं, b चउदहु, 10.a एक्केक्क भुवणु वंदिय, 11.b कुंडलदीवेरु, a ०पईवि, 12.b omits ते, a णामहिं, 13.a एक्केक्कए ।

अवराई मिवि समुणाईयाइं   गयवंमि फुडु वे भणि कवियाइं
पउममहिए ब्रत सरासणाइं   छंगुल तिहुयण अहियाइं ताइं ।
णारयहु सरीरु छेदु बिदहु   आउसु सायरउवमाणु सिट्ठु ।
सक्करप्पहाइ पुढवीहु भणिउ   सवहुणहूण उच्छेहु मुणिउ ।
आउसु तिसत्तवहुसत्तवहा   बावीस तियाहिय तीस तहा ।
सायरउवमाणइ भासियउ   अपवत्तणरहिउ पुहाणियउ ।
असुरह सरीरु पणवीसधणू   आउसु समुद्दउवमाणु भणू ।
तह णायसवण्णदीवकुमरा   दह चाव तुंग पभणिय अमरा ।

घत्ता– अउसु वि विपल्ल सड्ढकुपल्ल दुपल्ल तहु ।
कुमराण वराहु भुजिय विविह भोय सयहु ॥११॥

(12)

पहुचावदिहसेस वि कुमार   पल्लोवमु जियहिं दिवट्ठसार ।
उसासु उरयसुवण्णदीवएहि   किं उ सड्ढउ दुवहिं मुहुत्तएहिं ।
सड्ढहि ते बारह वासरेहि   चितवियाहरेहि विहिकरेहि ।
उयहि भणिय विज्जुकुमारयाहं   बारहहिं मुहुत्तहिं सासुताहं ।
वियलिय बारह दिवसेहि इट्ठु   एए चितहि आहारु मिट्ठु ।
तह चेव दिसग्गिणि मरुकुमार   ससट्ठ मुहुत्तहिं सासयार ।
आहारु लेहि चितिउ मणेहिं   परियलियहि सत्तट्ठहि दिणेहिं ।
वितरहुमि दह धणु तणु गुरुसु   आउसु पल्लोवमु एक्कु वुत्तु ।
उस्सासु वि सत्त मुहुत्तएण   आहारचितविण सत्तएण ।
जोइसहु सरत कोवंडकाउ   पल्लोवउ अहिउ हवेइ आउ ।

घत्ता– उस्सासाहार जिह वितरहुँ पयासिय ।
मव वेय मुणेहि तिह जोइसियहुँ भासिय ॥१२॥

---

(11) 1.b भणिउं, a मइ, 3.a अवराइ, a समूणेइयाइं, 4 a पउमं, b ०महिहे, a अहियाइ ताइ, 6.a मुणिउं, b गणिउं, b सवहुणु हूणु, b भणिउं, 7.b आउसुं, 8.b उवमाणइं, 9.b असुरहं, a धणु, 11.a सड दुमल्लदुप्पल्लु, 12.b सराहु ।

(12) 1.b जियहिं, 2.b सासु उरयसुवणदीवएहि किउ सड्ढ दुहिं, a ०दीवएहि, a मुहुत्तएहि, 3.a वासरेहिं, b चितवियाहारहिं, 4.b उवहि, a विज्ज-कुमारयाह बारहहिं मुहुत्तहि, 5.b चितहिं, 6.a मुहुत्तहिं, 7.a सत्तट्ठहि दिणेहि, 8.b वितरहुंमि, 9.b ऊसासु, 11.a वितरहु 12.b मुणेहि ।

(13)

सोहम्मीसाणहिं सत्त जि कर दो जलणिहिपमाण आउस सुर ।
सणंकुमारमाहिंदे छ हत्था सत्तसमुद्दुवमाउ पसत्था ।
पंच कप्पणयदेवणिकायहु बिहि दहजलहि समाउसु आयहु ।
बिहि अमरहो पंचकरपमाणउँ आउसु चउदह सायरमाणउ ।
सुक्के महासुक्के विसयारे चउहत्थामर तह सहसारे ।
बिहि जीवहिं सोलह सायरसमु बिहिं अट्ठारह सरिणाहोवमु ।
आणए पाणए सड्ढतिहत्थहु ठिदि वीसंबुहि समसुरसत्थहु ।
आरणअच्चुयवासिय अमरहु बावीसुवहिसमाउसु तिकरहु ।
हेट्ठिममज्झिमउवरिमयेहिं अमरहु तिहि तहि तिहि गइवेयहिं ।
सड्ढु दो दिवड्ढु कर उण्णइँ अणुदिसासु एक्कु जि कर भण्णइ ।
बावीसबुहि एक्केक्काहिउ णवगइवेयसुराउ सुसाहिउ ।
णव अणुदिस अमरहु सुहसुहडिउ बत्तीसुवहिसमाउ सुपयडिउ ।

घत्ता— तेत्तीससमुद्द उवमाणाउ अणुत्तरहिं ।
पंचहि वि सुमित्त परमइ भुंजिज्जइ सुरहिं ॥१३॥

(14)

पयईए परोवब दुहयराहँ अणवरमरूद्धसासाउराइँ ।
उच्छियवरणिक्वाहारयाह रयणप्पहाइ दुयणारयाह ।
विहि पुढविहि भासिय काउलेस तइयाहे काउणीलाहे अंस ।
मज्झिमणीला पंकप्पहहि णीला सकिण्ह धूमप्पहाहि ।
तमपुढविहि लेस हवेइ किण्ह तमतमपुढविहि सा परमकिण्ह ।
असुराइय जोइसियंतियाहु तेयहे लेसहि जयणंसु ताहु ।
णरतिरियभोयभूमीसु ताम उत्तंगयपुह सयसट्ठि जाम ।

---

(13) 1.a सोहम्मेंसाणहि, b जलणिहिसमाण, 2.a.b सणकुमार, a माहिंदि छह हत्था, b समुद्दवमाउ पसत्थ, 3.b कप्पणाइं, b बिहिं, a ०जलहि, 4.b बिहिं अमरहं, a पंचकर समाणउ, a चउद्दह, 5.b सुक्कमहा०, a विसयारें, a सहसारें 6.a बिहि जीवहि, a बिहि, 7.a ०हत्थहुं, 8.a.b तिकरहुं, 9.a ०वेयहि, b अमरहुं तिहिं तिहिं तिहिं, a गय for गइ, 10.b दियड्ढु, a करउ for कउ, 11.b तेवीसंबुहि, a एक्कक्काहिउ णवणविय, 12.b अमरहं, 13 अणुत्तरहि, 14.b मि for वि, b परमें, a सुरहि ।

रूवेग मगुय णं कुसुमवाण तिरिसविसोहणलक्खणपहाण ।
अज्जव सुहलेसत्तयसमेय जीवंति तिपल्लोवम सुतेय ।
जाणंति कयावि ण वाहिदुक्खु पावंति णिरंतर विसयसोक्खु ।

घत्ता– चित्तवियाहार उवण्णतण्णमय तिहि दिणहि ।
पावहि इह मुत्तु उत्तमभोयमहिहि जिणहि ॥१४॥

(15)

तिसहसतेहुत्तरसत्तसयइ तहु उस्सासेण मुहुत्ते गयइ ।
सद्दिट्ठहे मइ सुइ ओहिणाण मिच्छादिट्ठहे एए अणाण ।
जे कम्मभूमिमाणवतिरिक्ख तहु धणु सयपंचमुत्ते संख ।
णर धणुसयपंचसवायकोइ ताणाउसु पुव्वह कोडि होइ ।
तह तेसलेस छक्कु वि हवेइ सुहअसुहाहार वि संभवेइ ।
उस्सासु भोयभूमीहि जेम वाहिरहियसुहियहि होइ तेम ।
मइसुइओहीमणपज्जवक्खु वरकेवलु लोयालोयचक्खु ।
सद्दिट्ठिणरहु इय पंचणाण मिच्छादिट्ठहु मइसुइ अणाण ।
ओहि विविहंगुइय तिण्णि सिट्ठ मणपज्जय व केवल णेव दिट्ठ ।
तिरियहु मइआइ य तिण्णि णाण मिच्छदिट्ठहु तिण्णि वि अणाण ।

घत्ता– सुदुक्खरमहीण आउस वरिससहासइ
बारहवावीस एइंदियहो पहासइ ॥१५॥

---

(14) 1.a सासाउराहु, 2.a णारयाहु, b णारयायाह, 3.b भासिय, 4.b पंकप्पहाहें, 6.a तेयह, b जयणंसु, 7.b ०मेय, b उत्तुंग, b ताम for नाम, 9.b तिपोल्लावमु, 10.b णिरंतरु, 11.a explains in margin as उवण्ण=वर्तं and तण्णमम वृक्षैः, b उवक्तत्तणमय तिहि दिणहि, 12.b मावहि इउ ।

(15) 1.b ०सयइ, b ऊसासेण, b गयइ, 2.a सहिट्ठिहु, a वोहिणाण, a मिच्छाविट्ठिहु, 3.a धण for धणु, 4.b ०सवाजय, b पुव्वहं, 6.b ऊसासु, b जाम, a ए for होइ, 7.a मय for मइ, a omits वर, 8.a सविट्ठिणरह, b ए for इय, a मिच्छाविट्ठिहि, a मणपज्जय०, 10.a तिरियह, a मिच्छाविट्ठिहि, 11.b सहासइं, 12.b वावीसाइं एपें वियहो० ।

(16)

आऊण वि वरिससहाससत्त तेऊण विद्दिठ विहिण तिण्णि वुत्त ।
वाऊण तिवरिससहास आउ पुढवि पहुदि जीवह सुहुमु काउ ।
भासिउ अंगुलहो असंख भाउ सव्वहु जहण्णु भिण्ण महुत्त आउ ।
जोयणसहासु वणफइहि देहु आउसु दहवरिससहस मुणेहु ।
तणु आउमाणु वेइंदियाण जोयणबारहवरिसइ मि ताण ।
तणु माणें तेइंदिय तिकोस एक्कोण जियहि पंचास दिवस ।
चउरिंदिय तणु जोयणपमाणु आउसु वि ताण छम्मास माणु ।
मच्छाण देहु जोयणसहासु पुव्वाण कोडि आउसु पमासु ।
सव्वहु असुह तिलेसासमाण असुहाहारहु मइ सुइ अणाण ।

घत्ता– मज्झिमु अंसु फुडु तेऊलेसहि अमरहो ।
विहि सग्गहि होइ मंदकसाया समरहो ॥१६॥

(17)

सणकुमारमहिंदहि सग्गहि तेयसपोमलेस सुरवग्गहि ।
मज्झिमु अंसु हवइ छहि पोमहि विहि जघणुत्तमु सुक्कहि पोमहि ।
मज्झु सुक्कु तेरसि सुपरिट्ठिय चउदहसुक्कुत्तम सिय संठिय ।
जहि जित्तिउ आउवहि संखहि उस्सासु वि तहि तेत्तिय पक्खहि ।
तेत्तिय वरिससहासहि भोयणु णिच्चु सुकंठु अणिमिसु आलोयणु ।
सुरणारयहो ओहि सद्दिट्ठहु सो वि विहंगु हवेइ कुदिट्ठहु ।
भावणाहि दो कप्पंति य सुर तणु पवियार सुहि सुकयायर ।
विहिसफंसपवियारहो भायणु पउकप्पेहि रूव आलोयणु ।
कप्पे चउक्कि पुणु वि सुइ संदि पवियारो हवेइ सुह सद्दि ।
पुणु चउकप्पहि मणपरियारा परओ सुरमुणि अप्पवियारा ।

घत्ता– पवियारसुहाउ अप्पवियारहु अहिउ सुहु ।
सम्मत्तजुआहं सुरहं अहिमाण सिउ हुहु ॥१७॥

---

(16) 1.a विहिण is explained as त्रिन in margin, b त्रिण, 2.b पुढवी पहुजीवहो सुहुम काउं, 3.a writes in margin the line भासिउ etc. . . . आउ and b omits the same, 4.b देहुं, a दहवरिसु सहसु, b मणेहुं for मुणेहु, 5.a inter. आउ and माणु, b जियहि, 7.b छम्मा-समाणु, 9.b सव्वहो असुहलेसासुमाण असुहाहारहु मइं सुइं, 11.b सग्गहे होइं मंदकसायउ ।

(18)

कम्मविरामि लद्ध ससकवहु पुव्वसरीरउ ण पडिक्खहु ।
जम्मजरामरणक्खररहियहँ वीरिय अणंत णसहु गुणसहियहँ ।
अंतातीय धरियसंमत्तहु छुहतण्हाइ विरामें तुसित्तहु ।
तणुआयाअभाहिय ससरीरहँ सावगाहवणतोमायारहँ ।
खाइयदंसणणाण समिद्धहँ णिरुवमणिच्चअचलसुहसिद्धहँ ।
आहाररहिउ णइ इंदियजणियउ जायउ णउ हीणाहिउ भणियउ ।
इय गुणसहिया तिलोयहो सारा भवियहु सरणउ होंतु भडारा ।
णिह सेणियहो जिणिण पयासिउ पवणवेय तिह तुह मइ भासिउ ।
अहवा जइ केण वि जगु किज्जइ तो जगकत्ता केण वि रइज्जइ ।
के वि भणहि किर जलु पुणु पुव्वउ वुव्वुआउ पच्छइ अंडउ हुउ ।

घत्ता— अंडयखंडेंहि महियलु बंभंडु वि हुयउ ।
अइ ता जलुकच्छ वुव्वु वि अंडउ कि कियउ ॥१८॥

(19)

ण वि केण वि गिरिसरिसायर किय केण वि रक्खिय ण विणासहो णिय ।
पलउ वि सयलु विलउ पभणिज्जइ किर हरिणा तहो जगु रक्खिज्जइ ।
जइ ता किं ण सो वि वारिज्जइ लहु वि कज्जु किं बहुहारिज्जइ ।
इय कज्जे दियवंरहो पुराणइँ घडहि ण अघडिय लोय अण्णाणइँ ।
विहिहरिहरभणियउ जइ तिहुयणु किं ण चउम्मुहु चउ वरु तिणयणु ।
एक्क वयणु दुणयणु दो करयलु दीसइ सयलु वि भुत्तकम्मफलु ।

---

(17) 1.b सग्गहि, 2 b मज्झिम, a छहि पोमहो, b छह पोमहि, 3.a सुक्क तेरस, a चउदहसेसु सुकुत्तम संठिय, 4.a संखहि, b ऊसास वि, a पक्खहि, 5 b ०सहासइं, b णिच्च सक्खु, 6.b सदिट्ठिहि b विहसु, b कुदिट्ठिहि, 7.a भावणाइ, b दोकप्पतिय, b सुक्केआय, 8. b फस for फंस, a भायण, a आलोयण, 9.b कप्प, b वि सुमहि पवियारहो हवेइं सुअसहि, 10.b चउं कप्पहि, 11.b सहु for सुहु, 12 a समत्तयुयाइ, b सुरहं हिउ माणसिउ ।

(18) 2.a ०रहियहु, a सहियउ, 3.a संमत्तहो, a ०तण्हा, a तुसित्तहु, 4.a सरीरहो, a ०वणतेयमयारहु, 5.a ०दंसणणाणचरित्तहु णिरुवमु णिच्चयचलु सुहु सिद्धहु, 6.b ०रहिउ अंणहिउ जणियउं, a हीणोहिउं, 7.a गुणसहिय, b भवियहुसरणउं, 9.a केण रइ जइ, 10.b भणहि, b वुव्वुउ, 11.a खंडेहि, a बंभडु ।

कम्मेँ सुरणरतिरिय वि णारय   जीव हवंति सिद्ध झाणेँ रय ।
इय जाणेवि किं पि तं किज्जइ   जेँ जरमरणवेल्लि छिण्णिज्जइ ।

घत्ता– अजरामर देसु पविज्जइ जिणभासियउ ।
सिरिसिद्धणिवासु हरिसेणेँ भवियहँ भासियउ ॥१९॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए ।
बुहहरिसेणकयाए छट्ठो संधी परिसमत्तो ॥ छ ॥६॥ छ ॥१८२॥

* * *

(19) 1.a omits गिरि, 2.b सयण्णु, a संभिज्जइ, 3.b किण्ण, 4.b दियवरहुँ, b भणिय, a अण्णाणइ, 5.a ०हरहु, a ज्जइ, b चउम्मुहु, 6.b एक वयणु सुवयणु, 7.b कम्म, a णाणें सिद्ध सुज्झाण पुण्णरय for जीव हवंति . . . etc. . . रय, 8.a जं, a लहु भिज्जइ for छिण्णिज्जइ, 9.a जिणभासिउ, 10.a सिरि०, a हरिसेण कविवहु पसंसिउ, 12 परिसंमत्तो ॥ संधि ॥ ६ ॥ १८२॥

७. सत्तमो संधि

(1)

उवयारणिमित्तु मित्तहो परमहियत्तणेण ।
भावेवि तिलोउ पुणु पभणिउ खगवइसुएण ॥ छ ॥

पवणवेय पुणरवि पुरि पइसमि   अवरु वि परपुराणु तुह दरिसमि ।
इय भणंतु वाइय दलवट्टणु   मित्तें सहु पइट्ठु पुणु पट्टणु ।
बंभमाल जा दारे चउच्छए   जहिं दिय देहिं दोसु परमत्थए ।
तहिं करेवि भेरी घंटासणु   माणसवेउ चडिउ कणयासणु ।
णवर भेरि घंटासद्दें दिय   आगय जे वायम्मि अणिंदिय ।
पुच्छिउ तहिं कहं तहो आइय   करहु पाउ जं भेरी वाइय ।
तावसरूवधारिमणवेएँ   तो बोल्लिउ संजायविवेएँ ।
गामगुरु व भमंत संपाइय   ण उ सत्थत्थवियक्खण वाइय ।
दिय भणंति किं कीलालावें   भणु तव कारणु मुक्कु पलावें ।
कुलु किं कवणु माइ कहिं जायउ   कवणु ताउ को गुरु विक्खायउ ।

घत्ता— खयरेण पुणुत्तु णियकारणु साहंतहो ।
भउ अत्थि ण तेण सच्चु वि कहमि महंतहो ॥१॥

(2)

वृहत्कुमारिका कथा

दिय भणहि ता तं पि   भयकारणं जं पि ।
ता गुरु व रूवेण   खयरवइतणएण ।
सायरसिलातरणु   मक्कडहु णडयरणु ।
अक्खाणु णिसुणियउ   दियवरहिं णिसुणियउ ।
पुणु भणिउ मउ मिल्लि   जिह मुणहि तिह बोल्लि ।
जयु भणइ रम्मम्मि   साकेयणयरम्मि ।

(1) 5.a बंम्हसाल, b देहिं, 6.b तहिं, 7.a णवरि, b पुच्छिय, a तेंहि, a करउ, b जें भेरी, 9.a बोल्लितु for बोल्लिउ, 11.b भणि, b मुक्क, 12.b कवण्ण माय, a कहि, 14.b कहंमि ।

तुह माय किर कण्ण   महु पिउ हे जा दिण्ण ।
रंभणीहिं परिणवणु   का बइ समणयणु ।
अणजाणिव रायस्स   करि छुट्टइ रामस्स ।
ता करइ चूरंतु   माणुसइ मारंतु ।
पत्तो विवाहम्मि   कय विविह सोहम्मि ।
सुह दिट्ठु उम्मिट्ठु   बयलट्ठु जणु णट्ठु ।
तं णिएवि गुरुविग्घु   ओसरिउ वरु सिग्घु ।
तहो बाम अंसग्गु   वहुयाहे तहिं लग्गु ।
सा पडिय खलिऊण   जो इय ण वलिऊण ।
पुण्णेहिं उव्वरिय   करिणा ण सा धरिय ।
जणु भणइ णिक्किट्ठु   वहु मुएवि वरु णट्ठु ।
इय गरुयलज्जाए   गउ रहिउ मज्जाए ।
उद्धरिय वंसेण   पुरिसस्स फंसेण ।
पइवयचरित्ताए   हुउ गब्भे हुउँ ताहे ।

घत्ता– सा मायए वुत्तु कि कुले लंछणु आणिउ ।
ता भासिउ ताए मइँ काइं ण वियाणिउ ॥२॥

(3)

महु अत्थि को वि ण वि अवरु मग्गु   परिणिय पियसिढिलभुयंगु लग्गु ।
इय भणिय माय मउणेण थिया   गय मासहिं पसवणदिवस हुया ।
एत्थंतरे तावससंघु तित्थु   आइउ महु मायहे गेहु जेत्थु ।
मायामहेण महु ते भणिया   कहिं चलिय भणेविणु विण्णविया ।
तो भणिउ तेहिं दुक्कालु ताम   होही बारहवरिसाइं जाम ।
तें चल्लिय अम्हइ जिह सुहिक्खु   तवसी ण वि दुक्खहु भुक्ख दुक्खु ।
तुम्हइं वि एहु मा मरहो एत्थु   जिम देसु सोज्जि जीवियइ जेत्थु ।
अह करहु किं पि पडियारलेम   दुक्कालदुक्खु णित्थरहु जेम ।
इय भासिऊण भोयणु करेवि   गय तावस देसंतरु सरेवि ।
सज्जत्थें मइ चिंतियउ ताम   गच्छइ रउद्दु दुक्कालु जाम ।

(2) 1.a कारणु जांपि, 2.b त for ता, a चइवइ०, 3.b चक्कवइ, 4.b पिसुणियउं विवाहरहिं, b पिसुणियउं, 5.b भणिउ मउ मेल्लि, b चोल्लि, 6.b मुणइं for माणुसइ, 12.a दिट्ठ, 16.a पुण्णेहि, 17.b भणइं, 19.b फसेण for वंसेण a पुरिसस्स फसेण, 20.b हुउं गब्भे हुउ तहि, a हुउ, 21.b कुललंछणु आणियउं, 22.a मइ काइं, b काइं वि ण वियाणियउ ।

घत्ता—अच्छमि ता एत्थु गब्भवासि वड्ढंतउ ।
कीलिउ कम्मेण सा गब्भहो णिग्गंतउ ॥३॥

(4)

गय दुक्काले णवर ते तावस पुणरवि आइय मेहि छुहावस ।
भत्तिए अज्जाए णवइ सारिय अग्गु देवि पडिवत्तिउ कारिय ।
ता मई चिंतिउ किं इह अच्छमि गउ दुक्कालु तुरिउ णिग्गच्छमि ।
एत्थंतरे पणट्ठसुह छायहे जायइ पसवणसूलइ मायहे ।
वावारं मुएवि तणु छाएवि थिय चुल्लीसमीवि सा आएवि ।
हउं वि ताम गब्भहो णीसरियउ मरि णिवडंतु वि छारहो भरियउ ।
भोयणु देहि भणंतु समुट्ठिउ भोयण करयलु पुरउ परिट्ठिउ ।
ताहउ तवसिहि भणिउ अमंगलु कुलखउ एहु णेइ गहु मंगलु ।
एयहो सुयहो वज्जु सिरिणिवडउ मा अणेण सयलु वि कुलु हिहडउ ।
वरि फणि दट्ठंगट्ठउ खंडिउ गुणगणणिहि सरीव मा छंडिउ ।

घत्ता— ता मए वुत्तु पुत्तु मज्झु णउ होहि तुहु
भोयणु तुह देउ मारि पईसहि जमहो मुहु ॥४॥

(5)

पुणु वि ताए महु मायए घुट्ठउ एरिसु केण वि कहि मि ण दिट्ठउ ।
जायमेत्तु णिण्हेविणु भोयणु मग्गइ कहि मि को वि किं भोयणु ।
माणुसु एहु माए ण उवेट्ठउ पोट्टि वसिउ महु रक्खसु मोट्ठउ ।
णीसरु जाहि जाहि पुणु जंपिउ तामइ पेसणु तं पि पियप्पिउ ।
लहु य केसु उप्पूलिय गत्तउ हउं णीसरिउ तवोवणु पत्तउ ।
सइं संजाउ तवसिउ वसंतउ अच्छमि तवसिसंघे णिवसंतउ ।

---

(3) 1.a परिणय, 3.b आयउ, a मग्गइ, 4.a ण बिया, b कहिं, 5.b भणिउं, a तेहि, a वरिसाइ, 6.b अम्हइं जहिं, b दुग्गहु, 7.b एहु for एत्थु, 8.a दुक्काल०, 10.a इ for मइ, 11.a एत्थ, 12.a तं for ता ।

(4) 1.a दुक्कलि, b गेहु, 2.b पडिवत्ति समारियं, 3.b adds in margin भोयणवेलं जाम किर वट्टइ मइं गब्भवहो चिंति पयट्टइं before ता मइं चिंतिउ, a मइ, 4.b जायइं, b सूलइं, 5.a वारवार for वावारं, 6 b हउंमि 7.b देइ for देहि, 8.b ताहुउं, a तवसिहि, b भणिउ, b णाइं for णेइ, 9.a वज्ज, a माय अणेण सयल वि कुलु विहडेउ, 10.a दट्ठ-पुट्ठउ, b गुणगुणणिहि, 12. b देउं, b पईसहि, b मुहुं ।

बहु काति करंतु परियट्टणु एक्कहिं दिणे आ गउ तं पट्टणु ।
ता विवाहु णियमायहे दिट्ठउ एविणु तावसाण मइं सिट्ठउ ।
णिय उप्पत्ति सवित्थर भासिय सा णिसुणेविणु तेहिं ण दूसिय ।
भणिउ ण दोसु को वि इह दीसइ पुव्वमुणिदवयणु तुह सीसइ ।

घत्ता– णारिहिं वायाए दिण्णहे जइ सो पउ मरइ ।
अक्खयजोणीहे पुणु विवाहु परियणु करइ ॥५॥

तद्यथा–

अद्भिर्वाचापि दत्ता या यदि पूर्ववरो मृतः ।
साचेदक्षतयोनिः स्यात्पुनः संस्कारमर्हति ॥१॥

(6)

पवसिय पिय वरिसइँ अट्ठ जाम पडिवालइ बंभणि सुद्धभाव ।
अपसूय णियइ चउ वरिस पंथु ता पच्छइ अवखरहो धरइ हत्थु ।

तद्यथा–

अष्टौ वर्षाण्युदीक्षेत ब्राह्मणी पतितं पतिं ।
अप्रसूता च चत्वारि परतोऽन्यं समाचरेत् ॥१॥

इय लोइयधम्म वियाणएण वेयत्थपुराणपवीणएण ।
तवसीण मए ण सुपिहलवच्छ दीसइ तियाण परिणयणु वच्छ ।
इय ताण वयणु आयण्णिऊण परमत्थु भणेविणु मण्णिऊण ।
चिरु कालु तहिं मि पुणु अच्छिऊण तवसीण संघु परिपुच्छिऊण ।
तित्थत्थणिमित्ति महिं भमंतु चिरसंचिउ कलिमलु उवसमंतु ।
वुहवाइय जणमणणयणइट्ठु चलिऊण तुम्ह पुरवरु पइट्ठु ।

घत्ता– महु वइयरु आसि फुडु जं जारिसु वित्तउ ।
सयलु वि विवरेवि तारिसु तुम्हइँ वुत्तउ ॥६॥

---

(5) 1.a कहिं वि, 2.b किं पि for को वि, 3.a मुहु, 4.a writes आहि three times instead of two, b तामइं, b तं जि, 5.a हुउ, b हुंउं, 6.a सइ, 7.a दिणे गउ ज्जा तं, 8.a विवाहु, a एविण, a मइ, 9.b स for सा, a ते हिं, 10.b inter. कोवि and दोसु, 13.a पूर्व्ववरो, 14.a संस्कारमर्हति, वसिष्ठस्मृति, 17.64 nearly agrees with this in contents. cf. 9.81.

(7)

ता पभणहि दिय अहो णिदिय दिय ।
अमुणिय तच्चय सुट्ठु असच्चय ।
तुह गब्भासउ तावसवासउ ।
वे वि विरुद्धइँ जणे अपसिद्धइँ ।
ता म्हणु भासइ समउ पयासइ ।
पयडिय अत्थहि तुम्हहँ सत्थहि ।
कि इय घट्ठउ मुणिहि ण मुट्ठउ ।
रासें कंपिय पुणु दिय जंपिय ।
जंपइ पिसुणिउ अम्हहि णिसुणिउ ।
जइ तुह जाणहि तो वक्खाणहि ।
पुणु तवसि भणइ को तं ण मुणइ ।
परभउ वट्टइ मणु ण पयट्टइ ।
तुम्हइ रूसेवि महु भउ दूसेवि ।
भिउडियणयणहि णिट्ठुरवयणहि ।
त्रिप्पिउ तोल्लिउ तुह ण उ मेल्लिउ ।
तेणासंकमि भणेवि ण सक्कमि ।

घत्ता– तहो दियहो परत्तु जे समए ण वियारहि ।
ते बुद्धिविहीण अप्पाणउ पब्भारहि ।।७।।

---

(6) 1.a पिउ वरिसइ, b ताम, b पडिवालइं, 2.b णियइं, b omits ता, a अवरहो धरइ, 3.a वर्षाणि दीक्षत, b पतितं, a पति, cf. अमितगति धर्मपरीक्षा 14·39. 5.a वियाणयेण, a ०पवीणयेण, 6.a परियाणु वच्छ, 8.b left blank space for चिरु, 9.a तित्थत्त०, a चिरु, b णिज्जरंतु for उवसमंतु, 10.a ज for जण, 11.a मुहु, 12.a तुम्हहु ।

(7) 1 a तो, b पभणहि, a omits दिय, a repeats अहो, b omits दिय, 4.b जण, a अपसिद्धइ, 6.a अत्थहि तुम्हहु सत्थहिं, 7. b इय मुट्ठइ मुणि हिं घुट्ठइं, 9.a जंपइ, b अम्हहिं ण सुणिउं, 10.b जाणहिं, b वक्खाणहिं, 11.b भणइं a omits को तं ण मुणइ 13.b तुम्हहिं, 14 a ०णयणहि, a ०वयणहि, 15.b तुह for तुह, 16.a भणिउ for भणेवि, 17.b वियारहिं, 18.b अप्पाणउं पभारहिं ।

(8)

मुणि पुराणु तह माणव धम्मु वि सांगोवेउ चिकिच्छिय कम्मु वि ।
इय चत्तारि वि आणा सिद्धइं हेउहिं ण हणिज्जंति पसिद्धइं ।

तथा-

पुराणं मानवो धर्मः साङ्गो वेदचिकित्सितम् ।
आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभि. ॥१॥

तह मणुवासवसिट्ठहो वयणइं जुयइ भणंतु अपमाणइं ।
बभघाइत्तणु होइ णिरुत्तउ इय एरिसु पसिद्धु दिय वुत्तउ ।

तथा-

मानवं व्यासवासिष्ठं वचनं वेदसंयुतं ।
अप्रमाणं तु यो ब्रूयात् स भवेद्[illegible]: ॥२॥

वेयाइयहो दोसु उब्भावइ जो सो बम्हहु वह फलु पावइ ।
जेण तेण तहो दोसु ण बोल्लमि दियपरदरसिउ मग्गु ण मेल्लमि ।
ता दियवर पभणहिं मित्तेण वि पाउ हवंतु दिट्ठु किं केण वि ।
भिक्खु भणिउ असि जीह ण छिण्णइ सिहिउण्हंतु डहइ को मण्णइ ।

घत्ता- इय एम मुणेवि मउ मिल्लेविणु थिरु भणहि ।
वेयाइ हु दोसु वत्थु भूउ जइ फुडु मुणहि ॥८॥

(9)

भागीरथी और गांधारी कथा

माया तावसेण एत्थंतरे बोल्लिउ दियवरसहु अब्भंतरे ।
फिर भाइरहि णामउ दोणारिउ एक्क सयणि सुत्तउ सुकुमारिउ ।

(8) 2.a हेउहिं, a पसिद्धइ, b adds ।।छ।। before तथा, 3.a धम्मं, 4.a चात्वरि both a & b used अनुस्वार like सांगो, वेदश्चिकित्सितं हंतव्यानि, 5.a •सिट्ठइ वयणइ, b जयइ, a अपमाणइ, 6.a बम्हघात•; 7.a वेदसंयुतं, 8.a भवेब्रह्मघातका, 9.a जो for यो, b वेयाइयहं, b बंभह, 10.b •दरिसिउ मज्झुण्णु, 11.b ता दिय भणहिं भणिय मित्तेण वि, 12.b भणिउं, b छिण्णइ, a उण्हुत्तु, b मण्णइं, 13.a एव, b भणहि, 14.b मुणहि. Note : Both Sanskrit verses occur in यशस्तिलकचम्पू, भाग 2, p. 119. The first verse is identical with मनुस्मृति, 12.110–1.

ता बहरहिं भामे सुउ जायउ   जो भारहि पुराणि विक्खायउ ।
जम्मइँ गारिफंसि सुउ णारिहे   कह हुउँ पुरिसकंसे ण कुमारिहे ।
अवरु वि कुलगुणरूवविसिट्ठहो   गंधारीकुमारि धयरट्ठहो ।
किर णिउज्जीसइ ता रोमंचिय   तह पुप्फवइ जाय हीलं चिय ।
दियहे चउत्थे पवर सण्हाइय   फणसालिंगणे गब्भिणिजाइय ।
मासेक्केण णवर तहिं मायए   सा अकुसुमु णिएवि भय छायए ।
त वइयरु णर विट्ठि गरिट्ठहो   भयगयाए जाणेविउ जेट्ठहो ।
तं णिसुणेवि पमाणिय विट्ठिं   सुहि हक्कारेवि अंघकविट्ठि ।

घत्ता— धयरट्ठहो दिण्ण लहुउ गब्भु ण उ तें सुणिउ ।
संपुण्णदिणेहिं ताए फणसतरु फलु जाणिउ ॥९॥

(10)

तहिं फणसफलें सउ णंदणाहुँ   संजाउ पवरगुण णंदणाहुँ ।
एरिस कह भारहे सुप्पसिद्ध   किं महु उप्पत्ति भणहु विरुद्ध ।
त णिसुणेविणु वियवरहिं वुत्तु   भणिउ तुह जम्मु हुवउ णिरुत्तु ।
जं पुणु गब्भत्थें तवसिवयणु   आयण्णिउ तं सद्दहइ कवणु ।
ना तावसेण पडिवयणु वुत्तु   जइ मइ पभणिउ भणहु अजुत्तु ।
ता एरिसु भारहि कासि भणिउ   वियपवरहो किं तुम्हहिं ण मुणिउ ।
सुहलक्खाण कोइलमहुरसद्द   गुरुहारजाय अइ य हु सुहद्द ।
असुहत्थी एक्कहिं दिवसे जाम   हरि चक्कवूहकह कहइ ताम ।
थिरगब्भवासे ण लहेइ जिह   हुँ काऊण किर मेल्लइ सुहद्द ।
एत्थंतरे कह सवणत्थिएण   अहिवण्णें तहे गब्भत्थिएण ।

---

(9) 4.a सो for सुउ, b णारिदे, a हुउ, 7.b सा, 8.b भासहुँ, b अकुसुम, 9.b जाणाविउ, 10.b सेट्ठिहे, b अंधयविट्ठहे, 11.a गब्भ, b गब्भु ते णउं मुणिउं, 12 b दिणेहिं, b फल्लु जणिउं, cf. आदिपर्व (महाभारत), भागवतपुराण, मत्स्यपुराण, विष्णुपुराण, वायुपुराण ।

(10) 1 a तहिं, a सउ णंदणाह, b ०गुण णंदणाहं, 2.b सुप्रसिद्ध, a मउपत्ति, b भणहुं, 3.a विवरहिं, 4.a गब्भत्थुं, b तवसि, b अयण्णाइ उं तं, 5.b मइं पभणिवं भण्णहु, 6.b भारहिं, b किं तु तुम्हहिं किम मुणिउ, a तुम्हहिं, 7.b फग्गुण पियणामि भणिय सुहद for गुरुहारजाय etc. 8.b एक्कहिं, b चक्कवूह कहइ, 9.a थं for थ, 10.b सवणत्थिएण, a अहिवण्णें, 12.a णिसेवि ।

घत्ता– हुंकारउ दिण्णु तं णिसुणेविणु हरि डरिउ ।
चिंतेइ पयंडु गब्भे को वि णरु अवयरिउ ॥१०॥

(11)

ऋषि कोपीन कथा और मन्दोदरि

गब्भत्थें तें हरि कहिउ जेम   णिसुणिउ मइ तावसवयणु तेम ।
तं मण्णेविणु दिय भणहि एम   बारहवरिसइ थिउ गब्भे केम ।
पडिवयणु पुणु वि गुरवेण वुत्तु   णिसुणहु चिर मुणि पभणिउ णिरूत्तु ।
मउ णामें तावसु तउ करंतु   आम त्थइ णिज्जेणिवणि वसंतु ।
तावेक्कदिवसे सुइणंतरम्मि   संजायइ वर णारीरयम्मि ।
पालियसुवयहो खरणु जाउ   चिंतिउ तें सुक्कु म बिहलु जाउ ।
कोवीणु णेवि णइणीरे विमलि   वोलेविणु णिप्पीलियउ कमलि ।
ता पीउ सुक्करसु दद्दुरीए   विमलजलकमलदलकीलिरीए ।
रिउवइहे तहि तें लक्खणेण   हुउ गब्भु जुत्तु तियलक्खणेण ।
णयमासेणेक्कें सुहदिणम्मि   पयसिय सा सोहण गहयणम्मि ।

घत्ता– अइणिरुवमरुव जाय दुहियलक्खणभरिय ।
सोहग्गहो धरित्ति णावइ अच्छर अवयरिय ॥११॥

(12)

तणु तणयहे तणउ णियंतियाए   अत्थि उडहि रूउ थियंतियाए ।
दद्दुरियए पुणु पुणु चिंतियउ   णिउणउ जें विहि एहउ कियउ ।
अम्हहं कुलि होइ ण एरिसिया   फुडु एह हवेसइ माणुसिया ।
इय चिंतिऊण वित्थिण्णयले   सा मुक्क ताए कमलिणि वेहले ।
मउम्हाणत्थें तहि जाइ नाम   जण मणहर वाल णिएइ ताम ।
पुणु तेण पउंविवि झाणु किया   जाणिय णियसुक्कें संभविया ।

---

(11) 1.b मई णिसुणिउं तावस०, 2.b भणहिं, b वरिसइं, 3.b णिसुणहुं, b पभणिउं, 4.a आवंत्थइ, b जामत्थइ, मउ must be मय दानव whose daughter was called मन्दोदरि, वाल्मीकि रामायण, उत्तरकांड, 12.1–21; मत्स्य 6.21; वायु 68.29; ब्रह्मा 3.6.29. 5.a सुइणंतरम्मे, 6.a भाविय०, 8.a inter. ०दल० & ०कमल०, 9.a गब्भजुत्तु, cf. स्कंदपुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण, भागवतपुराण, महाभारत (आदिपर्व) मउ may be मय ।

पिक्छेविणु अइ तुक्छोयरिआ   णामेण भणिय संझोवरिया।
पुणु णिय कुडिह ओहेण थिया   कालेण जाय णवजोव्वणिया।
ता एक्क दिवसे सुकुमालियए   एहंतोए तीए कुसुमालियए।
परिहिउ ससुक्कु मुणि कोवणउ   तैं गब्भु जाउ तायहा तणउ।

घत्ता— मउ चिंतइ जाम गब्भहो कारणु झाणें।
णिय सुक्कविपास ता जाणिउ वरणाणें ॥१२॥

(13)

पुणु चिंतिउ जइ तावस मुणंति   णियसुय कामिय एवं भणंति।
इय एत्त अयसु किय परिहरेमि   परिछिद्द णिउणजणु किं करेमि।
तणु लक्खणु होइ ण पयडु जेम   पच्छण्णु वि थोलमि गब्भु तेम।
इय चिंतिऊण तवखउ करेवि   कुडियजलु णियकरयले धरेवि।
महियले मिलंति भणिऊण तेण   गब्भें सहु अच्छहि ता अणेण।
जा होइ को वि भत्तारु पुत्ति   किं किज्जइ तुहु एरिस भवित्ति।
एत्तहे लंकाउरि रक्खणाहु   विस्सावसु णामें सिरिसणाहु।
कइ कासि णामहि तहो पिययमाहे   कालें हुउ रावणु णिरुवमाहे।
ते पच्छा जायइ सा कुमारि   परिणिय संझोवरि दिव्व णारि।
सा वावसाणे सो गब्भु ताहे   पयडिउ तणुचिण्हहिं णिरुव माहे।

घत्ता— सहो गेहि पसूय इंदइ णामें पुत्तु हुउ।
सवंच्छर सत्त सय जेट्ठउ सो पिउहे सुउ ॥१३॥

(14)

पराशर ऋषि और योजनगन्धा कथा

संवच्छराइ सयसत्त जइ वि   गब्भें थिउ इंदइ सच्चु तह वि।
महु वारह वरिसइँ गब्भवासु   भण्णहु ण काइँ किर करहु हासु।
अहवा किं भण्णइ क्वइ एसु   णिय दोसु वि जणु मण्णइ ण दोसु।
बंभणहि भणिउ इउ होइ सच्चु   पर सइँ तउ लेइ ण कोवि सच्चु।
पइँ जाए पुणु कण्णा हवेइ   तुहु माय एउ कह संभवेइ।

---

(12) 1. b तणउं, b उहंहि, 2 b णिउणउं, b inter. जें and विहि, 3. a अम्हहु, 4.a विंत्थिण्णयलि, 5.a तहि, 6. b झाण, 8.a पु for पुणु, a णवजोवणिया, 9.a सुकुमालियाए, a कुसुमालियाए, 10.a समुक्क, b गब्भजाउ, b तणउं।

ता गुरउ भणइ अवहिय सुणेहु मुणिवरु पारासरु जो मुणेहु ।
सो कत्थ वि कज्जें जाइ ताम दिट्ठि य गंगाणइमज्झि ताम ।
तहिं तेण णीर-तारणपवीण सोहग्ग णारी-लक्खण विहीण ।
चंचल-पिंगल-लोयण-अणिट्ठ चउ कोस दुग्गंधिणि पसिद्ध ।
छिण्णवरणासिय धीवरकुमारि तियवेस दिट्ठ णावइ कुमारि ।

घत्ता– णावइ मुणि जाम तारइ तुंबयणत्थलि ।
ता हिय वए तासु लग्ग मयणवाणावलि ॥१४॥

(15)

णियमुह जोयंतहो वार वार, मयणग्गि जलइ तहो दुण्णिवार ।
थरहरइ अंगु वयणु वि सलोलु घुगुघुगइ चित्तु णउ होइ तोसु ।
इय एम तेण वुहिएण वुत्तु इच्छइ मइं हउं तुह मुद्धि रत्तु ।
मा देउ सा उद्दयमयवसेण पडिवण्णु ताइ ता तामसेण ।
तवतेयघणधूमरि करेवि सा रमिय तेण उव परिहरेवि ।
सुउ वासु सहिउ मुणि लक्खणेण सुरयावसाणि हुउ तक्खणेण ।
जडजूडालंकियउ उत्तमंगु सियभूइसंग पंडुरियअंगु ।
विद्दुममयकुंडल छिट्ठगंडु उरे बंभसुत्तु करे धरिय दंडु ।

(13) 2.b एयंतु for इय एत्त, a पहिछिह, 3.b ताम, 4.b तउ रवउ, a करयलु, b करेवि for धरेवि, 5.b मेल्लंतें भणिउ, 6.a पुत्तें, a एरिसु तुह भवित्ति, 7.a लक्खणाइ for रक्खणाहु, 8.b णामें तहे पिययमहे, b पिययमाहे for णिवयमाहे, 9.b जाए for जायइ, 10.a सो ववसाणे, a गब्भ, a चिण्हहि मणहराहिं, 11.a पसूइ, 12.a सवहिं जेट्ठु ।

(14) 1.b संवछराहं, a सक्क for सच्चु, 2.a मुहु पारहवरिसइ, a काइं कि करहु, 3.b भण्णइं पयइं, a दोस वि, b भण्णइं, 4.b भणिउं, a सइ, b मच्चु for सच्चु, 5.a पइ, b कहिं, 6.a गुरुव, 8.a तहि, b तीर for तेण, 11.a थणत्थले ।

(15) 1.a जाल for जलइ, 2.b थरथरइं, a घुगघगुइ, b तोसु, 3.a मइ हुउ, 4.b पडिवण्ण ताइ ता, 5.a वउ for उव, 6.a omits सुरयावसाणि etc. . . . 7.b ०लंकिउ, 8.a उप बंम्हसुत्तु, 9.b छत्तपाणि वाईसर जोय पवित्तपाणि, 10.a वासु for पासु, 11.b देहि, b पभणइं, a रयु for रत्तु, b करेहि, 13.a पवित्त कमाउरिया, 14.b वहु for तहु, a वारासरिणा । cf. मत्स्यपुराण अध्याय 14, वायुपुराण, भागवतपुराण, शिवपुराण, महाभारत (आदिपर्व), ब्रह्म, मार्कण्डेयपुराण etc.

वरकुंडिय मंडियरत्तपाणि | धाईसरि ओइ पवित्तकाणि ।
सिरि कय मउलिय कय जय पयासु | पारासरपय पणवेवि पासु ।
बोल्लइ महु पेसणु ताय देहि | मुणि पभणइ एत्थु वि तउ करेहि ।
ते वयणें गंगाणइथलम्मि | तवे सठिउ सो पावणजलम्मि ।

घत्ता सा धीवरधीय कय परित्त कामाउरेण ।
सहु अवखयजोणि भउ वंछिणी पारासरेण ॥१५॥

(16)

उद्दालक और चन्द्रमती कथा

पारासरवयणे जेम वासु | तवि संठिओ तिह हुओ तवसि वासु ।
गउ जणणिवयणु पेसणु गणंतु | अच्छमि सुतित्थजत्तउ कुणंतु ।
णिसुणेवि पभणमि वियवरहो अण्णु | कुंतिहे कण्णेहि कण्णेण कण्णु ।
जायउ रविणा सा चेय कण्णु | मण्णेविणु पंडुहि पुणु वि दिण्णु ।
उप्पण्णे कण्णि जइ कुंति कण्ण | तो मइ जायए महु माय किण्ण ।
रवि करइ कण्ण जइ भणहु एव | कह रमहि असुइ माणुसिउ देव ।
उद्दालु णामु अवरु वि मुणिंदु | णियतवपहावकंपिय सुरिंदु ।
सुइणेतर णारी रइवसेण | पज्झरिउ णवरति तावसेण ।
सुक्कु मुक्कु गंगाणईहि | कमलम्मि ताम सुय रहुवईहि ।
चंदवइ णाम पुप्फवइ आय | गंगाजलम्मि विमलम्मि ण्हाय ।

घत्ता– ते कमलु लएवि सूंघिउ ता तहि तक्खणेण ।
हुउ गब्भु मुणेवि जणणिए यण किण्हुतणेण ॥१६॥

(17)

रहुवइहे कहिउ ति चंदमई | घल्लाविय मण्णेवि दुक्कमई ।
काणणे जहि पंचाणणहो मुणी | तहि दिट्ठु ताए तिणबिंदु मुणी ।

---

(16) 2.b गई, 3.b णिसुणहुं, b कुंतहि कण्णहि, 4.b चेव कण्ण, a पंडहि, b दिण्ण for दिण्णु, 5.b जइ, b तो मइं जायइं माइं, 6.b करइ कण्णं जइं भणहु एवं कह रमइ असुइं माणुसिय देहु, 7.b उद्दालु णामि, 8.b सुइणंतरि b रइवसेण, 9.b मुक्कु णाणईहिं कमलम्मे ताम सुअ रहुवईहि, 10.b चंदवइ, b पुप्फवई, 11.b तं for तें, b सुंघिउं, a तक्खणणा, b तक्खणिणा किन्हुतण्णेण, a किण्हुतणेणा, 12.b हुअं, b जणणिहि चंव ।

तहो आसमि आयउ चाणक्केउ सुउ णं अपयण्णउ मयरकेउ ।
णियताउ गवेसहि ताए वुत्तु मंजूसहि किउ गंगाहि खित्तु ।
ता खिल्लवेल्लि संजोयएण ण्हंतेण तेण उद्दालएण ।
मंजूस दिट्ठु करे धरिवि जाम उग्घाडियबालउ दिट्ठु ताम ।
चंदमइ वि णंदणणेहएण आगय पभणिय उद्दालएण ।
मइ इच्छि मुद्धि ता ताए वुत्तु कुलकण्णहु एहु ण होइ जुत्तु ।
तो तेण गंपि रहुवइहि पासु भणिय सा तेण वि दिण्ण तासु ।
वेयत्थ य पुराणवियाणएण कण्णाविवाहु किउ राणएण ।

घत्ता— पुत्तें जाए वि चंदमइह य कण्णा हवइ ।
महु माय ण काइ ता दिउ को वि ण पडिलवइ ॥१७॥

(18)

पुणु वि तेरहु सो चाणक्कणंदणु णियमित्तहो संबोहणकारणु ।
पुणु वि विवाहु वरेण गएण वि णारिहि पुत्तु णारिफंसेण वि ।
फणसालिंगणे गब्भहो संभउ तो वि ण करइ मूढ जणु वि भउ ।
गब्भत्थि वि कह णिसुणिज्जइ दुददुरीए कह मणु वि जणिज्जइ ।
सत्तवरिससय गब्भें पीडिय कह थिय मंदोयरि णउ विहडिय ।
रइसमए वि बालु उप्पज्जइ जाए पुत्तें कह कण्णे भणिज्जइ ।
कमलहो सुंघणे गब्भु होइ जहिं अवर काइँ किर बोल्लिज्जइ तहिं ।
पुव्वावर अघडिय आलावउ तुम्ह पुराणु असच्च पलावउ ।
पुणु वि पुणु वि केत्तिउ पयडिज्जइ जं पयडंतहँ हासउ दिज्जइ ।
एरिसु किण्ण मणेणालोयहु दियपवरहो किं मइ आलोयहु ।

---

(17) 1.b ण्हुवइंहि कहिउं, a चंदवई, चंदमई, b चंदमइं, a ण्णोविसु b मणिवि for मण्णेवि, b दुट्ठमइ, 2.b पंचाणणहं दिट्ठ, 3.b जावउं णायकेउं, a णाइकेउ, 4.b किउं, 5.b repeats तेण, 6.b दिट्ठ किर, 7.b चंदमइं, b आयविय भणिय, 8.b कुलकण्णहि होइं ण एउ जुत्तु, 9.b दिण for दिण्ण, 10.b omits य, b ०विवाहं किउ, 11.a चंदमई य. Cf. वायुपुराण, महाभारत (वनपर्व, सभापर्व) etc.

घत्ता– हरिसेणसमेउ परबलाइ बलु जिणहि जिह ।
पुट्ठिए मणवेउ विप्प णिरुत्तर करइ तिह ॥१८॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए ।
बुहहरिसेणकयाए सत्तमसंधि परिसमत्तो ॥ छ ॥ ७ ॥ छ ॥

* * *

(18) 1.a adds बोल्लइ बुहयणहियमाणेवणु before णियमित्तहो etc. 3.a फणसा आलिंगणे, b उण वि भउ, 4.b गब्भयिएण, b किह, a मणु व, 6.b किह कण्ण, 7.a सुंदें गब्भ होइज्जहि, a काइ, a तहि, 9.a पयडंतहु, b जिणइ, 13.b ठियाए for ट्ठिवाए, 14.b संधी परिच्छेउ समत्तो संधि: ॥७॥छ॥१६४॥छ॥

८. अट्ठमो संधि

(1)

कर्णोत्पत्ति कथा

मणवेएँ पवणवेउ भणिउ एहि मित्त जाइज्जइ ।
लोइयपुराणु चिंतंतहँ बुद्धि चिरंतण खिज्जइ ॥ छ ॥

उववणे जाएविणु पुणु बुहेण — सुहि पभणिउ खगवइ तणुरुहेण ।
सुणु जेम समायउ कण्णु जाउ — सोमप्पहो णामे आसि राउ ।
महो पुगु संतइहे अणंतएण — हुउ संतणु काले जंतएण ।
तहो लक्खणकलगुणगणविचित्तु — उप्पण्णु पुत्तु णामे विचित्तु ।
ते पुणु जणियउ जायंधु पुत्तु — पढमउ णामे धयरट्ठु पुत्तु ।
सुउ पंडुरोयजुउ अवरु जणिउ — तें पंडु जि सो णामेण भणिउ ।
पुणु वि विदुरए मण्णिवि कुमार — कीलहिं मणि य पिउ लच्छिसार ।
पर पंडु पंडुरोएण मुत्तु — झिज्जइ अणुदिणु णियतणु जियतु ।
गउ थाइ खणु वि खरुणीससंतु — कहमवि रइ करइ ण परिभमंतु ।
गउ उववणे एक्कहि दिवसे जाम — सुमणहरु सुलयाहरु दिट्ठु ताम ।
तहिं कुसुमसयणे मुद्दडिस दिट्ठ — चित्तंगणाम खयरहो मणिट्ठ ।
सा लेवि पंडु खणु एक्कु जाम — अच्छइ चित्तंगउ पत्तु ताम ।

घत्ता— पंडुहे मुहुँ जोएवि तें भणिउ मज्झु एत्थ कत्थ वि पडिय ।
जोयतु व पिच्छमि सा ण हुउ कामरूवकर मुद्दडिय ॥१॥

---

(1) 2.b चिंतंताहं, a बुद्धि चिराणीरि कज्जइ, 3.b पभणिउं, b णंदणेण for तणुरुहेण, 4.b सुणे, 5.b तुणु for पुणु, b अणतएण, 6.a गुणमण०, 7.b जणियउं धणुविउरुएण, 8.b जणिउं, b भणिउं, 9.b पुणु विउरु एम तिण्णि वि कुमार, b कीलहिं मणि, 10.b वुत्तु for मुत्तु, b विणय तणु for णियतणु, 11.b कत्थवि रइ लहइ ण, 12.a एक्कहि, b लयाहरु, 13.a तहिं, 15.a पंडु वि मुहु, b भणिउं, a पडिया, 16.a मुद्दडिया ।

(2)

पंडु भणिउ एह सा अच्छइ सुहु अच्छिउ कि कत्थ वि गच्छइ ।
इय वोल्लंतें अप्पिय खयरहो लयं मुद्दिय चल्लिउ णिय णयरहो ।
तेण वि काउ णिएवि कुमारहो कि कारणेण मित्त तुहु झीणउ ।
पुच्छिउ कि सरीरु किसु दीसइ भणु मित्तहो किर काइ ण सीसइ ।
णाम पंडु पभणइ सुपहाणउ अंधयविट्ठि अत्थि इह राणउ ।
तहो वरपुत्ति कुंति उप्पण्णी पुव्वयालि सा महु पडिवण्णी ।
एवहिं मइ रोइउ जाणेविणु देइ ण पिउ अवहेरि करेविणु ।
ता महु तहिं रूउ चिंतंतहो विरहाणलजालहिं पलित्तहो ।
एहावत्थ जाय फुडु अक्खिउ तुह पुच्छंतहो गुज्झु ण रक्खिउ ।
त णिसुणेवि चित्तंगउ वोल्लइ मुद्दिय एह कामरूविणि लइ ।
रूउ करेवि मणोहरु गच्छहिं सुहु पच्छण्णइ ताए सहु अच्छहिं ।

घत्ता— अणुरत्त मुणेविणु णिय दुहिय अंधयवुट्ठि णरेसरु ।
तुह देइ अवसु आरत्तवसु ताहे सो वि धम्मीसरु ॥२॥

(3)

तो मुद्दिय लेविणु पंडु तेत्थु गउ पुरवरु ससुरहो तणउ जेत्थु ।
तत्थ वि जणपच्छण्णे हुएण दरिसिउ कुंतिहे अप्पाणु तेण ।
तहो दंसणेण तहो कंपु जाउ कंटइय सरीरहे सुरयराउ ।
जाणेवि छइल्लें रत्तचित्त सा रमिय तेण वासरइ सत्त ।
गउ पंडु कयत्थु हवेवि जाम हुउ दिवसिहिं कुंतिहिं गब्भु ताम ।
पायडु जाणेविणु जणणियाए णिहुण लुयाविय पुत्तियाए ।
मंजाउ पुत्तु लक्खणेहिं जुत्तु मंजूसि छुटठु जउणहिं खित्तु ।
चंपापुरवर परमेसरेण दिट्ठउ आइच्चणरेसरेण ।
आणविउ घरि मंजूसु जाम उग्घाडिय बालउ दिट्ठु ताम ।
बालु वि किर णियकर धरिय कण्णु किउ राएं तें तहो णामु कण्णु ।
हुउ तासु अउत्तहो सो वि पुत्तु इय पंडुहो कण्णु पसूउ पुत्तु ।

---

(2) 1.b भणिउं, b गच्छइं, 2.a बोलंते, b omits लय मुद्दिय etc. . . . . णयरहो, b omits कि कारणेण etc. . . . झीणउ, 4.b काइं, 5.a ताव, b पभणइं सुपहाणउं, a अंधकविट्ठि, b णाम for अत्थि, b राणउं, 7.b एवहिं मइं, 11.a लहु for सुहु, a पच्छण्णु, a हु for सहु, b सहुं, 13 a अवस आरत्त असु, b ताहं, b धम्मीसरु ।

घत्ता– पंडुहे अणुरत्त कुंति मुणिवि सा तहो दिण्ण णरेसरेण ।
तह अवर वि मद्दि णाम तणय किउ विवाहु पुणु आयरेण ॥३॥

(4)

पाण्डव कथा

तहो भायर परविट्ठहे तणया गंधारि णाम णवजोव्वणिया ।
धयरट्ठहो दिण्ण पुव्व भणिया सोहग्गरासि मणसि य मणिया ।
पंडु सुउ जेण ण को वि मुणिय कुंतीहि जुहिट्ठिलु पुत्तु जणिउ ।
पुणु भडचूडामणि भीमसेणु पुणु अज्जुणु अरिगणसवणसेणु ।
मद्दीहि जणिय वे पुत्त जमल णामेण भणिय सहएवणउल ।
धयरट्ठहो पइवस धारियाहे सउ सुयहो जणिउ गंधारियाहे ।
जरसंधु णाम परबल वमक्कि महिमंडले होंतउ अद्धचक्कि ।
एए सयल वि गुणरयणरासि तहो अद्धमहि सहोभिच्च आसि ।
पडिवक्खमणी रह मद्दियाहे कुंतीहि तिण्णि दो मद्दियाहे ।
सुय पंच वि पंडव सुक्खहेउ साहुज्ज करप्पिणु वासुएउ ।

घत्ता–पंडुहे पच्छहि दुज्जोहणेण सहु महिकारणे करेवि रणु ।
दाइय हणेवि सुहिपरियरिय णिय बलेण थिर रज्जे पुणु ॥४॥

(5)

थिरु रज्जु करेविणु गुणमहंत तउ लेवि महीयलि परिभमंत ।
सम भाविय सुहदुह सत्तुमित्त माणावमाण कय सरिसचित्त ।

---

(3) 1.b तणउं, 2.a पच्छण्णें, 3.a तहि for तहो, 4.b वासरइं, 6.b णिहुअं हु लुआविय, a. rubbs the two letters and writes ण after णिहु, 7.a लक्खणहि, b छुदु, 9.a मजूसु, b करथविउ सो मंजूसु ताम for आणाविउ etc. . . जाम, b उघाडिय, a omits उग्घाडिय etc. . . ताम, 10.a णाउ for णामु, b कण्णु, 11.a अवसउं, b पंडुहे कणु, a पच्छन्नु, 12.a णरेसरेणा, 13.a आयरेणा ।

(4) 1.a तह, b तणिय, b •जोव्वणिय, 2.b भणिय, b मणिय, 3.a पंडु सोज्जेमि ण को मुणिउ, b मुणिउं, 4.a अज्जणु, a सवणिसेणु, 5.b मद्दियहे, a सहएउ, b सुयहं, a गंधारियाहे, 7.a वरसिंध, 8.a दो मद्दियाहि, 10.b साहिज्ज, a करेविणु, 11.a सह, b तणु for रणु ।

बावीसपरीसह खीणकम्म सत्तुंजयगिरिवरसिहर पत्त ।
तहिं णिच्चल थिय तणु परिहरेवि उवसग्गु घोर अरिकिउ सहेवि ।
णिम्मलु आऊरिवि सुक्कज्झाणु उप्पाएवि केवलु विमलु णाणु ।
मयमोक्खहो सासयसुहहो तिण्णि ईसीसि कसाउ वहेवि विण्णि ।
गय लहुय जाय सव्वत्थसिद्धि अवरहे भवे अवस लहंति सिद्धि ।
कण्णाह एम उप्पत्ति भणिय ण वि रविजमपवणिंदेहिं जणिय ।
कहिं सुरवर कहिं माणव वराय अघडिय संबंधालाव आय ।
कहिं एक्क बहुय बहु हवेइ तं बोल्लिजइ जं संभवेइ ।

घत्ता– अण्णारिसु भारहु विरसु जणे अण्णारिसु वासें भणिउ ।
गट्टुरपवाहणामिडाजणेण अलिउ वि तं सच्चउ भणिउ ॥५॥

(6)

महाभारत कथा समीक्षा

भारहु विरए वि वासें संकिउं होइ पसिद्धु ण पाइउ मइ किउ ।
इय चिंतंतु कहिं वि छणि गंगहे ण्हाणकज्जे गउ विमललरंगहे ।
वालुयपुंजु तीरे विरएविणु तहिं तं भायणु गूढु छुहेविणु ।
अहिणाणत्थु फुल्लु सिरि देविणु ण्हाइ जाम सइ जले पइसेविणु ।
तो लोएण वि पुंजु करेविणु फुल्लहिं पुज्जिय लिंग भणेविणु ।
वासु जाम किर तीरु णिरिक्खइ वालुयपुंज णिरंतर पेक्खइ ।
को लोएं किय को किर मइं किउ एउ वि ण वियाणइ मणे विभिउ ।
देववियण्णिय लोयसमूहें ते जइ भंजमि भायण लोहें ।
तो अण्णाणिउ जणु मणि मण्णइ वासु करेवि देउ अवगण्णइ ।
तो वरि भायणु जाउ अम्हारउ अयसपुंजु भंजणे अवयारउ ।

---

(5) 1.b रज्ज, 2.a मेत्तु, b सम for कय, 3.b सित्तंजय, 4.a तहि, 7.b अवरहिं, 8.a उप्पण्ण, b ण उ, b ०पवणिंदेण, 9.b कहिं माणवि, 10.a कहि, b बहुय, b repeats बहु, 10.a बोल्लिज्जइ, 11.b अणारिसु, b भणिउ, 12.a बहुरि०, b भणिउं ।

(6) 1.b मइं, 2.b एउ for इय, b कहिं मि, b ०तरंगहे, 3.a गुढु, 5.a पुंज, a फुल्लहिं, 7.a मइ, b वियाणइं, 9.b अण्णाणिउं, b मण्णइं, b देव अवगण्णइं, 10.a वर, b अफारउ, a अजसु पुंजु, a अवआरउ, 11.a रंगा जोहइ, 12.a हूवइं वइ, b इ for इय Cf. अमितगति धर्मपरीक्षा, 15.64–66.

घत्ता– जाणेविणु अम्ह गयाणुमइउ कय रंगावलि सोहहो ।
भारहु पसिद्धु फुडु हवइ जइ इय मुणीवि मणमेहहो ॥६॥

(7)

गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ।
पश्य लोकस्य मूर्खत्वं हारितं ताम्रभाजनम् ॥५॥

इय मित्तहो भारहो भासिविणु   माणसवेउ भणइ वि हसेविणु ।
अवरु वि परपुराणु दरिसमि तुह   एहि जाहु पुणरवि दियवरसह ।
इय भणेवि होएविणु वंदय   बिण्णि वि पंचमदारें पुरि गय ।
तहिं पुणु आयसाल पइ सेविणु   हेलए भेरिघंट वाएविणु ।
कणयहो वीढे खगाहिवणंदणु   थिउ लीलए परवाइ वि मद्दणु ।
एत्थंतरे दिय जय जसकारणे   ढुक्क महाभडाहं भडणं रणे ।
पभणिउ तेहि वियक्खणु दीसहि   कि अजिपंतु महासमि बइसहि ।
वाइउ हणइ भेरि किर एविणु   जय घंटा पुणु वाउ जिणेविणु ।
पइं पुणु सत्थजाणमाहप्पें   तिण्णि वि कियइ झत्ति णियदप्पें ।
तो रत्तंवरेण पडिजंपिउ   इय वयणें मह हियवउ कंपिउ ।

घत्ता– हउं सत्थु ण-याणमि वाउ किह करमि बुहेहि समाणउ ।
कोऊहलेण इउ सयलु किउ अमहो ण होमि सयाणउ ॥७॥

(8)

शृगाल कथा

तो दियवरहं वुत्तु कि विम्हिय   कहि अच्छिय कि सत्थुण सिक्खिय ।
कि परमत्थु तवसि किमाइय   कहहु पयडु कि कज्जे आइय ।
ता तें भणिउ भणमि जइ भावहु   इय मसत्थभाउ दरिसावहु ।
तो विय भणहि सच्चु बोलंतहं   को पडिकूलु हवइ नयवंतहं ।

---

(7) 1.a लेका न, a पारमार्थिका, b परमार्थिक, 2.a पस्य adds after ॥ अयं श्लोकं चकारा ॥ 3.b भणइं विय वेविणु, 4.a दरसमि तुह, b जाहु, 5.a होएविण्णु, a पुच्छवि for पुरि, 6.a तहि, a वाइविणु, 7.a कंचणवीढे, 8.a भडाह, a रणि 9.b पभणिउं, a अयक्खणु, b बइसहि, 10.a भणइ, b हणइं, 11.a पइ, a कयइ, 12.b पडिजंपिउ, 13.a हउ सत्थ ण याणवि, b जिह करउं कहेहि समाणउं, 14.b सयाणउं ।

रत्तंबरु पभणइ णइ एरिसु   णिसुणहु मज्झु कहा णउ वारिसु ।
एत्थु जि पुव्वदेसि पंडियणारि   महु पिउ वुड्ढमत्तु [illegible]पुरि ।
तें विहारि अम्हइ विण्णि वि जण   पढिउ समप्पिणय वज्जिय मण ।
णवर घणागमे कणजल तित्तइ   सो सणत्तु जहिं वाहणि खित्तइ ।
गुरु रत्तंबराइँ किर रक्खहु   वोण्णि सियाल एंत ता पेक्खहु ।
तहो भएण दासइ णिव्हेविणु   अज्ज वि णिम्मिय जहिं चडेविणु ।

घत्ता— को वारउ जाहिं जहिं कयहु रत्तभिक्खु ता विम्हय ।
जं वूवेहिं थूहु अम्हहिं सहिउ उव्वाएविणु णहे गय ॥८॥

(9)

जोयण बत्तीस कमेवि तेहिं   अडइहिं मेल्लेविणु जंबुएहिं ।
भक्खिज्जहु भुक्खवसेण जाम   ससुणहु पारद्धिय पत्त ताम ।
सुणहहं भएण ते णट्ठवेवि   अम्हइ पुणु थूहहो उत्तरेवि ।
पारद्धिएहिं तेहिं वि समाण   गय एक्क णयरु भयकंपमाण ।
णियदेसु विदेसु वि ण उ मुणेहु   चिंतिउ एवहिं किर किं करेहु ।
पुव्वं चिय लहु केसइं सिराइं   एयइं साहीणइं चीवराइं ।
तउवरि रत्तंबरवउ धरेहु   घडियहिं लत्तहिं भोयणु करेहु ।
इय वउ लएवि महियलि भमंत   बहुकालें तुम्हइ णयरु पत्त ।
तो विप्प भणेहिं जं मुट्ठ आसि   ते कंखिवि तुहु किउ अलियरासि ।
ते भणिउ किं ण एयारिसाइ   तुम्हाण पुराणइ जारिसाइ ।

(8) 1.a कहि, 2.b परमत्थ, b किमाइय पयड कि किज्जे, 3.b [illegible] for इय, 4.b भणइ हिं बोलंतहं a omits को पडिकुलु हवइ भयवंतहं, 5.b पवणहिंहि b घडं, 6.a वुड्ढु मत्तु, 7.b आम्हइं, a पवहु. b पढिउं, 8. b तित्तइं, a सो सणत्थि जा आवकेम[illegible]इ, b खित्तइं, 9.a रत्तंबरसइ, a रक्खहो, 10.b वासइं, a उप्पहित्त [illegible] थूह for अज्ज वि णिम्मिय थूहि, 11.a जाहिंद, b कूवारउ तहिं फिरहु, a रत्तभिक्ख, 12.a कूवहि थू, a अम्हहि, a उव्वाएवि णहे ण गया ।

(9) 1.a तहि for तेहिं, b अडइहे, a जंबुएहिं, 2.b ससुणहं, 3.b अम्हइं, 5.a विदेसु, b एवहिं, 6.a केसइ सिराइ एयइ साहीणय चीवराइ, 7.b तोवरि, a घडियहिं लत्तहि भोयणु करेहु, 9.b भणेहि, b तुहुं, 10.b भणिउं किण्ण एयारिसाइं, a पुराण पुराणइ, b पुराणइं जारिसाइं, 11.b भणहि पुराणहि, a ज्वाइ, 12.b ०वयणयइं ।

घत्ता–थिय वयणहि पुराणहि अलिउ जइ तो किं ण उ पयडिज्जइ ।
पिसुणेविणु दियवरवयणमइ बंदएण पमणिज्जइ ॥९॥

(10)

राम-रावण कथा

जइयहु सीयसमेउ सलक्खणु गउ वणवासहो रामु सलक्खणु ।
तहि खरदूसणु रणे मारेविणु अच्छइ जा ता रावणु एविणु ।
मायाकणयहरिणु दरिसेविणु गउ लंकाउरें सीय हरेविणु ।
एत्तहे जा पियवाणररायहो वलिणाहित्तभज अणुरायहो ।
सो रामें रणें वालि वहेविणु दिण्णु तासु तो तेण णवेविणु ।
मग्गिउ पेसणु परउवयारा मणु मणु किं किज्जइ परसारा ।
भणइ रामु पियविरहु सुदूसहु केणवि णिय महु कंत गवेसहु ।
तो सुग्गीवें अरिकरिकेसरि पेसिउ हणुउ पत्तु लंकाउरि ।
दिट्ठ सीय पुणु तेण णवेविणु आसासिय पियवयण कहेविणु ।
हणुए लंक विद्धंसवि आइय रामें सियदंसण अणुराइय ।

घत्ता– वाणर करउक्खाइय वि गिरिहि उयहिसेउ बंधाविउ ।
सुग्गिवें पुणु सेणासहिउ राहउ लंकहि वि पाविउ ॥१०॥

(11)

इय वम्मीयमहारिसि भासिउं अत्थि किं ण जं मइ उवएसिउ ।
नो विएहि पडिउत्तरु दिज्जइ एउ अणारिसु केम भणिज्जइ ।
तं णिसुणेवि माया रत्तंवरु भणइ पंचकहाइ पडिमवरु ।
पंच सयाणि तिण्णि वो गिरिवर लेवि जंति वहु जोयण वाणर ।
तं पि सच्च मण्णिउ तुम्ह हि जहि मइ भासिउ पमाणु कि णउ तहि ।
अहवा लोउ जि एरिसु भासइ पुसंसउ ण कयाइ वि दूसइ ।
एक्कु पमाणु पंच गिरि लेविणु दूरि जाइ जइ णहु लंघेविणु ।
तो दो अंकय कइवय जोयण वहु ण मिति अम्ह वायणमण ।

(10) 1 a रमु, 2.a तहि, 3.a मायाकणयहरिणु, 4 a वलिणहित्त०, b वलिणा-हित्तभय, 5 b रणे वाइ वहेविणु, b दिण्ण, b ता for तो, a णवेप्पिणु, 7. b भणइं, b inter णिय and महु, 10.b हणुएं लंकविहंसय आएं, b अणुरायं, 11.b omits वि, b गिरिहिं, b उयहिसेउ, 12.a सेणसहिउ, b omits वि ।

एरिसु वयणु सुणवि जइ भासइ   तो अणु वयणु काइं उवहासइ ।
किं बहुएण जुत्ति आलोवहु   वियडु भणिय मणि संसउ ढोयहु ।

घत्ता– भणवेए पुणु तहिं सुहि भणिउ सुग्गीवाइ ण वाणर ।
तह रावणो वि रक्खसु ण फुडु सयल वि विज्जाहर ॥ ११ ॥

(12)

विद्याधर वंशोत्पत्ति कथा

णिसुणि जेम एयहं सुपसिद्धइ   जायइं रक्खसवाणरचिंधइं ।
जइयहुं रज्जे थविवि भरहेसरु   सिद्धत्थवणि पढमतित्थेसरु ।
भवियजणमणकमलदिणेसरु   पडिमा जोएं थिउ परमेसरु ।
एत्तहे णियसालय देसंतरे   पहिय आसि जे ते तित्थंकरे ।
पेसणु मारिवि गुण अणुराइय   जहिं जिणु तहिं णमिवि ण वि पराइय ।
कच्छमहाकच्छ हिवतणुरुह   जिणु पणवेविणु थिय पासहिं बुह ।
पभणहिं णाह किं ण संभासहि   णिब्भरु पुव्वणेहु ण पयासहि ।
अम्हहं सामि किं ण अवयंडहि   किं ण पसायहिं रणहिं मंडहि ।
महियलु भुंजाविउ णिय सुयसउ   अम्हहुं आलावेण जि संसउ ।
अहवा काइं एत्थु कोऊहलु   कज्जपराइउ सव्वहु सीयलु ।
इय जा तेहिं जिणग्गइ जंपिउ   ता धरणिदहो आसणु कंपिउ ।
अवहीणाणें कज्जु मुणेविणु   तुरिउ जिणिदपसु आवेविणु ।

---

(11) 1.b किय थिइ भइं, 2.a हिक्कइ इउ अण्णारिसु, 3.a सं सुणेवि, b भणइं पवंडवाइं पंडियणह, 5.a तें पि, b भणिउं तुम्हहिं जहिं मइं, b तहि, 6.a सं from पुसंसउ is corrected as सं in the margin, 8.a जोयणु थुइ थावंति, 9.b काइं, 10.a मणु संसउ, 12.a तेहु for तह ।

(12) 1.b एयहं, 3.a भवियणजण०, b तउलेविणु भवियकमलणेसरु, 4.a अहि, a तित्थंतरे, 5.a जहिं जिणु तहिं 6.a पणवेप्पिणु थिय पासहिं भासहिं for जिणु पणवेविणु . . . etc. बुह b पासहिं, 7.b पभणहिं किण्ण णाह संभासहिं, b पयासहिं, 8.b अहिकरमुवहिं किण्ण, b किण्ण एसाकाहरणइं मंडहिं, 9.a adds जिणु कज्जेण देहु किं दंडहि before महियलु etc. . . a अम्हहं. 10.b काइं, b कणहु, b सव्वहं, 11.a तेहिं, 13.a णाणें, 14.b पणछणु, b सव्वु, Cf. पद्मपुराण 5.1–562.

घत्ता– जिणरूउ विउव्विवि फणिवइणा आणालंकिय णाहो ।
विज्जाबलेण पच्छण्णु किउ सव्वरूउ जिणणाहहो ॥१२॥

(13)

राक्षसवंशोत्पत्ति कथा

आणु असिविज्जि हत्थें फंसेवि   महुरालाउ सम्मोहल भासेवि ।
पुणु सुरणरविज्जाहर पुज्जउ   दिण्णउ धरणिंदें वेविज्जउ ।
पणविवि जिण पडिबिंब फणिंदहो   गय सविज्ज वेयड्ढगिरिंदहो ।
उत्तरदाहिणसेढिहि सामिय   जाय णरेंदणहंगण गामिय ।
पुरिसपरंपराए पवहंतिए   बोलीणइ बहु णरवरपंतिए ।
तहिं पसिद्धे वेयड्ढमहीहरे   रहमंजरिचक्कवालए पुरे ।
पुण्णमेहु णामें खयरेसरु   रज्जु करइ णं सविस सुहेसरु ।
ताम सुलोयणेण खयरेसें   वेढिउ पुरवरु दाइय रोसें ।
णवर पुण्णमेहें णरणंगणे   तहो सिरु खुडिउ मुइय अमरंगणे ।
तो तहो णंदणेण सह सव्वें   पुण्णमेहु हउं हयपडिवक्खे ।

घत्ता– तो पुण्णमेहु णंदणु समरे परिसेसिय णियसाहणु ।
रणे सहसक्खहो मिल्लेवि फलु णट्ठउ तोयदवाहणु ॥१३॥

(14)

हंसविमाणें णहे गच्छंतउ   सरणु ण कोवि कहि मि पिच्छंतउ ।
पणविय मणुयसुरासुरविंदहो   समवसरेण गउ अजियजिणिंदहो ।
तहिं अमरेसरेण भं भासिउ   ते सवइहवइयह उब्भासिउ ।
भणिउ सुरिंदें मउ मिल्लेविणु   जिणु पणवहि करमउलि करेविणु ।
जिणु पणवंतह अरिवउ फिट्टइ   णिविडु वि णियलणिबंधणु तुट्टइ ।
जिणु पणवंतह विगलइ कलिमलु   सुहणिहाणु उप्पज्जइ केवलु ।
तो सहसक्खु वि तहो पइलग्गउ   झत्ति मलु तहिं कोववसंगउ ।
माणखंभु अवलोइउ जावहिं   माणमडप्फर विहडिउ तावहिं ।
विण्णि वि णिरु अप्पाणउ णिंदेवि   णरकोट्ठए णिविट्ठजिणु वंदेवि ।

---

(13) 1.b सम्मोहय, 2.a पुज्जिउ, 5.a inter. बहु and णरवर, 6.a तहि पसिद्ध, 7.b रज्जु, a सुहेसुर, 9.a समरंगणे for अमरंगणे, 10.a तहे, a हुउ, b हुउ हुउं पयडियपक्खें, a पडिवक्खे, 11.a omits णिय, 12.b रणे, b मेल्लिवणु ।

पुच्छंताहु ताहु संबंधें भणियभवंतर भव इयवयें।

घत्ता– एत्थंतरे रायं णिसियइहु भीमु सुभीमहिं वुत्तउ।
मेघवाहण अम्हह पुत्तु तुहु होंतउ आसि णिरुत्तउ ॥१४॥

(15)

रक्खसविज्ज तेहिं तहो दिज्जइ णेहवसेण किं ण किर किज्जइ।
दिण्णउ णवमुहकंठाहरणउ णं सिरिफलु अं विहलुद्धरणउ।
जोयणाइ तीउसरवण्णी सुरणयरि व लंकाउरि दिण्णी।
अवर वि छज्जोयण वित्थारें सहु पायाललंकणयरि सारें।
तहो आएसें महिय पसाहणु लंकपइट्ठु मंपि घणवाहणु।
रक्खसवंस वयरहु पढमं कुरु लीलए रज्जे परिट्ठिउ णं सुरु।
घडियाहरआहणणरवालए परिवलियए लीलए बहुकालए।
गय तिसट्ठि सिंहासण जइयहु किति धवलु उप्पज्जइ तइयहु।
सिरि मुज तहो गुणअणुराइउ तहो महएविहि लच्छिहि जायउ।
वयरणाहु सिरिकंठु महाइउ रमणउ रहो होंतउ तहि आइउ।

घत्ता– अच्छइ वि कइ वि वासरइ तहि जियणयरहो जा चल्लइ।
अइमोहाउरु भयरहियउ किति धवलु ता बोल्लइ ॥१५॥

(16)

वानर वंशोत्पत्ति कथा

ज माणुसु णिवडइ सपियारउ तं फलु दुक्कियकम्महो केरउ।
तो वरि एक्कत्थ वि अच्छिज्जइ मज्झ विहूइए सयलु वि भुज्जइ।

---

(14) 1.a कहमि, 2.b ०वंदहो, 3.a तहि, 4.b भणिय, 5.b पणवंतहं, a णिगड-णिबंधण, 6.b पणवंतहं, 7.a पहि for पइ, a जाति, a तहि, 8.b अवलोइय b तावहि, 9.b अप्पाणडं, a वइट्ठ for णिविट्ठ, 10.b पुच्छंताहं ताहं, a दरएहें, 11.b रायं, a भीमसुभीमहि, 12.a अम्हह, b तुहु, See the पद्मपुराण of रविषेणाचार्य, 5.96–148 for Bhavantaras of मेघवाहन & सहस्रनयन & others.

(15) 1.a तेहि, 2.a णवमुहु, b कंठाहरणउं, b विहलुद्धरणउं, 3.b जोयणाइं, 4.b लंकपुर, 6.b वयरहं, a परिट्ठउ, 7.b परवालए and in margin, b written घडियाहरणाहरणावालइ पाठांतर, 9.b मुणंतहं, b आइउ, 10.a इहु for तहि, 11.b अच्छेवि कइवासरई, a चल्लइ, 12.b अइ for अइ, b भयरहिउ।

जं जं किं पि महु घरि चंगउ तं तं सयलु वि तुज्झु जैं ओग्गउ ।
महु सिरिकंठु अणेयइ दीवइ भुंजहि णाणारयण पईवइ ।
ताहे मज्झे जं भावइ चित्तहो लइ किर किं णउ दिज्जइ मित्तहो ।
अब्भत्थणहि भंगु जहिं किज्जइ तित्थु जलंजलि णेहहो दिज्जइ ।
भणिउ मयणीवइ अब्भत्थिउ वाणरदीउ तेण सो पत्थिउ ।
तेण वि दिण्णु तासु अवियारें गउ सिरिकंठु समउ परिवारें ।
दिट्ठु तेण तहिं किक्कजि महिहरु किक्कजि णाम कराविउ तहिं पुरु ।
तहिं वाणरहिं समउ कीलंतहो गउ बहु कालु सुक्खु भुंजंतहो ।

घत्ता– चिरु रज्जु करेविणु तउ करिवि गउ सग्गहो सिरिकंठपहु ।
तहो लग्गि वि णरवइ ठणि पुणु हुउ णिउ णामें अमरपहु ॥१६॥

(17)

एत्तहे किसि धवल संताणइ गए सत्तमणरेंदि सुहयाणइ ।
विमलकित्ति लंकाहिउ जायउ वो हु वि विउलु णेहु संजायउ ।
तहो सुय अमर पहु हे परिणंतहो मउ थणि विलिहिय वाणर तहो ।
ते पिच्छंति जव गय णववहु भुच्छिय जा ता कुइउ अमरपहु ।
मा रहो तं जें वाणर वि लिहिय मंतिहिं ताम कुलद्विठवि साहिय ।
सिरिकंठहो लग्गेविणु वाणर जायइ कुलदेवयाइ णरेसर ।
णउ दिज्जइ वाणरहो जि थामें वाणरदीओं जि आयहो णामें ।
तो तुट्ठेण तेण पोमाविय मउडि छत्तिधयचिंधि लिहाविय ।
इय घणवाहणु रक्खसचिंधें सिरिकंठु वि वाणरचिंधें ।
हुउ पसिद्धु पयडु वि किं दीसइ करि कंकणु किं आरसि दीसइ ।
घणवाहणवंसहो हुउ रावणु सुग्गीवाइय सिरिकंठहो पुणु ।
सत्तइहे उप्पण्णमहाणर जमिविणमिहु वंसि जे वाणर ।

घत्ता– वाणर सिरिकंठाइहिं भणिया रक्खस पुणु सुर चिंतर ।
रणु भिडइ ण वाणर रक्खसहो किर ए बहुअंतर ॥१७॥

---

(16) 1.a णिब्बहइ, 2.a एकत्थ, 4.b सिरिकंठ अणेयइं दीवइं भुंजहि, a देवइ, a पईवइं, b पत्तिमई, 5.b मउं, 6.a जहि, b किज्जइं, b दिज्जइं, 8.b भणिउ, a अब्भत्थणउ, b अब्भत्थिउं, b दिणु, b गउं सिरिकंठु समउं, 9.b तेण तहिं किक्कु जि णामि कराविउ पुरवरु, 10.b वानरिहिं, b गउं बहुं, a समउं for सुक्खु, 11.a करेंविणु, b तउ, b सिरिकंठु पहु, 12.a अवसए for णरवइ, b अवरइं ।

(18)

जं विज्जाहर विज्जाबलेण   उच्चाइय गिरिवल वरिछलेण ।
त हवइ कयाइ वि जइ हवेइ   बंधणु वि समुद्दहो संभवेइ ।
परवालि सुग्गीवहो कलत्तु   किर हरिउण एरिसु वयणु जुत्तु ।
लहुभाइमहिल गुरुभाइयासु   जियधीयसरिसएउ जणे पयासु ।
णिक्किट्ठु वि ण उ सा अवहरेइ   कि वालि महाणव आयरेइ ।
सुणि गिरिवियाड्ढि लच्छीसणाहु   उत्तरसेढिहे अलयसिहुणाहु ।
तहो तणिय तणय णामेण तार   कहसगइ खवे सें वार वार ।
मग्गंतेण वि ण वि लद्ध कण्ण   पिउणा सुग्गीवहो णवर दिण्ण ।
जा जा सुविहिय सा तहो कुमारि   अवरवरहो पाविय विरहमारि ।
अप्पाणु पुण्णहीणउ गणेवि   वणि थिउ विज्जासाहणु मुएवि ।

घत्ता– बहु कालें कंखियभोयणेण बहु विज्जउ साहेप्पिणु ।
सहसगइ णियइ सुग्गीवछलु तारा खेरि लहेप्पिणु ।।१८।।

(19)

एक्कहि दिणे किर सुग्गीउ जाम   वणकीलए गउ सहसगइ ताम ।
विज्जावलेण सुग्गीवरूउ   करिऊण पुत्तु तारासमिउ ।
सुग्गीउ वलिविणु तक्खणेण   पइसइ ता विडेण वियक्खणेण ।
तारावित थिउ मग्गाणुराउ   पेक्खहु जाए वि परसामि आउ ।
सुग्गीउव जुयले मोहियमणेण   पइ अप्पु ण जाणिउ परियणेण ।

---

(17) 1.a संताणइं, b णेरंवसुहवाएई, a सुहयाणए, 2.b लक्काहिउं आयउं दोहि मिउलियइ णेहु समायउ, 3.b अमरगहुदि, b माइं for मउ, b inter. विलिहिय and वाणर, 4.b णवबहुं, a adds जा in margin before मुच्छिय, b कुयउ अमरपहु, 5.b ति जि for जं जें, 6.b आयइं कुलदेवइ 7.a णा for ण उ, b विज्जइं वाणरहु मि णामें, 8.b पीमायउ, b चिंधि-धयछत्ति, 9.a वणावाहणु, b वणवाहण, a वाणरदिंढ, b वाणरचिंधें, 10.b हुउं पसिद्ध पयलउ कि सीसइ, b किं दप्पणु दीसइं, 11.a वंसुब्भउ राणु, 12.a •वियमिहि, a वंस, b पहु for जे, 14.q मिलइं ण वाणर-वसहो, b वइ अंतरु . . . ।

(18) 1.b adds विहार after विज्जाहर, b उच्चायविहि, 2.a बंधणहो समुद्दु व संभवेइ, 4.b वग for जणे, 5 a उवहरेइ, a मेहाणर, 8.a मग्गंतें तेंण ण लद्ध, 9.b सा पुत्तु for पाविय, 11.a साहेविणु, 12.3 णियइं ।

अक्खोही जायउ सयलु सेण्णु दहवें सुग्गीवहो पुण्णु भिण्णु ।
विउभडहो सत्त अक्खोहणीहिं सहु मिलिउ बंधु अरिखोहणीहिं ।
सत्तहि सुहु खलयल कालपासु अंगउ पुणु थिउ सुग्गीवपासु ।
ससिकिरणें वालिहिं णंदणेण तारा रक्खिय रिउमद्दणेण ।
उप्पइ जइ दुक्कहु मरहु अज्जु जो जिणइ सतारउ तासु रज्जु ।

घत्ता- ताणंतरि भिडियइ बलइ रणि मंतिमंतु सामंतहि ।
जुज्झउ अवरुप्परु विउजवलु किं विहियहि सामंतहि ॥१९॥

(20)

ता मूल परहिय अब्भिडिया णं वेवि करिं वसमावडिया ।
दोहिमि थिउ गुरु संगामु जाउ सहसगइ वि बहु विज्जासहाउ ।
अवमाणिउ ति सुग्गीवराउ हिंडइ वणेण वणु णटठच्छाउ ।
एत्थंतरि खरदूसणु वहेवि सत्तु विराहिउ णिउ करेवि ।
अच्छइ जहि राहउ हियकलत्तु पायालंक सुग्गीउ पत्तु ।
पणवेवि रामु ति भणिउ एव हउँ तुम्ह सरणु अणुसरिउ देव ।
ता पुच्छिउ वइयरु राहवेण एत्थंतरि बोल्लिउ जंबवेण ।
विउ सुग्गीवें एयहो कलत्तु अवहरिउ रज्जु ति कलिमलंतु ।
संपत्तु एहु सूरत्थउ जाउ सुग्गीउ कयद्धय खयरराउ ।
तुम्हहँ पयाउ आणिउ जणेण जं खरदूसण हयलक्खणेण ।

घत्ता- परितावहो जा विवरीय मई पियविरहेण ण किज्जइ ।
परकज्जु सकज्जहो अब्भहिउ उत्तमपुरिसहि भणिज्जइ ॥२०॥

---

(19) 1.a इक्कहि, 2.a करिउण, 4 a उग्गापुराउ, 5.b जुवल, b आणिउ, 6.b सेणु, a देहवें, 7.a ०भडहु, a अक्खोहणीहि, b सहुं, a अरिखोहणीउ, 8.b सत्तहिं सउं, 10.b जिणइं, 11.b भिडियइं बलइं, b तामंतहि, 12.a जुज्झहु, b जुज्झउं, b वहियहि ।

(20) 1.b तो, a परहिय, 2.b a वससयणइ बहु, b सहसगइं, b विज्जासहउ, 4.a खरदूसण, a तहि, b विराहिउं णिउं, 5.b अच्छइं जहिं राहउं, a कलत्त, 6.b ति भणिउं, a हउ, a अणुसरणु, 7.a जामवत for वइयरु, 8.a रज्ज तें कलमलंतु, 9.b सूररय, b कियधय, 10.a तुम्हहं, b पयाउं बोल्लिउ, 11.a कि for म, 12.a परकज्ज, b अब्भहउं, b भणिज्जइं ।

(21)

रामे पियवमविरहाउरेण समदुहुँ भणेवि करुणाधरेण ।
चिंतिउ किं जीवंति गरेण जो अवहत्थइ पडिकउ परेण ।
तं जीविउ अहि सुहि अणिराउ मुणिवरु अह दाणविहाणु राउ ।
भयभायभीयहँ करुणभाउ वक्के विहुरउ अहवा आवाउ ।
जोव्वणु वियलउ तव चरण एण अह विज्जउ परउ ण पारएण ।
अह पियवण सुरया चरणएण मरणविहि विहिय सण्णासणेण ।
अह सरणायय भय णासणेण सयलु वि परदारपरम्मुहेण ।
परधणअहिलसु ण होइ तेण अहि परउवाउ ण उ बोल्लिएण ।
ता करमि सहलु परियउ अणेण इय मंतिऊण सहु णियमणेण ।
किक्किंधपुरहो गउ रामु जाम णिग्गेविणु विडसुग्गीउ ताम ।
सुग्गीवहो भिडियउ रणे पयंडु वामेण राम कोवंडदंडु ।
सज्जिउ ता हुय टंकारएण भयविज्ज कामरूविणिभएण ।

घत्ता– ता रामे रुट्ठे सिरकमलु तोडिवि विडसुग्गीवहो ।
तारापियपय रज्जेण सहु करे लाइय सुग्गीवहो ॥२१॥

(22)

तारा दाणें णं जीविउ दिण्णउँ एम कवणु पालइ पडिवण्णउँ ।
जीवउ णरु जो परउवयारउ रामचंदु जिह लोय पियारउ ।
उत्तमु परदुक्खे पीडिज्जइ अहमउ अण्णकज्जि जीविज्जइ ।
तार जाय पुणरवि सुग्गीवहो मरणु जि केवलु विडसुग्गीवहो ।
जो ण कज्जपरिणइ परिभावइ सो अइरेण महावय पावइ ।
जो हरिसे ण कज्जु विणासइ सा सुवरिणि घरसंपय दीसइ ।
परयारहो णामें लज्जिज्जइ अयसु मरणु बहु दुहु पाविज्जइ ।
जं परयार सुक्खु अहिणंदिउ सो भवे भवे दूहउ अणाणंदिउ ।
एरिसु ताराहरणु पसिद्धउ जं परस्सु तं अप्पहियद्धउ ।

(21) 1a समु दुहु, 2.a जीवंते, b अवहत्थइ a पराउ for परेण, 3.b अणियराउ, a दाणविहाण, 4.a भयभीयहजीवहु, a विहुवउ, 5.b जोवणु, a. omits अह विज्जउ परउ ण पारएण before अह पियवण etc. 7 a. omits सयलु वि etc. to line 8th ण उ बोल्लिएण, 8.b होइ, b परवाउ, 9.b तो for ता, b सहुं, 10.a जाव for जाम, a ताव, 11.a. omits सुग्गीवहो etc. to line 12th कामरूविणिभएण, 13.a विडसुग्गीहो, b विडसुवहो, 14.b सहुं ।

पवणवेय जिह एउ अजुत्तउ तिह अवरु वि विहडइ परवुत्तउ ।

घत्ता– किर वाणरेहि णिसियर हणिय एउ वि अलिउ पसिद्धु जणे ।
विज्जाहरसेण्णहि अह वज्ञ वि काइं करइ हरिसेणु रणे ॥२२॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए ।
बुहहरिसेणकयाए अट्ठमसंधी परिसमत्तो ॥ छ ॥८॥ छ॥

* * *

(22) 1.a विण्णउ, 2.a समइंतु, b लीइ, 3.b अहूमें, 4.a केवल, 5.b ०परिणइं, a महावइ, 6.b हरिसेण, a कज्ज, विण्णासइ, 7.a अवसु, 8.b जें for जं, a लोरद्धु, 9.a पविवुत्तउं for परत्तु तं, 10.a अवर, 11.a वाणरेहि, 12.a काइ, 14.b परिछेओ समत्तो, a संधि ॥८॥

९. नवमो संधि

(1)

कविट्ठखादन कथा

होएवि सेयंवर ते खेयरवर छट्टेँ वारि मणिभूसणे ।
गय वंभणसालहे भरिख लहे थिउ मयवेउ कणयासणे ।। ध्रु ।।

णवभेरिणिण्णाउ सुणेप्पिणु   आयउ को वि वाइ जाणेप्पिणु ।
दियवरेहिँ आवेविणु पुच्छिय   जाणहु कवणु सत्थु कहि अच्छिय ।
वाउ वि कवणु को वि तुम्हहँ गुरु   भणइ ताम मणवेउ सिरवरु ।
जाणहुँ भम्मह सत्थु पसत्थउ   वाउ वि जि माणउ असमत्थउ ।
किज्जइँ मोडिवि सो पर आणिउ   अवरु ण सत्थवाउ परियाणिउ ।
गुरुणा विणु तउ लइउ णिरुत्तउ   तं णिसुणेविणु विप्पहिँ वुत्तउ ।
वइतंडिय आलाव मुएविणु   णियवइयरु कहेहि भावेविणु ।
ता सेयंवरेण भासिज्जइ   णिसुणहु णियविरत्तु भणिज्जइ ।
गुज्जरत्त वंसहडा पट्टणु   मज्झु ताउ तहिँ णामें मोड्डणु ।
गदुरघेणुयाहि हुअंतिहिँ   गच्छइ कालु जाम सुहपंतिहिँ ।

घत्ता– एक्कहिँ दिणे जरियउ ता घरि धरियउ ताएँ मयुआलउ ।
हउ रक्खमि वाएँसहु लइ माएँ जा गदुरउआलउ ।।१।।

(2)

तामइ वणि कविट्ठतरु दिट्ठउ   परियक्कफलहरु सुट्ठु विसिट्ठउ ।
भणिउ सभाइ एहु एत्थंतरि   तुहु वालहि मेढियउ वणंतरि ।
हउ वि कविट्ठहँ लइ भक्खेविणु   अवरु वि तुज्झु णिमित्तइ लेविणु ।
गदुरवग्गु वणम्मि णिएविणु   पच्छइ वच्छ मिलमि आवेविणु ।
इय भणियम्मि एहु किर णिग्गउ   तामइ तरु भण्णेविणु तुंगउ ।
कत्तियाइ णियसीसु मुणेविणु   घल्लिउ तहिँ हत्थेँ पिल्लेविणु ।
ता छुहिएण अउज्झइ लद्धइ   मज्झु सिरेण कविट्ठइ खद्धइ ।
तित्ति लहेवि आ तहिँ तोडउ   ता फलरस परिपूरउ हंडउ ।
एत्थंतरि वंतिहि तोडेविणु   बहु फलाइँ तरुतलि पाडेविणु ।

णियत्थामें वसिऊण कविट्ठहो विहु संसग्गु सीसु णियवंसहो ।

घत्ता– जा तित्थु णिमक्कमि ताम ण पिच्छमि मझुराउ कत्थवि गयउ ।
सव्वत्थ गविट्ठउ जा ता विट्ठउ एहु कविट्ठु णिहं गयउ ॥२॥

(3)

उट्ठवेवि ताम मइ पुच्छिउ मेंढियाउ कहिं तुहु अच्छिउ ।
भणिओ अणेण पंचसमसंति मुक्खातण्हासिहिवुक्कतें ।
तक्खणि जाम णिहुत्तु मागिओ तामइ मिढियगमणु ण याणिओ ।
ता सुणेवि मइ भयकंपंति भणिअगिर पुणु पुणु जंपंति ।
पभणिउ वच्छ ताउ क्लेसइ आकोसति माय किं दीसइ ।
तो घरि अवरलेसु जाएविणु अच्छहु सेयंवर होएविणु ।
तो दोण्णि वि अम्हइ मुंडियमुंडा दोहि वि कंबलिइ करवंडा ।
महिं वि हरंत एत्थ आवेविणु कोठें भेरि सघंट हणेविणु ।
अच्छहु जा ता तुम्हइ वाइय सव्वउ जाणहो होहु ण वाइय ।
इय वइयरु पयडिउ पुणु तुम्हह एहु जि धम्मु कुलागउ अम्हह ।

घत्ता– ता विवहि भणेज्जइ हो हो पुज्जइ मायए पइ वंचतहो ।
को भरउ णिवारइ दुक्कहो तारइ मुणि असच्चु बोल्लंतहो ॥३॥

---

(1) 2.b वेरिरवा, a. adds इ before थिउ, b मणजउ, a सिहासणि for कणयासणे ।छ। 3.a ०णिपण्णा, b आइउ, a वाउ, 4.a वियवरहिं आवेवि, b जाणहुं, a किहा अच्छिउ, 5.b वाउं वि कवणु मुणहु को किर गुरु भणइं, 6.b धम्महुं, a माणु अप्पसत्थउ, 7.a किज्ज बोल्लवि, b पर for पह, a सत्थु वाउ, 8.b विण, b लयउ, a णिसुणेप्पिणु, 9.b वइंतंडिय, a कहेह, b भावेप्पिणु, 10.b भासिज्जइं, a भणेज्जइ, b भणिज्जइं, 11.b मुक्कउरति, b सकमु ताउं, 12.b ०वेणुआहिं, a दुक्कंतिहिं, b गच्छइं, 13.b वि for विणे, b त्ता for ता ।

(2) 1.b तामइं, b विट्ठउ, a फलहर, 2.b सयाइं, b मिढियउ, 3.b भइं, b अवरइं दुक्क णिसिणिति लेप्पिणु, 4.b मग्गु for वग्गु, a मुएविणु for णिएविणु, b पच्छइं, a मप्प for वच्छ, 5.b एहुं किर जा गओ, b तामइं, 6 b कविपाइं, a छलिउ तहिं अत्थें, 7 b छहिइण अडण्णइं लवइं, b कविट्ठइं खवइं, 8. a महेइ, b फलरस परिपूरिउ दुक्कउ, 9. a कंतहिं, b वहुं, a फलाइ, 10.a भत्तामे for णियथामें, 11.b मधुराउं, b गउ, 12.a णिहें, b गयउं ।

(4)

रावण दससिर कथा

समागच्छिऊण बहूणं वरेणं पुणो भासियं तेण सेयंबरेण ।
तिलोयाहिवो होमि एवं भणेवं चिरं वड्ढ़ु आराहिओ रावणेणं ।
वरं देइ णो तो वि जा ताव तेणं ससीसाणि छिंतूण छिंतूण धूणं ।
कया तस्स पुज्जा तहच्चेव ईसो ण तूसेइ ता चिंतए रक्खसेसो ।
मएँ एक्कसीसावसेसे वि देवो वरं देइ णो किं मई दीह सेवो ।
इमं चिंतिऊण सुज्झाणेण रक्खो पलोएइ तो दिट्ठु तेणं तियक्खो ।
समुच्छाहमुल्लाविए जाइ भेए पसण्णो किओ किण्णरेणं समेए ।
तओ रावणेणावि छित्तूण बाहू महाहं समायड्ढियं णीय साहू ।
समाणं कहत्थ समुप्पाइऊणं अरं दिव्वणादं तहिं गाइऊणं ।
विसेसेण वीरस्स आइद्धकण्णो किओ रावणेण हरो सुप्पसण्णो ।

घत्ता— तो आवइ हरेणं तुट्ठें हरेणं रावणासु वर दिज्जइ ।
सीसइं लुणियाइं पुणु मिलियाइं एउ पुराणि भणिज्जइ ॥४॥

(5)

कय सोमपाण पावणमुहहो एउ अत्थि पत्थि पयडहो बुहहो ।
तो तेहिं वुत्तु णिरिमाणमहो धवलियजसपसरवसाणमहो ।

---

(3) 1.b उवलेवि, b मई, b मिठियाउ, a. repeats कहि, b तुहु, 2.a पंच for पव, a गुणणा॰, 3.b ॰सुहुं, b तामइं, 4.b णिसुणिवि मई, b ॰णिह, 6.a तो वर, b जाएप्पिणु, b होएप्पिणु, 7.a. omits तो, b अम्हइं, b दोहिमि कवलिओ करिवंक, 8.b भावेप्पिणु, b संघंड, 9.b अक्खइं, b तुम्हहं, b सच्चउं, b होइ ण वाइंय, 10.b भासिउ, for पयडिउ, b तुम्हहं, b जु for जि, b अम्हह, 11.b तो विवरहिं भणिज्जइं, a भाए पव भंपंतह, 12.b णसु णिवारइं, b तारइं a बोलंतह ।

(4) 1.b तिलोआहिओ, a एवं, 3.b देई, b ताम, 3.a ससीसाणिछित्तूण छित्तण, b ससीसाणि छित्तूण छित्तूण धूणं, 4.b पूया तह चेव, b तूसेइं ता चिंता चिंतवदरक्खसेसो, 5.b मए एक्के सावावसेसम्मि देवो, b देइं, 6.b सज्झाणेण्ण, a पलोइ, 7.a ॰समच्छाहपकला पभेए, a समेए, 8.a तओ, b बाहुं, a समायड्ढिउ णीय, b बाहुं, 9.b समाणं for समाणं, b दिव्वनाहिं, 10.a विसेस्सेण, b आयढ्ढकण्णो, 11.b बाइ for आवइ, b तुट्ठिउ, 12.b सीसइंलुणियाइं पुणु मिलियाइं ।

नरवरकुरंग पंचाणणहो साहसु सुपसिद्धु दसाणणहो ।
सव्वत्थ जणेण वियाणियइ अम्हहिं किं फिर वक्खाणियइ ।
उद्धरिउ जेण कइलासगिरि विद्धंसिय घल्लिय अमरपुरि ।
ण व सीसहिं पुज्जिउ देउ हरो गेएँ तोसिउ हरु लद्धवरो ।
एत्थंतरे पडिवयणेहिं पहु पडिजंपइ विहसेवि सेयवहु ।
णवसीसइ छिण्णइ रावणहो अइ लग्गइ पुणरवि कंधणहो ।
तो मइं बोल्लिउ किं ण उ घडइ सिरु एक्कु किं ण महु संघडइ ।
अह भणहु एम दहँ सिरइँ गलि मेलवियइ लुयगलसिरइँ ।

घत्ता— एरिसु वि ण जुज्जइ जं णिसुणिज्जइ लिंगु पचंडु तवसि सविउ ।
कय दाणवदप्पें हयकंदप्पें हरेण सदेहि ण संथविउ ॥५॥

(6)

दधिमुख और जरासन्ध कथा

अवरु वि परपुराणु एउ सुम्मइ काइँ वि पंभणिए सुओ जम्मइ ।
दहिमुहु देहरहिओ सिरमित्तओ सुहसत्थत्थ धम्मसंजुत्तओ ।
हुउ जा ता जणणयणाणंदिरि आइउ तहो अयत्थि णिउमंदिरे ।
अहिवायण पुव्वं पणवेप्पिणु अब्भागयपडिवत्ति करेप्पिणु ।
दहिमुहेण पमणिउ मुणिसारा महु घरि भोयणु करहि भडारा ।
भणइ अयत्थि णत्थि तुह मंदिरु जं कुमारु तुहु महिलय णंदिरु ।
कुमरयाले णियरहरि वसंतहँ णत्थि धम्मु अहियारु करंतहँ ।
गउ मुणि एम भणेविणु जावँहि दहिमुहेण णियपियरइँ तावँहि ।
भणियइं काइँ ण मइँ परिणावहु तेहिं भणिओ को देइ तुहु ।
इय भणियइँ दहिमुहि ण उ भुंजइ तेहिं रोडु ता को वि भणिज्जइ ।

---

(5) 1.b. inter. अत्थि and णत्थि, 2.a तेहिं, a विस for जस, b विसाणणहो, a inter the line घवलिय etc. and सुरवइकुरंग etc. 3.b सुरवइकुरंग, 4.b वियाणियइं, a अम्हइ णिर किं वक्खा०, b वक्खाणियइं, 5.a कइलासु गिरि. b कइलासगिरि, b अमरपुरी, 6.a सीसिहिं, b लद्धु वरु, 7.a पडिवयणेहिं पहु, b विससेवि, a सेयपहु, 8.b नवसीसइं छिण्णइं, b लग्गहिं, 9.a महु, a कि for किं, b एक्कु किण्ण, 10.b भणहुं, b सिरइं, b ०मेलवियइं लुयगलसिरइं, 11.a एरिसु वि ण्ण, a जे for जं. Cf. महाभारत (वनपर्व), वाल्मीकि रामायण ।

घत्ता– बहु अत्थु लइज्जउ णियसुय विज्जउ तणयहो दिय अम्हारहो ।
तेण वि दिण्णी तहो पियरहि पुत्तहो किउ विवाहु गुणसारहो ॥६॥

(7)

विसरीह वो जो को वि असमत्थउ तं जणु संभासइ विसमत्थउ ।
नह सो माणिणीहो माणिज्जइ अत्थि किर को ण उ लोहिज्जइ ।
गच्छइ थोउ कालु किर जावहि दहिमुहु भणिउ जणेरि तावहि ।
अत्थु आसि जो अम्हहि संचिउ तुज्झ विवाहि पुत्त सो वेचिउ ।
एवहि णिव्वहि अप्पाणओ दहिमुहेण तओ महिउ पयाणओ ।
भणिय सभज्ज एहि आइज्जइ माणविरहिउ केम जीविज्जइ ।
ता सा णयरगाम पइसंती सिक्कयत्थु दहिमुहु दरिसंती ।
णियपइवय दप्पें वग्गंती भोयणु अत्थु वत्थु मग्गंती ।
नियहं सहत्तणगुण बुज्झंती अज्जोणिहि णयरिंहि संपत्ती ।
टिंटामंदिर दिट्ठु वण्णउ उब्भड भडसामंतहि पुण्णउ ।

घत्ता– तहि छुटे ससिक्कउ दहिमुहु सइ कत्थ वि कज्जें गय ।
एत्तहि जुआरहि दिण्ण पहारहो अत्थत्थें कलि उग्गय ॥७॥

---

(6) 1.b किर for पर, b सुंमइं, a काइ, b जम्मइं, 2.a दहिमुह, b सुइं, 3.b हुंउ, b आयउ in margin पिउ is explained as पितु, 4.b अम्हागय०, a करेविणु, b केरेप्पिणु, 5.a मुहु, 6.b भणइं, a मंदिरो, b तुहं महिलअ णिदिर, a णंदिर is explained in the margin as आणंदकारि, 7.a कुमरकालि, a वसंतह, a करंतहु, 8.b गउं, a जावहि, 9.a पभणिउ काइ न म परि०, b परिणावहो, a भणिउ तेण कीं देसइ तुव बहु, b बहो, 10.a भणिए, b दहिमुहुं, b भुंजइ, b रोह, a. omits को, 11.b लइंज्जइं, b विज्जइं, 12.b विणी, b विवाहुं, Cf. ब्रह्मा, वायुपुराण, महाभारत, आदिपर्व ।

(7) 1.b संभासइं, a णय०, 2.a तहि, b माणिणाहि माणिज्जइं, b लोहिज्जइ, 3.b गच्छइं, b तावहि दहिमुहु भणिउं, b तावहि, 4.b अम्हहं संचिउ तुज्झु, 5.a णिव्वावहि, b दहिमुहेण, a तं भुणिउ for तओ महिउ, b महिओ, 6.b आइं जइं माणि रहिओ, b जीविज्जइं, 7.b णायरगामपइं-संती, 8.b पइवय, a वग्गोती, 9.b सइं तणु गुणु, a बप्पंती, 10.a टिंटामंडउ, 11.b छुटि ससिक्कउ दहिमुहकंउ सा वि अत्थुकज्जें, 12.a जूआरहो, b अत्थत्थि कलि उग्गया ।

(8)

कासु वि पडिउ सीसु असिघाएँ सिक्कउ भिण्णउ कम्मविवाएँ ।
तम्मि रुंडे दहिमुहसिर लग्गउ इय कहिऊण कहाणु समग्गउ ।
सेयंबरेण भणिउ कय सुह सुहा भग्गहु दियहु ण वा एरिस कहा ।
दहिमुहु सव्वविएहिं कवेज्जइ एयारिसउ वेयम्मि सुणेज्जइ ।
सेयंबरु भणेइ जिव दोस वि जयु विरुउ भण्णइ ण पयासु वि ।
दहिमुहंसिरु लग्गइ पररुंडहो मज्झु सरीरु किं ण महु रुंडहो ।
तह वहुणीवें वायर अंगउ असिवरेण किउ दो कालंगउ ।
णवर लेवि हणुवंतें सीविओ लग्गु अंगु पुणरवि सो जीविओ ।
अवरु वि दहुरहु दाणवईसहो पुत्तु णत्थि ताम ति ईसहो ।
कय आराहण एक्कें चित्तें भत्तिभारतुट्ठेण तिणेत्तें ।

घत्ता— तहो णवणामंकणु होउ सुणंदणु इय अमोहु वरु भासिउ ।
णवकंपिवि समप्पिउ एक्कु जि कप्पिउ तहो वि हि घरणिहि पासिउ ॥८॥

(9)

पिंडेणं तेणं दोहाणं णूणं भज्जो हूउ ताणं ।
एक्कम्मिहु दोण्हं दो भाउ पुण्णेहिं मासेहिं जाउ ।
अद्धद्धंगो दद्दुं पुत्तो सावाणाए रण्णे खित्तो ।
देवीए कुक्कुडीणामाए तं कम्मे ण आइट्ठाए ।
रण्णे हिंडंतीए दिट्ठो सिरसा होंतो पुण्णं इट्ठो ।
जोहेणं ताए दो काले एक्कीकाओ मुक्को बाले ।
जीवेऊण आवो थंडो उब्भो णं मिम्मे मत्तंडो ।
विम्हो वेवारीणं तुट्ठो सम्मूणं लच्छीए लट्ठो ।
जल्लाए दो भीए तट्ठो कुलओ दप्पं मोत्तुं णट्ठो ।
जेणारीओ भण्णा लीला एसो छंदो विज्जुमाला ।

---

(8) 1.b सीसु पडिउं असिघाए सिक्कउं छिण्णउं, 2.b तम्मि तुंडि दहमुहसिर, 3.b कुइ, a सुहु for सुहा, b भग्गाहु दियहुं, a ण या एरिसु कं तुह, 4.a दहिमुह कुव्वविएहि, b दहिमुहुं, b वणिज्जइ, b सुणिसुणिज्जइं, 5.b भणेइ किव, a विरुव जणहु ण पयासइ, b भण्णइं, 6.a दहिमुहु लग्गइ किं पर०, b लग्गइं पररुंडहो, 7.b वंपउं, a किउ, b किउं दो कालंगउं, a लग्ग, b. omits सो, 9.a ण अत्थि, b तामं, 10.a आहुरणें, a चित्तें, b तिणेत्ति, 11.b सुइ, b होउं, b वरु for अह, 12.b णवकंपिज, a एक्कु, b अप्पिउ, b घरिणो पासिओ ।

घत्ता– जर्लेविणु पहाणउ साहूइ रामउ हुँतिउ कुवयपसिद्धउ ।
इय वाणें भासिउ भोए पयासिउ काइ भणहु ण वि घडइ ॥९॥

(10)

अवरु गउरि णवजोव्वणमत्तहो सुरयसोक्खु माणंतहो बहुहो ।
वरिससहासु विन्दु णा मेल्लइ ता सुरलयहो चित पवल्लइ ।
जइ कह वि हु इय सुरए णंदणु उप्पज्जइ सुरलसुर वि मद्दणु ।
जमु जगडंतु केण वारिज्जइ तो वर विग्घु कि वि किरज्जइ ।
इय मंतेविणु गउरिसहोयरु पिसिउ पत्तु तित्थ वइसाणरु ।
थियहु संबंधु णियच्छिउ जावहि लज्जइ गउरि समुट्ठिय तावहि ।
एत्तहो सुक्कखलणु अलहंतें हर्दू कोवाणल पजलंतें ।
भणिउ दुट्ठु अइ धिट्ठ किमायउ कि सहु सुरयविग्घु उप्पाइउ ।
जइ वि ण सालयासु रूसेज्जइ तह वि हु तुज्झ दंडु गुरु किज्जइ
दुद्धरसुक्क महिहि कि हरिल्लमि उहुहि मुहु सुरंतु जें घल्लमि ।
मुहि खेत्तम्मि तम्मि पुणु संकरु भणइ ण वि हवु वाहु जिह तिह कुरु ।
णवर तेउ सुक्कहु अनहंतउ वइसाणरु करे कलणु पत्तउ ।

घत्ता– धंमहि मुणि भामहि कित्तिय ण्हायेवि वहि णा तप्पिउ ।
ता तेयाणलेण उवहृत्यलेणं आणिहि सुक्कु समप्पिउ ॥१०॥

(11)

पौराणिक कथा समीक्षा

हुए पच्चे मुणिहि णीसारियाउ सरवणे ताउ पसूइयाउ ।
छव्वलु समुज्जव काय बंतु एक्क हि विवमं पारयहु तेसु ।
हुउ एक्क कायज्ज मुहु कुमारु तो तारकारि जीवावहारु ।

(9) 1.b वोम्हाणं, a मज्झा, b हुक, 2.a एक्कान्हे, b. omits वोषु, b भावो, b भावेहि बावरे, 3.b कहु, a. explains वाणा भोए as अवमेण in margin, b तावाणए, b णिच्छत्तो, 4.a भजराए, a कम्माणं वाईट्ठाए, 5.a तत्ता 6.a पकासी एक्कीकाणी, 7.a वोवीकण, b चंदे, b उंगो थं मिन्हं मंतओ, 8.b विन्हू वेसारी and then the space is blank and the back page 57 is also blank on 58 a, we have in red ink begins from ||घत्ता|| कणयं कत्तारए बेप etc. 9.a वोत्तं Cf. भागवतपुराण, मत्स्यपुराण, विष्णुपुराण, महाभारत, सभापर्व ।

अंगयजरसंधकुमारकहा   कहिऊण भणिय तें विप्पसहा ।
दो फालु वि अंगउ मिलइ जेत्थु   महु सिरु महु अंगहु किं ण तेत्थु ।
जरसिंधु कुमारहु लग्गु अंगु   किं महु ण घडु धडु उत्तमंगु ।
परसच्चु एउ जं वियहु इट्ठु   सहण्णु वि भय एक्कउ ण दुट्ठु ।
तो तेहि वुत्तु पइ भणिउ जाव   तं भण्णिउ सच्चउ होउ ताव ।
पर खाइ मुहु धडु धाइ केव   तं णिसुणेविणु जइ भणइ एव ।
इह लोइ विप्पं भोयणु करंति   परलोए पियर कहि दिहि धरंति ।
चिरकाल मुया दूरंगया वि   णाणाविहि जोणि समुग्गया वि ।
णियकच्छु कवित्थइ खाइ मंडु   तक्खणे वि ण किं महु भरइ टंडु ।

घत्ता– केत्तिउ महु जंपिहु चित्ति वियप्पहु रावणआइ कहाणउ ।
जा मारिसु तं जइ तारिसु तेण अलिउ महु वयणउ ॥११॥

(12)

सेयंवर भासिउ विप्प सुणेवि   सुसत्थपुराणअ सव्व मुणेवि ।
ण जंपहि किं पि विहंडिय माण   विचिंतहि एयहो वाय पमाण ।
णिरुत्तर विप्प णिएवि सुबुद्धि   पुणो वि पयासइ तत्थु वि सुद्धि ।
सुसत्थु सुधम्मु सुलिंगु सुदेउ   परिक्खवि लक्खहो मोक्खहो भेउ ।
ण सुज्झइ जत्थ सवाय विरोहु   तमेव ससत्थु विणासिय मोहु ।
सुधम्मु वि जित्थ ण कम्मु संहिसु   अहिंसु जे दिट्ठु उ णग्गु जइंसु ।
सुदेउ वसट्ठहि दोसहि चुक्कु   सुमोक्ख असेस परिग्गह मुक्कु ।
सुलिंगु सुहाउ सुणेवि सुसत्थु   सुधम्मु मुणेह गुणड्ढु पसत्थु ।
सुधम्मफलेण सुदेवहो झाणु   करेवि लहेह सुणिम्मल णाणु ।
सुणाण गुणेण विणासिय दुक्खु   लहेह सुमोक्खु अणुत्तरसोक्खु ।

घत्ता– अप्पउ पयत्तारइ जो ण वियारइ सत्थु धम्मु गुरु देउ वि ।
संसारि णिमज्जइ दुक्खें खिज्जइ सुसुहहो मुणइ ण भेउ वि ॥१२॥

---

(10) 2.a पयट्टइ, 5.a मंतेविण्णु, 12.a वसंहंतउ, 13.a. explains गंगहि as गंगासमीपे in the margin ।

(11) 8.a चेव for जाव ।

(12) 3.a पुण्णो, 4.a मोरवहो, 11.b अप्पउं पत्तारइं जे ण वियारइं सत्थ, b देउं 12.b णिमज्जइं, b' खिज्जइं समुहहो मुणइं ।

(13)

इय जाणिवि उहयरु अप्पसत्थु मा णिसुणहु अण्णाणिय कुसत्थु ।
णिसुणिए कुसत्थे कुम्मइ हवेइ दुम्मइए कुधम्महो चित्तु देइ ।
कुच्छियधम्मेण कुलिंगि रत्तु णरु कुपुरुहो होइ कुदेवभत्तु ।
तहो भत्तिए दारुणु करइ पाउ तें एम चउगइ दुहणिहाउ ।
णारइयदुक्ख जइ मुअइ कहवि तिरिएसु वि तारिसु लहइ तह वि ।
जइ लहइ णरत्त सुहिएत्तणाइ तो कोत्थिय सोक्खहो भायणाइ ।
ण सुणइ कयावि वरसुहहो णामु कहि किर सीमा जहि णत्थि णामु ।
जिणदेउ ण रिसिगुरु अत्थि जेत्थु संपडइ णरहो कहि मोक्खु तित्थु ।
मोक्खे ण विणा तवकारणाइ रत्तंबरजड धारणाइ ।
मासोववासु चंदायणाइ कंजियभोयण सुद्धोवणाइ ।
वहिरसयणइं असावणाइं वरि सालइं णिसिसेवियवणाइं ।
दंडयधरणइं सिरमुंडणाइं सव्वह मि सरीरहो दंडणाइं ।

घत्ता– इय एम मुणेविणु रिसि पुज्जेविणु लग्गिज्जइ जिणधम्महो ।
जि अमरणरत्तणु लब्भइ कित्तणु मोक्खसोक्खु खए कम्महो ॥१३॥

(14)

अण्णाणियपुराणु अइतुच्छउ कहहि अणहो णियमइ सारिच्छउ ।
णिद्दोस वि सुरवरणरखेयर अप्पसरिस साहिसकोसायर ।
जो सत्तावीसरवरकोडिहि सेविज्जइ मग्गियपरिवाडिहि ।
खयरासुरणरवरपुज्जसुरवइ सो अहल्ल मणु वि किं सेवइ ।
इंदु णाम खयराहिउ मुद्धउ गोयमखगतवसिपिय लुद्धउ ।
आहल्ला णामाइ सुपसिद्धहो रूपकंतिणवजोव्वणरिद्धहो ।
सुरयसोक्खु माणंतु णिएविणु पियंपियपरिहवरोसु करेविणु ।

(13) 1.b णिसुणाहु, 2.b कुसत्थु कुम्मइं हवेइं दुम्मइंय, b चित्त देइं, 3.b कुलिंगरत्तु णरु कुरुहु होइं, a इ for होइ, 4.a दारणु, b तिं पावइं चउंगइं, 5.b जइं मुअइं, a मुव for मुअइ, b लहइं, 6.b जइ लहइं सुरत्तणाइं, b भायणाइं, 7.b मुणइं for सुणइं, a वरसुरइ, 8. a जिणु देव, b जिणदेउं, b संपडइं, b मोक्ख, 9.b कारणाइं रत्तंबरधरण जइं धारणाइं, 10.a मासोववास, b चंदायणाइं, b सुद्धायणाइं a. adds आयामणाइ after असावणाइ, 11.a वरिसालणिसिहि सेवियवणाइ, 12.a धरणाइ, b सव्वइं, a दंडणाइ, 13.a एव for एम, b लग्गीइज्जइ, 14.a जं सुण्णरु सुरत्तणु, b लब्भइं, b मोक्ख सोक्ख खयकम्महो ।

जोव्वणेण विब्भाव णवंति सहुं सजोणि किउ सा उ णवंति ।
फुरिसु वि जोव्विसहासें दूसिउ कामें कहो चारित्तु ण मूसिउ ।
रवि जोइवि देउ जम् जाणइ सो माणुसिय कुंति कहु जाणइ ।
जइ सा मुणिहि महासइ भासिय तो किं तहि बहु मुणिहि पयासिय ।
तिसुवत्थु व परसत्थ कहाणउ तं पावरणु तं वि परिहाणउ ।

घत्ता– वरतणु साहसणउ सो कुत्थियणउ जं दुज्जोहणु पयडिउ ।
हरि अड्डणिहीसरु पंडवपुरसरु ति अप्पाणउ विणाडिउ ॥१४॥

(15)

इक्खाइवंसि पडिवासुएउ खरसंबु रणंगणि अतुलतेउ ।
वासेण णारिसुता सुरुहा विराविणु रंजिय मुद्धसहा ।
वालि वि वयणक्खुउ चरमदेहु रावणु जिउ जि जयलच्छिणेहु ।
जुण्णयरतणु व मिल्लेवि रज्जु कइलासि अणुट्ठिउ अप्पकज्जु ।
पावणसिलसंठिउ चरणजुयलु सायरगहीरु मेरु व्व अचलु ।
अहरोत्तरोट्ठसंपुडियवत्तु णासग्गणिहियणिप्कंदणित्तु ।
णिग्गमणपवेस णिरुद्धसासु णिमुक्कडंभतिहुयणपयासु ।
आजाणुपलंबिय दीहबाहु तणु जोइ परिट्ठिउ वालिसाहु ।
एत्तहि पुरवरु णिच्चावलोहु धवलहरइय णाणावलोहु ।
रावणु रयणावलि जगकुमारि परिणेवि विहुंडिय विरहमारि ।

---

(14) 1.b अइं, b मइं, 2.b खेयरा, 3.b कोडिहिं सेविज्जइ, 4.b खयरसुरासुरणरणुउ सुरवइं, b सेवइं, 5.a इंदु णाउ, b सुद्धउ for मुद्धउ, a •तवसिम पिय, 6.b आहल्ला णामाहि पसिद्धहिं, b •णवलोयणरिद्धिहि, 9.b मूसिउं, 10.b देव, b जाणइं, b माणइं, 11.b जइ सा मुणिहि महासइं भासिया, b तहो बहुं माणुस, 12.a पावरणु is explained in the margin as दुश्चारिणी स्त्री पालकवस्तुवत् = निर्मलवस्त्रं सो पि पणपूछणओढणउ, 13.b जि for जं, b पयसिउ, 14.a तें अप्पाणउ विणडिउ ।

(15) 1.a इक्खाइवंसु पडिवसुदेवु, b इक्खाउहुवंसि परिवासुएउ खरसिधु, b अतुलतेउं, 2.a वासे ण ण्णारिसुता, b वासेणं णारिसुता, b मुद्धसदा, 3.b चरणइंसुउ चरमदेहुं, b जि जिउ जलच्छिणेहुं, a मिवि सरज्जु, b अणुट्ठिउं, 5.a •संठिय, b अचलु, 6.a अम्हरत्तरोट्ठ, 7.b पवेसारुद्ध, 8.b दीहबाहु तणुवंति, b वालिसाहुं, 9.a पुरवर णिच्चावलोए, b णिच्चवलोइं, a णाणवलोइ, b णाणावलोयाइ, 10.b रतणावलि ।

घत्ता– फिर णरयाणंदें अंदियसहँ णकउरिहि जाम चलिउ ।
ता तिहुयणवंदहो वालिमुणिदहो उवरि विमाणु खलिउ ॥१५॥

(16)

तो भणइ दसाणणु माणमलणु । किं किउ महु जाम मरीइ खलणु ।
ति भणिउ देव कइलासि साहु । अच्छइ जोएंत व सिरिसणाहु ।
तहो मत्तेएँ सयवंहु जाम । गच्छइ ण जाणउ सारि ताम ।
एत्थंतरि रावणु कुद्धचित्तु । चिंतइ एयहो मायाचरित्तु ।
अहवा कहु थंभइ महु विमाणु । तो वरि एयहो णिट्ठलमि माणु ।
विज्जाए महियलु दारणु करेवि । कइलासु महीहरु उद्धरेवि ।
स मुणिवि समुट्ठे किर खिवइ जाम । आसणु कंपिउ फणिवइहे ताम ।
उवसग्गु मुणिहि अवहिए मुणेवि । णियकज्जु एउ महु हउ भणेवि ।
सहसा एंतूण फणीसरेण । मुणि वंदिउ भत्तिए णियसिरेण ।
वेउव्वणाइ हुउ गरुउ जित्थु । तणुभारें भारिउ गिरि वि तित्थु ।

घत्ता– हुउ कुम्मायारउ मुणि अवयारउ तारावणु दुहु पावइ ।
कय साहु अणिट्ठहो पयहए दुट्ठहो कासु महामइ भावइ ॥१६॥

(17)

गुरुगिरिभरपाविय बहु दुहेण । अइराउ मुक्कु गुरु दहमुहेण ।
त णिसुणेविणु गुणगोयरीए । भयकंपमाण मंदोयरिए ।
भत्तारभिक्ख मग्गिउ फणिंदु । खमियव्व वि णिग्गउ णिसियरिंदु ।
णिल्लेविणु माणकसायगाहु । णिमिउ अप्पाणु णविवि साहु ।
जो वालि भणिउ इय बुह महंतु । सम्मीए सो वाणर पवुत्तु ।
सो किर वरिसिव धणु लाइवेण । सुग्गीवकज्जे हुउ राहवेण ।
तं अलिउ भणिउ तेण वि ण भंति । ण उ चरिमदेह मारिय मरंति ।
णियमेण महागुणु तउ चरंति । णाणेव मोक्खफल पइ सरंति ।

---

(16) 1.b रणइ for भणइ, a. in margin for मरीइ explains हे मारीचे, 2.b कइलासि माहुं, b साणहुं, 3.a जाव, a ताव, 4.b चिंतइं, 5.b थंभइं महुं, 6.a महियल, b दारणु, b कइलासमहीहर, a उद्धरेवि, 7.b खिवइं, b फणिवइं ति for फणिवइहे, 8.a उवसग्ग, b मुणिवि for मुणिहि, b भणेवि for मुणेवि, b मुणेवि for भणेवि, 9.b णवसिरेण, 10.b. omits हुउ, 11.b हुउ कुम्मायारउँ मुणिअवयारउँ, b दुहु पावइं, 12.a पवइ for पयहए, b महामइं भावइं ।

इय जाण खलण कोंवियमणेण उद्धरिउ आसि गिरि रावणेण।
सवण्हुवयणु एरिसु णिरुत्तु धुत्तेहिं तम्मि हरकज्जि वुत्तु।

घत्ता– रावणु वीसमए चउवीसमए तित्थि रुद्दु उप्पज्जइ ।
कइलासुद्धरणउ खिरकत्तरणउ हरतोसवणु ण छज्जइ ॥१७॥

(18)

अघडंतु वि जं धुत्तेहिं वुत्तु मुक्खेहिं तहिं वि पुणु दिण्णु चित्तु ।
जइ वि हि हरिहरहो णं अत्थि भेउ कह बंभसिरहो हरु करइ छेउ ।
जइ कह व सव्वंगउ हरि भणंति बंभु वि तिहुयणकत्ता मुणंति ।
तो तहि हुए वड्डुत्तणु विवाए अंतरे थिए हरिणिरु दीहकाए ।
किं तेहि तासु ण उ लद्धु अंतु किं तिहुयणु भिंदेवि दूरि पुत्तु ।
हरि बंभहि जासु ण मुणिउ भेउ तहो किउ कह तवसिहि लिंगछेउ ।
जइ ईसरु तिहुयणमोहणवियड्ढु रुद्देण कोवजलणेण दड्ढु ।
तो किं पुणु सो देहद्ध गउरि सिरि वहइ गंग जियकामवेरि ।
इय अघडमाण लोइय पुराण सक्खाइव ते वि गणहिं अयाण ।
सयलु वि मिच्छत्तगहेण भुत्तु ण वियाणइ किं पि अजुत्तु जुत्तु ।

घत्ता– जिह वंझहे णंदणु सससिंगें वोमि ण पोम्मुप्पज्जइ ।
तिह सपिउसदप्पिउ गुरुयरमप्पउ हिंसए धम्मु ण जुज्जइ ॥१८॥

---

(17) 1.a गराउ, 2.b गुणगोयरी, 4.b अप्पाणउं णविउं, 5.b वलि, b गुण for गुरु, b वम्मीएं, 7.b भणिउं, b चरमदेह, 10.b तं पि, b वुत्तुं, 12.a. in margin explains तीसवणु as तीर्थंकरणें ।

(18) 1.a धुत्तेहि, a मुक्खेहि, b तहि मि, 2.a बंम्हसिरहो, 4.b तहो for तहि, b वड्डत्तण, b दीहकाइ, 4.a तेहि, b तासु लद्धउ ण अंतु, a. in margin explains तेहि तासु as हरिब्रह्माभ्यां हरस्य, 5.b दूरु, 6.a बंम्हहि, b मुणिउ, inter. किउ and तहु, a तवसिहि, 7.b सरु for ईसरु, a दड्ढ, 8.a. omits सो, a जिह कामवेरे, 9.a अयण, 10.a सयल, a वियारइ, b वियाणइं, 11.b पोमु उप्पज्जइ, 12.b तह, b °अप्पउ, a. in margin explains ससिंगे as शृङ्गं ।

(19)

धर्म–महत्व

अह हवइ पढमु तो खत्तियाण   सण्हयपारद्धियधीवराण ।
जइ हिंसए लब्भइ सग्गु मोक्खु   ता को वि सहइ तव ता व दुक्खु ।
जइ लब्भइ तरुतलि फलसमग्ग   को चढइ पई हव तरुवरग्ग ।
जइ देव सपहरण कामकोव   ता किण्ण चोरजारह सुदेव ।
वाणारसिपुरवरणरवईहे   हुउ णंदणु बंभु पयावईहि ।
तह वासुएउ वसुदेवपुत्तु   सब्बइ मुणितणुवहु संभु पुत्तु ।
इहु माणविगब्भ समुब्भवाहु   तह बंभरज्ज दूसिय भवाहु ।
जय करण धरण संहरण कम्मु   तहिं कह परमप्पयवक्खसम्मु ।
जे परमप्पय ते अतणु होंति   विणु देहिं णिक्किय किं करंति ।
इय परमपाण सवयण विरोहु   जहिं णत्थि बीउ तहिं कहिं परोहु ।

घत्ता– मा दियहों चिरावहो मइगुणे दावहो दहविहु धम्मु चिति ठवहु ।
रयणत्तउ भावहु तहु कलु पावहु भवभयकम्ममलु णिट्ठवहु ॥१९॥

(20)

णिच्चलगुरुत्तणिज्जियपमाए   संभवइ धम्मु उत्तमखमाए ।
अहिमाणदुक्खदुद्दमदमेण   संभवइ धम्मु तह मद्दवेण ।
अवहत्थिय कुडिलत्तण जवेण   संभवइ धम्मु पुणु अज्जवेण ।
हियमियपियभासणसंचएण   संभवइ धम्मु फुडु सच्चएण ।
हयलोहकसायसमुच्चएण   संभवइ धम्मु सुइउच्चएण ।
पाणिदय अक्खजय उज्जमेण   संभवइ धम्मु वरसंजमेण ।
कयणियमें कलि तम आतवेण   संभवइ धम्मु णाणातवेण ।
आरंभकंभअहियासएण   संभवइ धम्मु कयचायएण ।
मणिणय समाण तणकंचणेण   संभवइ धम्मु आकिंचणेण ।
णवभेए हयमयणुब्भवेण   संभवइ धम्मु दिढबंभएण ।

---

(19) 1.a. in margin explains सण्हय as कलाल, b सुंडिय for सण्हय, 3.b फलु समग्गु, b तेरवरग्गु, 4.a तो, b •आराहं, 5.b वाण for वाणारसि, a वाराणसि•, 7.b समुब्भवाहं, a तवभसरज्ज for तह बंभरज्ज, b भवाहं, 8.a •कम्म, b तह कहिं, 9.a जह for जे, a ते पुण for ते अतणु, a णिक्किय, 10.a repeats सवयण, a जहिं, a तहि कहि, 11.a पुणु, a चिंचितवहु for चिति ठवहु, 12.b कयमलु ।

घत्ता— इह मलिय कुसंगहि वहुविह भंगहि विमलु धम्मु उप्पज्जइ ।
सुरणरफणिपुज्जहो हिंसविवज्जहो तहो फलु विमहु कहिज्जइ ॥२०॥

(21)

जासु जणवि तणु सुझिहि कामिणि इंदाणए आइए अच्छरयणि ।
बारह पक्ख जाम वसुरयणइ सुरवरिसहि उज्जोइय गयणइ ।
गब्भे थिय णवमास णिरंतर रयणविट्ठिकब्बुरिय वसुंधर ।
किज्जइ पुणु नि पुणु वि णिक्खणहि पियरह पुज्जिज्जइ गयमाणहि ।
जे जम्मणि सुरसिहरे थवेविणु खीरसमुद्दखीर आणेविणु ।
कयणरयणमकलस सहासहि ण्हाविज्जहि सुरवहि संतोसहि ।
पुणु णिक्खमणे अमरसंघायहि सिबियारवंध जाम अणुरायहि ।
एक्कमिक्क णिरुज्य समहहि थे णिज्जहि कय जय जय सद्दहि ।
केवलणाणुप्पत्ति सुर विहियए समवसरणि बहु सोहा सहियए ।
सुरणरविसहरसहहिणिविट्ठा जे सयलु वि भासंति गरिट्ठा ।

घत्ता— पुणरवि णिव्वाणए सुहसंताणए अग्गिकुमारमउड सिहिहि ।
अंमइ सक्कारहि सुरतरुसारहि जा णवेवि णिविहहि विहिहि ॥२१॥

(22)

इय जसु पंच महाकल्लाणहि छाइज्जइ ण हु अमरविमाणहि ।
चउतीसाइसयहो सव्वहियहो अट्ठ पाडिहेरण्णय सहियहो ।
तिहुवणसिरि दासि जहु दीसइ तेहि समाणु कवणु किर दीसइ ।
ते जिण तिहुवणभवण णिवारा कम्मकलेण हवंति भडारा ।
जा मणिरयणु णिसेसइ (सोहइ) काणणि किउ रविकंति तमु णासइ ।

---

(20) 1.b कमाए for पमाए, 2.a दुहमदवेणे, फुडु for तहु, 3.b तह for पुणु, 4.b हिय०, b ०संभएग, 6.a पणिदय०, 10.b हयमयमवेण, 11.b पलिय for मलिय, b कुंहुम्मंगहि विमलधम्मु उज्जइं 12.b विविह कहिज्जइं ।

(21) 1.b जायणि for जणवि, 2.a वेस, b रयणइं, b गयणइं, 3.b कब्बुरिय-वहो, 4.a किज्जइ, b किज्जइं, a पुण वि पुण वि, b पियरइं पुज्जिज्जहि, 5.a जँ जम्मण, a सुमेविणु for थवेविणु, 6.a कणयरयणु, b ण्हावहि ह्राविज्जइं सुरवइं, 7.a पुण, b णिक्खवणि, 8.a एक्कमिक्क, b inter. कय and जय जय, 9.a केवल, a बहु सोभा, 10.a सयल, 11.a णिव्वाणए, 12.b जा णवे ।

इंदु पयंडु गिरिंदु पलोइय   चक्कु वि सत्तु णवणुक्का पहुइ ।
लच्छु कलत्तु संधु वि को हुवइ   भावकलत्तु वयणु वि ण पहुवइ ।
भयुभवू वि अमहियलु तारइ   करिरयणु वि सुरकरि वि णिवारइ ।
तुरउ तुरंतु इदहु पउ पावइ   सेणावइ भरइ सेणावइ ।
पुरउ हवंतु पुरोहिउ पिच्छइ   थिहवइ गिहु उवयरणु पयच्छइ ।

घत्ता— चवइ विवर सोहइ करइ सणेहइ तियरयणु वि जहि तियसय ।
भावेंवि अतित्तहँ अइबलवंतहँ करइ मत्तरउ सुहपयं ॥२२॥

(23)

छहरिउ जोग्गइ दिव्वइ सुहाइ   जहु देहु कालणिहि कय सुहाइ ।
महु कालु वि णाणा भायणाइ   पंडु वि धण्णइ सुर हिय कणाइ ।
माणउ पहरणइ वि जियरणाइ   संख णिहिवि तूरकलरवाइ ।
णे सप्पु वि वत्थइ उज्जलाइ   पउमक्खु धरइ बहुभूय लाइ ।
पिंगलु आहरणइँ रइयराइ   णिहिरयणु देइ रयणइ वराइ ।
खयरिहु णिवपुत्तिहु मेच्छि णीहु   छण्णवइ सहासइ कामिणीहु ।
मणिमउडालइं किय महिहिवाह   बत्तीससहासइ णरविवइहु ।
बत्तीससहस णडइ णडाह   बत्तीससहस देसंतराह ।
गामाण रिद्ध धण कणसमाण   कोडिउ छण्णवइ सुहिय जणाण ।
पायारालंकिय गोउराण   सहसइ वाहत्तरि पुरवराण ।

---

(22) 1.b जहं, b कल्लाणहि थाइं ण्जइं ण हुं, 2.a सव्वहियहु, b ०ण्णइ, a सहियउ, 3.b after जहुँ a blank space and continued णु कयणु, b सासइं, b सासइ, 4. b लोय for पयण, b. after संग्म a blank space and continued हवंति etc. 5.a रयणवसु for रयणु, 6.b पयंडगिरिंद, 9.b 'पउ पावइ, 11.b सुणेहइं, 12.a अतित्तहं, b अतित्तइं ।

(23) जोग्गइं दिव्वइं सुहाइं जहु देइ, a कालुणिहि, b सुहाइं, 2 b' भायणाइं, a पंडु-वि, a सुहि for सुरहिय, b कणाइं, 3.b माणउ पहरणाइं मि जियर-णाइं, a तूरइं, b कलरवाइं, 4. b वत्थइं णिम्मलाइं, a पउमु, 5.b रइयराइं, b, रयणाइं वराइं, 6.b खयरिंदु णिवपुत्तिहिं, b सहासइं कामिणिहिं, 7. b [illegible] णिवहं, 8.a णडाहि for णडाह, 9.a धणकण-सिद्धसमाणं, 11.a [illegible], b बत्तीस वि [illegible], 12.b सहासइ रयणुज्जलाइं [illegible] सुहाइं ।

घत्ता— वीसहु सुक्कासइ सीलहसहसइं णवणवइं तोणा मुहहं ।
अडयाल सहसइं रयणक्कासइ पट्टणाण जण कय सुहहं ॥२३॥

(24)

गिरिवरकडहँ जणहुहराहँ चउदहसहास संवाहणाहँ ।
पव्वंतहँ सत्तसयइं हवंति तेत्तियहँ कुभासहँ संभववंति ।
छप्पण्णवरंतरदीवयाइं अडवी सयाइवण दुग्गयाइं ।
णयणिज्जिय पवरणराहिवाह सहसट्ठारह मिच्छाहिवाह ।
देवह तणुरक्ख वियाणयाह सोलहसहसाइ कयाणयाह ।
हलकोडिएक्क करिसणि चलेइ चुल्लीणकोडि भायणे चलेइ ।
जियकामधेणु वच्छाणुवाह वीरहरकोडि वरधेणुयाह ।
अमियसमय असाहारयाह सयतिण्णिसठं सूयारयाह ।
कोडिउ चहुउ किंकरवराह अट्ठारहकोडिउ हयवराह ।
चउरासीलक्खइ गयवराह तेत्तिय जेमणि मयरहवराह ।

घत्ता— इय लच्छि विहूसिय अमरणमंसिय चक्कवट्टिरिउवंतिहरि ।
तहु अट्ठसिरीहर पविहरिहलहर धम्मे उप्पज्जंति हरि ॥२४॥

(25)

मउडपविट्ठ पाय अरविंदइँ जाण णमहि णाणामरविंदइँ ।
उक्खय करकरवाल णिरिक्खहँ चउरासीलक्खइँ तणुरक्खहँ ।
कय जयणंचवडुक्कारउ मुरवणिवंच बहुसंकारउ ।
चउवह विहुसह आलंकारउ णाणाविह वीणा झंकारउ ।
देहविलिविविवयविवणिलयउ अहिणव हरियंदण कयतिलयउ ।
चालतुलिय अलयावलिचलयउ णवजोव्वणविब्भड रयणिलयउ ।
पत्तेयं वि हु इह अणुरूवउ सोलहसहस विहिय णियरूवउ ।
सत्तावीसकोडि तियसेविउ आणपहाण अट्ठमहु एविउ ।
जोयणलक्खगत्तु अइरावउ वेउव्विय चउवयणु सुरावउ ।

(24) 1.a ०क्खहु, a हराहं चउदसहासंवाहणाहं, 2.a पव्वंतहं सत्तसयइं, a तेत्तियहं, कुभासहं, 3.a दीवयाइं, a दुग्गयाइं, 4.b मिच्छाहिवाहं, 5.b वियाणयाहं, b सहसाइं कयाणयाहं, 6.a भायणि for भायणे, 7.b वच्छाणुयाहं, b वरधेणुयाहं, 8.a असाहारयाहं, b असाहारयाहं, a सयतिणि, b सूयारयाहं, 9.b किंकरवराहं, b हयवराहं, 10.b लक्खइं मयवराहं, a तेत्तियइय, b ०वराहं, 12.b ताहं for तहु; a हरी for हरि ।

तें धम्में संभवहि सुत्ति वि सुरकणिद महिमिवपडिव वि ।
सम्मद्दंसणणाणचरित्तइ भवियइ रयणत्तइ सुपवित्तइ ।
तहु भावणए सयलमलु [illegible] [illegible] णिम्मलणाणु उप्पज्जइ ।

घत्ता— एरिसु जाणेविणु मणु णियमेविणु जिणु झायहु तिहुयणतिलउ ।
हरिसेणु हवेविणु णाणु लहेविणु णिरयहु चउगइदुह विलउ ॥२५॥

तथोक्तम्–

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं 1·
काले शक्त्या प्रदानं युवति जनकथामूकभावः परेषाम् ।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो गुरुषु च विनतिः सर्वसत्त्वानुकम्पा
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसामेष पन्थाः ॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाइ चित्ताए ।
बहहरिसेणकयाए णवमो संधी परिसमत्तो ॥९॥ श्लोक ॥ २१९ ।

(25) 1.b पंचहि, a णाणामरविंदइ, 2.a ०लक्खइं, 3.a गहिय०, 5.a अहिणवयर हरिमंडलसिंधंयव, 9.a [illegible], b सरायउ, 10.b संभवहि, 11.b भणिसइ भविमइ, a रयणइ, b [illegible] सपवित्तइं, 12.b तहु भावणई सयलु मलु विडअइ, a णिम्मलु [illegible] पाविज्जइ, 13.b [illegible], 14.b हरिसेण, b [illegible] [illegible] [illegible] ।
16.b [illegible] for [illegible], 17.b प्रदानं b [illegible], 18.a नति, 9.b [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥९॥ b [illegible] [illegible] ॥२१९॥
Cf. [illegible], [illegible] १, p. 99 : [illegible], 34 ।

१०. दहमो संधि

(1)

कुलकर व्यवस्था

पुणु उववणु आएविणु पुणु भव्वेविणु भणिउ मित्तें मववेएँ ।
पुरिसे केण वि भासिउ लोय पयासिउ तउ धम्मु वि किं भेएँ ।। छ ।।

तह कहहि समयसंजाय केम । तो भव्वेवें कुहि भणिउ एम ।
इह एक्क वण्ण महि आसि मित्त । दहभेय कप्पतरुवरविचित्त ।
पाणंगतूरवहुभूसणंग । जोइसगिह भोयणभायणंग ।
देवंगवत्थमालंगसिट्ठु । तहो तलि रइ कामुवजुयलु दिट्ठु ।
असिमसि–किसिसिप्पि–वियप्पवंत । अमुणिय वावाहयवाहिवंत ।
तहि सुसमसुसमि चिविय सुभोय । सुसमेण मिहु णई भुजंति भोय ।
सुसमिदुसमिकालि जहण्ण भोय । तहो अंतिमपल्लहो सत्त भाय ।
गय चक्कु अंसु अट्ठमउ जाम । कुलयरकमेण उप्पण्ण ताम ।
पडिसुइ तह सम्मइ भणिउ अवरु । खेमंकरु खेमंधरु वि पवरु ।
सीमंकरु सीमंधरु वि जेम । हुउ विमलवाहु चक्खुमउ तेम ।

घत्ता– पुणु जसस्सि अहिचंदु वि तह चंदाहु मुणिज्जइ ।
मरुदेउ पसेणइ जो सिरिमाणइ णाहि पुणो वि उप्पज्जइ ।।१।।

(2)

तीर्थंकर ऋषभदेव

पुणु ताहि कुयलें जुयलु उप्पज्जइ । णियरजुयलु लक्खणे उवलक्खिज्जइ ।
पुणु विणु पुव्व कास पुणु वरिसइ । णिणि वि जुयलइ जीवहि धरिसइ ।
कप्पदुमविरहिय बहुकालें । तो हुंवतें कद्द सुकालें ।
रविससिबहु जे जेण जि लक्खिय । कुलयरेण ते तेण वि अक्खिय ।
अंतिम कुलयरासु णियसरणी । हुय णामें मरुएवि महासती ।
तहि गब्भे तिहुअणपरमेसरु । उप्पज्जइ पुहु तित्थयरेसरु ।
सुरणाहेण जेवि णिसिणेवहिं । ण्हाणेविणु अक्खिउ णाणहिं ।

अमरकुमारहिं सहु कीलंतें कलिसविकाइ कहिय पयपंतें ।
[illegible]हिय कीयउ कंकुणंकउ बेवि विणीयउ ।
परिणियाउ तें पिउ उवरोहें रज्जें परिट्ठिउ ताम सुणेहें ।

घत्ता- कीलए रज्ज करंतहो सउ पुत्तह तहो बीयजुयलु उप्पण्णउ ।
विणु कोयरउ णिवणिहवि सुह संपत्तिवि इवं कव्व पयण्णउ ॥२॥

(3)

पुव्वह तिह अहिय असीइलक्ख परियलिय वलिव मय भीयकंख ।
अट्ठारह कोडाकोडि कालु सायरह जाउ अम्मंतरालु ।
जिणु तो वि ण आवइ सुद्धभाउ उप्पायमि एयहोवरि विराउ ।
इउ चिंतिवि पुण्णाउस णिवस कीलंतस जिण अत्थाणु पत्त ।
णच्चंति भावणवरस पसत्त महिं पडिय परव्वस पाणचत्त ।
तं णिएवि झत्ति जिणवर विरत्तु णियरज्जे थवेविणु भरहु पुत्तु ।
सुरसिविया आणें गुण महंतु जयसद्दे सिद्धत्थवणु पत्तु ।
परमेट्ठि सिद्ध हियवइ धरेवि णिग्गंथु जाउ सिरि लोउ देवि ।
तहो णेहवसेण गुणमणिवास पव्वइय णरेंदहं चउसहास ।
परिचत्तु देहु छम्मास जाम अच्छइ जिणिंदु अकामुणि ताम ।

(1) 1.b आणेविणु, a गुण मणेविणु, b भणिउं for मित्तं, 2.b भासिउं, b तउं, a धम्म, 3.a केव, a मणवेए सहि, b भणिउं, a एव, 4 b जाय for आसि, b विचित्ता for विचित्त, 5.b जोयस०, b जोइस, 6.b दीवंग, b सिट्ठ, b कामुयजुयल विट्ठ, 7.b वाहाविय, 8.b सुसमिहं णई, 9.a सुसमु सुसमु, b सततय for सत्तभाय, 10.b अट्ठमउं, 11.b परिसुहे तहं सम्मइ, a खमेकर, b खेमकरु, 12.a चक्कुण्ण, 13.a repeats the line पुण असरिस अहियंदु वि, 14.a omits वि ।

(2) 1.b जुयलुप्पज्जइ, b [illegible], 2.b विण कइ वि [illegible], b [illegible], b जुयलइं, b वरिसइं, 4.a [illegible], 6.b उप्पण्णइं, 7.a सुर for सिरि, a [illegible], 8.a अमरकुमारें, a आइय, 10.a उवरोहिं, b [illegible], 11.b [illegible], a उप्पण्णउ, b [illegible], 12.b [illegible] ।

(3) 1.b पुव्वहिं तिहिं, a [illegible], b [illegible], 2.b सायरहं, 3.b एयहोवर, 4. b इय, a पुण्णाउस, b [illegible], 5.a [illegible], 6.b [illegible] for झत्ति, a पुत्तु for पुत्तु, 7.a [illegible], 9.a [illegible], 10.b [illegible] for [illegible], 11.a [illegible], b [illegible], 12.a [illegible], b [illegible] ।

घत्ता– असहिय दुसह परीसह छड्डिय तवकह कंदमूलफल भिक्खहिं ।
जा ते सयल कुलिंगिय वयउल्लिविय गयणि वाणि आयण्णहिं ॥३॥

(4)

रिसिरूव लेवि तइलोयणाहु आढविउ काइं इउ कम्मु णिदु ।
जइ णत्थि सत्ति वयभंगउ पाउ परिहरहु झत्ति णिग्गंथभाउ ।
सिरिरूवें जं संचियउ पाउ अवि णत्थि तासु णिज्जरउवाउ ।
ता कच्छमहाकच्छाहिवेहिं तणु धूलिउ सहुं कइवय णिवेहिं ।
अवरहि वक्कलवसणिच्छणित्थु संजाउ एम पासंडिसत्थु ।
भरहसुय मरीएं पंचवीस तच्चाइं कहेवि कविलाइ सीस ।
दिक्खिय तं दंसणु संजु जाउ एत्तहिं महि साहिवि भरहराउ ।
चिंतेवि लच्छिफलु पत्त दाणु तें पत्तु परिक्खिउ गुणणिहाणु ।
पइरावियि णाणाभेय धण्ण अत्थाणमज्झे अंकुर विभिण्ण ।
परिहरिय जेहिं मुणिउ सचित्त उत्तम सावय ते मणुय वुत्त
रयणत्तयलंछण बंभसुत्त कणयमय तिसर तहु कंठे खित्त ।
णाणापरिहाणइं भूसणाइं दिण्णइं णिहकंचण सासणाइं ।

घत्ता– पुणु वड्ढिय अणुराएं पभणिउ राएं जिणु थुणंत वयसंजुय ।
जिणपरमागमु भावहो मुणिपयसेवहो एहु सुज्झाणगुणेण जुय ॥४॥

(5)

तो ते पभणिय भरहेण जेम थिय सयल धम्मु भावंत तेम ।
जिह भरहहिं तिह पहु भरवरेहिं परिपुज्जिय कयपुण्णायरेहिं ।
कइ वहु कालए तव्वंस जाय जिण धम्मसिढिल मिच्छाणुराय ।
चिंतंति एम दप्पिट्ठ दुट्ठ अम्हइं णरिंद बंभिणपरिट्ठ ।
परियाणिय णाणासत्थअत्थ लोयाणुग्गहु णिम्माइ समत्थ ।
उम्मग्गरहिय इय मंदबुद्धि णियकम्मु मुएवि उम्मग्गलग्ग ।
वय णायरंति मुंजंति जीव मुहमज्झे अवमाणंति लोय ।
एक्कहिं दिणि णयरइ दसणकंत णिसिकिय सयल धीयिय णियकंत ।
परियलिय रव सम्मयमि जाम गच्छंति कहिं णि वणि महिलु ताम ।

(4) 1.b काइं, 2.a परिहरहु, 4.a तो for ता, b ०हिवेहिं, b सहुं, b णिवेहिं, 5.a संजाय, 6.b तच्चाइं, b कविलाइं, 7.b भरहु, 9.a धम्म for धण्ण, 10.b जेहिं मुणिउं, 12.b ०परिहाणइं भूसणाइं दिण्णाइं, b सासणाइं, 13.a पभणियं, a वयसंजुयं, 14.b होइ for एहु, a सुज्झाणु गुणेजय ।

गुरुभार खिव परिक्षीण गत्तु   णिवडेवि पुसु पहि पंकि खुत्तु ।

घत्ता– तें संडेउ वि अप्पिवि पावहि चप्पिवि ओहिं आम परिवाडिए ।
मुहुवएसु ता चत्तउ तासुपपुत्तउ पयभरे तहो सिरि पाडिए ॥५॥

(६)

छुडु पर्वाणि पूरिउ तासु काउ   ता दूसह दुक्खु महंतु जाउ ।
पाणाउरु पंकए सुत्तवत्तु   णिप्कदविलित्त णियससित्त पत्तु ।
चिंतइ एए अइसुहभाव   महु जीविउ तिणु व गणंति पाव ।
गय दुट्ठ केम सिरि पाउ देवि   विणु कारणेण जीविउ हरेवि ।
चिंतंतु एम कोवाणलित्तु   दुक्खें मरेवि असुरत्तु पत्तु ।
तहिं अवहिं पउंजिवि णियइ जाम   गबभवदुट्ठ भुमरिवि कुइउ ताम ।
चिंतइ किं महु देवत्तणेण   णिय सत्तु ण कलयहो णेमि जिण ।
अह एक्कवार जइ हणमि पाव   सहु लहवि जम्मंतरि दुट्ठभाव ।
तो वरि अवयारु करेमि तेम   सहु संतइए दुहु वि सहहिं जेम ।
इय भणि धरेवि वयवूममाणु   घंटालि मुहलु रच्चिउ विमाणु ।

घत्ता– जहिं ते महिस णिसुंभण अच्छहिं बंभण तहिसोवए थिउ एविणु ।
मायाविउ पहु भासुर सो कालासुर णहि चउवयणु हवेविणु ॥६॥

(7)

पेच्छेवि तेहिं सुहसंतभाउ   पणवेविणु पुच्छिउ पंडकाउ ।
के तुम्हइं कज्जें केण आय   तें भणिय ताम पिय महुर वाय ।
सग्गहो अवइण्णउ मुणहु बंभु   हउं बंभणकुल कलिमल णिसुंभु ।
अवरावर बंभे मुहाउ पत्तु   अच्छिउ तहिं वेउ पढंतु संतु ।
णिववरिससएण वएण एंमि   चउवेयलोए पावडु करेमि ।

---

(5) 1.a तें, a भरहेहिं, adds रव in margin after सयस, 2.a भरहिं, b भरहेहिं, a भरवरेहिं, 3.b महुं महु कालें तच्चंस, 4.b चिंतंत, b अम्हइं, 5.a पाणाविहु पसत्थ, a पसत्थ for समत्थ, 6.b ह for इय, b मंभणग, 7.a कुलणंन्वें b कुलमॅव, 8.b सणं 9.b समत्त for इय, b कहिमि वंण, 10.a परिरवेव, 11.b ल संडेउं चप्पिवि, 12.b पयभर तहु ।

(6) 3.a तणु, b. adds न before गणंति, 5.b पुण, 6.b णियई, b कुइउं ताम, 7.b चिंतइ, 8.b सुहु सहहि, 9.a तो वरि अवयार, b करेमि, a ताम, b सहुं वं सहि दुहु सहहिं, 11.a सहि, 12.b कालासुर, a हवेविणु ।

कालेण तुम्ह कुलधम्मु णट्ठु पासंडिहिं एउ पासंडु सिट्ठु ।
तो भणिउ तेहिं णिसुणहु वेउ जें जाणहु णियकुलधम्मु वेउ ।
तो तेण कहे विसदंसु वेउ हयमेव पयासिय विप्पएउ ।
वट्ठव्वो रे अप्पा मुणेहु सोयव्वो रे अप्पा गणेहु ।
अणुमंतव्वो वि दयामि सव्वु जिहु अप्पा तिहु पर मणहु सव्वु ।
इय एवमाइ वयणइं भणेवि परमहो बीसासहो पउमु गेवि ।
पुणु दुक्खमलक्ख दरिसिय सपेण णिय कोवकव्वु सारिउ कमेण ।

घत्ता— अतिहिपियर सम्माणहु अण्णविहाणहु धम्मे जीव हणाविय ।
वियकुलधम्मु भणेविणु वेउ पढेविणु सम्ममोक्खफलदाविय ॥७॥

(८)

कप्पहो मह कहु वसोल्लियासु अहवा मह जु गेहा भयासु ।
अणडुहिय हरिणि अह वाहणेहु अवरहि वि अतिहितप्पणु करेहु ।
सल्लयगंडय अमरसयमेस हरसंवरहरिणवराहमहिस ।
पारावयलावयहंसमारे वट्टइयपासतितित्तिरचउर ।
सारयभेरुंड कवोयकुरर इय एवमाइ बहु पक्खिपवर ।
रोहियमच्छाइयबहुप्प जलयरथलयर वि अणियपमाण ।
खाएवि भुंजावेवि विप्पपवर पीणिज्जहु भत्तिए मोत्तपियर ।
णाणाविह जण्णविहाण वेउ अवरु वि दरिसिउ पढिऊण वेउ ।
राएं अह राउ वि हणिउ जेत्थु सो रायसूउ भासिउ पसत्थु ।
गयमेहु महागयहणण सिद्धु अस्सवहु अस्समेहु वि पसिद्धु ।

घत्ता— गोमपसूय हणिज्जइ जहिं सो भण्णइ जणे गोमेहु पसत्थउ ।
पसुमेहु वि पसुहोमें सहुं वर सोमें सग्गुप्पायसमत्थउ ॥८॥

---

(7) 1.a तेहिं, सहसंतभाउ पणवेप्पिणु, 2.a तुम्हेह, 3.a अवयण्णउ, b अवइण्णउं भणहु, b हउं, 4.a वेय, 5.a एवि, b पायड, a करेवि, 6.a पासंडिहिं, 7.b भणिउं, a जाणहु, 9.a वट्ठवोरे, 10.b वयणइं, 12.b दुक्खलक्ख, 13.b सम्माणहु अण्णविहाणहु, 14.a वेय ।

(८) 2.b वि for वि, 3.b ॰वहिहर for ॰[illegible], 4.b चकोर, 5.b ॰कुक्कर, b [illegible], 6.b रोहियम, b omits [illegible] before वि, 7.a पियपउर, b [illegible], 9.b हणिउं, b पयत्थु, 11.b हणिज्जइ ।

(9)

इय अणवच्चजणवयणु संभासिउ मज्जपाणि सोत्तामणि भासिउ ।
सोमु अपेउ पेउ संभविउ बाह्मण परदारु वि सेवाविउ ।

तथा–

स्वयमेवागतां नारीं यो न कामयते नरः
ब्रह्महत्या भवेत्तस्य पूर्वं ब्रह्मविनिर्मितम् ॥ .॥

अवरु वहा अवकम्मविहि भासिउ णियजणमेलंकणु पयासिउं ।

तथा–

अक्षरपुवैहि एककारपुवैहि दुभार्यो न कलार्यो ॥२॥

एवमाइ अवरु वि जंपेविणु पयडु अहम्मु वि धम्मु कहेविणु ।
कोवसमाणु वइरु साहेविणु णियआसमहो जामि पभणेविणु ।
कालासुरु कयत्थु णियगेहहो गउ संतुट्ठु रमणिगणसोहहो ।
तहो दुट्ठस्सु विएहिं ण लक्खिउ धम्मु भणिवि गहिउ अपरिक्खिउ ।
वेउ अकिउ पमाणु अविणासिउ इय भणेवि सविसेसु पयासिउ ।
लोएं ण वि विसयामिसलुद्धें गहिउ भणेविणु सुहयरु मुद्धें ।
इय मइ वेयवेउ संजायउ कालकमेण बाउ वित्थायउ ।
अवरु वि मुणिसुव्वयजिणणाहहो तित्थि वहंतें णाणसणाहहो ।
वासुएवि सुएवसु अवयंसउ तहो कंकाणु लेवि सोयणउ ।

घत्ता– हरि जीवंतु गणंतउ कालि वहंतउ छम्मासावहि जइयहो ।
थिउ ता मिच्छावाएँ इह किउ लोएं कंकालवउ वि तइयहो ॥९॥

(10)

रिसिसमु बालविरुद्धतित्थे विहरंतु पिहिवि पयडियपसत्थे ।
गउ कुमए सिवजयपुरणयरे मंसाविं य सयलजायविरियविमरे ।
धाविए मुणिणाहें संघु वुत्तु मा जाउ को वि चरियए णिरुत्तु ।

(9) 1.b उवलविउ महुपाणु सुत्तामणि भासिउं, 2.b बाह्मण परयारु, 3.a नारी, 4.a भवेत्तस्य, 5.a तहा अवमुविहि, 6.b एककारपुवैहि, b. omits च, Amitagati does not quote the verse in his धर्मपरीक्षा, 9.b कालासुर, a गउ संतुट्ठ मुणिवरम॰, 10 a विएहिं, b. omits च, 12.b. omits च, b वित्थार भासियउ॰, 13.b बीय कमेण for कालकमेण, 14.b वहंतेण, 15.b लोई मूढ, 16.b छम्मासावहि, 17.a तइयहो ।

एक्कें मुणिणा एरिसु सुणेवि सुब्बोवणुलेसमिह य मुणेवि ।
चरियाए मंपि मयखंडरिद्ध मच्छय-तणुतदुलखीरसुद्ध ।
एविणु कवि पच्चक्खाणु जाम मग्गिउ मुणिणाहें भणिउ ताम ।
पइलयउ असुहाहार अज्जु हा हा णासिउ णियधम्मकज्जु ।
उग्गिलिउ मुणिउ पुणु तेण मंसु पभणिउ पत्तवडिए णत्थि दोसु ।

घत्ता– पुणु जिणसासणु छंडिउ मुणिवइ खंडिउ तेण सविज्जाभावें ।
देउ वि बुधु पयासिउ कहिउ पलासिउ भणिउ जणेण अभव्वें ॥१०॥

(11)

समयाइ य जाय अहो समाया रिसही पुणु णाहिसुओ रिसहो ।
अरिहो सणरामर पूयरिहो विणिओ हयविहंडणु सो वि जिणो ।
सविहि कयकम्मविणाससिही स हरी तहो देव णयास हरी ।
स हरो भवसंभवदोसहरो सुगओ वि य सो सुगई सुगओ ।
स रवी सयलत्थ पयासरवी अमरो ह पहु स सया अमरो ।
दहणो कसायतरुदहणो सजमो मयमोह वि हंसजमो ।
णयरीउ स सव्वविकीणयरी वरुणो सणरायपहा वरुणो ।
पवणो स भवोयहि संपवणो धणओ सजणाण महाधणओ ।
ससिसो भणिओ कयणिस्ससिओ धरणो स य सेससमाधरणो ।
स विहूत महाभुवणे सविहू कहिओ इय तोडयछंदकहिओ ।

घत्ता– इय भासिउ णिसुणेविणु फुडु मण्णेविणु बोल्लिउ माहवदेवें ।
मित्तणरए णिवडंतउ पलयहो जंतउ रक्खिउ पइ सुविवेएँ ।

(12)

पवनवेग का हृदयपरिवर्तन

तुहु परममित्तु अइ परमसामि अइ बंधु पियव गुरु अणुगामि ।
मिच्छत्तु णिविडु जं हरिउ मज्झु को सरिसु भणमि भुवणयलि तुज्झु ।

---

(10) 1.a पिहिमि, a पयत्थें, 3.b मंसासि, 5.b सिद्ध, 7.b पइं लेवि for पइलयउ, a हुहा, b परलोय for णियधम्म, 8.b मुणिउं, b पभणिउं, 10.b भण्णिउं, a अभव्वे, Cf. दर्शनसार of देवसेन ।

(11) 1.b जायं, a समाय for समया, 6.a सकसायतरु दहणो b ०विहंसजामो, 7.a विकीणसरी written and 2 on the head of ण and य respectively and it is explained in the margin as ...., 8.b भवोयहि, 9.b सिओ for सिओ, 11.a मण्णेविणु फुडु बोल्लिउ माहवदेवें ।

मणुयत्तु दुलहु संसारि एत्थु   पत्तेवि अंगि णिव्वंगि विरत्थु ।
सुलहइ रयणइ रमणी सुहाइ   वरउज्जाणइ णयरें विहाइ ।
सम्मत्तरयणु पुणु होइ दुलहु   महु तुज्झ पसाएँ जाउ सुलहु ।
देवो तिहुयणगुरु होइ जो वि   सम्मत्तसहिउ जिणु बुच्चइ सो वि ।
ते कमयल जे जिण भवणे पत्त   ते णयण मुणमि जे जिणहो रत्त ।
ते करयल जे जिणण्हवणपुत्त   जिणगुण सुणंति ते कण्ण सुत्त ।
तं मुहु जं जिणगुणकहणि रसिउ   तं णरतणु जं जिणधम्मे वसिउ ।
भो दरउक्खारिय विमलचित्त   जिणधम्मु लेवि मउ करमि मित्त ।

घत्ता– इय पभणिउ मवेएँ ता भणवेएँ णिसुणेविणु बोलिज्जइ ।
एहि पुरिहि उज्जेणिहि केवलणाणिहि मुणिहि पासि जाइज्जइ ॥१२॥

(13)

एम भणेवि खगाहिवपुत्ता   दिव्वविहूसण भूसियगत्ता ।
दिव्वविमाणहि खे वियरंता   सग्मि पएसि खणेण वि पत्ता ।
णिम्मल केवल लच्छिसणाहँ   तत्थ णवेविणु तं मुणिणाहँ ।
णायणरामरखेयरवंदं   वंदिउ तेहि पुणो मुणिचंदं ।
मित्तणिमित्त समुण्णयचित्तो   माणसवेउ सिरेण णवंतो ।
बोल्लइ केवलिपासि णिविट्ठो   सामिय एस सुहीम महट्ठो ।
जासु कए मइ मोहविहूत्तें   पुच्छिय तुम्हइ धम्मणिमित्तें ।
पाडलिउत्तपुरम्मि वियाणं   एम सुणेविणु वेयपुराणं ।
सच्चुअसच्चु सुणेवि विरत्तो   उज्झिय मिच्छमलो उवसंतो ।
जाउ जिणेसर धम्मि सुरत्तो   छंदो एरिसु दोवइ वुत्तो ।

घत्ता– मुणि एयहो वउ दिज्जइ करुणु रइज्जइ इम पसाउ महु किज्जइ ।
मणवेयहो वयणुल्लउ मण्णवि भल्लउ मुणिणाहेण भणिज्जइ ॥१३॥

---

(12) 1.a संसारम्मि, 4.b सुलहइं रयणइं, b सुहाइं, b ०उज्जाणइं णयरइं विहाइं, 5.a सम्मत्त०, 6.b बुच्चइ सो वि, 7.b णयणि for मुणमि, b एंत्त for रत्त, 8.b ०ण्हवणे, 9.b ते मुहु जिण०, a जिणधम्म, 10.a लेमि, 11.a तं for ता ।

(13) 2.b ०विमाणहि, 4.b तेहि णवेवि मुणिचंदं, 6 b णइट्ठो for णिविट्ठो, a सामिय एस, 7 b मई, a मोहविमत्तें, b तुम्हइँ, 8.a एम सुणेविणु, 9.a सच्चअसच्च, a मिच्छमलो, 11.b छंदउ, b दोधउ for दावउ, a वुत्तो, 11.b रइज्जउ, a महु, 12.b भणेवि for मण्णवि ।

(14)

[illegible]

जो वज्जेय सत्तवसणाइ णिसुणेविणु णिण्हहि दुहयराइ ।
मा खज्जहि उंबरपिप्पलाइ वडपिंपरितरु फलफलाइ ।
महुमज्जपाण तह मा करेहि तणु भूसणुवेहि अलंकरेहि ।
जीवहु असच्चु वि परिहरेहि परदव्वु म काइवि अवहरेहि ।
वज्जेहि सुरूउ वि परकलत्तु अप्प व्व णिसिहि रमणिय कलत्तु ।
मिय परिग्गहु करहि अणुव्वयाइ इय पंच तिण्णि सुणि गुणव्वयाइ ।
दिसि विदिसि हु गमणपओजणाह करि संखहि ससजीयणाह ।
जहि देसहि भंगुह वइवयाह परिहरि ते गम्मु ण सावयाह ।

घत्ता— रज्जु वि सावयस पहु दिय दुहयर पयडिय देहि म कहहो वि कयाइ वि ।
करमारणरयणित्तहु रहहं सत्तहं घाउ करेहि सवाइ वि ॥१४॥

(15)

जं जीवेसु महत्ती भाविवि संजमि पुणु सुहभावण पावेवि ।
अट्टरउद्दज्झाण मिल्लेविणु पावणि जिणमंदिरि पइसेविणु ।
अह घरे सुइ पडिमग्गए थाएवि अह उत्तरदिसि संमुहु होएवि ।
किरियापुव्वें जिणु वंदिज्जइ तं सिक्खावउ पढमु भणिज्जइ ।
उत्तमु तं पि हवेइ तिवारए मज्झिमु पुणु भासियउ दुवारए ।
एक्कवार जिणवरु वंदंतहं तं पि जहण्णु दुरिउ णिवंतहं ।
सत्तमि तेरसीहिं मुत्तंतरे उववासं लएवि पुणु जिणहरे ।
जं णियमे व करणें णिसि णिज्जइ सो पोसहउववासु भणिज्जइ ।
अहवा णियघरेवि अच्छेवउ किसिवाणिज्जइ ण पच्छेवउ ।

(14) 1.a धो for जो, b ०वयाइं in both places, b णेण्हइं, 2.b पिप्पलाइं, a फलपलाइ, b फलाइं, 3.b इ महु मज्जुपाणु, a ०भूसेहि, b अलंकरेहिं, 4.b म काइंमि अवहरेहिं, 5.b वज्जेहि सरूउ वि, a अप्प व्वं in margin is written for व, b णिसिहिं, 6.b परिग्गहु करहि अणुव्वयाइं, b सुणु गुणव्वयाइं, 7.b विदिसिहि गमण पओजणाहं करि संखइ सं संजोयणाहं, 8.b जहिं देसइं, b ०वयाइं, b तं for ते, b सावयइं, 9.b पयडियं, b कहो वि, 10.a omits रय before णित्तहु, b रहहं सत्तहु ।

अोइय कीरइ भवियणविंदहिं सो भासिउ उववासु मुणिंदहिं ।

घत्ता– जं एयाहाराइउ तं पि णिवेइउ पोसहो मुणिकयमरयहिं ।
इय णियाउ सिक्खावउ तिविहु वि सुहावउ किज्जइ भवियणिहयहिं ॥१५॥

(16)

भूमिसयणु तह तियपरिहरणउ एउ वि इत्थ वि जाणहिं करणउ ।
सुपहाएँ जिणमंदिरि गच्छवि वदणभत्तिकरेवि सइच्छवि ।
ण्हवणपुज्जसमुज्जलु करेविणु मुणिवरचरणजुयलु पणवेविणु ।
जिणवर णियघरदार धरेसहिं अहवा भम्मियहिं पंथि गवेसहिं ।
पत्तु पवेविणु पडिग्गाहिज्जइ आयरेण पुणु मंदिरि णिज्जइ ।
तत्थवि उच्चासणि वइसारेवि फासुयसलिलें पय पक्खालेवि ।
पुज्ज करेवि अट्ठविह भत्तिए पच्छु पुणाहारु वि णियसत्तिए ।
ज विहिविहियउ भवियहिं किज्जइ तं सिक्खावउ तइउ भणिज्जइ ।
भोज्जभोयसंख जहिं किज्जइ तं चउत्थ सिक्खावउ णिज्जइ ।
मरणयाले सण्णासु करेविणु वज्जब्भंतरसंगु मुएविणु ।
सुहभावेण देह जो मुच्चइ तं चउत्थ सिक्खावउ वुच्चइ ।
अवरु वि भवियहिं एम करेवउ अणिसिहिं मउ ण वएँ भुंजेवउ ।
उवराइं थिय दोसइं णिसुणहि पंचुंबरसजोणि वियाणहि ।
मयपाणम्मि हियाहिउ ण मुणइ मंसभक्खिणरु हिंसा ण गणइ ।

घत्ता– संमुच्छि मए पयासिय आयमभासिय वणमंसरसफासहिं ।
भिण्णणए अवर वि जेण जि मुणियण तेण जि बहु जीव वि महुफासहिं ॥१६॥

(17)

महुमक्खियवंडयरसु हवेइ तह भिण्णु भिदइव जणु थवेइ ।
जं पाउ गामबारहवहणे तं होए एक्क महुबिंदु वि भणे ।
इय वेयवयणु सुपसिद्ध जइ वि महुपाणु ण मेल्लइ मूढ तइ वि ।
हिंसारउ सव्वहो मयपवासि लहु लोए होइ भउ अलियभासि ।

---

(15) 1.a पुत्त, a भाविवि for पावेवि, 2.b ॰असणु, a पावण, 3.a सुइ वह घर वर्हि॰, b संघुइं, a वोएवि for होएवि, 5.a मच्छिमण, 6.a वंदंतह, a णिवंतह, 7.a तेर वीहिं मत्तुसरे, 8.b तणियमणि, a पोसहु उवासु पवणेज्जइ, 9.a भच्चिवण्णउ, a भासिज्जहिं, 10.b ॰णिवहिं, b मुणिवहिं, 11.b ॰सरयहिं, 12.b. omits वि, a मुहवउ for सुहावउ, b ॰णिहयहिं ।

परदव्वहरणे मरणउ सहेइ   पररमणिरमणे तं चिय दुहु सहेइ ।
बहु परिगह कंखए कलमलंतु   रयणिहि वि णिद्द ण लहइ सुयंतु ।
इय एवमाइं बहु दोस भणिय   परलोयदुक्खु पुणु केण मुणिय ।
तें कज्जें एयहु भणिउ चाउ   एरिसु वयकारणु पुण्णहेउ ।
इय एरिसे ण पालिय वएण   सुहु लब्भइ मणुएँ भव्वएण ।
जे सग्गमोक्खसुहयरतरुहुँ   मूलगुणाइ य अंकुर पुवहुँ ।

घत्ता– ते विसयाणलचुक्का होहि गुरुक्का हरिसेणहो भं इट्ठउ ।
दिहि भविय सुउणि मणहुं परितुट्ठ मणहं सासयफलु सुहमिट्ठउ ॥१७॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए ।
वुहहरिसेणकयाए बहुमो संधी परिसमत्तो ॥ छ ॥ श्लोक ॥१६२॥ छ ॥

* * *

(16) 1.b परिहरणउं, a. writes in margin तह मियकरणउ and writes संकोइयकरणउ after ०हरणउ, a वत्थु for इत्थ, b जाणहि करणउं, 2.a सुपहावें, b जिणमंदिर मज्झवि, b सइंच्छावे, b ०सवलहणु, 3.a पणवेपिणु, b पणवेप्पिणु, 4.b घरेसहि, b मज्झहि, a परिथ, b यवेसहि, 5.b मंदिर, 6.a तत्थहु, a वइसारवि, 8.a जे वेहि विहि भवियउ दिज्जइ, 9.a जहि, 10 & 11.a two iines मरणया ले. . . to वज्जइ, 12.a भवियह एउ करेयउ, a पुव्वेज्जउ, 13.a उंवराइ, a दोसें, b विसुणहि, 14.b मुणइ, a मंसु भणियउ, b गणइ, 15.a फासहि, 16.a भिण्ण न अवर जीव जि, a. adds वि after तेण, a मंसहि ।

(17) 2.b वणि, 3.b मेल्लहि मूढ, 4.b सव्वहुं, b. inter. लोए and होइ, a अलियरसि, 5.a परदव्वे हरण, b मरणउं, a पररमणिहि तं चिय, b omits दुहु, 6.a रयणिहि ण णिद्द a अतिंतु for सुयंतु, 7.a इहु एवमाए बहु दोसं, a भणिय for मुणिय, 8.b एत्थहं भणिउं, a एरिस वयकरणु सुपुण्णहेउ, 10.b जें, a ०सग्गहु, a गुरुहु, 11.b होहि, b हरिसेणहं, 12.b देहि, a मणहुं for मणहं, a सासयसुहफलु मिट्ठउ, 14.a परिसमत्तो, b ॥१७॥ for ॥ श्लोक ॥ १६२ ॥

११. एयारहमो संधि

(1)

मेवाड और उज्जैयिनी नगर का वर्णन

णिसिपहरहो पुण्णज्जणे भीयणवज्जणे णिसुणहु जं फलु सिद्धउ ।
जंबूदीवि विसालए भरहि सुहालए मेवाडविसउ रिद्धउ ॥ छ ॥

जो सिहरि सिहिणकेक्कारमल्लु   सरितडिरहट्टजलसेयगिल्लु ।
तरुकुसुमगंधवासियदियंतु   णीसेससाससंपुण्णछेत्तु ।
चूयवणकोइलालावरम्मु   वरसरसारसवयणाणियपिम्मु ।
भिसकिसलयसायणतुट्ठहंसु   मयरंदमत्तअलिउलणिघोसु ।
करमंदजालकिडिविहियघोसु   वणतरुहलसउ णिवसाय तोसु ।
कयसासचरणगोमहिसिमहिसु   उच्छुवण पवदिसिय पहियतोसु ।
तग्घाणार्णेविय दीवमंदु   धलणलिणिसमणयसंहियहंसु ।
वरसालि सुबंधियपंथबाहु   तक्कणिसकणअविसमुमसमुहु ।
तं णियउगाममंडियपएसु   जणपूरियइच्छिय जाव कोसु ।
रिउजोग्गसोक्खरंजियजणोहु   गयचोरमारिमयलक्खोहु ।

घत्ता– जो उज्जाणहि सोहइ वीहरवोहइ वल्लाहरहि णिसावहि ।
मणिकंचणकयपुण्णहि अइवरवण्णहि पुरहि संभोजरवाणहि ॥१॥

(2)

तहि अत्थि कोट्टु सिरिणिलउकूडु   जहि मणहर जिणहर सहसकूडु ।
सोहइ सुरणयणाणंदिरेहिं   पंच सय संख जिणमंदिरेहिं ।
लोहयसुरहरइ मि जहि जणेण   संवच्छरंतणियडणमएण ।

(1) 1.a पुण्णज्जणि, b णिसुणहुं, 2.a मेवाडु णिसउ अरिद्धउ, 3.a केक्काजेलु, 4.a [illegible] for [illegible], b ०संपण्ण०, 7.a ०णाणइं for ०णाणा, 8.b ०घोसहि पवहियसमहिसु, 9.b [illegible], a ०[illegible]० for सयण, 10.b सुबंधिय०, 11.b omits अ, 13.b जा उज्जाणहि, b वल्लीहरहि णिवासहि, 14.a ०काय० for ०कय०, b पुण्णहि, b [illegible] for अइवरवण्णहि, b पुरहि, a संभोजर० ।

जिणवरपडिमइ मुइंकियाइँ भवियहिँ जणहरइँ वसंकियाइँ ।
जहिँ गुमुगुमंति महुयरकुलाइँ वरतरुवराइ सुमहुरफलाइँ ।
णिवडियभरइयकीलाउलाइँ जहिँ दीसहिँ बहुवाणरउलाइँ ।
सज्जणचित्ताइ व णिम्मलाइँ जहिँ झरझरंति णिज्झरजलाइँ ।
जहिँ सुकइणिवत्तहिँ सोहियाइँ कीसारयकामिणि डोहियाइँ ।
वरवावीकूवतलायथयाइँ बत्तीस अत्थि समपयाइँ ।
णिसुणिय वरहिणरव विरहिणीउ सइ पियकसाउ जहिँ माणिणीउ ।

घत्ता– जंति कोसु दीहत्तें कोसु पिहुत्तें अड्ढकोसु जसु उण्णइँ ।
जासु उवरि आरूढु वि नह अइमूढु वि अप्पउ तहणउँ मण्णइँ ॥२॥

(3)

निशिभोजन कथा

तहिँ पज्जाणु पर्यंडु णरेसरु आसि णाइँ सग्गमि सुरेसरु ।
तहो गेहणि पियणोरि महासइ णं रामहो घर सीयमहासइ ।
तहो सिरिपालु मंति बहु जाणउ जसु सुरगुरु वि ण मइए समाणउ ।
तहो सिरिपालहो धणवइ गेहिणि णं इंदहो सइ ण चंदहो रोहिणि ।
विहि ति ताहँ जिणमुणिपयभत्तहँ वियलइ कालु धम्मि आसत्तहँ ।
एक्कहिँ दिणि जामरियहो महिलए मग्गिय वाढी संझावेलए ।

(2) 1.b तहिँ, 2.a •णंचिरेहिँ, a •णंचिरेहिँ, 3.b •सुरहरइं वि, 4.a मुइंकियाइ, a जिणहरइ मिसंकियाइ, 5.a जहिँ, b गुमगुमंतमहुयर•, a •कुलाइ, a वरतरुवणाइ, a •फलाइ, 6.a णिवडिय भररइयकीलाउलाइ जहिँ दीसहिँ, a •उलाइ 7.a णिम्मलाइ जहिँ •जलाइ, 8.a जहिँ, a सोहियइं, 9.a •तलायसाइ, a अत्थी, b. adds पव before समपयाइँ, a समपयाइ, 10.a जहिँ for सइ, 11.a अड्ढकोसु जसु ऊण्णउ, 12.a अइमूढु वि, a मणउइ for मण्णइं ।

(3) 1.a तहिँ, 2.b गेणि for गेहणि, 2.a पियणोरि, a महासइ, 3.b जाणउं, 4.a. omits णं before इंदहो, b सइं, 5.a विहिँ वि ताहँ, a •भत्तहो, b वियलइं, a आसत्तहो, 6.a संझावेलय, b संझावेलइं (ला). 7.b तवणि मंदिरु, b अवगइं पुत्तिहिँ (Then four lines were deleted in a). 8.a तेण वि सुणिउ for ताए भणिउ, b भणिउं ण निसिहिँ भुंजिज्जइं b.भुंजिज्जइं, 9.a वें for णं, b सिट्ठ मई णिसुणहिँ, b सुय for पुत्त, a तेण वि for तं, b तुज्झु समासमि ।

एत्तहिं तक्खणि मंदिरि मत्तहिं | मणिमओ जोयणु जणवइ पुत्तहिं ।
ताए भणिउ णिसि ण भुंजिज्जइ | पुत्त महारओ वयणु सुणिज्जइ ।

घत्ता— बालत्तणि हउं सिद्धउ मइ णिसुणि पुत्त तुह अक्खिमि ।
जोयणुरयणिहिं वज्जियउ तं हउ तुहि अक्खमि ॥३॥

(4)

पुणु अक्खइ जियचंदणु पवुत्तु | पायड वियाणु संघउ सजुत्तु ।
रहणेउरपुर तहिं वसइ लोउ | उवमिज्जइ तासु ण अण्णलोउ ।
तहो णयरओ बाहिर अइरवण्ण | सुररामविहारइ वणसवण्ण ।
गोयरविचित्त पायारतुंगु | तहो केण वि ण किउ कयावि भंगु ।
चउहट्टमग्ग अइसोहमाणु | देउलइ तुंगु अइअण्णमाणु ।
जहिं मंगलु णत्थि लोउ | अण्णहिं वि ण दीसइ तहिं विओउ ।
अवरु वि तहिं पुरवर अत्थि चोज्जु | परघरहो ण केरउ मुणइ चोज्जु ।
जयसकुलु पुरवइ सोहमाणु | पइ ताह ण तहिं धुरि लहइ पाणु ।

घत्ता— पर एक्कु वि तहिं दोसु जिणधम्मु वि ण मुणिज्जइ ।
मिच्छामारत्तउ लोउ पसु अंगलु भक्खिज्जइ ॥४॥

(5)

कोरंटवकु तहिं परवइ पचंडु | रिउसिवजिहरिय रज्जदंडु ।
तहो केरउ जो ण वि करइ वयणु | पुणु वरिसइ तहो णिसुलउ मरणु ।
पय पालइ तहो गुण इय महंतु | परतिय परिहरइ सुसत्तवंतु ।
तहो रूव अवरु ण उ को वि दिट्ठु | वसुएवाहिं अवरुण्णु विदिट्ठु ।
तिय पंचसयइ बहु कणयमाल | सोहग्गवंत अइलुगविसाल ।

---

(4) 1.b अणवई, b किलु for पउत्तु b वरपहु विजाण संपय विउत्तु for पायड etc. 2.b वसइं लोउं उवमिज्जइं, a सम्मि, b सम्म लोउ, 3.a णयरहिं बाहिर, a ०वण्णु, b वणु 3.b after सर रा, omits म विहारहिं etc. चउहट्टमग्ग, 4.a तुंग, a अइसोहमाण, 5.a देउलउं तुंगहिं अण्णमाण, 6.a & b. after अण्णमाण, adds धणकणसमिद्ध तहिं वसइ लोउ, b मंगलु, b. omits जहिं मंगलु णत्थि लोउ, b अण्णहं वि ण दीसइ जहिं विओओ, 7.a अवर वि, b पुरवरि, b चोज्जु, b केरउं b चोज्जु, 8.a जयसकुल, b पई, b लहइं, 9.b धम्मु, b मुणिज्जइं, 10.a मुक्क मारत्तउ, b लोउं, b भक्खिज्जइं ।

सय बुद्धिमंति अइगुण महंतु तासु वि सुवइउ सुहु जयणि सुपुत्तु ।
तहिं पुरि वणिजारओ इक्कु आउ वसणइं मज्झइ ण उ लहइ ठाउ ।
तहिं पुरवाहिरि चंडीविहारु पइं सेविणु तहिं थिउ देविणु दारु ।

घत्ता— भयडरियउ अच्छइ तहिं पुणु पिच्छइ भूयवियालहिं तहिं जि पुणु ।
तहो सद्दु सुणेविणु मउणु करेविणु थिच्छउ आयउ धुव मरणु ।।५।।

(6)

तहिं ठियउ पच्छण्णु सो जाम अच्छेइ वेयाल कीलंति बहुविहइं पिच्छेइ ।
तहिं के वि कत्ती करेलेवि धावंति खट्टंगकावाल पुणु लेवि णच्चंति ।
णिम्मंसकडिएहिं वद्दुरियणासेहिं टट्टरियसीसेहिं पिंगलियणयणेहिं ।
अवरेण ते भणिय किं तुहिं अच्छेहु जि राउ भुंजेइ तं वेल पेच्छेइ ।
तहो वयणु णिसुणेवि तं एक्कु संचलिउ णिमिसेण सो पत्तु धवल हरिण खणे चडिउ ।
तं वेल विच्छरिय पिक्खेवि सहुसत्ति पेयहिउ भणिउ आवेवितं झत्ति ।
तहो भूयवयणेण संचलिय णिसि जाम वणि उत्तु वाहेहिं घरिसण तहिं ताम ।
जहिं राउ भुंजेइ तहिं आवि ते पत्त मणपवणवेएहिं पाहुणहिं संजुत्त ।

घत्ता— तहिं भोयणवेलए बहु वेयालए किलिकिलंतपच्छण्णभया ।
भुंजइ तहिं एक्कहिं ण वि ते पेक्खहिं रयणिहिं भुंजिवि सयलगया ।।६।।

---

(5) 1.b णरवइं, b रिउं, b वज्जदंडू, 2.b करइं, b दरिसइं, 3.b पालइं, b पहु for इओ, b परिहरइं, a सुसच्चंवंतु, 4.b रूवें, b वसुएवहो णं अवइंणु, 5.b पचसयहो, a कणयमाल, b omits सोहग्गवंत etc. . . to सुपुत्तु, a सुपुत्त, 7 a एक्कु, b आउं, b वसणइं मज्झिउं ण उ लहु ट्ठाउं, 8.a तहो पुरवाहिर, a पइ, a. omits तहिं, b देविदारु, a कवाडु for दारु, 9.b डरियउं अच्छइं, a तहो जइ पिच्छइ भूयबियालिहिं, 10.b थिच्छउं आयउं धुउ मरणु ।

(6) 1.b ठियउं, b जाएवि अच्छेइं, b कीलउ, b पिच्छेइं, 2.b करेतें वि, a खट्टंग, b ते वि for ले वि, 3.b कडिएहिं, a वद्दुरिय॰, a.b णासेहिं, a पिंगलास॰, 4.a. adds झंपविव केलेवि before अवरेण etc. a अवरेणि भणिएण, b तुम्हि अच्छेहुं, b राउं भुंजेइ, b णिच्छिहुं, 5.a णिमिसेण, a हरि for हरिण, 6.b पेयाहिओ भणिओ आवेत्ति तहोवयणि, 7.b वहु for तहो, a वाहीहिं, b. after घरिस there is a space before ताम, 8.b राउं भुंजेइ, a आया for आवि, a मणपवणवेयेण; 10.b भुंजहिं, – एहिं, b सय ।

(7)

णिसियर णिसि भुंजिवि गइय जाम बणियवरु वि एक्कु जि पर थक्कु ताम ।
भूयमहंतपहावें तहिं पयट्टु पुणु सो तहिं विणिट्ठु सयलहिं दिट्ठु ।
राएँ पभणिउ एहु केम आउ बहुउ महंतु महु चोज्जु जाउ ।
रायहो आएसिं सो णिविट्ठु पुणु वणिवरु गुत्तिहिं णेवि छुट्ठु ।
तहिं कालइ हुउ वि आयाण भाव णिसि गइय सूर उग्गमिउ ताम ।
राएँ पभणिउ वणिवरु वरिट्ठु महु सत्तभूमि तुहु किं म पइट्ठु ।
तिं भणिओ देव जइ अभओ लहमि वित्तंतु सयलु हउ तुम्ह कहमि ।
तुह णयरहो पासि मणोहिरामु पंचउग्गमउहु सुपसिद्धु णामु ।

घत्ता– तहिं हउ णिवसंतउ सुहिं अच्छंतउ रहुवेउरपुर काउ हुउ ।
विवहारु ण सरियउ रवि अच्छमियउ तहिं मइ पइ सणहुलउ णउ ॥७॥

(8)

चंडीमंदिरे अइ वसिउ जाम किलिकिलहिं भूयवेयाल ताम ।
खट्टंगकवालतिसुलधारिया जाइणि साइणि सहु तेवि चलिया ।
ताहउ अवलोयेमि लयउ वाह महाणखंडु महु दिण्णु ताहु ।
तहो मंतिपहावें एत्थु आउ तुह पासि तेहिं महु दिण्णु ठाउ ।
तुह सहु भुंजिउ मइ इत्थु जाम ते सयल वि गय हउ थक्कु ताम ।
तहु वयणु सुणेवि कंपिउ दव त्ति णिसिभोयणु वज्जिउ तेण झत्ति ।
जो गुरुकेर उवएसु कुणइ जो धम्मु असेसु वि सयलु मुणइ ।
पंचिंदिय पसरु णिरोहु कुणइ तहु लेउ वि परलोउ थुणइ ।
जाणिउ किउ एयहो सुहु पणामु सो चलियउ रायहो करि पणामु ।
अमरउ रिउच्च सोहाजुयाउ मइ सहिउ एउ चित्तभडि आउ ।

घत्ता– जा अच्छमि तहिं पुरि सिरिवालहो घरि लायण्णउ तें दिट्ठु महु ।
तहो ताएं दिण्णि पुणु अवइण्णी सयलहु लोयहो आणिवि सुहु ॥८॥

---

(7) 1.b आमा, b वणियवरएक्कपर:थक्कु ताम, a एक्कु, 2.b भूयपंव० b omits तहिं, a णिविट्ठ, b सयलहूंमि, 3.b सए पभणेओ हुं, b चोज्जु, 4.b णिवट्ठु, b ०वइ येविणु मुत्ति छुट्ठु, 5.b अयाण्व भावा, b omits तहिं कालइ etc to line, 6. पइट्ठु, 7.b देहि for लहमि, b सयलु तं तुह कहेहि, 8.b तुह णय and leaves the space blank to जो धम्मु असेसु वि and begins with सयलु मुणइं ॥ 8.a णामु for णामु ।

(9)

मज्झु विवाहमहोच्छवो जावहिं मुणिवरसंघु परायउ तावहिं ।
मइ वि ताओ मुणिसंघहँ सहियउ कइहिमि दिवि रहणेउव गइयउ ।
कोरंटकणिवेण पण विज्जइ तेण वि तहो जिणधम्मु कहिज्जइ ।
रयणिहि भोयणु वज्जिउ राएँ मुणिवरसंघु णिवंतउ काएँ ।
एहु विसंतु सयलु मइ णिट्ठउ पुणु पुणु तहिं णियणंदणु उत्तउ ।
भणवइ भणइ णिसिहि जो भुंजइ सो मूढउ धम्मं विउ भजइ ।
धम्मु विण्णासि णिहलु मणुयत्तणु तें वयणे पाणिहि कंपिउ मणु ।
ताइ भणिउ सामिणि कय णिवजइ महु णिविसित णिसिभोज्जहो हिज्जइ ।
ता भणय णिउ ताइ तओ कहियउ णवसिरेण चडालि गहियउ ।

घत्ता— णियमं मंदिरि संपत्ती णिसिहि सपत्ती चंडालेण भणिज्जइ ।
भोयणु सामिणि विज्जउ जयकपुण्णउ वाढइ हे सह जेमिज्जइ ॥९॥

(10)

तामताए जंपिउ पिय णिसुणहि रयणिहि भोयणु ण करमि म भणहि ।
तं णिसुणेविणु पावविवड्ढेउ भणइ पुणु वि पुणु हंकियमुद्धउ ।
मइ सहु भोयण जेण विरत्ती तें फुडु अवरहिहुं अणुरत्ती ।
इए भणेविणु छुरियए छिंदिय मयमत्तेण तेण सा मारिय ।
तेत्थु जि सायरसपीयहो वरधिहि सायरसिरिहि जाहि सायरणिहि ।
पहरविहुर ववगूल संपण्णी सा सुमुइ तें जहिम उप्पण्णी ।
कित्तिउ धम्मपहाउ भणिज्जइ धम्में उत्तंगु कुलु पाविज्जइ ।
एत्तहि मो भयणिहए भुत्तउ रत्तविलित्त छुरियकर धुत्तउ ।
सो चंडालु पहाए वि मुद्धउ पियमरणेणज्जाणहो कुद्धउ ।
ताए छुरियए उयर वियारिउ तेण वि तहिं अप्पउ संधारिउ ।

(8) 2.a झारि, 7.a. adds भेवजोहो पहाउ ण रमंत सत्ति before गुरु चो मूरकेर, 3.b मूणइं, 8.a पसर, b कुणइं ॥ चो सोएं जाणिउं विमल णामु ॥ सो भणिओ रायहो करिय णामु ॥ 10.b अमराउं रि अ सोहा पूजाउं ॥ मइं सहियउं इंदु णित्तउदु जाउ, 11.a अण्णहिं, सिरिपालहो, b सायण्णउं ति णिट्ठु मइं, 12. णिणी पुणु परिणवी सयलहं सोमइं जाणिवि सुहो ॥

(9) 1.a वा ज्वणु णिवाहि॰, b जाम्वहि, b पाउइआदे, 2.b मइं, a मुणिसंघहि, b सहियउं कइहिवि, a रहणेउर, 3.b कोरंटकणिवेण पणविज्जइ, b. after धम्मु कहि leaves the blank space upto रत्तविलित्त in कडवक 10।

घत्ता– सो वि तहिं थरि मुणिहिं उवरि मुणइ गुरु पावइ लक्खणु ।
बारसेण मरंतउ पुरिसु वि होसइ होइ सिरिउ णिलक्खणु ॥१०॥

(11)

आहारदान कथा

गय मासतएण संजायउ किंचु पाणपिंडु व णिम्मायउ ।
समए कंत तहो सायरसिरियए जणिय पुण्णसमग्गं सय सिरिए ।
णं ससिकला आणंद जणेरी वड्ढइ जणमणणयणपियारी ।
एत्तहो तेत्थु जे पहुणि वणिवरु णिवसइ सिरिहरु णामें सिरिहरु ।
सो जिणपायपओहहु भसलउ मुणिजणगुणसवणि अणुरत्तउ ।
कहि मि कालि फिर घर वणिज्जए धणलुद्धए वच्चइ तहु भज्जए ।
सिरियए मुणिहि दाणु ण उ दिण्णउ संचिय अप्पें कहइ सुवण्णउ ।
एत्तहि बारह वरिसपहुत्तें मुणिहि ण दिण्णु दाणु णामें ।
वणिणा कवडलहु उग्घाडउ- आयरेण तहो अप्पइ फाडइ ।
भणिउ अत्थु णिसुणहि पिए आयहो गुरु सरीरकारणु तुह तामहो ।

घत्ता– तं णिसुणेवि मणु कंपिउ आउकंपिउ ताए ताव दुह तत्तए ।
णाह तेत्थु हउं गच्छमि पुणु आवच्छमि णियर रोए वउ पत्तए ॥११॥

(12)

तं आयण्णिऊण सिरिकंहणा पियरणीहि सा पेसिय सुकइणा ।
पुणु णिसि भोयणभाय परिणामें सा उप्पण्ण णायसिरि णामें
सा परिणेविणु परमाणंदें मुणिहिं दाणु आढविउ वणिंदें ।
आसि सुवण्णु सिरिए जं संचिउ तं जिणभुवणु कराविवि संकिउ ।
कुणिवरवइण एण जा सिट्ठी सा कूरवणहि णाम सुपसिद्धी ।

---

(10) 1.a णिसुणहि, a म भणहु, 7.a उत्तु, 9.b पि णिवडइ, a ०मरणेण त्थाणहो, 10.b. adds पि after ताए, a तहि, 11.b तहि, b हुवइ हउ पावहु, a पावहु, 12.a मरंतउ, a पुरिउ for सिरिउ ।

(11) 2.b कण्ण for कंत, a ०सिरियए, 3.a संसिकला, b वड्ढिय, 4.b णामें सिरियरु, 5.a पायपओहहु, 6.a कोहि मि, a हुई भज्जए, 7.b दिण्णउं, b संचउ सुवण्णाउं, 8.a वरिसहु पत्तें, b मुणिहि, 9.a हे वणि for वणिणा, b उप्पायउ, b तहो, 10.b वयणइं, b णिसुणहि, a कहो for तुह, 11.a भणि, 12.a हुउ ।

अज्ज वि सयलजणेण मुणिज्जइ किंत्ति अकित्ति वि किं छाइज्जइ ।
एत्तहि सिरिए पियह णिएविणु लेहअत्थु अलियउ भावेविणु ।
जंपइ कयउ तेण मणु भिण्णउ जं महु रिसिहि दाणु ण वि दिण्णउ ।
तें कज्जें पिएणा परतारिय कोवें णियघराउ णीसारिय ।
जो धणमित्तणासु आहाणउ सो महु दइवें कयउ कहाणउ ।

घत्ता– अहवा किं बुणी अच्छमि तित्थु जि गच्छमि भवियहो सारिच्छमइं ।
महु पिउ जइ वि ण वासउ देसइ आसउ कुलउत्तियहि अण्णगइं ॥१२॥

(13)

इय चिंतिवि सइ जिवि छाइय बहु दियहहि पियपासि पराइय ।
जइ वि ण कुलउत्तियहि पयच्छिय तो पियसरणाइय संगच्छिय ।
मंदिरु एक्कु तेण तहि दिण्णउ सुपुरिसु करइ अवस पडिवण्णउ ।
कालि गलंति व णिज्जिअणि हियमइ गउ सुवण्णवीवहो सो वणिवइ ।
एत्तहि णायसिरिए ति आसिउ देइ दाणु मुणिवरह विसेसिउ ।
तो एक्कहि दिणि सिरियए दीणए भणिय णायसिरि गग्गिरवयणए ।
जइ वि तुज्झ संपय आवग्गी जइ विण्णहउ मुणिदाणहो जोग्गी ।
तो वि विहिणि महु एत्तिउ किज्जउ विहि पहरहि हक्कारउ दिज्जउ ।
जे पट्ठाणियाइ मुणिणाहहं उच्चायमि तवलच्छि सणाहहं ।
तो णायसिरि भणइ फुडु भासमि को वि ण अत्थि कवणु संपेसमि ।

---

(12) 1.b पहिय for पेसिय, a मइणा, 3.a मुणिहि, b आ आटविओ वणिदि, 4.b सुवणु, b संचिउं, b वेचिओ for संकिउ, 5.b मुणिवर कूरवए जा सिद्धा, a सी for सा, b पसिद्धी, 6.b मुणिज्जइं कित्ति, b छाइज्जइं, 7.a सिरिय, b अलियउं, 8.b जसय for जंपइ, b जं महं, b दणु णउ and omits from दिण्णउ. . . to ०णासु आहाणउ, 11.a किं पुणि इहु अच्छमे तत्थु, a सारिच्छमइ, 12.b महुं पिओ जइं वि म वासउं देसइं, a अवरगईं for अण्णगइं ।

(13) 1.a ईय, b सइं, b बहुं, 2.b जई विण कुलउत्ती हियइं च्छिय, a तो विचिय सरणाणइ संगच्छिय, 3.b एक्कु, b करइं, 4.a गलंति, b ०हियमइं, b सो णवइं, 5.b णाविउं देइं, b मुणिवरहि, 6.b दिण्णि सिरियहि, a वयणइ, 7.b तुज्झु, b जई विणुइओ मुणिदाणहो जोगी, 8.b वहिण, b किज्जइं, b दिज्जइं, 9.b पइट्ठाणियाइं, b उंच्चायवि, a सणाहह, 10.b भणई, 11.b संपण्णउं, b ०वण्णउ, b ०वीसणहुं सच्चिउं, 12.b एसइं, b हक्कारउं, a वणउ, b भणिउ for भणिउ ।

घत्ता– मह पियरहूरूप्पण्णउ कज्जलवण्णउ सुउ हु वीसणहु सण्णिउ ।
एसंइ तुह हक्कारउ चाडुयगारउ णो जणि मणुउ मण्णिउ ॥१३॥

(14)

इय भणियम्मि णायसिरि सहुं गय   अवरहि दिणि मुणिचरिए समागय ।
ठाहु भणिवि णायसिरिय भत्तिए   पुज्ज करेवि अट्ठविहु भत्तिए ।
विविहाहारु दिण्णु भयवंतहो   णीरसु सरसु सरिसु भुंजंतहो ।
णायसिरिए सिरिहि हक्कारउ   पेसिउ सुणहु अमंगलयारउ ।
ताए कढंति तिल्लि सित्तउ   किं कियंतु पंगणि संपत्तउ ।
अड्डहि विल्लंतमरंतहो   दिण पंच पय णायसिरि एंतहो ।
त मुउ जणहो अणेण जि साहिउ   अंतराउ ता मुणिहि पसाहिउ ।
मंतपहावें सो सुरु हुउ   अवहिए मुणिउ रोस भउ जिह मुउ ।
तक्खणि जहि सिरिवइ परतीरए   तहि संजाय पयंड समीरए ।
तहि जलजाणुअ भग्गि लग्गउ   कहव कहव पुण्णेहि ण भग्गउ ।

घत्ता– तं पि अवहि आऊरणि णिय भव सुमरणि चित्ति फुरिउ तओ अमरहो ।
सुरभवि पाव णिरंजिउ ते गमु सज्जिउ णायसिरिहि उवयारहो ॥१४॥

(15)

जहि पसाएँ हुउ सूरु आयउ   जहि पसाएँ महु चउ आयउ ।
जहि पसाएँ हुउ अभयासणु   जहि पसाएँ मउडमणिभूसणु ।
तहो भत्तारहो आवइ वट्टइ   उत्तम किउ उवयारु ण लोट्टइ ।
तो वा तहो उवसग्गउ विणासमि   सामिणि सामिहि विणउ पयासमि ।
इय चिंततुं अमरु वरु जाणें   भउ वणियसि पवण अमआणें ।
तहो लग्गइ विणएण पयंपिउ   हुउँ तुम्हह उवसग्ग कंपिउ ।
किं ण सुणहु जिणवरि जो वाणहि   सो एवहि भइं सुरु अहिणाणहि ।
पवणज्झियारइ मरंतहो   दिण्णइणायसिरिए सुमरंतहो ।
तहो फलु जं सुत्तु मई लद्धउ   तं जाणिव तुह चिप पडिवद्धउ ।
इय संबंधु असेसु कहेविणु   जल वाणु वि तीरिए आणेविणु ।

(14) 2.b हा हुं, a भणिय, b णायसिरि, 3.b भयवंतहं पिच्छुसलिलसुर्वार भुंजंतहं, 4.b सुणहुं, 5.a किंकिक यंतु, 6.b a मरंति, a णायसिरिसिरहो, b णायसिरिति, 7.b मणें, b वि for जि, 8.a सोर for सो, b अवि सुरु for सो, b हुउ, 9.a जिहि, b सिरिवइं, 10.b तहो भणि for भग्गि, 11.b जव, 12.b ति गमु सज्जिउं ।

घत्ता– भणिउ विमलमुत्ताहल णं सिरि मयहल कइय रइय आणेज्जसु।
धुवबंसउ धुववंतहे सामिसकंतहे एहु हारु अप्पेज्जसु ॥१५॥

(16)

अवरइ सुवण्णमणिभूसणाइ देविणु देवंगइ णिवसणाइँ।
सुमरिज्जसु मइ अइहोइ विहुर भउ एम कहेविणु वणिहि अमरु।
वणिवरु वि ताम संतुट्ठचित्तु संपुण्ण लहु णियणयरु पत्तु।
तहो संगमि परिओसियमणेण विरइयउ महोच्छउ परियणेण।
भूसणवत्थइ रयणपियाइ वणिणा पियसयहे समप्पियाइ।
पंचपयपहावें सुणहु जेम सुरु जीउ दिट्ठु सइ कहिउ तेम।
अच्चंत चोज्ज विभिय मणासु वित्तंतु पयासिउ परियणासु।
बहु मणिरयणइ संजोइऊण तें दिट्ठु णराहिउ पणविऊण।
अवरु कवणु उप्पाइय सिवेण परतरि चोज्जु पुच्छिउ णिवेण।
वणिणा तहि दिट्ठइ जाइ जाइ णरणाहहो सिट्ठइ ताइ ताइ।

घत्ता– ताराएँ बहु कुम्माणें कय सम्माणें वच्छाहरण विहूसियउ।
वणे वणिणा हु करेविणु वंधु भणेविणु णिय मंदिरि संपेसियउ ॥१६॥

(17)

णवर एक्कु दिणे वणिवर महिलए चल्लिउ कण्णहूरे हारु सलीलए।
काएवि दुट्ठुवयंसिए दिट्ठउ गंपिणु रायमहीसिहि सिट्ठउ।
तीहें ताए भणाविउ वणिवइ उत्तम रयणहँ भायणु णरवइ।
एरिसु मूढ काइँ ण वियप्पिउ किं वरहारु सपियहे समप्पिउ।

(15) 1.b सुह वासउं, a बहु for वउ, 2.b हुउ, 2.a पसाए, b महु for मउइ, 3.b मावइं महुइं अंजय कउ, b सुट्ठइं, 4.b वरि, 5.b अमरवर, a जाणि, b पासु, 6.a मरमिण for मिणएण, b तुम्हइं, 7.b णिगहु सुणहुं जो णियघरे आणहि, b सुणहि मइ, b परियाणहि, 8 णमोक्कारइं, b छिण्णइ, 9.a कय, a मइ, 10.a संचयु, a ण for वि, 11.b भणिउं, a कयहर इहु जाणिज्जइ, 12.b धुवकंतहो सामिय कंतहे, a अप्पिज्जहु।

(16) 1.b अवरइं, b भूसणाइं, b देवंगइं णिवसणाइं, 2.b, inter. मइ and अइ, 3.b संपत्तु, 4.a मेणेण, 5.b ०वत्थइं, b ०पियाइं, b समाप्पियाइं, 6.b सुणहुं, b सुरु दिट्ठु जाउ जइं, 8.b रयणइं, 9.a चोज्ज, 10.a तहि, b दिट्ठइं जाइं, b सिट्ठाइं ताइं, 11.a बहुमाणें, b विहूसिउ, 12.b बंधु, b संपेसिउ।

अज्ज वि णिय अवराहु विणासहि रयणवणिवर जह्णु पेसहि ।
तं णिसुणिविणु सिरिवइ वणिवरु हारु लिवि मउ सइँ जहि णरवरु ।
मणिय कहेवि हारलय अप्पिय ताराएँ कोक्काविय णियपिय ।।
णिण्हहि हारु भणेवि वियक्खणि अप्पिउ सप्पु जाउ सो तक्खणि ।
जसु संघडिउ तासु तं सोहइ लोहवद्धु जणु अप्पउ मोहइ ।
भयगहियाए मुक्कु किर विसहरु पुणु वि जाउ सो हारु मणोहरु ।

घत्ता– किं माहि दुपयासिउ राएँ भासिउ वणिमुहकमलु णिएविणु ।
तो वणिणा बोल्लिज्जइ देव कहिज्जइ णिसुणहु अभउ भणेविणु ।।१७।।

(18)

महु घरि सुणहु आसि अलि वण्णउ तहो कम्मेण डाहु उप्पण्णउ ।
महु महिलए इट्ठक्खरु दिण्णउ तासु पहावें कलिमलु छिण्णउ ।
अवरु असेसु विमोहु वि भिण्णउ तक्खणें सो संजाउ ससण्णउ ।
तं अक्खरु भावंतु वि वण्णउ तें झाणें पाविय बहु पुण्णउ ।
णाणारिद्धि लद्धि संपुण्णउ अइसयरूवसोह लायण्णउ ।
माणिय घणथण सुरवरकण्णउ सो एवंविहु सुरु संपण्णउ ।
अवहिए णियभवकारणु पुण्णउ गुरु उवयारु तेण पडिवण्णउ ।
जहि पसाएँ हउँ हुउ धण्णउ णायसिरीए समाणु को भण्णउ ।
तहे पिउ जलहिमज्झि आदण्णउ वट्टइ जामि तासु आसण्णउ ।
इय चिंतेवि तत्थ अवइण्णउ हउ उत्तारिउ तेण महण्णउ ।

घत्ता– वरमोत्तियहि खण्णउ फलिह सवण्णउ एहु हारु महु दिण्णउ ।
देउ एउ फुडु मण्णउ मा अवगण्णउ होउ मज्झ सुपसण्णउ ।।१८।।

---

(17) 1.b एक्क, a. omits छणे, 3.a ताए is explained in margin as राज्ञी, a रयणहु, 4.b मुद, a काइं ण वियप्पउ, a समप्पइ, 5.b विणासहि हाररयणुवणिवर, 6.a वणिवइं, a सइ जहि, 7.a हारलय, 9.b जं जसु घडिउ, a लोहें बद्ध जणु, 11.b मुहु 12.b णिसुणहुं ।

(18) 1.b सुणहुं, b उप्पण्णउं, 2.b दिण्णउं, a कलिमल, b छिण्णउं, 3.b. omits अवरु... etc. to भिण्णउ, b ससण्णउं, 4.b वण्णउं, a त for तें, b पुण्णउं, 5.b लायण्णउं, 6.b ०कण्णउं, b संपण्णउं; 7.a ० कारण, b सुण्णउ for पुण्णउ, b पडिवण्णउं, 8.a हउ सुर धण्णउ, b भण्णउ, 9.b वट्टइं, b तासु आसण्णउ, 10.b तित्थु, b महण्णउं, 11.b खण्णउं; b ०सवण्णउं, b मइं for महु, 12.b अवइण्णउं मज्झु सुपसण्णउ, a उवसण्णउ ।

(19)

तो णिउ पभणइ कहि हट्टंकखर जें विण्णेण जाउ कुक्कुड सुय ।
अम्हइ संतावइ वणि भुट्ठउ बंधहो माहिं विउ दप्पिट्ठउ ।
तो तें सुमरिउ सो अमयामणु अवहिए जाणिवि वणि दुह भीसणु ।
अइ रोसेण तुरंतु पहुत्तउ धीरे विणु वणि ति णिउ वुत्तउ ।
परमक्खर कयं भंति अयाणा जंमइ बंधाविउ वणि राणा ।
तं फलु पिक्खु तुम्ह दक्खालमि सधरधराधरभर अज्जु वि ।
इय भणेवि माया गिरिसिहरइ पाडइ तरु सुरहर अक्लहरइ ।
किलिकिलंतु अवरि पसरंतउ घोरंधारु खणेण करंतउ ।
करयविट्ठि णिट्ठुर वरिसंतउ हणि हणि मारि मारि पभणंतउ ।
अचलु वि लीलइ उच्चालंतउ हयगयपुच्छखंभ भालंतउ ।

घत्ता— तो करमउलि करेविणु सिरु णावेविणु अइ भीएण अणाहें ।
एक्कवार खम किज्जउ जीविउ दिज्जउ भणिउ अमर णरणाहें ॥१९॥

(20)

माया संवरेवि सुरु भासइ णिसुणि णरेसहिय वइयरु सीसइ ।
हुउ जागरिउ आसि तुह मंतिहि मह्णु णिय बारियहे गय रत्तिहि ।
तव्वेलए भुंक्खा संतत्तहि मग्गिउ भोयणु मंतिहि पुत्तहि ।
ताव अहिंसाइय गुणवइयए णिय णंदण पभणिय अणवइयए ।
दीवए पडिय पयड णिह दीसहि तेत्थ जीव असणेहि पईसहि ।
भोयणु णिसिहि के वि जे भुंजहि जीवाइय व तेहि फुडु खज्जहि ।
तह णिसि भुंजंतह सह णिसियर जेमंतह ण लक्खिज्जहि भीयर ।
एवमाइ बहु दोसहि दुट्ठउ णिसिहि ण जेवहु जइ वि सुसिट्ठउ ।
त णिसुणेवि णिसि भोज्ज विरत्तए सह अणय मिउ गहिउ मह कंतए ।
वाडिय लेवि पत्त मइ जंपिय जेमिण आम ण मज्झु भज्झे पिय ।

घत्ता— ता मइ छुरियइ हय मय गब्भासएँ हुय एत्थु जे सायरसिरियहि ।
हउँ पहाए सा जीएवि अम्पउ आएवि मुउ हुउ सुउ कुक्कुरियहि ॥२०॥

(19) 1.a पणइ, b पभणइं, b विणेण, 2.b अम्हइं सवाअइं वणि, a भुट्ठुउं, 3.a समरिउ, b दुह भासणु, 4.b अइं, b फत्तउ for पहुत्तउ, b णिउं वत्तउं, 5.b बंभइ, 6.b दक्खिसावमि, b ०भरत्तर अणु, 7.b मायए गिरिसिहरइं पाडहि, b सुरहर अक्कलहरइं, 8.b करंतउं, 9.b करइं, b पसरंतउ, 10.b अचुक विचल लीलइं चालंतउ, a जलंतउ, 11.b अइं, b अणाहो 12.b दिज्जउं ।

(21)

आयदिणिहिं सो हुय कोमवया पुण्णहिं एहु ताए अवरु पहु ।
घउ परतीरि वसि वि आणिज्जए मज्झु मज्झु सरंतहो पुज्जो वज्जइ ।
अरिहं अरिहं हुय उच्चारिउ झुक्कमणेण घरु कामहुरिउ ।
तासु पहावें हुउँ आयउ सुरु सहजाहरण विहूसिउ भासुरु ।
सुरतरु कुसुममाल कयसेहरु सव्वावयव सुगंधि मणोहरु ।
विलुलिय सिहिणोवरि हारमणिहिं सेविज्जंतउ सुरवरमणिहिं ।
किण्णरि गीयहिं गाइज्जंतउ णवर सुअक्खर णहु वि णियंतउ ।
अच्छमि कीलविलासहिं तावहिं आसणुई पुजाउ महु तावहिं ।
इय विलास किर माणमि जावहिं णियभव सुमरणु एहु वि तामहिं ।
णाणिं सोवमग्गु अइ जाणिउ उत्तारेवि जलहि सम्माणिउ ।
दिव्वु हारु भूसणइ पसत्थइ अवराइ मि देवंगइ वत्थइ ।

घत्ता— जा संबंधु पयासिउ ता पिउ भासिउ जें सुणहु वि सुरु जाउ छुहु ।
सो अक्खरु भवसिहिजलु धोइय कलिमलु भवि भवि सरणउ होउ महु ॥२१॥

(22)

पुणु णिवेण करकमल मउलेविणु भणिउ वणीसरु विणउ करेविणु ।
जं मइँ अण्णाणें संताविउ विणु कज्जेण महारुम खविउ ।

---

(20) 1.b वइयरु सीसइं, 2.b तुव मंदिरि महुं, b वाडियतहिं, b रत्तिहिं, 3.b तं देलए, a संतरतहिं, b संतरित्तहिं, b मग्गिउ, b अंतिहिं, b. omits पुत्तहिं and ताव अहिंसाइय etc. . . to जीवाइय वि लेहिं, 6.b वज्जहिं, 7.b सहं, b भुंजतहं तहं णिसियर, a जेवंत जि ण, b जेमंतहं लक्खियहिं ण भोयर, 8.b एवमाइं, a दोसहिं, b जे महुं, a ससिट्ठउ, 9.b विरत्तइं, 10.b पयत्तें for पत्त मइ, a मज्जें, 11.a सो for ता, b मइं छुरियइं, 12.a हुउ, a पाएवि, b inter. हुउ and हुउ ।

(21) 1b आयदिणहिं. b पुण्णहें, 2.b कहिं for वसि, 3.a मइ मि अव०, 4.a सु for तासु, a हुउ, a सुरवरु, a विहूसिय, 6.a हारमणिहिं, a ०मणिहिं, 7.a गीयहिं, a. after गाइज्जंतउ explains in margin. सा रि ग म प ध णी सरपत्तणं, b णट्टु णियंतउ, 8 b. omits किण्णरि गीयहिं etc. . . to तावहिं, b तावइ, 9.a जावहिं, b जामहिं, b सुमरणे एहु वि तामहिं, 10.b मइं जाणिउं, b सम्माणिउं, 11.b भूसणइं पसत्थइं अवराइं मि देवंगइं वत्थइं, 12.a विलवउ for ता पिउ, b सुणहु, b सुहु, 13.b सरणउं ।

तं अवराहु खमेहि वणीसर जेणण्णए सभय अवणीसर ।
तहो महिल तहि मि हक्कारेवि भत्तिए उच्चासणे वइसारेवि ।
भणइ माइ भंडारिणि वारिउ तुह पुण्णें पिउ सायरु तारिउ ।
तुह पुण्णहो को मुणइ पमाणउ सुरविंदहि जहे वत्थाहरणउ ।
पाय णवंति जाहि सुर सहरिस कवणु महणु किर तहि अम्हारिस ।
हारहो लोहें णिट्ठुरु भासिउ जं तुहु पइहे अविणउ पयासिउ ।
तं महु खम करि माय महासइ विणएँ उत्तम कउ विणासइ ।
एम भणेविणु वच्छाहरणइ दिण्ण पंचवण्ण वइ हरणइ ।

घत्ता— इय तें वणिगोमाइउ स पिउ खमाविउ पुणु सहु पियए समत्थें ।
परम अहिंस पयासणु पावपणासणु लइउ धम्मु परमत्थें ॥२२॥

(23)

लइउ जिणिदधम्मु जा राएँ भणिउ सुरेहि ताम अणुराएँ ।
साहु साहु अरिणिवकरिकेसरि तुह सुहतरु सिंचिउ धम्मसिरि ।
आयण्णहि सुहि आयमु भण्णइ जो जिणदेउ रिसि वि गुरु मण्णइ ।
मोक्खमग्गु णिग्गंथ वि भावइ धम्मु अहिंसालक्खणु भावइ ।
सा सम्मत्तरयणरयणायरु अमरु वि तासु करंति महायरु ।
एमहु वोहि धम्मे दिढु णरवइ धम्मे जीउ महुण्णइ पावइ ।
इय भासेविणु णिउ वणि वणि पिय जामि भणेविणु सुमहुरु जंपिय ।
पुणु मणिमयहो रमिय वरविलयहो गउ संतुट्ठु अमरु णिय णिलयहो ।
एक्क पहर अणथमिय पहावहो एत्तिउ फलु जहि अखलिय भावहो ।
तहि जो सयलकाल परिपालइ तहो पुण्णहो को अंतु णिहालइ ।

---

(22) 1.b ०सुरु करमउलेविणु, 2.a मइ, a महावइ पविउ, 3.b एउ for तं, b खमेहि, 4.b तहि जे, 5.b भणइं माइं, 6.b मुणइं पवाणउं सुरविंदेहि, a. omits जहे, b वत्थाहरणउं, 7.b गहणु, a तहि, 8.b हारहो, 9.a माए, b पयासइ, 10.a एव, b ०हरणइं दिण्णइं, b हरणइं, 11.a पोमाविउ, a सहुं, a समत्थे ।

(23) 1.b सुरेण, 2.a सुरतरु, b धम्महो सरि, 3.b आदण्णहि, b जिणु देउ, b मण्णइं, 4.a णिग्गंथु भावइ, 5.b अमर, 6.a एवहु वेइ धम्मदिढु, a महुण्णइ, 7.b इउ, a भणेमि for भणेविणु, 8 b. omits गउ संतुट्ठु etc. . . to णिलयहो, 9.b अणयमिय, 10.b परिपालइं णिहालइं, 11.a पविवज्जइ, b पवज्जिज्जइं तं जि किजइं, b आयम for आगमु, 12.b तेणे, a णउ for विणउ, b हवेइं, a पावासिउ ।

घत्ता– मोणहो फलु पयडिज्जइ तं जिह केज्जइ भत्तिए आगमु भासिउ ।
तेणअहिंसाजणणिहि जिणवरवाणिहि विजउ हवेइ पयासिउ ॥२३॥

(24)

तें तहो वयणि अमियहो सवणउ   होइ वयणु पीणियजणवयणउ ।
तहु समलाण वि हवइ पहाणउ   रायस्सा वि हु माणइ माणउ ।
तरु कुसुमइ विल्लइ अत्याणइ   भक्खिम एयए जीवइ माणइ ।
इय वय पालणि माणव सग्गहि   उप्पज्जहि भुंजिय वरभोग्गहि ।
पुणु सुणरत्तु सुरत्तु लहंता   भवसत्तट्ठमज्झि हिंडंता ।
इक्खुक्काइ वसु पावेप्पिणु   रयणत्तयविसुद्धि भावेप्पिणु ।
सजमणियमवयइ पालेविणु   वज्झब्भंतरु संगु मुएविणु ।
सुक्कज्झाणउ आऊरे विणु   केवलणाणउ उप्पाए विणु ।
अप्पेणप्पाणउ बुज्झेविणु   लोयलोउ वि णिउणु मुणेविणु ।
सुरणरतिरियहु धम्मु कहेविणु   अंकिरिम झाणें मोक्खु लहेविणु ।

घत्ता– तिहुयणजण अहिणंदिय पाणें णंदिय सुहु अणंतु धुउ भुंजहि ।
तित्यहो चायहि ण जम्महि मुक्का कम्महि सिद्धविसुद्ध भणिज्जहि ॥२४॥

(25)

मउएवे वंदिय गुरुपयाइ   लइयइ आयण्णेप्पिणु य वयाइ ।
इयरेण वि कयइ सुउज्जलाइ   कययहो फलेण णावइ जलाइ ।
ता मणिभित्तिहि उज्जोइयाइ   विज्जहि जाणहि संजोइयइ ।
वेउव्वण कयकोलाघराइ   घवघवघवंत बहु घग्घराइ ।
गइय सरिगमपधणीसराइ   मणिमयकणंत किंकिणिसराइ ।
फुल्लहरभमिरमहुयरउलाइ   टणटणटणंत घंटा उलाइ ।
तहिं थिय आयासें अंतजंत   पुरणयरगामपट्टणतणंत ।
धवलहर धुलिय व हुवइ जयंति   विण्णि वि घत्ता पुरिवइ जयंति ।

घत्ता– सिद्धक्खेत्तपयवंदिहि दुक्किउ णिंदहि जिण हरिसेणु णवंता ।
तहिं थिय ते खग सहयर कय धम्मायर विविहसुहइ पावंता ॥२५॥

---

(24) 1.b पाणियजण सवणउ, 2.b मि हवइं, b मायर, 3.b कुसुमइं विल्लइं अत्थाणइं, b जीवरयाणइ, 4.b पालण, भुंजिय वरभोगहिं, 5.b. omits सुरत्तु, 6.b इक्खुक्काइं, b पावेविणु, 7.b णियमइं वयइं, b वज्झब्भंतर, b मुएप्पिणु, 9.a अप्पेण०, b ०प्पाणउं, b लोयालोयओ णिउणु, 10.b ०तिरियहं, b मोक्खु for मोक्खु, 11.b णाणतवंदिय, 12.a जम्महिं ।

(26)

इह मेवाडदेसि जणसंकुलि सिरिओजउर णिग्गय धक्कडकुलि ।
पावकरिंदकुंभदारणहरि जाउ कलहि कुसलु णामें हरि ।
तासु पुत्तु परणारिसहोयरु गुणगणणिहि कुलगयणदिवायरु ।
गोवड्ढणु णामें उप्पण्णउ जो सम्मत्तरयणसंपुण्णउ ।
तहो गोवड्ढणासु पियगुणवइ जा जिणवरमुणि णिच्च वि पणवइ ।
ताए जणिउ हरिसेण णामें सुउ जो संजाउ विबुहकइविस्सुउ ।
सिरिचित्तउडु चएवि अचलउरहो गउ णियकज्जें जिणहरपउरहो ।
तहि छंदालंकारपसाहिय धम्मपरिक्ख एह तें साहिय ।
जे मज्झत्थमणुअ आयण्णहि ते मिच्छत्तभाउ अवगण्णहि ।
तें सम्मत्त जेण मलु खिज्जइ केवलणाणु ताण उप्पज्जइ ।

घत्ता– तहो पुणु केवलणाणहो णेयपमाणहो जीव पएसएहि सुहडिउ ।
बाहारहिउ अणंतउ अइसयवंतउ मोक्खसुक्खफलु पयडिउ ॥२६॥

(27)

विक्कमणिव परिवत्तियकालए गयए वरिससह चउतालए ।
इय उप्पण्णु भवियजणसुहयरु डंभरहिय धम्मासयसायरु ।
ते णंदहि जे लिहहि लिहावहि ते णंदहु जे भत्तिए भावहि ।
जे पुणु के वि हु पढहि पढावहि ते णियपरसुहु दूरे लुहावहि ।
एयहो अत्थु के वि जे पयडहि ताण णिरंतर सोक्खहि सुहडहि ।
जे णिसुणेवि परिक्खए भत्तिए ते जुज्जहि णिम्मल मइ सत्तिए ।

---

(25) 1.b मरु देएं अंकिवि गुरुसाइं लहयइं पुआपणिय वेयाइं, 2.b उपरेण त्ति कयइं सुज्जलाइं कययहलु, b जलाइं, 3.b उज्जोइयाइं खिज्जइं जाणइं संजोइयाइं, 4.b ०घराइं, b ०अवयवअवंत etc. . . to किंकिणिसराइं, 5.a ०किंकिणि०, 6.b ०उलाइं, 7.a ताहि, b चमंत for तजंत, 9.a ०वंदहि, b णिवहि जिणु हरिसेणअंता, 10.a तहि ।

(26) 2.a कुलीहि, 3.b परण्णारि, 4.a समत्त०, 5.a जिणवरमुणिपयणिय गुणवइ, 6.b जणिउ हरिसेण णाम, a ०विस्सउ, 7.b अचलउरेहो, 9.b आयण्णहि, b अवगण्णहि, 10.b सम्मतु तेण मलु, a. page 137 is torn and pasted, so some letters from left side are naturally not found like केवलणा, हो णेयपमाण, सुक्खफलु पय etc. 11.b ०सएहि सुहडिउं, 12.b अइसयवंतउ ।

सयलभाणिअव्वाहो झुडुं हिज्जइ सोमअमिद्धिए महि सोहिज्जइ ।
परहियपरणिविहंडिय अहहो होउ जिणत्तणु चउविहु संघहो ।
पयडिय बहु पभाव अरियारें णंदउ भूवइ सहो परियारें ।
धम्मपवत्तणेण दुहहारें पंवउ पय बहु अइ ववहारें ।

घत्ता– संवए दुग्गहु सुसाहिउ सदरसु साहिउ इउ कहरयणु मगण्णाइ ।
जो हरिसेण धराधरउ जहि पयणिधर ताम जणउ सुहसण्णहु ॥२७॥

इय धम्मपरिक्खाए चउरवग्गाहिट्ठियाए (चित्ताए) ।
वुहहरिसेण (कव्व) कयाए एयारसमो संधी समत्तो ॥छ॥ संधी ॥छ ॥११

ग्रंथसंख्या २०१० ॥ छ ॥ छ ॥ मंगलं ददात ॥ छ ॥

* ★ *

(27) 1.b परियत्तिय॰, b बरगाए for गयए (a सहसचउ ता) not found, 2.b उणगु for उप्पण्णु, b खंड for खंभ (a सय सायरु ते) not found, 3.b ते णादहुं जे, b लिहावहिं ते णंदहु, 4.a ते जिंदहिं जे भत्तिए जे पुणु के वि, b पढावहिं, b. omits ते पियपरदुह दूरे लुटावहिं (a not found ण्यु के वि जे प), b सुक्खइ, b (a not found क्खाएभत्तिएं), b जे जुअहि णिम्मलमइं, 7.b हिज्जइं (a not found ज्जइ) (a not found ज्जइ सोमसमि) द्दिठ for ड्डि, b सोहिजइं, 8.a परहियकर॰, a अहहो, b होउं जिणत्तेणु चउंविहु, 9.b पयलिय, b भूवइं, 10 b धम्मपरत्तणेण, b बहुविहु ववहारे, 11.b संवदुसहसयसयाहिउसदरसयाहिउं, b अगण्णइं, 12. b आ, b धयधरा, b गयसुधर, b सुहहुं भण्णइं, 13.a चउवग्गाहिट्ठियाए, b चउवग्गाहिंट्ठियाए, 14.b. adds चित्ताए before वुहहरिसेण, b एयारहमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ संधि ॥११॥ इति धर्मपरिक्षा नाम शास्त्रं समाप्तं ॥छ॥

लेखक प्रशस्ति

।। मूलसंघे भट्टारक श्रीपद्मनंदि; तत्पट्टे भ. शुभचंद्र; तत्पट्टे भ. जिनचंद्र; तत्पट्टे भ. प्रभाचंद्र, मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्ति, तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री त्रिभुवनकीर्ति, तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सं. सूजू तत्पुत्रटेहक, भार्या लाजी तयोः पुत्र छीतर, भार्या सुना इ....... रक्षायां ज्ञानावरणीयकर्मक्षयं निमित्तं लिखाप्य ।।

मुनि देवनंदि योग्य दातव्यं ।। शुभं भूयात् ।।

।। छ ।। छ ।। छ ।।

विशिष्ट शब्द-सूची

अइखण्ण ११.४
अइलज्जाविणु ५.५
अउव्वु ५.८
अक्खयजोणि ७.१५
अक्खाह ११.१८
अकुडिलभावए २.१२
अकंपय मुणि ४.२
अग्गलउ ८.२०
अग्गिपरिगह १ १८
अगत्थिणा ५.१-४
अगुरु लक्खवणु ३.९
अघडमाण ९.१८
अच्छर १.११
अच्छहु २.२३
अच्छहि १.९
अच्छामि २.५
अच्छरिउ ३.५
अजयरु १.१३-१४
अजिणंतु ८.७
अजिय ८.१४
अट्ठम ८.१२; २३
अट्ठिया २.२२
अडसेयसरिसु ४.६
अडवण्ण ४.६; ६.९
अणलु ८ ५
अणारिसु ८.२
अणुव्वय १०.१४
अण्णोण्णु १.८; ३.१३
अण्णोण्णविरोहु ४.१
अणुराइयहो १.८
अणारिसु ८.११
अणिट्ठिय ५.४
अणुसउ ३.२
अणुविणु ५.५
अणुहुवि ४.१८
अद्धचक्कि ८.४
अद्धवणयसंमीसिउ २.१४
अद्धसिरीहर ९.२४
अद्धकोसु ११.२
अद्धोद्धी ८.१९
अप्पवियारा ६.१७
अप्पाणउ ७.७
अप्पाणु ४.९
अप्पिउ ३.१
अब्भत्थिउ ८.१६
अब्भुत्थाणु ५.१४
अभयवयण ११.१६
अम्हहु २.२२
अम्हाण ४.५
अमरगुरु ३.१९
अमरपहु ८.१६
अमराउरि १.१०
अमियाहारु ३.४
अमंगलगारउ ११.१४
अयत्थि ९.६
अयालि ३.३
अरिहंत ५.१९
अल्लवइ ३.९; ३.१८
अलिउ ८.९
अलियविहुरा ६.३
अलिय ३.६
अविणासिउ २.२३

अविवेइउ ३.१
अवंतीदेसु १.९
असज्झयाहि २.१६
असिपत्तवणंतर ६.२
असुद्धाहारु १०.१०
असुहत्थी ७.१०
अहल्ल ९.४
आइच्च ८.१
आइच्चणरेस ८.३
आक्कोसंति ९.३
आढविउ ४.२०; ११.१२
आढविवु ४.१३
आढत्तु ४.११
आणयाइं ६.१८
आणिज्जइ ५.१३
आणुराइय ४.११
आयण्णहि ४.२
आयण्णिउ ७.१०
आयण्णिओ ४.११
आराहण ९.८
आलावेण २.२; ८.१०
आलोविउं १.१७
आलिंगणु ५.३
आवग्गी ११.१३
आवेवणु ९.२
आवेविणु २.१७
आसासिय ८.१०
आहरण ३.११
आहरणउ २.२४
आहल्लणा ४.१८
आहलु ५.६
आहारदान ११.११
आहीरदेसु २.७
आहुट्ठ ४.१३
अंगउ ४.१७; ८.१९; ९.८, ११
अंगुट्ठसमहु ५.१
अंबयविट्ठि ८.२
इक्खाइवंसि ९.१५
इट्ठिए ३.१७
इंदणीलमणि १.३
इंदु ९.१४
इंदो ४.१८
उक्कोइय २.१२; ५.१
उग्गमिउ ११.७
उग्गालिय ४.२०
उग्गिलिय ४.२०–२१
उज्जलाइ ९.२१
उज्झइ ३.३
उज्झाण ११.१
उज्झायणि २.२३
उज्जेणि १.१०; १०.१२
उट्ठवउ ५.१८
उट्ठंतपडंतहो ५.११
उड्डीणुहंसु ४.६
उण्णामिय ४.१३
उद्दालु ७.१६
उद्धरिय ७.२
उद्धूलिय ७.५
उप्पज्जइ ७.१८
उप्पज्जहि ६.२
उब्भावइ ७.८
उब्भिट्ठगयवरं ५.१०
उयरास्थिउ ४.२२
उव्वरिय ४.१६, ७.२
उववणु १.११
उवयारणिमित्तु ७.१
उवसग्गु ४.२; ८.५
उवसमतु ७.६
उवसंतमणो ३.११
उवहसइ २.७

उस्सासु ६.१५
उंदुर ४.४
उंदुरे ३.१४
उंदुरा १.१४
उंबर १०.१४
एक्कगाहि २.२४
एक्कमेक्कु ४.२०
एक्कहि ४.४
एक्कु ३.१; ३.२
एक्केक्काण ६.४
एत्थंतरे ७.४
एतहो २.१७
एयारिसउ १.२१; ९.८
एरिस २.१
एरिसिया ७.१२
एरिसु ५.२
एवं ४.६
एहावत्थ ८.२
कइणहु ५.९
कच्छ महाकच्छ ८.१०, १२
कज्जगइ ४.१९
कज्जपराइउ ८.१२
कज्जाकज्जु २.१५
कज्जे ४.१०
कट्ठ ३.१०
कण्ण ८.५
कण्णमूल ३.१८
कण्णहु ४.५
कण्णाविवाहु ७.१७
कणयमाल ११.५
कणयासण २.३
कत्तियाइ ९.२
कप्पद्दुम १०.२
कप्पतरु १०.१
कप्पूरधूलि ५.२
कप्पूरसुरहितरु २.१
कम्मबंध १.१४–१६
कमलासणु ४.१३
कमंडल १.१८
कयकिलेसु ३.१०
कयत्थउ ३.२२
कयद्धय ८.२०
करउववाइय ८.१०
करयलाउ ३.१०
करयविट्ठि ११.१९
करप्पिणु ८.४
करिरयणु ९.२२
करेप्पिणु १.१२
करेविणु ४.६
कलहंसइ १.२
कलेवरु १.१४
कवणु ४.२२
कवाडु ४.१२
कविट्ठतरु ९.२
कविट्ठि १.१२
कहमि ५.१
काराविय २.१२
कालासुरु १०.९
कासस्स तंबो १.१४
कावालि ४.१७
किंकिणि १.४
किंकिणिणरंत २.१
किंक्कम्मपुरहो ८.२१
किक्किजि ८.१६
किट्ठभिच्चु ४.६
किण्हु ११.११
किण्णरीहि १.३
किं बहुणा २.१५
कीलमाणु ५.९
कीलंतहो १.८

कुंटहंसगइ ३.१५
कुडिलउ १.१०
कुडिलभाव ४.१४
कुंति ८.२; ९.१४
कुच्छियधम्मेण ९.१३
कुत्थिउ ९.१४
कुटहंसगइ ३.१५
कुद्धमित्तु ९.११
कुरंगी २.९
कुल ४.४
कुलकण्णहु ७.१७
कुलदेवयाइ ८.१७
कुलदेवि ३.४
कुलणंदण २.१८
कुलयर २.१
कुसुमउरहो १.१९, २.१
कूरवसहि ११.१२
केरितउ ५.६
केम ३.१
केसवासु ४.१२
कोइलतमाल ३.९
कोउहलेण २.५
कोऊहल २.९, ८.१०
कोक्काविय ११.१७
कोडिउ ९.२४
कोडिणयरि २.१४
कोद्दव ३.९
कोबंडकाउ ६.१२
कोवंडदंडु ८.२१
कोवंडविहुसिय ४.३
कोवग्गिदित्तु १०.६
कंकालमउ १०.९
कंचणमायणु ३.४
कंदमूलफल १०.३
कंठोट्ठणयरि ९.१८
कंतिल्लु ४.२४
कंसासु ४.१
कुंडियहो ५.१६
कुंभत्थु ४.१४
कुंभीपायाणल ६.२
खइयरु ६.२
खगवइसुएण ७.१
खज्जइ २.३
खणमित्तु ४.१७
खयरणाहु १.५
खयररायतणएण १.२०
खरदूसण ८.१०
खरमुहेण ४.१७
खरसिरु ५.७
खरसीलु ४.१७
खरि ३.१५
खसिऊण ९.२
खिज्जइ/खिज्जउ ८.२१, ९.१२
खिल्लवेल्लि ७.१७
खीरकहाणु ३.४
खेडु ५.१०
खेयरो/खेयरु १.१६, ४.७
खंडिउ ३.१०
खंदावारहो २.१०
खंधु गहवइ ९.१६
खुंटें ९.७
गउरिय ४.७, ५.१
गउरियहरहं २.२२
गग्गिरगिर ३.१८, ९.३
गच्छमाणु ३.१३
गडुरवेणु ९.१
गड्डुरवग्गु ९.२
गब्भरयें ७.३
गब्भासउ ७.७
गमयहु ३.६

गयाणुग्गइउ ८.९
गरुयलक्खए ३.१८
गरुयलज्जाए ७.२
गल्लफोडि ३.१९
गल्लऊण ३.३
गल्लु ३.१८
गलेवि ३.२
गविट्ठउ ९.२
गहिऊण ३.११
गहिरसरु ४.७
गहोरिम ४.१४
गाउरेण १.४
गांधारिकुमारि ७.९
गिलिऊण ५.१६
गीयझुणि ४.१३
गुज्जरत्त ९.१
गुणवय १.७, १०.१४
गुणड्ढ ४.२२
गुणल्लियउ १.७
गुमुगुमंति ११.२
गुरुचरणारविंद २.२३
गुरुभाइ ८.१८
गुरुविग्घु ७.२
गुलुगुलंतु ५.१०
गेण्हेहि ३.११
गोउर ३.१५
गोउलु ४.१०
गोपुरमणि ४.१०
गोयरविचित्त ११.४
गोरसु ३.४
गोवद्धण ११.२६
गोविए ४,१०
गोविंदु ४.२४
गोविहि ४.१२
गोसीरिसयं ३.११
गंगकण्णा ४.८
गंगाठइहि ७.१६
गंगायडि १.१८
गंजोल्लिउ ५.१५
गंडमाल ३.१८
गंधारि ८.४
गंपिणु ५.८
घणवाहणु ८.१४, १७
घयपोल्लियाउ ३.१६
घर २.९
घरदव्वु ३.६
घल्लहु ३.१३
घल्लाविय ७.१७
घल्लिउ/घल्लिय ९.२, ५
घिप्पइ १.१३
घुट्ठउ ५.११
घंटाजुयभेरी २.३
चउक्कु १.९
चउत्थ ४.१, ४.२४
चउयउ ३.१७
चउवहु ६.१
चउमुहुं १.१
चउरासी लक्खाइ ६.४, ९.२४
चउवग्गाहि ५.२०
चउविज्जउ ३.६
चउवीस ९.१७
चउसट्ठी ६.४
चउहट्टमग्ग ११.४
चक्कवइ ४.१
चच्चरगोउर ३.१५
चच्चरियचिहुर ४.३
चट्टुभट्टपोत्थयसंगहणउ ३.२०
चणय २.८
चत्तारि मुक्खकहाणउ ३.१२
चयारि १.१३, ८.१०

चारुचक्का ३.८
चालीस ६.८
चिकिच्छिय ७.८
चित्ताए ४.२४
चित्तंग/चित्तँगउ ८.१
चिंधी ८.१७
चिहुर २.२१
चीररहिउ ५.११
चुल्लीसमीवे ७.४
चूयकहाणउ ३.१
चोरहि ३.१६
चंदवइ ७.१६
चंपापुर ३.१, ८.३
छ ८.१५
छक्कम्मरय १.१८
छक्काल ४.१
छज्जोयण ८.१५
छट्ठ ६.१९
छड्डिउ ४.२१
छण्णवइ ९.२३
छलिउ ५.९
छहत्तरि ६.४
छाया २.१५, ४.८, ५.६
छिज्जइ ५.१९
छिण्णु ५.४
छित्तइ १.१०
छित्तणट्ठ ५.७
छिद्दणिवेसणु ४.१२
छुट्टइ ११.१०
छुहतण्हाइ ६.१८
छुहिएण ९ २
छोहारवीउ ३.४
छंमूल ६.११
छंदालंकार १.१, ११.२६
जइच्छिणु ४.५
अगरामें १.१
जइसेहुइ ५.२
जज्जरिउ ४.१७
जजमाणेण ४.७, ५.४
जण्ण सुय २.१८
जणणिए ७.१६
जणणियाए ८.३
जणु वट्टु २.१८
जत्थ १.११
जम्मवइ ६.२
जमकीला २.१५
जमपासि ४.१९
जमहो ४.१८
जरसंधु ८.४, ९.९, ११.१५
जरियहो २.१३
जलणिहि पमाण ६.१३
जलुकच्छ ६.१८
जहण्णु ६.१६
जहणंसु ६.१४
जहिं १.२
जाण-पहाण ९.२४
जाणिज्जइ २.२, ४
जाणेवि ३.१९
जिणचरणदत्तओ ५.१९
जिणदेउ ९.१३
जिणधम्मु १.१४
जिणमंदिर ११.२
जिणिंदधम्मु ११.२३
जिणु १.१
जियारि २.५
जीवावहारु ४.१२
जुहिट्ठलु ८.४
जुहिट्ठिलराए ५.१३
जेट्ठामुएण ५.६
जेमिज्जइ ३.१७
जो ४.६

जोइसहु ६.१२
जोयण ८.७
जोयंतहो ७.१५
जोव्वणवइ ११.२१
जोव्वणु ८.२१
झंपिउ २.१७
झंपेविणु १०.९
झंवओ ४.१८
झंववेण ८.२०
झंबूआइवक्ख ६.१०
झत्ति १.११, ३.२, ९.१५
झल्लरिरूअ ६.१
झसइंधरायस्स १.१३
झाइज्जइ २.१६
झाणालंविय ८.१२
झायंतु ४.२
झिज्जइ ८.१
झुट्ठु २.२३
टिटामंदिरु ९.७
डंभ ९.१५
डिंभु ५.३, ५
ण्हाणकज्जे ८.६
ण्हाहिणि १.१८
णउल ४.२
णमेविणु ३.१२
णरवराह २.१
णरणाह १.३
णव ४.१
णयर ९.७
णयणफलु ४.१५
णवर २.२, ३.१, ९.८
णरिसरिउ ५.११
णहयलउ १.९
णाणारयणावलि २.१
णायकेउ ७.१७
णायसिरि ११.१३
णारिहरु ४.२४
णिउणमट्टहो २.१८
णिक्कलु ३.२२
णिक्किकट्टु ८.१८
णिक्खिय ९.११
णिग्गंथु ३.१२
णिग्गयणी ४.९
णिच्चात्तलोह ९.१५
णिट्ठुरु ११ २२
णित्थरहु ७.३
णिद्धाडिय ३.५
णिद्धिकार ४.११
णिप्पीलियउ ७.११
णिब्भच्छिअ २.९, १८
णिब्भंतु ५.१२
णिम्मलरयण २.१३
णिम्मियउ ९.१२
णियच्छिउ ९.१०
णियट्ठाण २.६
णियवत्त ५.१७
णियसाहणु ८.१३
णियंव ४.१६
णिवसेहरु ३.१
णिविउपेम्मु ४.१६
णिविट्ठु ४.७
णिरंजणु ३.२१
णिरिक्खइ १.९; २.७३
णिसुणिज्जइ ७.१६
णिसिभुंजण ११.१–१०
णिसिभोयणु ११.८
णिसुणेविणु २.७, ११
णीलंजस १०.३
णीसरियउ ५.१५, ९.११
णेउर ७.३

णंदणोट्ठे १.२०
णंद–सुणंद १०.२
णंदणु १.७
तइआ/तइयो संधि ३.११, ३.२२
तक्कर ३.१६
तड ४.५
तणकट्ठमोहु २.२
तवसिसंघे ७.५
ताडिज्जमाणओ ५.९
तायाणाए ९.९
ताराहरणु ८.२२
तावसरूव ७ १
तित्थजत्ताफल ४.८
तियक्खें ५.६
तियच्छु २.४
तियाहिय ६.११
तिलयसोह १.३
तिलोत्तमा ४.१३
तिसट्ठि ८.१५
तिहत्थ ६.११
तुच्छोयरिया ७.१२
तुज्झु ५.१०
तुट्ठएणं ३.८
तुम्हह २.४
तुरंगु ३.७
तुल्लु १.१४
तेऊलंसहि ६–१४
तोमर ३.४
तंबोलविलेवणाइं १.२०
थक्कउ ४.२१
थक्कहि ३.१५
थक्कु १.९; १०.१
थिरमणासे ७.१०
थेवेविणु १०.३
थंभिउ ४.१०
दद्दुरिवणासेहि ११.६
दद्दुरेण ४.६
दट्ठंगुट्ठउ ७.४
दरदरिसिय ४.१३
दरिसिज्जइ ५.८
दहा ६.१
दहधम्म ४.१
दहपुव्वधारि ५.७
दहपुरिस २.९
दहबलकोडि ५.१३
दहयस्स ४.९
दहविहधम्मु ९.२०
दहि ३.४
दहिमुहु ९.६, ९.
दाणवईसहो ९.८
दाणुल्लउ २.१६
दारेविणु ५.१३
दाहिणउ पाउ ३.१५
दिएहि ४.१
दिट्ठमूढकहा २.१६.१७
दिणार ३.१०
दिणे दिणे २.२४
दिवट्ठसार ६.१२
दिव्वहार ३.४, ५
दीवंती १.४
दुच्चरियउ २.९
दुज्जणु ३.१२
दुज्जोहण ८.४; ९.१४
दुट्ठ ४.२२
दुद्दह २.२४, ३.४
दुद्धउ ४.५
दुद्धपक्किउ ४.५
दुद्धरसुक्क ९.१०
दुणवणु ६.१५
दुण्णिवार ७.१५

दुलारी १.१४
दुपल्लु ६.११
दुट्ठमूढउ २.९
दुहियलक्खणभरिय ७.११
दुंदुहिसद्द ५.१९
दूरतरियउ ९.११
देवसणु ४.१२
देवसंघाउ ४.१८
देवहम्मे वणे १.१७
दो पियाउ ३.१४
दोहिमि ८.२०
दंडवोस २.८
दंसणमत्तेण ४.२०
धक्कडकुल ११.२६
धणलुद्धए ११.११
धणं ३.८
धणवइ ११.३
धम्मपरिक्ख १.१, ११.२६
धम्मपहाउ ११.१०
धम्ममोक्खत्थकाम ३.३
धम्मराइ ३.८
धम्मु ९.१९.२०
धम्मुफल ९.१९.२३
धम्मेण १.१५
धय ३.४
धयरट्ठहो ७.९
धयरट्टु ८.१
धरणिवहो ८.१२
धीवरकुमारि ७.१४
धीयजुयलु १०.२
धुधुधुणइ ७.१५
धूमद्धउ ४.२०
पइट्ठु ४.१०
पक्ख १०.२
पगलिउ ५.१
पचोसइ २.२४
पच्चक्खु ४.९
पच्चंतहं ९.२४
पच्चक्खाणु १०.१०
पच्चुत्तउ ३.४
पच्छत्ताव/पच्छुत्ताव ४.४, ३.१०
पच्छण्ण सरीरु ४.२०
पज्जरिउ ७.१६
पज्जलिउ ४.१२
पट्ठाणियाइ ११.१३
पडहसर ३.११
पंच णमोकाराइ ११.१५
पंचमसरु ४.१२
पंचम संधि ५.१, ५.२०
पंचवीस ६.१
पंचसयाइं ५.७
पंचदहा ६.१
पंचाणणहो ९.५
पंचाणुत्तर ६.६
पंचास १.३, २.१८
पंचविहु मंतु ५.६
पंचदहा ६.२
पंचासइ १.४, २.७
पंचाणुव्वय १.७
पंडव ८.४
पंडु ८.१
पंडियविज्जवियाणय ७.२०
पच्छिऊण ४.२
पडिच्छउ ३.४
पडिमासुएव ४.१
पडिवण्णु ४.४
पडिमा ८.१२
पडिअंपइ ९.५
पडिवण्णु ७.१५
पडिवत्तउ ७.४

पडिवज्जइ ५.१६
पडिवालइ ७.६
पडुत्तउ ३.१४
पढमो संधि १.१; १.२०
पद्धडिया १.१
पभणिज्जहि ६.५
पमाणसंखा १.७
पयडमि ४.५
पयपक्खालण २.२
पयडिओ १.१६
पयंडु ११.३, ५
पयंपंति १.१४
परकलत्तु ४.११
परतियलंपडु ४.१२
परदव्वहरण ६.२
परमेट्ठि १०.३
परयारकहा ४.११
परदंडहो ९.८
परमप्पउ ३.२२
परोवरु ६.१४
परिक्खियइ ५.१९
परिणय ४.२३
परियट्टणु ७.५
परिडंबिय ५.६
परियायणु ९.१
परियारकहा ४.११
परिदो ३.८
पल्लट्टेवि ४.२१
पलंबभुया ६.३
पलोएमि ३.८
पलोएवि ४.२०
पलोएह ९.४
पलोयइ ४.१४
पवणेप्पिणु ३.५
पवणवेउ १.८
पाएप्पिणु २.३
पाडलीउरन १.१७, १०.१३
पाण्डवकहा ८.४
पायच्छित्त १.२०
पायजुयलु २.२०, २२
पायाउलउ १.१९
पायाउलओ ३.१२
पायालगंक ८.२०
पायारभित्ति १.४
पायारालंकिय ९.२३
पारद्धिय/पारद्धिएहि ८.९
पारासरु ७.१४
पाविट्ठु ४.७
पासजिण १०.१०
पित्तदोसु ३.१
पित्तजरेण ३.११
पियगुणवइ ११.२६
पियगोरि ११.३
पिहुत्तरु ५.८
पिहुपीण पउहर १.६
पिहुलरमणे ४.११
पुण्ण हीणउ ८.१८
पुण्णमेहु ८.१३
पुज्जियउ ४.२४
पुत्त १.१
पुप्फयंतु १.१
पुरिल्लियेण २.१०, ११
पुरोहिउ ९.२२
पुव्वमुणि ४.८
पुव्वमुणिवमुणिवयणु ७.५
पुव्वकिकय ५.१०
पुव्वयालि ७.२
पूइगंधेणि ७.१४
पेल्लिय ५.३
पोक्खरद्धे ६.१०

पोढविणु ९.२
पोम्मुप्पज्जइ ९.१८
पोमराय १.३
पोल्लिउ २.८
फणसालिंगण ७.९
फालंगउ ९.८
फुट्टउ ३.१४
फुट्टु ४.२२
बम्हसाल ४.३
बलएव ४.१
बहुधण्णो २.९
बहुरसरसोइ २.१२
बाहुबल्ली १.६
बीओ संधि २.१
बुह हरिषेण १.१
बोलिज्जइ २.१४
बंभहो ४.१२
बंभयारि २.२१
बंभु २.४
भक्खिऊण ३.२
भक्खिज्जइ ११.४
भग्गाणुराउ ८.१९
भत्तिभारतुट्ठेण ९.८
भत्तिभाव १.१; २.४
भणिऊण ३.११
भमरु २.७
भयणीवइ ८ १६
भयतट्ठहो ४.२१
भरहखेत्तु १.१
भल्लहु ३.१३
भवियव्वु ५.१२
भाइरहि ७.९
भामंडल ५.१९
भायणु ८.६
भावज वरस १०.३
भाविज्जइ ५.१९; ६.१
भासिज्जइ ९.१
भिक्खु ५.२
भिंगारिय ५.११, १३
भिच्च/भिच्चु ३.६, ४.५
भिडियउ ८.२१
भिल्ल ४.३
भिल्लपहे १.१३
भिल्लाहिउ ३.४
भिल्लेविणु ७.८
भीमसेणु ८.४
भुंजाविउ ८.११
भुंजिज्जइ २.१२, ११.३
भुंजेवि ३.४
भुत्तंतरे १०.१५
भुयंगम १.१३
भुयंगुप्पयाउ २.६
भूयमइ २.१८
भोयणपंतिहे ४.७
भोयाहिट्ठिउ ६.४
मक्कडहु ७.२
मग्गेविणु २.१८
मगहामंडलु ३.६
मज्जारु ४.३, १.३
मडयजुयलु २.१८
मच्छरु २.१३
मच्छाण ६.१६
मच्छारु ४.३
मणमयणए ४.११
मणवेउ १.६, २.१
मणहरखेयर १.२
मणिकडय १.१५
मणिमउडहर २.१
मणिसेहरु ३.११
मणुसुत्तर ६.५

मणिज्जइ १.१८
मणोरहु १.७
मत्ता छंदो ३.२१
महि ८.३
मणोमूढ कहा २.१८
मयचक्कमयायण ४.१८
मयणबाणावलि ७.१४
मयणबाणु ४.१०
मयणानल २.१९
मरणविहि ८.२१
मरुदेउ १०.१
मलयायल १.११
मसाणु ७.१६
महन्तर ६.८
महल्लउ २.११
महव्वय ५.२०
महुबिन्दु १.१४, १०.१७
महसुक्को ६.८
महिलाउ ३.१५
महिलामइ २.१५
महुरवक्कु ४.२०
महुरा २.१८
महुराउरिहे ३.११
माणथमु ८.१४
माणसवेउ १.११
माणिज्जइ १.११, ९.७
मायामहेण ७.३
मास १०.२
मिच्छादिट्ठहु १.८, ६.१५, १६
मिच्छाभाव ११.२६
मियंकपुत्तु ३.३
मिल्लाहि ५.१६
मिल्लेविणु ९.१७
मीमांसा १.१८
मुएप्पिणु २.३
मुक्कु २.११
मुचुकुंदहि १.१२
मुद्दिय ८.३
मुहडिस ८.१
मुंडियमुंडा ९.३
मुणइ ५.३
मुणिचंद १०.१३
मुणिज्जइ १०.१
मुत्ताहल ४.२३
मुत्तूण १.१७
मुणिसुव्वय १०.९
मूलगुण १०.१४
मूसयहिं ४.४
मेडियगमणु ९.३
मेल्लिउ ७.७
मेवाड ११.१, २६
मेहालए १.४
मोक्खफल ९.१७
मोक्खसिला ६.६
मोट्टणु ९.१
मोत्तापिया १०.८
मोत्तियहारसुत्ति २.१०
मोल्लु ३.१०
मोसेवकेण ७.९
मंगालउ २.७
मंडवकोसिउ ४.७
मंचयतले ३.१७
मंजीरसरा ६.३
मंदिरसिहर १.४
मंदोयरि ७.१८, ९.१७
मंदोयरिया ७.१२
मंडपकोसिउ ४.७
मंडुएं ४.६
रइसुह ४.१५
रक्खस-विज्जी ८.१३, १७

रक्खससय ८.१५
रत्तभिक्खु ८.८
रत्तपूडकहा २.९
रत्तुप्पल ४.२३
रत्तंबर जडधारणाइ ९.१३
रत्तंबइ ८.८
रजओ छंद ३.११
रयणवत्थु ३.४
रयणायराउ ४.६, ११
रयणप्पहणारहए ६.४
रमणभाव २.१८
रहणेउर ११.४
राम रावणकहा ८.१०, ९.४, १५
रमियावसाणे ४.२०
रामायण २.६
रामसुयमहविहि ५.१३
रावणु ७.१३
रासयछंदु ५.१६
रासहरिसि ४.१६
रासहसिव ५.७
रिञ्छ ४.१७
रिञ्छका ३ १५
रिसहजिण १०.२, ११
रिसिपत्ती ५.१
रुइसंघहि ४.२३
रुक्खु ३.१
रुद्दाइगुण ५.१
रुसेविणु ५.३
रुहिर ३.१७
रंगावलि ८.६
रंजेवि ४.१४
रंभेसमि ३.१७
लइक्खइ २.१७
लक्कडमार २.५
लक्खइट्ठावीस ६.७
लक्खाम ८.१०
लच्छिणाहु ३.२२
लच्छिसलु १०.४
लच्छहो ३.१०
लहु ४.२
लायण्णउ ११ १८
लिगग्गइ ५.५
लिगग्गहणउ ३.२०
लुयगल सिरई ९.५
लुयाविय ८.३
लोयटि्ठदि ६.१
लंकपट्टट्ठु ८.१५
लंयडु ४.१२
वइजयंतो १.४, ६.६
वइसाणरु ९.१०, ४.२२
वक्कउ २.२३
वक्खाणहि ७.७
वच्छाहरणइ ११.२२
वज्जरहु ३.१३
वज्जिअज्जइ ४.१५
वट्टइ ९.१८
वट्टुरत्तणु ९.१८
वडरुक्खे ५.१५
वणदहणु ३.९
वणियवरो ३.११
वणीसरु ३ ४
वत्तोस ४.१७
वमण ४.१०
वलिवंचणकारणु ४.२
वल्लिसेहे १.१७
ववहरिय ३.१७
वहत्तरि ६.४
वाईसरि ७.१५
वाउवेग १.३
वायरवीउ ८.१६

बाणारसि ५.७
बामणरूवेणं ३.२१
बायसाल ८.७
बारह वरिउ ३.६
बावद ३.९
बासुएव ४.१, ८.४, १०.९
बालि ८.१०, ९.१५–१७
बालिखील ५.१
बावीस परीसह ८.५
बावीजलो १.१७
बिउससिरोमणि ९.१३
बिक्कमपुरि ८.८
बिक्खायउ ७.१
बिक्किणेवि ३.१०
बिघट्टइ ३.१५
बिच्छरिय ११ ६
बिचित्तु ८.१
बिज्जहि ३.१
बिज्जावल ८.१०–११
बिज्जाहर ८.१६
बिज्जुकुमारयाहं ६.१२
बिज्जाणुवाउ
बिज्जाहर ८.१६, १८
बिज्जासमूह ५.७
बिज्जूमाला ९.९
बिद्धंसिय ९.५
बिदुर ८.१
बिद्दुम पोमराय ६.७
बिण्णि १०.२
बिण्हु २.२२, ५.१५, १६
बिण्णाविउ २.११, ३.९
बिणडिय ५.३
बिप्फुरिय ४.१७
बिप्पच्छकम्मगुणा २.२२
बिब्भहमरिउ १.१९
बिमलकित्ति ८.१७
बिम्हहु ६.१
बिमाणवत्थु १.१७
बियक्खणु ८.७
बियक्खणेण ८.१९
बियाणएण ७.६
बियारिज्जंतउ ४.२
बियाणेवि २.१५
बिरावणु ९.१५
बिवज्जिउ/बिवज्जिय ४.१; ६.४
बिवाउ ३.१३
बिविहधम्मे २.५
बिवाह महोच्छओ ११.९
बिसालउ ३.१२
बिहडइ ८.२२
बिहडए ८.१६
बीउ सग्गि २.२४
बीस ९.१७
बुब्बु आउ ६.१८
बुद्ध १०.१०
बुद्धी देवी ९.९
बुड्ढु २.१८
बेइंदियाण ६.१६
बेउब्वणाइ ९.१६
बेसासण ६.७
बेयड्ढ महीहर ७.२, ८.११
बेय वयणु ५.१६
बेयाल ११.६
बोदो ३.१६
बोल्लइ ५.३
बोल्लाविय ४.९
बोल्लावंतिहे ३.१८
बोलिज्जइ १.१९, ७.१८
बंभुदास गहवइ २.१६
बंदियगरिट्ठ १०.५

बंभण १०.६
बंभसाल १.१८, २.३, ७.१
बंभसुत्तु ७.१५
बंभरज्ज ९.१९
बंभंडु ६.१८
बंभयारि १.१८
बंभहो ४.१२
बम्हाइयहु ५.१
सक्कर ३.१
सच्छंदो ४.१७
सच्छाउ १.६
सज्जणचित्ताइ ११.२
सजलकुंभु २.१८
सत्त ४.२
सत्तावीस ९.२५
सत्थविज्ज ३.१९
सत्थवाउ ९.१
सत्तइहो ८.१७
सत्तट्ठहिं ६.१२
सत्तंगरज्जु ३.७
सद्दहइ ५.९
सद्दिट्ठिहे ६.१५
सट्ठि १.३
सद्दण्णु ९.११
सप्पा १.१४
सम्मत्तराइउ १.१६
सम्मत्तरयण ४.७
सम्मासण्ण ४.१८
समाहि १.९
समुग्गाइऊगं ९.४
सयणमग्गु ७.२
सयलभाव ४.५
सयंभव १.१
सरायवयणु ४.११
सलक्खणाए ४.११
सव्वण्णु ३.२२
सव्वत्थसिद्धि ८.५
सव्वावयासण ५.२०
ससिकिरणें ८.१९
सहएव ८.४
सहजाहरण ११.२१
सहसु ६.४
सहसकूट ११.२
सहसजोणि ९.१४
साकेयनयरम्मि ७.२
सामंतचक्कु १.५
सायरगुण ४.६
सायरसिलातरणु ७.२
सायरु ३.४
सालम्मलि ६.१०
सावय १०.४
सावयवय १०.१४
सासुरयहों ३.१७
साहविणु ३.१९
साहीणइं ८.९
सिक्कयत्थु ९.७
सिक्खावय १.७, १०.१५
सिढिलइ ४.१४
सिद्धसेण १.१; ११.२४
सिद्धिसुहहो ४.१५
सियचामरा १.१५
सियाल ८.८
सिरिकट्ठा २.२
सिरिकंठु ८.१५–१६
सिरिपाल ११.३
सिरिफलु ८.१५
सिरिचित्तकूडु ११.२
सिरिमत्तओ ९.६
सिरिमाणगहो ९.५
सिरिसिद्धणिवासु ६.१९

सिहिउण्हंतु ७.८
सिहिणभार ४.२१
सिहिणोवरि ११.२१
सीमंतिणिकुल १.२
सीय ८.१०
सुक्कज्झाणु ८.५
सुकज्जवणु ५.१
सुक्करसु ७.११
सुकुमालियाए ७.१२
सुग्गीव ८.१०, ९.१७, १८, १९
सुग्गीवाइ ८.११
सुगओ १०.११
सुद्धवरमहीण ६.१५
सुद्धोयणाइ ९.१.३, १०.१०
सुबुद्धि २.१६
सुभीमु ८.१४
सुरयगाहि ६.१७
सुलोयण ८.१३
सुवण्णदीव ११.१३
सुसाहिउ ११.२७
सुहमायणु ३.५
सुहज्झाण १.५
सुहसत्थत्थ ९.६
सुहियबु ७.३
सेणावइ ९.२२
सेयंबर ९.१
सेसभुयंगो ७.३
सोच्छंद १.३
सोमप्पहो ८.१
सोमुलच्छी ६.६
सोमसमिद्धिए ११.२७
सोयाण लुण्हेण ४.१७
सोलह ४.७
सोलहमुट्ठि कहाणउ २.६, ४.७
सोरट्ठि देस २.१६
सोहग्गरूव ६.३
संतणु ८.१
संतुट्ठचित्तु ११.१६
संपडिउ ४.१५
संफुल्लइ ५.१९
संलिहिय ४ १५
सुंदरि २.४, १२
हर्के ५.३
हक्कारिउ २.१०
हक्कारेवि ७.९
हणुमंत ९.८
हयास २.२१
हर ५.३
हरि ४.१, ११.२६
हरिणाहिउ ६.१८
हरिमेहर णंदणु ३.६
हरिसेण ४.२४, ११.२६.२७
हरिणंदणु ४.१२
हरिहर ९.१८
हरु ५.२
हरो ९.४
हवेसमि २.२
हसिऊणं १.१९
हारियउ ३.१६
हिडंतीए ९.९
हिंतालतालताली २.१
हुयासण ५.४
हेयाहेयहं ३.५